१०	स्नात्र पूजा	६
११	अष्टप्रकारी पूजा	२१
१२	एकादशी को गुणनो	२८
१३	पंच कल्याणक की टीप	३६
१४	दीवाली को गुणनो	४४
१५	वीसविहिरमान के नाम	४४
१६	चार शाश्वता जिन नाम	४५
१७	नव पद ओली विधि	४५
१८	आराधना पद्मावतीजी का तवन	८१
१९	वाणी ब्रह्मा	८३
२०	अरिहंत तवन	९७
२१	श्रावक की करनी	९७
२२	गोतम स्वामीजी का रास	९९
२३	सेत्रुंज रास	१०७
२४	दादाजी की पूजा आखी	११८
२५	आरती	१३६
२६	अष्टक	१३९
२७	महावीरस्वामी का आउखा	१४३

का विचार
२८ आलोयणा विधि १४४
२९ अणसण देने की विधि १४५
३० समस्त तपस्या देने की विधि १४७
३१ छोटी दीक्षा की विधि १५६
३२ कवित्त १६८
३३ पोषध विधि १६९
३४ पडिलेहण विधि १७१
३५ उपदेश माला सज्झाय १७२
३६ आठ थुइ देव वंदन १७७
३७ पच्चक्खाण पारने की विधि १८६
३८ संध्याकालिन पडिलेहन १८८
३९ चौवीस थंडिला विधि १८९
४० पोसह संध्या अतिचार १९१
४१ रात्रि संथारा विधि १९२
४२ राइ संथारा पोसह का पाठ १९२
४३ पोसह रात्रि आतिचार १९५
४४ पोसह पारने की विधि १९६

४५	दिन संबन्धी चउपहरा पोषध	१९६
४६	रात्रि ,, ,, ,,	१९८
४७	देसावगासिक लेने (पारने)	१९९
४८	,, पच्चक्खाण	२००
४९	पच्चक्खाण सुत्राणी	२०१
५०	पच्चक्खाण की अगार संख्या	२०८
५१	चौदह नियमों की गाथा	२०८
५२	सप्त स्मरणानि	२१२
५३	लघु अजित शांति स्मरणम्	२१३
५४	नमिऊणनामकम् ,,	२१५
५५	गणधरदेव स्तुतिरूपं	२१७
५६	गुरुपारतन्त्रयनामकम्	२२०
५७	सिग्घमवहरउ	२२२
५८	उवसग्गहरनामकं	२२३
५९	श्रीभक्तामर स्तोत्रम	२२४
६०	श्री कल्याण मान्दिर	२३०
६१	ग्रहशांति	२३५
६२	नवग्रहपूजा	२३६

६३	मंत्राधिराज स्तोत्र	२३९
६४	जिनपंजर	२४२
६५	ऋषि मन्डल	२४४
६६	तीजह पहुत	२४९
६७	नवकार छन्द	२५०
६८	पून प्रकाश छन्द	२५२
६९	नवकार मंत्र	२५३
७०	शांतिकरा	२५४
७१	नवकार	२५५
७२	गोतम अष्टक	२५६
७३	छोटा छन्द	२५७
७४	नवकार स्तोत्र	२५८
७५	गुरुगुण	२५९
७६	जंभउछवस्तवन	२६०
७७	पार्श्वनाथ स्तवन	२६०
७८	नेमीनाथ तवन	२६१
७९	अजितजिन स्तवन	२६२
८०	श्रीपार्श्वस्तवन	२६३

८१	आराधना का स्तवन	२६४
८२	पंचमी का स्तवन	२७४
८३	ग्यारस का स्तवन	२७५
८४	ऋषभाजिनेसर स्तवन	२७६
८५	श्री मान्दिरजी का स्तवन	२७७
८६	आठम का तवन	२८०
८७	विस्थानक विधि	२८१
८८	रोहणी का तवन	२८२
८९	मुक्ति जाणे की डिगरी	२८७
९०	अट्ठाइस लब्दी का स्तवन	२९०
९१	सीताजी की सज्झाय	२९३
९२	बारह भावना	२९५
९३	कर्म की सज्झाय	२९७
९४	भुलोमन भंवरा	२९९
९५	वीरदेवं थुयो	२९९
९६	मुरति मोहन थुइ	३००
९७	पंचमी की थुइ	३००
९८	ग्यारस की थुइ	३०१

९९	दुज की थुइ	३०२
१००	आठम की थुइ	३०२
१०१	सुरअसुर थुइ	३०३
१०२	दीपमाला थुइ	३०४
१०३	पजुसण की थुइ	३०४
१०४	मंगालिक सरण	३०५
१०५	चौपड की सज्झाय	३०६
१०६	अध्यात्म थुइ	३०७
१०७	गुरु चेला का प्रश्न	३०८
१०८	सुपने का तवन	३०९
१०९	तेसट शिला के पुरुषों का हाल	३०९
११०	महावीर स्वामी के गणधर	३१०
१११	दश मोटे श्रावकों के नाम	३११
११२	रोगीकी आयुष्य देखने का यंत्र	३११
११३	ज्वर छन्द	३१२
११४	सामायिक दोष	३१४
११५	पोषे में १८ दोष	३१५
११६	अठारे भार वनस्पति	३१५

११६	दश प्रकारे यती धर्म	३१६
११७	सतरे भेदे संयम	३१६
११८	नववाड ब्रह्मचर्य	३१६
११९	लोचन करने की विधि	३१७
१२०	असझाय विधि	३१७
१२१	साधु के काल समय की विधि	३१८
१२२	माकड की सझझाय	३२१
१२३	इक्कीस जातनो धोवण पाणी	३२२
१२४	सूतक विचार	३२३
१२५	असज्झाय की विगत	३२४
१२६	अथ (खाने की चीजें)	३२६
१२७	मंदिरजी का स्तवन	३२७
१२९	पूजा संग्रह	३२९



दीक्षा वि. सं. १९६२

जन्म वि. सं. १९४२



वडी दीक्षा वि. सं. १९६३

पूज्यपाद मुनिवर्य श्री क्षेमसागरजी महाराज.

स्वर्गवास वि. सं. १९७९

दीक्षा वि. सं. १९६८

(ग्रंथ कर्ता के शिष्य)

जन्म वि. सं. १९२१



बडी दिक्षा वि. सं. १९६८

मुनिराज श्री वल्लभसागरजी महाराज.

विद्यमान अवस्था. ६९ वर्ष.

श्री परमेष्ठिनेनमः।

❀ मंगलाचरणम् ❀

सुरनर वंदित बोध मय, वन्दत हूँ श्री अरिहन्त।
होत तुरत जिन भजन तें, भव फन्दन को अन्त॥ १॥
सिद्धि सुथित सिद्धन नमूं, पुनि आचार्य अनेक।
जिन जिन-शासन की करी, उन्नति सहित विवेक॥ २॥
उपाध्याय उपदेशप्रद, साधु साधुता लीन।
प्रणमहुँ तिनके पद कमल, होय कर्म मल छीन॥ ३॥
पूज्य पंच परमेष्ठि नित, शुभ मंगल के धाम।
भव्य हेतु मैं तासु गुण, ध्याऊँ आठहुँ याम॥ ४॥
पूजनीय परमेष्ठि शुभ, पूरहि मम यह आश।
सकल जैन जन लाभ हित, हो यह ग्रन्थ विकाश॥ ५॥
पूर्ण क्षेम वल्लभ सुजन, करिहैं पठन विलास।
नित्य क्रिया विधि से इहहिं, हुइ है हृदय उजास॥ ६॥
सब विधि निपट अजोग मैं, कीन्हों ग्रन्थ प्रकास।
सज्जन क्षमहिं त्रुटिन को, यह मम दृढ़ विश्वास॥ ७॥

सुजन कृपाभिलाषी—

साधु वल्लभसागर,

प्रतापगढ़ (मालवा)



श्री पञ्च परमेष्ठिने नमः ।

श्री जिनदत्त-कुशल-गुरुभ्यो नमः ।

पूर्ण हेम वल्लभ-विलास ।



श्री-देव-गुरु-धर्म-वन्दन विधिः ॥



प्रथम पाठः ।

किसी स्थान में श्री देव, गुरु, धर्म भक्त दो श्रावक रहते थे। दोनों सगे भाई थे, उनमें से बड़े का नाम विवेकचंद्र और छोटे भाई का नाम विनयचंद्र था। दोनों भाई सार्थक नाम वाले थे अर्थात् बड़ा भाई अत्यन्त ही विवेकवान् था; तथा छोटा भाई विनय सम्पन्न था। बड़ा

विवेकचन्द्र प्रतिदिन की श्री देव-गुरु-धर्म वन्दन क्रिया को विशुद्ध भाव से किया करता था, किंतु छोटा भाई विनयचन्द्र छोटी अवस्था का होने के कारण उक्त क्रिया से अनभिज्ञ था, अर्थात् उक्त क्रिया के गौरव और लाभ को नहीं समझता था। अतएव बड़े भाई विवेकचंद्र की यह इच्छा थी कि मेरे समान मेरा छोटा भाई भी उक्त क्रिया के महत्व और लाभ को समझे, तथा प्रतिदिन उसे अत्यावश्यक जान कर पूर्ण करे, अतएव एक दिन प्रातःकाल विवेकचन्द्र ने जिस प्रकार प्रतिबोध देकर अपने छोटे भाई को इस क्रिया का महत्त्व बतलाकर इसमें प्रवृत्त किया वह इस प्रकार है—

विवेकचन्द्र—भाई विनयचंद्र! उठो, प्रातःकाल होने को आया है अब तक सोते रहना उचित नही है, क्योंकि मनुष्य को चाहिये कि प्रभात समय चार घड़ी रात्रि रहते निद्रा को त्याग दे और अपना स्वर देख कर बिस्तरे पर से उठे। यदि दाहिना स्वर चलता हो तो प्रथम दाहिना और यदि बांयां स्वर चलता हो तो प्रथम बांयां पैर भूमि पर रक्खे। पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके परम मंगलकारक श्रीनवकार मंत्र का स्मरण करे। इसके पश्चात शौच आदि आवश्यक क्रिय से निवृत्त होकर

सुदेव और सुगुरु आदि की वन्दन क्रिया में प्रवृत्त होना चाहिये।

विनयचन्द्र—(उक्त बात को सुनते ही शीघ्र उठ बैठा और बोला) हां भाई साहब ! मैं उठ बैठा आज्ञा दीजिये।

विवेकचन्द्र—अच्छा चलो पहिले अपने परमदेव वीतराग परमात्मा के दर्शन करें, पीछे अन्य काम को करेंगे क्योंकि शान्त और अलौकिक शोभा वाले देव के मुखारविन्द का दर्शन करेंगे तो अपने को विद्या और सद्बुद्धि प्राप्त होगी और उसके प्रभाव से अपना सब दिन का व्यवहार सुखकारी होगा। नीतिशास्त्र मे कहा है कि प्रातः काल महात्मा महानुभाव का दर्शन होने से मनुष्य का तमाम दिन अच्छे प्रकार बीतता है उस को उत्तम लाभ होता है, तथा बुद्धि निर्मल रहती है तो भला अपने अभीष्ट देव के मुखारविन्द का दर्शन करने से कितना आनन्द।

विनयचन्द्र—हाँ भाई साहब ! आपका कथन यथार्थ है, आपकी आज्ञा के अनुसार हम अभी आपके साथ चलेंगे, तथा सर्व सुखदायक परमात्मा का दर्शन

कर अपने को कृतार्थ करेंगे, (यह कह कर साथ चलने के लिये तैयार हो गया)

विवेकचन्द्र—नीतिशास्त्रमें कहा है कि देवगुरु राजा अथवा महानुभाव के पास खाली हाथ नहीं जाना चाहिये, कहा है:—'रिक्तहस्तेन नो पेयाद् राजानं देवतां गुरुम् ।' इसलिये देवदर्शन के लिये चलते समय अपने को खाली हाथ नहीं चलना चाहिये। उचित है कि अपने घर पर पानी छान कर स्नान करना। शुद्ध खादी के नवीन और उज्वल वस्त्र तथा खादी का ही दुपट्टा पहिन कर, मस्तक पर केशर आदि का तिलक लगाकर, चांदी अथवा किसी और उत्तम डिबिया में धुले हुए अखण्ड चावल, बादाम लेकर श्री जिन मन्दिर को जाना चाहिये। मार्ग में चलते समय बड़ी यतना से चलना चाहिये। अपने पग के नीचे कोई जीव न आजावे इस प्रकार चलते फिरते प्राणियोंको बचा कर, किसी से नहीं छूकर चलना। दन्त कथा करते व जगह जगह पर, हंसी मज़ाक करते नहीं जाना क्योंकि जिन मन्दिर में जाकर तुमको भाव पूजा रूप परमात्मा की भक्ति करनी है। शास्त्रकारों ने इसको निर्वृति दायिनि अर्थात् भावपूजा मोक्ष देने वाली बतलाई है, परन्तु ध्यान रहे कि विवेक रखना प्रथम कर्तव्य है। विवेक के साथ

करने से मोक्ष होगा, अविवेक से नहीं। इस लिये चलते समय जीवों को बचा कर विवेक से चलना। मन्दिर जी के बाहर थोड़े जल से पांव धोकर दुपट्टा को अपने दांऐ कन्धे पर उत्तरासन कर लेना। अपने पास में यदि कोई खाने पीने की चीज़ हो तो बाहर किसी ताक़ (आला) में रख देना, क्योंकि मन्दिर में लेगई हुई खाने पीने की चीज़ फिर अपने काम नहीं आसकती, तत्पश्चात् मंदिर में प्रवेश करना। जब मन्दिर जी में प्रवेश करो तब तीन बार 'निस्सही' कहो और दुपट्टा मुख के आड़े करलो जिससे अपने मुख की दुर्गन्धि अथवा थूक उड़ कर आशातना न होने पावे।

विनयचन्द्र—जी साहब ! ठीक है (चावल लेकर दोनों भाई चले और मन्दिर में पहुँच कर नीचे लिखे अनुसार वन्दन क्रिया की, इसी प्रकार सबको करना चाहिये।)

द्वितीय पाठ।

'निस्सही निस्सही निस्सही'

यह पाठ मन्दिर में प्रवेश करते कहना। देव मन्दिर में जाकर विनयके साथ नीचे लिखा वाक्य बोले—

त्रैलोक्य आर्त्ति हर नाथ ! तुम्हे नमूं मैं,
हे भूमि के विनय रत्न ! तुम्हे नमूं मैं ।
हे ईश ! सर्वजगत के तुम्हे नमूं मैं,
मेरे भवोदधि नाशक ! तुम्हे नमूं मैं ॥१॥

प्रभु मुद्रा को देखते ही दोनों हाथों को जोड़ कर तथा मस्तक को नमा कर फिर तीन प्रदक्षिणा देते समय यह भावना करनी चाहिये—

हे प्रभो ! दर्शनगुणस्य प्राप्त्यर्थं प्रथम प्रदक्षिणां ददामि ।

दूसरी प्रदक्षिणा को देते समय यह भावना करनी चाहिये—

हे प्रभो ! ज्ञानगुणस्य प्राप्त्यर्थं द्वितीय प्रदक्षिणां ददामि ।

तीसरी प्रदक्षिणा को देते समय यह भावना करनी चाहिये—

हे प्रभो ! चारित्र गुणस्यप्राप्त्यर्थं तृतीय प्रदक्षिणां ददामि ।

इसके पश्चात् साथिया करे और यह बोले—

हे प्रभो ! चतुर्गतिनिर्मोहार्थं स्वस्तिकं रचयामि ।

अर्थ—हे प्रभो ! चारों गतियों का नाश करने के लिये मैं साथिया बनाता हूँ ।

इसके पीछे तीन पुंज (ढिगली) करे और बोले—

हे प्रभो ! ज्ञान-दर्शन-चारित्रप्राप्त्यर्थं त्रिपुन्ज रचयामि ।

अर्थ—हे प्रभो ! ज्ञान दर्शन और चारित्र की प्राप्ति के लिये मैं तीन ढिगलियों को बनाता हूँ ।

और एक ढिगली पीछे अर्द्ध चन्द्राकार करे और यह बोले—

हे करुणासिन्धो ! सिद्धस्थानप्राप्त्यर्थं अर्द्ध चन्द्राकरं करोमि । पुञ्जमेकं च सिद्ध-वत्स्थित्यर्थं करोमि ।

अर्थ—हे कृपासिन्धो ! सिद्धस्थान की प्राप्ति के लिये मैं अर्द्धचन्द्र के समान आकार करता हूँ और एक ढिगली सिद्धसमान-स्थिति के लिये करता हूं ।

इसके पीछे भगवान् की दाहिनी भुजा की तरफ खड़ा होकर तथा स्त्री हो तो भगवान् की बांई भुजा की तरफ खड़ी होकर हाथ जोड़ कर तथा दोनों गोड़ा को और मस्तक को नमा कर बोले—

इस वाक्य को उठ बैठ के साथ में तीन वार बोलना चाहिये। इसके पीछे इरियावही कहना चाहिये।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि

इरियावही ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! इरिया-वहियं पडिक्कमामि ? इच्छं। इच्छामि पडि-क्कमिउं,इरियावहियाए,विराहणाए गमणा-गमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसाउत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया

अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरी ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं

अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

फिर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पार के नीचे लिखे मूजब एक लोगस्स प्रगट कहे ।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ सुविहिंच पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ कुंथुं अरंच मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च वंदामि रिट्ठनेमि पासं तह वद्धमाणं च ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा चउ-

वीसंपि जिणवरा, तित्थयराभे पसीयंतु ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

फिर नीचे बैठ कर "भगवंत ! चैत्यबन्दन करूं" यह कह कर जीमणा गोड़ा नीचे करके डावा ऊंचा करे और अंजलि बांध के नीचे लिखा चैत्यबन्दन करे—

अनन्तगुणी श्रीशान्तिना नर नारी गुण गावे, द्रव्य भाव शुचि प्रेम सुं. अजर अमर पद पावे। सुख संपति कारक तुम. प्रभु पूरण प्रीति विसराम, क्षेम कुशल नित चाहिये, करूं बन्दन शिर नाम ॥ १ ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं, ताईं सव्वाइं वंदामि॥

नमोत्थुणं ।

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवर गंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणँ चक्खुदयाणँ मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसिआणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर चाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाण दंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुयमणंत मक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं सम्पत्ताणं नमो

जिणाणं जिअभयाणं, जेअ अईया सिद्धा जे अ भाविस्संतिणागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ सव्वाइँ ताइँ वंदे, इह संतो तत्थ सन्ताइँ ।

इच्छामि खमासमणो वाँदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिंतेसिं पणओ, तिविहेण तिदन्ड विरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

यह कह कर अपनी इच्छानुसार कोई भजन स्तवन बोलना चाहिये।

चौवीस भगवान का स्तवन

प्रह ऊठी मैं सदा नमूं वारि हाथ जोड़ के साम।
चौवीसों जिनराज को, मैं नित्य करूं परणाम ॥१॥
१ ऋषभ २ अजित ३ संभव ४ अभिनंदन अरु ५ सुमती महाराज। ६ पद्म ७ सुपारस ८ चन्दाप्रभु जी से लगन लगी है आज ॥ २ ॥प्र०॥ ६ सुविधि १० शीतल ११ श्रेयांस सवाई दीजे मुक्ति नाथ १२ वासुपूज्य जिन वाग्मा वारि १३ बिमल १४ अनन्त रु नाथ ॥ ३ ॥प्र०॥ १५ धर्म १६ शान्ति अरु १७ कुन्थु जिनेश्वर १८ अर १६ मल्लि महाराज। २० मुनिसुव्रत २१ नमि २२ नेमजी २३॥ पार्श्व २४ वीर जिनराज ॥४॥प्र०॥ कहे पाठक कल्याण को, निधान पूरो आस। कर जोड़ी गुण गावताँ, वारि चन्द गोपालदास ॥ ५ ॥ प्र० ॥

उवसग्गहर स्तोत्र

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण-मुक्कं। विसहरविसनिन्नासं, मंगकल्लाण आवासं ॥ १ ॥ विसहर-फुलिंगमंतं, कंठे

धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गह रोग मारी दुट्ठ जरा जंति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो तुज्झ पणामोवि बहुफलो होई। नर तिरिए सु वि जीवा, पावंति न दुक्ख दोहग्गं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण। ता देव दिज्ज बोहिं भवे भवे पास जिणचन्द ॥ ५ ॥

पीछे दोनों हाथ जोड़ मस्तक लगा कर प्रेम सहित यह बोलना—

जयवियराय।

जयवियराय! जगगुरु! होउ ममं तुह पभावओ भयवं। भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल सिद्धी ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ,

गुरुजणपूआ परत्थ करणं च। सुह गुरु जोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा ॥२॥

पीछे खड़ा हो के हाथ जोड़ कर यह बोलना—

अरिहंत चेइआणं।

अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदण वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कार वत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥ २ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं, सुहु-

मेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

इसके पीछे काउस्सग्ग में दोनों हाथों को नीचे की ओर लम्बे करके नेत्रों को बन्द करके तथा होठ और जीभ को बिना हिलाये एक णमोकार मंत्र का चिन्तवन करना चाहिये। काउस्सग्ग पार के (पीछे दोनों हाथों को जोड़ कर) यह बोले—

नमोर्हत्—

नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः।
श्री शान्तिनाथ जी, साताकारक देव।
मनमोहन स्वामी, अनुपम मूर्ति सेव ॥१॥
मुझ रोम हुलसिया, वंदूँ प्रणमूं नाथ।
शुद्ध समकित मांगूं, जोड़ प्रभु के हाथ ॥२॥

इस प्रकार दर्शन कर तथा पीछे पच्चक्खाण करके "आवस्सही" को तीनवार कहकर मन्दिर से बाहर जावे।

इससे यह मतलब है कि जिन बातों की मैंने क्रम से प्रतिज्ञा की थी उनकी अब छूट है।

तृतीय पाठः।

पूर्वोक्त रीति से देववन्दन विधि को पूर्ण करने के पीछे गुरुवन्दन विधि को करना चाहिये, अर्थात् गुरु महाराज के सामने खड़े होकर नीचे लिखे वाक्य से दो बार खमासमण देना चाहिये।

इच्छामि।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

इस प्रकार खमासमण देकर नीचे लिखे पाठ को बोलकर गुरु महाराज से सुखसाता पूछनी चाहिये—

इच्छाकार।

इच्छकार भगवन्! सुह राइय, सुह देव-सिय सुखतप शरीर निराबाध सुख संयमयात्रा

निर्वहो छो जी स्वामी साता छे जी ॥२॥

पूर्वोक्त पाठ को कह कर श्री गुरु जी को नमस्कार करे, पीछे नीचे बैठ कर दाहिने हाथ को नीचे रख कर बायें हाथ को मुहपत्ती वत् मुख पर लगा कर, नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिए—

इच्छाकारेण ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओऽम्हि अब्भिन्तर राइअं* खामेउं ? इच्छं, खामेमि राइअं, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेआवच्चेआलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥३॥

---

*दिन के बारह बजे तक यह पाठ कहना चाहिये, किन्तु बारह बजने के पीछे "राइयं" की जगह "देवसियं" शब्द को बोलना चाहिये।

उक्त पाठ को बोल चुकने के पीछे नीचे लिखे हुए वाक्य को बोलकर आहार पानी के लिये निवेदन करना चाहिये--

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! भात पाणी रो लाभ दीजो जी ॥४॥

चतुर्थ पाठः ।

पूर्वोक्त गुरुवन्दन के पीछे सामायिक करनी चाहिये। सामायिक करने के समय पहिले श्री गुरुजी के सामने (यदि श्री गुरुजी उपस्थित न हों तो स्थापनाचार्यजी के सामने) दाहिना हाथ कर के नीचे लिखे हुए नवकार मन्त्र को तीन वार गुणना चाहिये—

श्री णमोकार मंत्र ।

णमो अरिहंताणं ॥१॥ णमो सिद्धाणं ॥२॥ णमो आयरियाणं ॥३॥ णमो उवज्झायाणं ॥४॥ णमोलोए सव्वसाहूणं ॥५॥ एसो पंच णमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥७॥

मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥

इसके पीछे श्रीगुरुजी के सामने अथवा स्थापनाजी के सामने पड़िलेहणा करनी चाहिये, तथा उस समय नीचे लिखे तेरह बोलों का चिन्तन करना चाहिये—

१ शुद्ध स्वरूप धारूँ, २-ज्ञान, ३-दर्शन, ४-चारित्र, ५-सहित सद्दहणा शुद्धि, ६-प्ररूपणा शुद्धि, ७-दर्शन शुद्धि, ८-सहित पाँच आचार पालूं, ९-पलावूं, १० अनुमोदूँ, ११-मनोगुप्ति, १२-वचन गुप्ति, १३- काय गुप्ति आदरूँ ।

इसके पीछे गुरु महाराज के सामने अथवा स्थापना चार्यजी के सामने खड़े होकर तीन वार नीचे लिखे हुए पाठ से खमासमण देने चाहियें—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥१॥

इसके पीछे नीचे बैठ कर दाहिने हाथ को नीचे रख कर नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! अब्भुट्ठिओम्हि अब्भिंतरराइयं खामेउं । इच्छं, खामेमि देवसियं । जं किंचि अपत्तियं परिपत्तियं भत्ते पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अन्तरभासाए, उवरि भासाए जं किंचि मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।२।

उक्त पाठ को बोल कर हाथको उठा ले तथा पूर्वोक्त खमासमण देकर इस प्रकार बोले—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहूं ? ॥ ३ ॥

इसके पीछे "इच्छं" कहकर दूसरा खमासमण देकर मुहपत्ती की पड़िलेहणा करनी चाहिये, उस समय नीचे लिखे हुए मुहपत्ती पड़िलेहणा तथा अङ्ग पड़िलेहणा के बोलों का विधिपूर्वक मन में चिन्तन करना चाहिये, प्रथम नीचे लिखे मुहपत्ती के सात बोलों को मुंहपत्ती खोलते समय कहना चाहिये—

सूत्र अर्थ साँचो सद्दहुं ॥१॥ सम्यक्त्व-मोहनीय ॥ २ ॥ मिथ्यात्व मोहनीय ॥ ३॥ मिश्र मोहनीय परिहरूं ॥ ४ ॥ कामराग ॥५॥ स्नेह राग ॥६। दृष्टिरागपरिहरूँ ॥७॥

इसके पीछे दाहिने हाथ की पड़िलेहणा के समय नीचे लिखे हुए नव बोलों को मन में बोलना चाहिये—

नव बोल।

सुगुरु-सुदेव-सुधर्म आदरूँ ॥१-२-३॥
कुगुरु-कुदेव-कुधर्म परिहरूँ ॥४-५-६॥
ज्ञान-दर्शन-चारित्र आदरूँ ॥७-८-९॥

इस के पीछे बायें हाथ की पडिलेहणा करनी चाहिये तथा नीचे लिखे हुए नव बोलों को बोलना चाहिये—

नव बोल ।

ज्ञानविराधना, दर्शनविराधना, चारित्र विराधना परिहरूँ ॥ १-२-३ ॥

मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति आदरूँ ॥ ४-५-६ ॥

मनोदण्ड, वचनदण्ड, कायदण्ड परिहरूँ ॥ ७-८-९ ॥

इस के पीछे नीचे लिखे हुए अंगपडिलेहणा के बोलों को बोलना चाहिये और जिस अंग का नाम आवे उसी अंग को मुंहपत्ती से स्पर्श करे।

पडिलेहणा के बोल ।

कृष्णलेश्या, नीललेश्या, कापोतलेश्या, ये तीनों मस्तक के परिहरूँ। ऋद्धिगारव, रस-

गारव, सातागारव, ये तीनों मुखे परिहरूँ। मायाशल्य, नियाणाशल्य, मिथ्यादंसण-सल्य, ये तीनों हृदय से परिहरूँ।

क्रोध, लोभ, ये दोनों दाहिने खम्भे परिहरूँ।

माया, मान ये दोनों बायें खम्भे परिहरूँ। हास्य, रति, अरति, ये तीनों बायें हाथे परिहरूँ।

भय, शोक, दुगंछा ये तीनों दाहिने हाथे परिहरूँ।

पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, ये तीनों बायें पादे परिहरुँ। वाउकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय ये तीनों दाहिने पादे परिहरूँ।

ऊपर कही हुई विधि से मुहपत्ती की पडिलेहणा कर के खमासमण देकर—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! सामा-

यिक संदिसाहुं ?, इच्छं ।

इस वाक्य को कहकर फिर खमासमण देकर—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! सामायिक ठाउं ? इच्छं ।

यहाँ खमासमण देकर आधा अंग नमा कर तीन बार नवकार गुणना । पीछे—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! पसायकरी सामायिक दंडक उच्चरावो जी । तहत्त ।

इसके बाद खरतरगच्छवालों को नीचे लिखे हुए सामायिक सूत्र का तीन बार उच्चारण करना चाहिये—



इसके बाद तपगच्छ वालों को पहिले इरियावही का पाठ कहके फिर एक बार करेमिभंते उच्चरना चाहिये ।

करेमि भंते ।

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जावनियमं पज्जुवासामि ।

दुविहं तिविहेणं, मणेणं, वायाए काएणं,न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि,अप्पाणं वोसिरामि ।

इसके पश्चात् खमासमण देकर नीचे लिखेहुए सूत्रों को कहना चाहिए—

इरियावहियं ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं। इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणेबीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसाउत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणासंक्रमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं

तस्स उत्तरी ।

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउसग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय-निसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं, अंगसञ्चालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

यहां पर चार "नवकार" एक 'लोगस्स" का काउस्सग्ग करके "णमो अरिहंताणं" कहकर काउस्सग्ग को पारना चाहिये। पीछे प्रकट रूप से नीचे लिखे हुए "लोगस्स" पाठ को कहना चाहिये—

लोगस्स ।

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे संभव-मभिणंदणं च सुमइंच । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च । बिमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासँ तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवँ मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसँ पिजिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥

कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग-बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इसके पश्चात् एक एक खमासमण देकर नीचे लिखे हुए पाठों को बोलना चाहिये—

१-इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बैसणो संदिसाउं ? इच्छं ।

२-इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! बैसणो ठाउं ! इच्छं ।

३-इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय सँदिसाउँ ? इच्छं ।

४ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करूँ ? इच्छं ।

नोट—मध्यान्ह पीछे सामायिक करे तो सिज्झाय करके बैसणे का आदेश लें।

फिर पांचवां खमासमण देकर खतरगच्छ वाले आठ बार नवकार मन्त्र को बोलें।



फिर पांचवाँ खमासमण देकर तपगच्छ वाले तीनबार नवकार बोलें।

यदि कुछ ओढ़ने की आवश्यकता हो तो एक खमासमण देकर—

इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् पांगरणो संदिसाउं।

कहकर फिर एक खमासमण दें और कहें—

इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् पांगरणा पडिग्गहाऊँ।

इतना कहकर ओढ़ने के वस्त्र को ओढ़ कर स्थिरता से बैठ जाना चाहिये और ४८ मिनट तक शुद्ध भावना पूर्वक जाप, ध्यान करना चाहिये। सांसारिक वार्तालाप करना उस समय उचित नहीं है।

॥ इति प्रभात सामायिक विधि सम्पूर्ण ॥

सामायिक पारने की विधि ।

सामायिक का समय पूरा हो जाय तब खरतर-गच्छ वाले नीचे लिखा खमासमण देवें और मुँह पत्ती पडिलेहें ।



तपगच्छ वाले पहले इरियावही कहकर फिर मुंहपत्ती पडिलेहें ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् सामा-यिक पारवा मुंहपत्ति पडिलेहुं ।

यह कहे और उकडू बैठकर मुंहपत्ती पडिलेहें। फिर एक खमासमण देकर—

इच्छा० सं० भग० सामायिक पारुं ।

कहे और फिर एक खमासमण देकर—

इच्छा० सं० भग० सामायिक पारेमि ।

यह कहकर अर्ध नम्र होकर तीन नवकार गुणे ।

इसके पीछे खरतरगच्छ वाले खड़े होकर थोड़ासा झुककर तीनवार नवकार मंत्र को गुणे पीछे गोडाली आसन से नीचे बैठ कर मस्तक को नमाकर नीचे लिखे पाठ को बोले—

भयवं दसन्नभद्दो

भयवं दसन्नभद्दे, सुदंसणो थूलभद्द वइरो य। सफलीकयगिहचाया, साहू एवंविहा हुंति ॥१॥ साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया भावा फासुअदाणेनिज्जरा, अभि

इसके पीछे तपागच्छ वाले जीमनो हाथ नीचे रख कर एक नवकार गुणें और समाइय वयजुत्तो का पाठ बोलें।

सामाइय वयजुत्तो

सामाइयवयजुत्तो जावमणेहोइ नियम सज्जुत्तो छिन्नइ असुहं कम्मं सामाइअ जत्तिआवारा ॥ १॥ सामाइअंमि उ कए समणो इव सावओ हवइ जम्हा एएण

ग्गहो नाणमाईणं ॥२॥ छउमत्थो मूढ मणो, कित्तियमित्तंपि संभरइ जीवो । जं च न संभरामि अहं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥३॥ जं जं मणेण चिंतिय मसुहं वायाइ भासियं किंचि असुह काएण कयं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥४॥ सामाइय पोसहसंठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो सो सफलो बोद्धव्वो सेसो संसार फल-हेऊ ॥५॥

काएण, बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥२॥

सामायिक विधे लीधुं, विधें कीधुं, विधि करतां, जे कोई अविधि आशातना लगी होय, दस मन के, दस वचन के, बारह काया के, बत्तीस दूषणों माहिं जो कोई दूषण लगा होय सो सहु, मन कर वचन कर कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं ।

राइप्रतिक्रमण विधि ।

पाँचवां पाठ ।

उक्त प्रकार से सामायिक ग्रहण करने के पीछे एक खमासमण देकर*नीचे लिखे पाठ को बोलना चाहिये । यदि तपगच्छ वाले साथ प्रतिक्रमण करते हों तो वह कुसु० दुसु० का काउस्सग करे वहाँ तक खरतरगच्छ वाले रुक जाँय फिर अपना २ चैत्यवन्दन बोल कर 'जं किंचि' में शामिल हो जावें ।

---

* तपगच्छ वाले कुसमिण दुसमिण का काउस्सग्ग करके फिर नीचे लिखा हुआ पाठ बोलें ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्य-वन्दन करूं, इच्छं।

इसके पश्चात् खरतरगच्छ वाले नीचे लिखे हुए चैत्यवन्दन × को बोलें—

जयउ सामिय जयउ सामिय, रिसह सत्तुंजि उज्जिंति पहु नेमिजिण, जयउ वीर सच्चउरि-मंडण। भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय, मुहरि पास दुह-दुरिअ-खंडण। अवर विदेहिं तित्थयरा, चिहुंदिसि विदिसि जिं केवि। तीआणागय-संपइ अ वंदूं जिण सव्वेवि ॥१॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढम-संघ-यणि, उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विह-रंत लब्भइ। नव-कोडिहिं केवलीण, कोडि-सहस्स नव साहु-गम्मइ। संपइजिणवर

× तपागच्छ वाले आगे छपा हुआ जगचिंतामणि का चैत्य-वन्दन बोलें।

बीसमुणि बिहुं कोडिहिं वरनाण । समणह कोडिसहस्स दुअ, थुणिज्जइ निच्चविहाणि ॥ २ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडीओ । चउसय छायासीया, तिअ-लोए चेइए वंदे ॥ ३ ॥ वंदे नवकोडिसयं, पणवीसं कोडि लक्ख तेवन्ना । अट्ठावीस सहस्सा, चेउसय अट्ठासिया पडिमा ॥४॥

(नीचे छपा 'जग चिन्तामणि' का चैत्यवन्दन तपगच्छ वालों को बोलना चाहिये)

जग चिंतामणि ।

जगचिंतामणि जगनाह जगगुरु जग रक्खण । जगबंधव जगसत्थवाह जगभाव विअक्खण ॥१॥ अट्ठावयसंठाविअरूव कम्मट्ठ-विणासण । चउविसंपि जिणवर जयंतु अप्प-डिहय सासण ॥ २ ॥

कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं, पढमसंघयणि, उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहरंत लब्भइ ॥ नवकोडिहिं केवलीण, कोडि सहस्स नव साहु गम्मइ । संपइजिणवर बीस मुणि बिहुँ कोडिहिं वरनाण समणह कोडि सहस्स दुअ थुणिजियनिच्च विहाणि ॥ २ ॥

जयउ सामी जयउ सामी रिसह सत्तुंजि उज्जिंत पहु नेमिजिण ॥ जयउ वीर सच्चउरि मंडण, भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय मुहरिपास दुह दुरिअखंडण अवर विदेहिं तित्थयरा ॥ चिहुँ दिसि विदिसि जिं के वि तीआणागय संपइअ । वंदु जिण सव्वेवि ॥ ३ ॥

सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडीओ बत्तीसयबासिआइं, तिअलोए चेइए वंदे ॥ पनरस कोडि सयाइं, कोडि बायाल लक्ख अडवन्ना ! छत्तीस सहस्स असियाइं, सासयबिंबाइं पणमामि ॥४॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ ४ ॥

नमोत्थुणं ।

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं। लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोआगराणं। अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं वोहिदयाणं। धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवर-नाण दंसण-धराणं विअट्ट छउमाणं-जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं वोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्व-

न्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंत-मक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्तिसिद्धिगइनाम-धेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअ-भयाणं। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भवि-स्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वन्दामि।

जावंति चेइआइं।

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहेअ तिरि-यलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं॥ १॥

जावंत केवि साहू।

जावंत केवि साहू भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसि पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं॥ २॥

परमेष्ठि नमस्कार।

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

उवसग्गहर स्तवन ।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण-मुक्कं । विसहरविसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण आवासं ॥१॥ विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्सग्गहरोगमारी-दुट्ठजरा जांति उवसामं ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होइ नरतिरिएसुविजीवा पावंति न दुःख दोहग्गं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअ-एण । ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ॥५॥

इसके पश्चात खरतर-गच्छ वाले दोनों हाथ ऊंचे कर इस प्रकार बोलें—



तपगच्छ वाले दोनों हाथ ऊंचा करके जयविय-राय की गाथा बोलें—

जयवीयराय

जयवीयराय! जग-
गुरु! होउ ममं तुह
पभावओ भयवं भव
निव्वेओ मग्गाणु-सा
रिआ इट्ठफल सिद्धी
॥ १ ॥ लोगविरुद्ध-
च्चाओ, गुरुजणपूआ
परत्थ करणंच। सुह-
गुरुजोगो तव्वयणसे
वणा आभवमखंडा
॥ २ ॥

जयवीयराय जग
गुरु! होउ ममं तुह
पभावओ भयवं भव
निव्वेओ मग्गाणुसा
रिआइटठफलसिद्धी
॥ १ ॥ लोग विरुद्ध-
च्चाओ, गुरुजणपूआं
परत्थकरणंच। सुह-
गुरुजोगो तव्वयणसे-
वणा आभवमखंडा
॥२॥ वारिज्जइजइवि
निआणबंधणं विय-
राय तुह समए।
तहवि ममहुज्ज सेवा,
भवे भवे तुम्ह चल-

णाणं ॥ ३ ॥ दुक्ख-
क्खओ कम्मक्ख-
ओ, समाहि मरणं
च बोहिलाभो अ ।
संपज्जउ मह एअं,
तुह नाह पणाम कर
णेणं ॥४॥ सर्वमंगल
मांगल्यं, सर्वकल्याण
कारणम् प्रधानं सर्व
धर्माणां जैनं जयति
शासनम् ॥५॥

इस प्रकार चैत्यवन्दन करने के पीछे खरतर गच्छ वालों को खमासमण देकर नीचे लिखे हुए पाठ को बोलना चाहिये । और तप गच्छ वाले साथ हों तो वह इतनी देर रुक जावें ।

इच्छामि खमासमणो वाँदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥१॥

इच्छाकारेण ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! कुसुमिण-दुसुमिण-राइय-पायच्छित्त-विसोहणत्थं काउस्सग्ग करूँ ? इच्छं ।

कुसुमिण-दुसुमिण-राइय-पायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥

इसके पीछे नीचे लिखे हुए "अन्नत्थ ऊससिएणं" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

अन्नत्थ ऊससिएणं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं, अंगसञ्चालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं

अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारोमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

इसके पश्चात् सोलह नवकार का चिन्तन करते हुए काउस्सग्ग करना चाहिये, फिर "णमो अरिहंताण" वाक्य को कह कर काउस्सग्ग को पार कर नीचे लिखे हुए "लोगस्स" इत्यादि पाठ को बोलना चाहिये—

लोगस्स।

लोगस्स उज्जोअगरे धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे संभव मभिणंदणं च सुमइंच। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि,

॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इसके पीछे पडिक्कमण के ठावणे के लिये नीचे लिखी चार खमासमण देवें।

१—इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। श्री आचार्य जी मिश्र"

२—दूसरा खमासमण देकर "श्री उपाध्याय जी मिश्र" कहकर वन्दन करना चाहिये।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'जंगम युग प्रधान भट्टारक वर्त्तमान गुरु........ मिश्र ।'

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'सर्व साधु जी मिश्र' । इच्छकारि समस्त श्रावक मिश्र ।

उपरोक्त चार खमा-समण देकर तपगच्छ वाले नीचे लिखे हुए इच्छा० और एक णमोकार मंत्र गिन के भरहेसर की सज्झाय बोलें । पश्चात् फिर एक नवकार गिन के इच्छाकार सुहराइ सुख तप का पाठ कहें ।

इच्छामि खमास-
मणो वंदिउं जाव-
णिज्जाए निसीहि-
आएमत्थएणवंदामि।
इच्छाकारेण संदि-
सह भगवन् सज्झाय
संदिसाहु।
इच्छं इच्छामि संदि
सह भगवन सज्झाय
करुं ? इच्छं।
णमोअरिहंताणं।
णमो सिद्धाणं। णमो
आयरियाणं। णमो
उवज्झायाणं णमो
लोए सव्वसाहूणं।
एसो पंच णमुक्कारो।

सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं।
पढमं हवइ मंगलं।

भरहेसर बाहु-
बली, अभयकुमारो
अ ढंढण कुमारो।
सिरिओ अणिया-
उत्तो, अइमुत्तो, ना-
गदत्तो अ ॥१॥

मेअज्ज थूलि-
भद्दो, वयरारिसी
नंदि सेण सीह-
गिरी। कयवन्नो अ
सुकोशल, पुंडरिओ
केसि करकंडु ॥२॥

हल्ल विहल्ल सुदं-

सण,सालमहासाल
सालिभद्दो अ। भद्दो
दंसन्न भद्दो, पसन्न-
चंदो अ जसभद्दो
अ ॥३॥

जंबुपहु वंकचूलो,
गय सुकुमालो अवं-
तिसुकुमालो। धन्नो
इलाईपुत्तो, चिला-
इपुत्तो अ वाहु-
मुणी ॥४॥

अज्जगिरी अज्ज-
रक्खिअ, अज्जसु-
हत्थी उदायगो म-
णगो । कालयसूरि

संबो, पज्जुन्नो मूल-
देवो अ ॥५॥
पभवो विण्हुकु-
मारो, अद्दकुमारो
दढप्पहारी अ।
सिज्जंस कूरगडू अ,
सिज्जंभव मेहकु-
मारो अ ॥६॥
एमाइ महासत्ता,
दिंतु सुहं गुणगणेहिं
संजुत्ता। जेसिं नाम-
ग्गहणे, पावपबंधा
विलय जंति ॥७॥
सुलसा चंदनबाला,
मणोरमा मयणरेहा
दमयंती। नमया-

सुंदरी सीया, नंदा
भद्दा सुभद्दा य॥८॥
रायमइ रिसिदत्ता
पउमावई अंजणा
सिरीदेवी । जिट्ठ
सुजिट्ठ मिगावई,
पभावई चिल्लणा-
देवी ॥९॥
बंभी सुंदरी रूप्पि-
णी, रेवइ कुंती सिवा
जयंती य। देवइ दो
वइ धारणी,कलावई
पुप्फचूला य ॥१०॥
पउमावइ य गोरी,
गंधारी लक्खमणा
सुसीमा य। जंबूवइ

सच्चभामा, रूप्पिणी कण्हट्ठमहिसीओ ११

जक्खा य जक्ख-दिन्ना, भूआ तहचेव भूअदिन्ना य। सेणा वेणा रेणा भयणीओ थूलिभद्दस्स ॥१२॥

इच्चाई महासइओ जयंति अकलंक सी-लकलिआओ। अ-ज्जवि वज्जइ जासि, जस पडहो तिहुअणे सयले ॥१३॥

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं।

णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच णमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं।

इच्छकार भगवन्! सुह राइय, सुख तप शरीर निरावाधसुख संयमयात्रा निर्वहो छोजी। स्वामी साता छे जी।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राइयपडिक्कमणे ठाउं? इच्छं।

(यह कहकर दाहिने हाथको चरवले या आसन पर रख कर, गोडाली आसन से बैठकर मस्तक नमा कर दोनों हाथों से मुंहपत्ति मुख के आगे रखकर इस प्रकार कहना)

सव्वस्सावि राइअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

(इसके पश्चात नीचे छपा 'नमोत्थुणं' का पाठ इस प्रकार बोलना)

नमोत्थुणं ।

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥१॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवर गंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ।४॥ अभयदयाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहि-

दयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउ-रंत-चक्कवट्टीणं॥६॥अप्पडिहयवरनाणंदसण-धराणं विअट्टछउमाणं ॥७॥ जिणाणं जाव-याणं, तिन्नाणं, तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्व-दरिसीणं,सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वा-बाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ-नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं॥९॥ जेअ अईआ सिद्धा, जेअ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वन्दामि ॥१०॥

तदनन्तर खड़ेहोकर नीचे लिखा हुआ "करेमि भंते" का पाठ बोलना चाहिये—

करेमि भंते।

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं

पच्चक्खामि जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

इसके पश्चात् नीचे लिखा हुआ "इच्छामि ठामि" का पाठ बोलना चाहिये—

इच्छामि ठामि ।

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं। जोमे राइओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ-उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुविचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असावगपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हकसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारस-

विहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥१॥

इसके पश्चात् नीचे लिखा 'तस्स उत्तरी' का पाठ बोलना चाहिये—

तस्स उत्तरी ।

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं॥१॥

इसके पीछे नीचे छपा हुआ "अन्नत्थ ऊससिएणं" का पाठ बोलना चाहिये।

अन्नत्थ ऊससिएणं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए । सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचाले-

हिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

इसके पीछे चारित्रशुद्धि के निमित्त चार नवकार-मंत्र अथवा पूर्व लिखे हुए एक "लोगस्स" का काउस्सग्ग करे।

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच णमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं।

इसको पार कर फिर दर्शन शुद्धि के लिये प्रकट रूप से नीचे लिखे हुए "लोगस्स" का पाठ बोलना चाहिये।

लोगस्स ।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंद-प्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६। चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं

पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

इसके पीछे नीचे लिखा हुआ पाठ बोलना चाहिये ।

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सगं ॥ वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥१॥

इसके पीछे नीचे लिखा हुआ "अन्नत्थ ऊससिएणं" पाठ बोलना चाहिय ।

अन्नत्थ ऊससिएणं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहु-

मोंहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥१।

तदन्तर चार नवकार मन्त्रका अथवा एक "लोगस्स" पाठ का काउस्सग्ग करे।

नमस्कार मंत्र।

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच णमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं।

(इस प्रकार पारने के पश्चात ज्ञानाचार के निमित्त नीचे लिखा हुआ 'पुक्खर वरदी' का पाठ बोलना)

अथ पुक्खरवरदी ।

पुक्खर-वर दीवड्ढे, धायइ-संडे अ जंबू-दीवे अ । भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥१॥ तम-तिमिर-पडल-विद्धंसणस्स सुरगण-नरिंद-महिअस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिय-मोह-जालस्स ॥ २ ॥ जाई जरा-मरण-सोग-पणा-सणस्स, कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स । को देव-दाणव नरिंद-गणच्चियस्स; धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ? ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे, देवं-नाग-सुवन्न किन्नर-गण-स्सब्भूअ-भावच्चिए, लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं, तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ, धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं ।

वंदणवत्तिआए ।

वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए । सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न

पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इसके पश्चात् आजूणा चउ पहरी रात्रि संबंधी, इत्यादि आलोयणा का चिंतवन करे या आठ नवकार का काउसग्ग करना चाहिये ।

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच णमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं।

इसके पश्चात् तपगच्छ वाले नीचे छपे नाणंमि, का पाठ बोले—

नाणंमि दंसणंमि ।

नाणंमि दंसणं-
मिअ, चरणंमि तवं-
मि तहय विरियंमि।

आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ॥ १ ॥

काले विणये बहुमाणे, उवहाणे तह अनिण्हवणे । वंजण-अत्थ-तदुभये, अट्ठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥

निस्संकिअ निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढ दिट्ठी अ । उववूह थिरीकरणे वच्छल्लप्पभावणे अट्ठ ॥ ३ ॥

पणिहाण जोग-
जुत्तो, पंचहिं समि-
इहिं तिहिं गुत्तीहिं
एस चरित्तायारो,
अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥

बारसविहंमि वि
तवे, सब्भिंतर बा-
हिरे कुसलदिट्ठे ।
अगिलाई अणा-
जीवी, नायव्वो सो
तवायारो ॥ ५ ॥

अणसण मूणो-
यरिआ, वित्तीसं-
खेवणं रसच्चाओ ।

काय किलेसो संली-
णया, य बज्झो
तवो होइ ॥ ६ ॥

पायच्छित्तं विण-
ओ, वेयावच्चं तहेव
सज्झाओ । झाणं
उस्सग्गो विअ
अब्भितरओ तवो
होई ॥ ७ ॥

अणिगूहिय बल
विरिओ, परक्कमई
जो जहुत्तमाउत्तो ।
जुंजइ अ जहाथामं,
नायव्वो वीरिया-
यारो ॥ ८ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं।

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं। लोअग्गमुवगयाणं नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति। तं देवदेव-महिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवर-वसहस्स वद्धमाणस्स। संसार-सागराओ तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जित-सेल-सिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स। तं धम्म-चक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दोय वंदिया जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसन्तु ॥ ५ ॥

पहले अवग्रह के बाहिर खड़े रहकर, अपने शरीर को आधा नीचे नमा कर 'इच्छामि' से लेकर 'मिउग्गहं' तक का पाठ कहना। बाद भूमि-प्रमार्जन करते हुए

'निसीहि' कहना। पीछे थोड़ा अवग्रह में प्रवेश कर, संडासा का प्रमार्जन कर, उक्कडु आसन से बैठ कर, वाम हाथ में मुँहपत्ती को लेकर, उससे वाम कान से दक्षिण कान पर्यन्त ललाटको पूंज कर, मुंहपत्ती को आगे रखनी और उसके मध्य भाग में गुरु-चरण की कल्पना कर 'अहो' से लेकर 'संफासं' तक का पाठ पढ़ते हुए आवर्त्त करना चाहिये। बाद थोड़ा नीचा नमकर, मस्तक में अंजलि रखकर, और गुरु सन्मुख दृष्टि को स्थापित कर 'खमणिज्जो' से लेकर 'वइक्कंतो' तक का पाठ कहना चाहिये। फिर 'जत्ता मे' इत्यादि आवर्त्तन कर खड़ा हो जाना चाहिये। बाद पांउसे भूमि पूंजकर,, अवग्रह से बाहिर जाकर अपने स्थान में आना चाहिये और वहां 'आवस्सियाए' से लेकर अंत तक का सब पाठ कहना चाहिये। अब वह संपूर्ण पाठ आदि से लेकर अंत तक यहां लिखा जाता है:—

सुगुरु-वांदणा।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणि ज्जाए निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउ-

ग्गहं । निसीहि, अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइअ वइक्कंता । जत्ता भे, जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो ! राइयं वइक्कमं । आवस्सियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

यह 'सुगुरुवांदणा' का पाठ सर्वत्र उक्त विधि से दो बार करना चाहिए । दूसरी बार कहने के समय 'आवस्सिआए' यह एक पद न कहना चाहिए । इसके बाद

राइअं आलोउं

इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! राइयं आलोउं ? इच्छं, आलोएमि । जो मे राइओ अइआरो कओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए । तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इसके बाद रात्रि सम्बन्धी अतिचार की 'आलोयणा' [आलोचना] करे । उसका पाठ यह है—

आलोयणा

आजूणा चार प्रहर रात्रि में मैंने जो

विराध्या होय, सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्पकाय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चउदह लाख साधारण वनस्पति काय, दोय लाख बेइंद्रिय, दोय लाख ते इन्द्रिय, दोय लाख चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चउदह लाख मनुष्य एवं चार गति के चौरासी लाख जीवायोनि में, मेरे जीव ने जो कोई जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्ये भलो जाण्यो होय, ते सव्वे हुं मन वचन कायाये करी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

अढार पापस्थानक आलोऊं

प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान,

मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति–अरति, परपरिवाद, माया मृषावाद, मिथ्यात्वशल्य. ए अठारह पापस्थानक सेव्यां होय, सेवराव्यां होय, सेवता प्रत्ये भलां जाण्यां होय, ते सव्वे हुं मन, वचन, कायाये करी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

ज्ञान, दर्शन, चारित्र पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नक्करवाली, देव गुरु धर्म की आशातना करी होय; पन्द्रह कर्मादानों की आसेवना करी होय; राजकथा, देश कथा, स्त्री कथा भक्तकथा करी होय; और जो कोई पाप परनिंदादि कीधूं होय, कराव्यूं होय, करतां प्रत्ये अनुमोद्यूं होय, सो सर्व मने, वचने, कायायें करी, रात्रि अतिचार आलो-

यण करके, पडिक्कमणा में आलोउं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

इस 'आलोयण' के बाद "सव्वस्सवि राइय" इत्यादि पाठ कहना चाहिए। इस पाठ में जहां इच्छा-कारेण सन्दिसह भगवन्! यह पद आता है, वहां उस पद से आलोए हुए अतिचारों का प्रायश्चित्त मांगा जाता है इससे उस वक्त यदि गुरुजी हों तो वे कहेंगे 'पडिक्कमह' इसके बाद वह पाठ 'इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं' कह कर पूर्ण करे।

सव्वस्सवि

सव्वस्सवि राइय दुच्चिंतिय दुब्भासिय दुच्चिट्ठिय इच्छाकारेण संदिसह भगवन्!'इच्छं' तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

पीछे संडासा का प्रमार्जन कर आसन पर बैठ कर दक्षिण गोडे को ऊंचा और वाम को नीचा कर कहे कि 'भगवन् सूत्र भणु'? [इस समय गुरुजी यदि हों तो कहेंगे 'भणेह']। बाद 'इच्छं' कह कर तीन वार "नव-कार" और तीन वार 'करेमि भन्ते' कहे।

नमस्कार मंत्र ।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच णमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥

करेमि भंते ।

करेमि भंते ! सामाइयं ! सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

पश्चात् 'इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राइओ' इत्यादि 'इच्छामि ठामि' का सम्पूर्ण पाठ बोल कर नीचे लिखा हुआ 'वन्दित्तु-सूत्र' कहना चाहिए। वन्दित्तु सूत्र, ४२

वीं गाथा तक तो बैठ कर कहना चाहिए और बाकी की आठ गाथाएँ खड़े रह कर करनी चाहिये।

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राइओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

वंदित्तु-सूत्र

वंदित्तु सव्व-सिद्धे, धम्मायरिए अ सव्व साहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं सावग-ध-

म्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहम्मि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे, अ करणे पडिक्कमे राइयं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे। अभियोगे अ निओगे, पडिक्कमे राइअंसव्वं ॥५॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु। सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे राइअंसव्वं ॥६॥ छक्कायसमारंभ, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे। सिक्खाणं च चउण्हं, पडि-

क्कमे० ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयम्मि, थूलगपा-
णाइवायविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ
पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह-बंध-छविच्छेए,
अइभारे भत्त-पाणवुच्छेए । पढम-वयस्सइ-
आरे, पडिक्कमे० ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयम्मि,
परिथूलगअलि-अवयणविरईओ । आयरिअ-
मप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥
सहसा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ-कूडलेहे अ।
बीयवयस्सइआरे, पडिक्कमे० ॥ १२ ॥ तइए
अणुव्वयम्मि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ ।
आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेण
॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध
गमणे अ। कूडतुल कूडमाणे, पडिक्कमे०
॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयम्मि निच्चं
परदार-गमणविरइओ । आयरिअमप्प-
सत्थे, इतथ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरि-

ग्गहिआ इत्तर, अणंगवीवाह; तिव्वअणुरागे। चउत्थ वयस्सइआरे, पडिक्कमे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणु-व्वए पंचमम्मि आयरिअ मप्पसत्थ म्मि। परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसं गेणं ॥ १७ ॥ धण धन्न खित्त वत्थू, रुप्प सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे। दुपए चउप्प यम्मि पडिक्कमे राइअं ॥१८॥ गमणस्सउ, परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च। वुड्ढि-सइ-अंतरद्धा, पढमंमि गुण-व्वए निंदे ॥१९॥ मज्जंमि अ मंसंमि अ पुप्फे अफले। अ गंधमल्ले अ। उवभोगपरिभोगे, बीयंमि गुण-व्वए निंदे ॥२०॥ सच्चित्ते पडिबद्धे अप्पोल दुप्पोलिअं च आहारे। तुच्छोसहि-भक्खणया, पडिक्कमे० ॥ २१ ॥ इंगाली वण साडी, भाडी फोडीसु वज्जए कम्मं। वाणिज्जं चेव य दंत लक्खरसकेसविसविसयं

॥ २२ ॥ एवं खुजंतापिल्लण कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं । सरदहतलायसोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गि-मुसल-जंतग, तणकट्ठे मंतमूल भेसज्जे । दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे० ॥ २४ ॥ न्हाणुवट्टणवन्नग विलेवणे सद्दरूवरसगंधे । वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे० ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते । दंडम्मि अणट्ठाए, तइयम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे । सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे । देसावगासियंमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चा-रविही-पमाय तह चेव भोयणाभोए । पोसह-विहि विवरीए, तइए सिक्खावए

निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएसमच्छरे चेव । कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा । रागेण व दोसेण व तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरणकरणजुत्तेसु । संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इह लोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंसपओगे । पंचविहो अइआरो, मा मज्झं हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए । मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खा-गारवेसु सन्नाकसायदंडेसु गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥ ३५ ॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइ विहु पावं

समायरे किंचि । अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥ तंपि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च । खिप्पं उवसामेई, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया । विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं । आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कयपावो वि मणुस्सो आलोइअ निंदिय गुरु-सगासे । होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरुव्व भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ । दुक्खाणमंत-किरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले मूल गुण उत्तर

गुणो, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ *तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स ॥ अब्भुट्ठिओ म्हि आरा-हणाए विरओ म्हि विराहणाए। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ-लोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥४४॥ जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविर-याण ॥४५॥ चिर-संचिय-पावपणासणीइ भव-सयसहस्स महणीए। चउवीस जिण वि-णिग्गय कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मदिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च

* "तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स" इस पद को मन में विचारना, मुख से उच्चारण नहीं करना, ऐसा सम्प्रदाय है।

॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाण-मकरणे पडिक्कमणे। असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥ ५१ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगं-छिअं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

इसके बाद दो बार 'सुगुरु वांदणा' देकर अवग्रह में ही रहते हुए यह कहना चाहिए कि—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भु-ट्ठिओम्हि अब्भिंतर राइयं खामेउं ?* इच्छं खामेमि राइयं :

यह कह कर संडासा का प्रमार्जन कर गोदोह (गोडाली) आसन से बैठ कर, दोनों हाथों का पडि-

*यहाँ पर गुरुजी, यदि वे विद्यमान हों तो कहेंगे "खामेह"

खेहण कर, मुहपत्ती को वाम (बायां) हाथ से मुख पर देकर और जीमणा हाथ को गुरु के सामने रखते हुए तथा नीचे नमते हुए "जं किंचि अपत्तियं" इत्यादि 'अब्भुट्ठिओ' का सम्पूर्ण पाठ कहना चाहिए।

जं किंचि।

जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

सुगुरु-वांदणा।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहो का-यं का-यं संफासं

खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइअ वइक्कंता । जत्ता भे! जवणिज्जं च भे! खामेमि खमासमणो। राइयं वइक्कमं । आवस्सियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

फिर दो वार "सुगुरु वांदणा" देकर भूमि प्रमार्जन करते हुए पीछे पग से अवग्रह के बाहिर आना चाहिए और यह नीचे का पाठ बोलना चाहिए:—

आयरिअ उवज्झाए ।

आयरिअ उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल-गणे अ। जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे । सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥२॥ सव्वस्स जीव-रासिस्स, भावओ धम्म निहिअ निअ-चित्तो । सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥ ३ ॥

करेमि भंते ।

करेमि भंते ! सामाइयं ! सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि ।

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे राइओ अइआरो कओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए । तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरी ।

तस्स उत्तरी करणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं

पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

"श्री महावीर स्वामी छम्मासी तप चिंतवन निमित्तं करेमि काउस्सग्गं"

इसके बाद "अन्नत्थ०" कह कर काउस्सग्ग करना, जिस में श्री वीर स्वामी ने किया हुआ छमासी तप का चिंतवन करना चाहिए, अथवा चौवीस नवकार या छः लोगस्स का काउस्सग्ग करना चाहिए।

अन्नत्थ ऊससिएणं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव

अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तांव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

लोगस्स ।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म-तित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइंच । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठ-नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला-पहीणा-जर

मरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग-बोहि-लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

काउस्सग्ग पार कर छठा आवश्यक की मुहपत्ती पडिलेहण कर के दो "वांदणा" दे कर नीचे का पाठ कहना चाहिए।

सुगुरु-वांदणा।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहो कायं काय संफासं खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो। जत्ता भे

जवणिज्जं च मे खामेमि खमासमणो। राइयं वइक्कमं। आवस्सियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालियाए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ, तस्स खमासमणो। पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि॥

सकल तीर्थ नमस्कार।

(स्रग्धरा-वृत्तम्)

सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने व्यंतराणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगण-

पटले तारकाणां विमाने। पाताले पन्नगेंद्रे स्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैत्याढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे कुंडले हस्तिदंते, वक्खारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते। विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ, श्रीम० ॥ २॥ श्रीशैले विंध्यशृंगे विपुलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले। सह्याद्रौ वैज्जयंते विपुलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ, श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितट मुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटे विटपिघनतटे देवकूटे विराटे। कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे श्री० ॥४॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे मेखले पिच्छले वा,

नेपाले नाहले वा कुवलयातिलके सिंहले केरले वा । डाहाले कौशले वा विगलितसलिले अंगले वा तमाले, श्री० ॥५॥ अंगे बंगे कलिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौडे चौडे मुरंडे वरतरद्रविडे उद्रियाणे च पौंड्रे । आद्रे माद्रे पुलिंदे द्रविडकुवलये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे । श्री० ॥ ६ ॥ चंपायां चंद्रमुख्यां गजपुरमथुरापत्तने चोज्जयिन्यां, कोशांब्यां कोशलायां कनकपुरवरे देवगिर्यां च काश्याम् । नासिक्ये राजगेहे दशपुर नगरे भद्दिले ताम्रलिप्त्यां, श्री० ॥७॥ स्वर्गे मर्त्येऽन्तारिक्षे गिरिशिखरह्रदे स्वर्णदीनीरतीरे शैलाग्रे नागलोके जलनिधिपुलिने भूरुहाणां निकुंजे ।ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसंध्यं, श्रीम० ॥८॥ श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जंबुवृक्षे,

चौजन्ये चैत्यनंदे रतिकररुचके कौंडले मानुषांके। इक्षूकारे जिनाद्रौ च दधिमुखगिरौ व्यंतरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके भवंति त्रिभुवनवलये यानि चैत्यालयानि ॥९॥
इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं ये पठंति प्रवीणाः प्रोद्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं भक्तिभाजास्त्रिसंध्यम्। तेषां श्रीतीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः प्रमुदितमनसां चित्तमानंदकारी ॥१०॥

पीछे "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसायकरी पच्चक्खाण कराना जी"

(ऐसा कहकर गुरुमुख से या वृद्ध साधर्मिक के मुख से या स्वयं स्थापनाचार्य जी के सामने अपने इच्छित नवकारसहिअं आदि का पच्चक्खाण कर लेना चाहिये)

जो चौदह नियम नहीं संभारवे उनके लिये 'नमु-कारसहिअ' का पच्चक्खाण —

नमुक्कार सहिअं

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं वोसिरइ ।

जो चौदह नियम प्रतिदिन संभारते हैं उनके लिये 'नमुक्कारसहिअ' का पच्चक्खाण—

उग्गए सूरे नमुक्कार सहिअं मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा-भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहिवत्तियागारेणं, विगइओ पच्चक्खाइ अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवा-

लेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, देसावगासियं, भोगपरिभोगं पच्चक्खाइ, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं, वोसिरइ ।

(पोरसी का पच्चक्खाण करना हो तो 'नवकारसहिअं' के स्थान पर 'पोरिसिं' कहे ।

एकासण-बिआसण-पच्चक्खाण

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं; एकासणं बिआसणं वा पच्च-

क्खाइ, दुविहिं तिविहिंपि आहारं असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा भोगेणं सह-सागारेणं; सागारिआगारेणं, आउंटणप-सारेणं, गुरुअब्भुट्ठ णेणं, पारिट्ठावणिया-गारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिया-गारेणं वोसिरइ ।

चउव्विहार-उपवास-पच्चक्खाण ।

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ, चउ-व्विहंपि आहारंअसणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरा-गारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

तिविहार उपवास पच्चक्खाण ।

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ, तिविहंपि आहारंअसणं, खाइमं, साइमं;

अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पाण-हार पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, पुरिमड्ढ, अवड्ढं, वा पच्चक्खाइ अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

(यहां स्त्रियां प्रतिक्रमण करती हों तो 'संसार-दावानल' नीचे मुआफिक कहे)—

अथ संसार दावा ।

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूली-हरणे समीरं । मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरं ॥ १ ॥ भावा-

वनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमला वलिमालितानि । संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहं । चूलावेलं गुरुगममणीसंकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥

(यदि पुरुष प्रतिक्रमण करते हों तो 'परसमयतिमिरतरणिं' की तीन गाथा कहे)—

परसमय तिमिर तरणिं ।

परसमयतिमिरतरणिं, भवसागरवारितरणवरतरणिम् । रागपरागसमीरं, वन्दे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्धसंसारबिहारकारि-दुरन्तभावारिगणा निकामम् । निर:

न्तरं केवलिसत्तमा वो भयावहं मोहभरं हरन्तु ॥ २ ॥ सन्देहकारिकुनयागमरूढ-गूढ-संमोहपंकहरणामलवारिपूरम्। संसारसागरसमुत्तरणोरुनावं, वीरागमं परम-सिद्धिकरं नमामि ॥ ३ ॥

नमोत्थुणं।

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं, पुरिसवर, पुंडरीआणं, पुरिसवर-गन्धहत्थीणं लोगु-त्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं लोग-पईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं,धम्मवर-चाउ-

रंत-चक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाण दंसण धराणं, विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमय लमरुअमणंत मक्खयमव्वाबाहमपुणरा-विति, सिद्धि गइ—नामधेयँ, ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं जेअ अईआ सिद्धा जेअ भविस्संति णागए काले। सँपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण बँदामि।

(इसके पश्चात खड़े होकर नीचे लिखा पाठ बोलना चाहिये)

अरिहंत चेइआणं।

अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्गं वंदण वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए, निरु-

वसग्गवत्तिआए, सद्धाए मेहाए धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वढ्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायानिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए । सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

(एक नवकार का काउसग करके "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः कह कर प्रकट प्रथम थुई कहे)

मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय। सिद्धारथ नंदन, त्रिशला देवी समाय ॥ मृगनायक लंछन, सात हाथ तनु मान। दिन दिन सुख दायक, स्वामी श्री वर्द्धमान ॥

लोगस्स।

लोगस्स उज्जोअगरे. धम्म तित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइंच। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्ज च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठ-

नेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रय-मला-पहीण-जर मरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग-बोहि-लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु आहियं पया सयरा । सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए ।

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउसग्गं । वंदण वत्तिआए, पूअणव त्तिआए, सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डूएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहां एक नवकार का काउस्सग्ग करके फिर प्रकट पने दूसरी थुई कहना चाहिये)

सुर नर किन्नर, वंदित पद अरविंद
कामित भर पूरण, अभिनव सुरतरु कंद।
भवियण ने तारे, प्रवहण सम निशदिश।
चौवीसे जिनवर, प्रणमुं विशवा बीस ॥१॥

पुक्खर वरदी

पुक्खरवरदीवड्ढे, घायइसँडे अजँबुदीवे अ। भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमँसामि ॥१॥ तम-तिमिर-पडल-विद्धंसणस्स सुरगणनारिंदमहियस्स। सीमाधरस्स वँदे, पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥२। जाईजरा-मरणसोगपणासणस्स, कल्लाण पुक्खल विसाल सुहावहस्स। को देवदाणवनारिंद-गणच्चियस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायँ ॥३॥ सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमए नँदी सया सँजमे, देवँनागसुवन्न किन्नरगणस्सब्भूअभावाच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥

सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं।

वंदणवत्तिआए

वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए । सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥१॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥२॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न

पारेमि ॥४॥ ताव कायँ ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ।

(एक नवकार का कायोत्सर्ग पारके तीसरी थुई कहना)

अरथें करी आगम, भांख्या श्री भगवंत । गणधरने गुँथ्या, गुणनिधि ज्ञान अनन्त । सुरगुरु पण महिमा कही न सके एकन्त । समरुँ सुखसायर मन सुद्ध सूत्र सिद्धान्त ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं ।

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥ इक्कोवि नमुक्कारो जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स । संसारसाग-

राओ तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दो य, वंदिआ जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठ निट्ठ अट्ठा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

वेया वच्चगराणं संतिगराणं सम्मद्दिट्ठि, समाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ॥

वेआवच्चगराणं ।

वेआवच्चगराणं सन्तिगराणं सम्माद्दि-ट्ठि-समाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं, जँभाइएणं, उड्डुएणं, वायानिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए,

॥ १ ॥ सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥ जाव अरिहंताणंभगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायँ ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

(यहां एक नवकार का काउसग्ग पार कर 'नमोर्हत सिद्धाचार्यो पाध्याय सर्व साधुभ्यः' कह कर चौथी थुई कहे ।

सिद्धायिका देवी, वारे विघन विशेष,
सहु संकट चूरे, पूरे आश अशेष ।
अहो निशि कर जोडी, सेवे सुरनरइंद,
जंपे गुणगणइम, श्री जिन लाभ सूरिंद

इसके पीछे बैठ कर नीचे लिखे हुए "नमोत्थुणं" पाठ को बोलना चाहिये—

नमोत्थुणं।

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं संयसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणँ चक्खुदयाणँ मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसिआणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर चाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाण दंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुयमणंत मक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो

जिणाणं जिअभयाणं, जेअ अईया सिद्धा जे अ भाविस्संतिणागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१॥

खरतर गच्छ

इसके पीछे नीचे लिखे तीन खमासमण से आचार्य उपाध्याय और सब साधुओं को वन्दन करेः—

तपगच्छ

इसके पश्चात नीचे लिखे खमासमण देना। पौषध में हों और फिर पौषध नहीं पारना हो तो खमासमण देके इच्छाकारेण संदिसह भगवन संदिसाहु । इच्छं, फिर खमासमण० इच्छाकारेण संदिसह भगवन बहुवेल करसु इच्छं

कहं कै चार खमासमण देना।

खमासमण देने में तपे गच्छ व खरतर गच्छ वालों में कोई भी अन्तर नहीं है। यहां तपगच्छ वाले इच्छामि खमा० भगवानहं, आचार्यहं, उपाध्यायहं, सर्वसाधुहँ कहं कर चार खमासमण देवें।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्री आचार्यजी मिश्र'।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्रीउपाध्यायजी मिश्र'।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'सर्वसाधुजीमिश्र'।

(इस प्रकार तीन खमासमण देकर कर यदि स्थिरता हो तो ईशान कोण में मुख कर श्री सीमंधर जिन का चैत्यवंदन और स्तवन बोलें ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् श्रीमंधरस्वामी आराधनार्थं चैत्यवंदन करुँ ? 'इच्छं'

श्री सीमंधर जिन चैत्यवन्दन ।

जय जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी । जय जय करुणा शांत दांत, भविजन हितकामी ॥१॥ जय जय इंद्र

नरिंद वृंद, सेवित शिर नामी । जय जय अतिशयानंतवंत, अन्तर्गत यामी ॥२॥ पूर्व विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम । त्रिकरण शुद्ध त्रिहुंकाल में, नित प्रति करुं प्रणाम ॥३॥

जं किंचि ।

जं किंचि नामातित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणाबिंबाइं, ताईं सव्वाइं वंदामि ॥

नमोत्थुणं

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं, पुरिसवर, पुंडरीआणं, पुरिसवर-गन्धहत्थीणं लोगु-त्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोग पईवाणं, लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं

चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउ-रंत-चक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाण दंसण घराणं, विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमय लमरुअमणंत मक्खयम-व्वाबाहमपुणरा-वित्ति, सिद्धि गइ-नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं जेअ अइआ सिद्धा जेअ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि।

जावंति।

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरि-अलोए अ सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ सन्ताइं।

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहा विदेहे अ। सव्वेसितेसिं पणओ, तिविहेण तिदण्ड विरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

श्री सीमंधर जिन स्तवन

श्री सीमंधर साहिबा, बीनतडी अवधार लाल रे। परम पुरुष परमेसरू, आतम परम आधार लाल रे ॥श्री०॥ केवल ज्ञान दिवाकरु, भोगे सादि अनंत लाल रे। भासक लोकालोक के, ज्ञायक ज्ञेय अनंत लाल रे ॥श्री०॥१॥ इन्द्र चंद्रचक्कीसरू सुर नर रहे कर जोड लाल रें। पदपंकज सेवे सदा, अणहूँता इक कोड लाल रे ॥श्री०॥ ॥२॥ चरण कमल पिंजर बसे, मुज मन हंस नित मेव लाल रे। चरण शरण मोहि

आशरो, भव भव देवाधिदेव लाल रे ॥ श्री० ॥३॥ अधम उद्धारण छो तुम्हें, दूर हरो भव दुःख लाल रे। कहे जिनहर्ष दया करी, देजो अविचल सुक्ख लाल रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥

जय वियराय

जय वीयराय ! जगगुरु ! होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! भव निव्वेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफल सिद्धी॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च। सुहगुरु-जोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा ॥२॥

अरिहंत चेइआणं

अरिहंत चेइआणं करोमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कार-वत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्ति-

आए निरुवसग्गवत्तिआए ॥ १ ॥ सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढ माणीएठामि काउस्सग्गँ ॥ २ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहां एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः" कह कर श्री सीमंधरजिन की थुई कहें—)

अथ थुई ।

महीमंडणं पुण्णसोवन्नदेहं, जणाणं-दणं केवलनाणगेहं. महाणंदलच्छी बहुबुद्धि शायं, सुसेवाम सीमंधरं तित्थिरायं ॥१॥

(पश्चात नीचे लिखे तीन खमासमण देकर श्री सिद्धाचल जी के सामने मुख करके सिद्धाचल जी का चैत्यवन्दन करें ।)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन श्री सिद्ध-गिरि आराधनार्थ चैत्यवंदन करूँ ? 'इच्छं'

श्री सिद्धाचलजी चैत्यवंदन ।

जय जय नाभि नरिंद नंद, सिद्धाचल मंडण । जय जय प्रथम जिणंद चंद, भव दुःख विहंडण ॥ जय जय साधु सुरिंद

विंद, वंदिय परमेसर। जय जय जगदा-नंद कंद, श्रीरिषभ जिणेसर ॥ अमृतसम जिन धर्मनो ए, दायक जगमें जाण। तुझ पद पंकज प्रीति घर, निशि दिन नमत कल्याण ॥१॥

जं किंचि।

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायलि माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

नमोत्थुणं।

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं, पुरिसवर पुंडरीआणं, पुरिसवर-गन्धहत्थीणं लोगु-त्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोग-पईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं

चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाण दंसण धराणं, विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणँ तिन्नाणँ तारयाण बुद्धाणं बोहयाण मुत्ताण मोअगाणँ सव्वन्नूण सव्वदरिसीण, सिव-मयलमरुअमण त मक्खयमव्वाबाहमपुणरा-वित्ति, सिद्धि गइ-नामधेयँ, ठाणँ सँपत्ताणँ नमो जिणाण, जिअभयाण जेअ अईआ सिद्धा जेअ भविस्सँति णागए काले। सँपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण बँदामि।

जावंति चेइआइं।

जावंति चेइआइँ, उड्ढअ अहे अ त्तिरिअ लोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे इह संतो तत्थ संताइं ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदँडविरयाणं ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

श्री सिद्धाचल जी का स्तवन

सिद्धाचल गिरि भेट्या रे धन्य भाग्य हमारा ॥ विमलाचल गिरि० ॥ एह गिरिवरनी महिमा महोटी, कहेताँ न आवे पारा । रायण रूख समोसर्या स्वामी, पूर्व नवाणूँ वारा रे ॥ ध० ॥१॥ मूलनायक श्री आदि जिनेश्वर, चौमुख प्रतिमा चार । अष्ट द्रव्यसे पूजा भावें, समकित मूल आधारारे ॥ ध० ॥ २ ॥ दूर देशथी हूं इहाँ आयो, श्रवण सुणी गुण थारा । पतित उद्धारण बिरुद्द तुमारो, एह तीरथ जग सारारे ॥ ध०

॥ ३ ॥ भाव भक्तिसें प्रभु गुण गावे, अपना जन्म सुधारा । यात्रा करी भवि जन शुभ भावे, नरक तिर्यंच गति वारा रे ॥ घ० ॥४॥ संवत अठारबयासी आषाढे, वदि आठम भोमवारा । प्रभुजीके चरण प्रताप से संघमें, क्षमारतन प्रभु प्यारा रे ॥ घ० ॥५॥

जयवीअराय ।

जय वीअराय जगगुरु, होउ ममं तुह-पभावओ भयवं भवनिव्वेओ मग्गाणुसा-रिआ इट्ठफलसिद्धि ॥१॥ लोग विरुद्धच्चाओ गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा ॥२॥

अरिहंत चेइआणं ।

अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्ति-

अथ सन्ध्यासमायिक-विधिः ।

पिछले प्रहर धर्मशाला में जाकर वहां उसका प्रमार्जन कर वस्त्र आदि की पडिलेहणा करनी चाहिये । यदि देर होगई हो तो केवल दृष्टि प्रतिलेखना करलेनी चाहिये इसके पीछे यदि गुरुजी विद्यमान होतो उन के सामने (यदि वे न हो तो स्थापनाचार्य के सामने) आकर भूमी का प्रमार्जन कर आसन को बायें पास में रखकर खमासमण देना चाहिये । यदि स्थापनाचार्य के सामने सामायिक लेनी पडे तो तीन बार नवकार मन्त्र को कहकर स्थापनाचार्य के प्रतिलेखन के तेरह बोलों का चिन्तन करते हुये स्थापनाचार्य की स्थापना कर लेनी चाहिये, इसके पीछे खमासमण देकर नीचे लिखे हुये पाठको बोलना चाहिये ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं ।

इसके पीछे फिर खमासमण देकर मुहपत्ति का पडिलेहन करे, फिर एक खमासमण को देकर पीछे लिखे हुये पाठ को बोले—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसाउं ? इच्छं । इच्छाकारेण संदि-

सह भगवन् ! सामायिक ठाउं ? इच्छं ।

इसके पीछे फिर एक खमासमण देकर अर्द्धावनत होकर तीन वार नवकार मन्त्र का गुणना करके नीचे लिखे हुये पाठ को बोले—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पसाय करी सामायिक दण्डक उच्चरावो जी ?

इसके पीछे नीचे लिखे हुये "करेमि भन्ते" सामायिक सूत्र को गुरु वचन का अनुभाषण करते हुये तीन वार कहना चाहिये—

करेमि भन्ते ! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

फिर एक खमासमण देकर नीचे लिखे हुये पाठ को बोलना चाहिये—

तपगच्छ वाले पहले इरयावही करके फिर करेमि भन्ते एक वार कहे ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरिया-

वाहिय पडिक्कमामि ? इच्छं । इच्छामि पडि-क्कमिउम्, इरियावाहियाए, विराहणाए गमणा-गमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया संघट्टि-या, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणा-ओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १ ॥

"तस्स उत्तरी" का पाठको बोलना चाहिये—

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं क-म्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥१॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं

सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिंदिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

इसके पीछे एक "लोगस्स" का अथवा चार नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये, तथा "णमो अरिहंताणं" कह कर काउस्सग्ग को पारना चाहिये, इस के पश्चात् प्रगट रीति से नीचे लिखे हुये लोगस्स का पाठ बोलना चाहिये—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे अरिहन्ते कित्तइस्सं, चउवीसम्पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वन्दे, सम्भवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वन्दे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदन्तं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च विमलमणंतं च जिणं, धम्मं सन्तिं च वन्दामि ॥३॥ कुन्थुमरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमिजिणं

च । वन्दामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहूयरय-मला पहीणजरमरणा । चउवीसम्पि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयन्तु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदिय माहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चन्देसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसन्तु ७.

इसके बाद नीचे बैठ कर चउवीहार उपवास किया हो तो मुहपत्ति नहीं पडिलेहन और वांदणा भी नहीं देना पच्चक्खाण भी किया हो तो फिर नहीं करना । 'यदि तिविहाहार उपवास' हो तो मुहपत्ति का पडिलेहन करना किन्तु वांदणा नहीं देना चाहिये। और यदि 'आयंबिल' एकाशन कर भोजन किया हो तो मुहपत्ति का पडिलेहन करना और दो वार "सुगुरुवांदणा" देनी चाहिये और दूसरी वार वंदणा में 'आवस्सियाए' पद नहीं कहना चाहिये

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं ।

निसीहि अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पाकिलंताणं वहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कन्तो, जत्ता भे जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो दिवसियं वइक्कमं आवास्सियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जंकिंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इसके पीछे एक खमासमण देकर नीचे लिखे हुये पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाउं ? इच्छं ।

फिर दूसरा खमासमण देकर—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करूं ? इच्छं।

इसके पीछे खमासमण देकर आठ नवकार का गुणना करना चाहिये, फिर एक खमासमण दें। तपगच्छ वाले तीन नवकार गिने।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणो संदिसाउं ? इच्छं।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वेसणो ठाउं इच्छं।

यदि शीत आदि के कारण चद्दर ओढने की आवश्यकता हो तो एक खमासमण देकर—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पागरणुं संदिसाउं इच्छं।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पागरणुं पडिग्गहुं ? इच्छं।

इसके पीछे सामायिक के समय में (४८ मिनट पर्यन्त) शुभ ध्यान करना चाहिये, अथवा नीचे की विधि के अनुसार दैवसिक प्रतिक्रमण करना चाहिये-(जो प्रतिक्रमण नहीं करे तो सामायिक पारे सो विधि प्रभात की

सामायिक के माफिक जानना। पेज नम्बर ३४

* इति सन्ध्या सामायिक विधिः *

देवसिय-प्रतिक्रमण-विधि।

पूर्वोक्त विधि से सन्ध्याकाल में सामायिक लेने के बाद खमासमण देकर नीचे लिखे हुये पाठ को बोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्य-वन्दन करूं? इच्छं।

जय तिहुअणवरकप्परुक्ख जय जिण धन्नंतरि, जय तिहुअणकल्लाणकोस दुरिअक्क-रिकेसरि। तिहुअणजणआविलंघियाण भुव-णत्तयसामिअ, कुणसु सुहाइ जिणेस! पास! थम्भणयपुरट्ठिअ॥ १॥ तइ समरंत लहंति झत्ति वरपुत्तकलत्ताइ, धण्णसुवण्णहिरण्णपु-ण्ण जण भुंजइ रज्जंइ। पिक्खइ मुक्खं अ-संखसुक्ख तुह पास पसाइण, इअ तिहुअण-वरकप्परुक्ख सुक्खइ कुण मह जिण॥ २॥ जरजज्जर परिजुण्णकण्ण नट्ठट्ठु सुकुट्ठिण,

चक्खुक्खीण खएण खुरण नर सल्लिय सूलिण तुह जिण सरणरसायणेण लहु हुंति पुणण्णव जयधन्नंतरि पास मह वि तुह रोगहरो भव ॥ ३ ॥ विज्जाजोइसमंततंतसिद्धिउ अपयत्तिण भुवणऽब्भुउ अट्ठविह सिद्धि सिज्झहिं तुह नामिण । तुह नामिण अपवित्तओ वि जण होइ पवित्तउ, तं तिहुअणकल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्दपउत्तइ मंततंतजंताइ विसुत्तइ, चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिउवग्ग विगंजइ । दुत्थियसत्थअणत्थघत्थ नित्थारइ दय करि, दुरियइ हरउ सु पास देउ दुरियक्करि केसरि ॥ ५ ॥

जह तुह रूविण किणवि पेयपाइण वेलवियउ, तउ जाणउ जिण पास तुम्ह हउं अंगीकिरिअउ । इय मह इच्छिउ ज न होइ सा तुह ओहावणु, रक्खंत तह नियकित्तिणेय जुज्जइ अवहीरणु ॥ २९ ॥ एह महारिय जत्त

देव इहु न्हवणमहूसउ, जं अणालियगुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिद्धउ । इस महं पसिहसुपासनाह धम्भणयपुरट्ठिअ, इय मुणिवर सिरिअभयदेव विणवइ आणींदिअ ॥ ३० ॥

तपगच्छ वाला १५ तिथि में अलग २ चैत्यवन्दन करते हैं जैसा चाहें वैसा करें ।

जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतियसुहफलय, जय समत्थपरमत्थ जाणय जय जय गुरुगरिम गुरु । जय दुहित्त-सत्ताण ताणय थम्भणयट्ठिय पास जिण, भवियह भीमभवत्थु भयअवं णंताणं तगुण तुज्झ तिसंभ नमोत्थु ॥ १ ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपइवाणं लोगपज्जोअगराणं अभ-

धदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदया-
णं, वोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं,
धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत-
चक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवरनाणदंसण-धराणं,
वित्रअट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं
तारयाणं, बुद्धाणं वोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं
सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणं
तमक्खय मव्वाबाहमपुणरावित्ति-सिद्धिगइ-
नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जि-
अभयाणं जे अ अईया सिद्धा, जे अ भवि-
स्संतिऽणागए काले। संपइ अ वट्टमाणा,
सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं करेमि काउ-
स्सग्गं ॥ १ ॥

वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिए सक्कारव-
त्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए
निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिइए

धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिंदिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

इसके पीछे एक नवकार का काउस्सग्ग करना चाहिये, एक मनुष्य काउस्सग्ग को पार कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" इस वाक्य को कहकर नीचे लिखी स्तुति को बोले—

श्री शांतिनाथजी, साता कारक देव। मनमोहन स्वामी, अनुपम मूरति सेव ॥ मुझ रोमहुलसिया, वन्दूँ प्रणमूँ नाथ। शुद्ध समकित मांगूँ, जोड प्रभु के हाथ ॥ १ ॥

उक्त स्तुतिको सुनके, पीछे अन्य लोग काउस्सग्गको पारें

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मातित्थयरे जिणे अरिहन्ते कित्तइस्सं, चउवीसम्पि केवली ॥१॥ उसभमाजिअं च वन्दे, सम्भवमाभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वन्दे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदन्तं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च विमलमणंतं च जिणं, धम्मं सन्तिं च वन्दामि ॥३॥ कुन्थुमरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नामिजिणं च । वन्दामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहूयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसम्पिं जिणवरा तित्थयंरा मे पसीयन्तु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदिय माहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चन्देसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसन्तु ७.

इसके पीछे "सव्वलोए अरिहन्त चेइआणं करेमि काउस्सग्गं" बोलकर ।

वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कार-वत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआ-ए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भग-वंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, तावकायं ठा-णेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

इसके पीछे एक नवकार का काउसग्ग करके पूर्व के मुआफिक एक मनुष्य पहिले काउस्सग्ग को पार कर नीचे लिखी हुई दूसरी स्तुति को बोले और शेष मनुष्य उसे

सुन कर पीछे काउस्सग्ग को पारें।

ऋषभादिक जिनवर अनन्तगुणी महाराज। संसारसमुद्रे तरण तारण जहाज ॥ सुखसम्पत्तिकारण इहपरलोक दिणन्द। कर जोडी प्रणमुं अहोनिशि सकल जिणन्द ॥२॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जम्बूदीवे अ। भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तम तिमिरपडलविद्धं-सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स। सीमाधरस्स वन्दे, पप्फोडियमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स। को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥३॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नन्दी सया संजमे देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअ-भावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं

वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउ-
स्सग्गं ॥

वंदणवत्तिआए पूअणवत्तिए सक्कारव-
त्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए
निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिइए
धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि
काउस्सग्गं ॥ १ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससीएणं खासि-
एणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिस-
ग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंग-
संचालेहिं सुहुमेहिं खलसंचालेहिं सुहुमेहिं
दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभ-
ग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव
अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि
ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणँ
वोसिरामि ॥ १ ॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करे उसे पार कर एक

मनुष्य को नीचे लिखी हुई तीसरी स्तुति को बोलना चाहिये।

वर आगम जिनवर भाषे अर्थ विचार श्रीगणधर गुरु ते गूँथ्या गुण हितकार। है श्रीसंघ सकल को उत्कृष्टा आधार, नित नित भावे सेवो श्रुतसागर सुखकार ॥ ६ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं। लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजलि नमंसंति। तं देवदेवमहियं, सिरसा वन्दे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स, संसारसागराओ तारेइ नर व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिंत-सेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

वेआवच्चगराणं संतिगराणं सम्मद्दिट्ठि-समाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

एक नवकार का काउस्सग्ग करे पीछे एक मनुष्य काउस्सग्ग को पारकर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" इस वाक्य को कहकर नीचे लिखी हुई चोथी स्तुति कहे और शेष आदमी स्तुति को सुन कर पीछे काउस्सग्ग को पारें—

श्री जिन शासनदेवी सकल मनोरथ पूर, कर मंगल माला सब संकट को चूर।

सुख पूरण स्वामी खरतरगच्छ सुखखान, इन सब को वन्दे क्षमसागर शुभध्यान ॥ ४ ॥

इसके पीछे बैठकर नमोत्थुणं बोलना चाहिये—

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवरनाणदंसण-धराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खय मव्वाबाहमपुणरावित्ति-सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जि-

अभयाणं जे अ अईया सिद्धा, जे अ भव-स्संतिऽणागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

इसके पीछे एक एक खमासमण देकर "श्रीआचार्यजीमिश्र" "श्रीउपाध्यायजी मिश्र" वर्तमान गुरु महाराज को वन्दू और "सर्वसाधुजी को वन्दू" कहकर उन्हें वन्दन करना चाहिये, इसके पीछे गोडाली आसन से बेठ कर मस्तक को नमाकर नीचे लिखे हुये "सव्वस्सवि देवसिय बोलना चाहिये—

सव्वस्सवि देवसिय दुच्चिंतिय दुब्भासिय दुच्चिट्ठिय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इसके पीछे खडे होकर नीचे लिखे हुये "करेमि भंते को बोलना चाहिये—

करेमि भन्ते! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सतो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं, सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडम् ॥ १ ॥

तस्स उत्तरीकरणेणम् पायच्छित्तकरणेणं विसोहीकरणेणम् विसल्लीकरणेणम् पावाणम् कम्माणम् निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गम्

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससीएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएण उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं

दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणँ वोसिरामि ॥ १ ॥

इसके पीछे आठ नवकार का काउसग्ग करना चाहिये पीछे " नमो अरिहंताणं " कह कर काउसग्ग को पार कर प्रकट रीति से " लोगस्स " को बोलना चाहिये ।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे अरिहन्ते कित्तइस्सं, चउवीसम्पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वन्दे, सम्भवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वन्दे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदन्तं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च विमलमणंतं च जिणं, धम्मं सन्ति च वन्दामि ॥३॥ कुन्थुम अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वन्दामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं

च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहूयरय-मला पहीणजरमरणा । चउवीसम्पि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयन्तु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चन्देसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसन्तु ७.

इसके पीछे संडासा का प्रमार्जन कर बैठ कर तीजे आवश्यक की मुहपत्ति का पडिलेहन करना चाहिये, इस के पश्चात नीचे लिखे हुए पाठ से 'सद्गुरु वन्दना' करना चाहिये।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कन्तो, जत्ता भे जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो दिवसियं वइक्कमं आवास्सियाए

पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

यह पाठ दो वार बोलना । इसमें दूसरी वार 'आवस्सियाए' पद नहीं बोलना चाहिये ।

इसके पीछे अवग्रह में ही खडे रहकर नीचे लिखे हुये पाठ को वोलना चाहिये—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसिअं आलोउ ? इच्छं । आलोएमि ॥ १ ॥

जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असावगपाउग्गो

नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १ ॥

अजुणा चार प्रहर दिन में मैंने जो जीव विराध्या होय सात लाख पृथिविकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वायुकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पति काय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख बेइन्द्रिय, दो लाख तेइन्द्रिय, दो लाख चोरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यञ्चपञ्चेंद्रिय चौदह लाख मनुष्य, एवं चार गति के चौरासी लाख जीवायोनि में मेरे जीव ने जे कोइ जीव हण्यो होय हणाव्यो होय हणतां प्रत्ये भलो जाण्यो होय ते सव्वे हूं मन वचन काया यें करी

तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १ ॥

प्राणातिपात मृषावाद अदत्तादान मैथुन परिग्रह क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष कलह अभ्याख्यान पैशुन्य रति अरति परपरिवाद मायामृषावाद मिथ्यात्वशल्य, ये अठारे पाप स्थानक सेव्या होय, सेवराव्या होय सेवतां प्रत्ये भला जाण्या होय ते सव्वे हूं मन वचन काया यें करी तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥१॥

ज्ञान दर्शन चारित्र पाटी पोथी ठवणी कवली नवकरवाली देव गुरु धर्म की आशातना करी होय, पनरे कर्मादानों की आसेवना करी होय राजकथा देशकथा स्त्रीकथा भक्तकथा करी होय, और जो कोई पाप परनिन्दादि कीधुं होय कराव्युं होय करता अनुमोद्युं होय सो सर्व मने वचने कायाये करके दिन प्रति चार अलोयण करके पडिक्कमणा में आलोउँ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥ १ ॥

उक्त पाठ को बोल कर अतिचारों की आलोचना करनी चाहिये—

सव्वस्सवि देवसिय दुच्चिंतिय दुब्भासिय दुच्चिट्ठिय इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इच्छं। तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

उक्त पाठ को बोलने के पीछे संडासा से प्रमार्जित भूमी में आसन पर बेठ कर यह कहना चाहिये—

भगवन्! सूत्र भणूं? इच्छं।

इसके पीछे तीन बार नवकार मन्त्र को बोलना चाहिये, तदन्तर तीन बार; नीचे लिखे हुये "करेमि भंते" को बोलना चाहिये—

करेमि भन्ते! सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि तस्स भन्ते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ

उस्सतो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हंमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं वारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडम् ॥ १ ॥

इसके पीछे वंदितु सुत्र कहे सो पेज नम्बर ३४ में है सो पचास गाथा पूरी कहकर वांदना ८३ पेज में हैं सो दो वांदना देकर के अभुठिया खामे फिर दो वांदना देवे फिर आयरियउवज्झाय कहे सो ८५ के पेज में हे वहां से देवसि की विधि बराबर चलती हे नोट दिया हुवा हे सो नोट मुजब करना।

दोनो गच्छ की विधि १३६ पेज तक करना।



जरजज्जर परिजुण्णकण्ण नट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण,
चक्खुक्खीण खएण खुण्णनरसल्लिय सूलिण।
तुह जिण सरणरसायणेण लहु हुंति पुणण्णव,
जय धन्नंतरि पास मह वि तुह रोगहरो भव ॥३॥
विज्जाजोइसमंततंतसिद्धिउ अपयत्तिण,
भुवणऽब्भुअ अट्ठविह सिद्धि सिज्झहि तुह नामिण।
तुह नामिण अपवित्तओ वि जण होइ पवित्तउ,
तं तिहुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥४॥
खुद्द पउत्तइ मंततंतजंताइ विसुत्तइ,
चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिउवग्ग विगंजइ।
दुत्थिअसत्थ अणत्थघत्थ नित्थरइ दय करि,
दुरियइ हरउ स पासदेउ दुरियक्करिकेसरि ॥५॥
तुह आणा थंभेइ भीमदप्पुद्धुरसुरवर,
रक्खसजक्खफणिंदविंदचोरानलजलहर।
जलथलचारि रउद्दपसुजोइणि जोइय,
इअ तिहुअणअविलंघिआणि जय पास

सुसामिय ॥ ६ ॥
पत्थिअ अत्थ अणत्थ तत्थ भत्तिब्भरनिब्भर,
रोमं-चंचियचारुकाय किन्नरनरसुरवर ।
जसु सेवहि कमकमलजुयलपक्खालियकलिमलु,
सो भुवणत्तयसामि पास मह मद्दउ रिउबलु॥७॥
जय जोइयमणकमलभसल भयपंजर कुंजर,
तिहुअणजणआणंदचंद भुवणत्तयदिणयर ।
जय मइमेइणिवारिवाह जयजंतुपियामह,
थंभणयट्ठिय पासनाह नाहत्तण कुण मह ॥८॥
बहुविहुवन्नु अवन्नु सुन्नु वन्निउ छप्पन्निहिं,
मुक्खधम्मकामत्थकाम नर नियनियसत्थिहिं ।
जं ज्झयहि बहुदरिसणत्थ बहुनामपसिद्धउ,
सो जोइयमणकमलभसल सुहु पास पवद्धउ॥९॥
भवब्भिमल रणझणिरदंसण थरहरिय सरीरय
तरलियनयण विसुन्न सुन्न गग्गरगीर करुणय
तइ सह सहत्ति सरंत हुंति नर नासियगुरुदर,
मह विज्झवि सज्झसइपासभयपंजर कुंजर॥१०॥

सुसामिय ॥ ६ ॥

पत्थिअ अत्थ अणत्थ तत्थ भत्तिब्भरनिब्भर,
रोमं-चंचियचारुकाय किन्नरनरसुरवर ।
जसु सेवहि कमकमलजुयलपक्खालियकालिमल्लु,
सो भुवणरायसामि पास मह मद्दउ रिउबल्लु॥७॥
जय जोइयमणकमलभसल भयपंजर कुंजर,
तिहुअणजणआणंदचंद भुवणराय दिणयर ।
जय मइमेइणिवारिवाह जयजंतुपियामह,
थंभणयट्ठिय पासनाह नाहत्तण कुण मह ॥८॥
बहुविहुवन्नु अवन्नु सुन्नु वन्निउ छप्पन्निहिं,
मुक्खधम्मकामत्थकाम नर नियनियसत्थिहिं ।
जं ज्झयहि बहुदरिसणत्थ बहुनामपसिद्धउ,
सो जोइयमणकमलभसल सुहु पास पवद्धउ॥९॥
भवविब्भल रणझणिरदंसण थरहारिय सरीरय
तरलियनयण विसुन्न सुन्न गग्गरगीर करुणय
तइ सह सहत्ति सरंत हुंति नर नासियगुरुदर,
मह विज्झवि सज्झसइपासभयपंजर कुंजर॥१०॥

पइं पासि वियसंतनित्तपत्तंतपवितिय-
वाहपवाहपवूढरूढदुहदाह सुपुलइय ।
मन्नइ मन्नु सउन्नु पुन्नु अप्पाणं सुरनर,
इय तिहुअण आणन्दचन्द जय पास
जिणेसर ॥ ११ ॥
तुह कल्लाण-महेसु घंटटंकारऽवपिल्लिय,
वल्लिरमल्ल महल्लभत्ति सुरवर गंजुल्लिय ।
हल्लुप्फलिय पवतयंति भुवणे वि महुसव,
इय तिहुअणआणंदचंद जय पास
सुहुब्भव ॥ १२ ॥
निम्मलकेवल किरणनियरविहुरियतमपहयर,
दंसियसयलपयत्थसत्थ वित्थरिपहाभर ।
कलिकलुसियजणघुयलोयणह अगोयर,
तिमिरइ निरु हर पासनाह भुवणतय
दिणयर ॥ १३ ॥
तुह समरणजलवरिससित माणवमइमेइणि,
अवरावरसुहुमत्थबोहकंदलदलरोहिणि ।

जाइय फलभरभरिय हरियदुहदाह अणोवम,
इय मइमेइणि वारिवाह दिसी पास मइं
मम ॥ १४ ॥
कय अविकलकल्लाणवल्लि उल्लूरिय दुहवणु,
दाविय सग्गपवग्गमग्ग दुग्गइगमवारणु ।
जयजंतुह जणएण तुल्ल जं जणिय हियावहु,
रम्मु धम्मु सो जयउ पासु जयजन्तु
पियामहु ॥ १५ ॥
भुवणारणणिवास-दरिय-परदरिसणदेवय,
जोइणिपूयणखितवालखुद्दासुरपसुवय ।
तुह उतट्ठ सुनट्ठ सुट्ठु अविसठ्ठुल्ल चिट्ठहि,
इय तिहुअणवणसीह पास पावा२
पणासहि ॥ १६ ॥
फणिफणफारफुरंतरयणकररंजियनहयल–
फलिणीकंदलतमालनीलुप्पलसामल ।
कमठासुरउवसग्गवग्गसंसग्गअगंजिय,
जय पच्चक्खजिणेस पास थंभणयपुरट्ठिय॥१७॥

मह मणु तरलु पमाणु नेय वायावि विसंठुलु,
नेय तणुरवि अविणायसहावु आलसविहलथुलु ।
तुह माहप्पु पमाणु देव कारुण्णपवित्तउ,
इय मइ मा अवहीरि पास पालिहि
विलवंतउ ॥ १८ ॥
किं किं कप्पिउ न य कलुणु किं किं व न जंपिउ,
किं व न चिट्ठिउ किट्ठु देव दीणयमवलंबिउ ।
कासु न किय निप्फल्ल लल्लि अम्हहि दुहत्तिहि,
तहवि न पत्तउ ताणु किं वि पइ पहु
परिचत्तिहि ॥ १९ ॥
तुहु सामिउ तुहु मायबप्पु तुहु मित्त पियंकरु,
तुहु गइ तुहु मइ तुहु जि ताणु तुहु गुरु खेमंकरु ।
हउं दुहभरभारिउ वराउ राउ निब्भग्गह,
लीणउ तुह कमकमलसरणु जिण पालहि
चंगह ॥ २० ॥
पइ किवि कय नीरोय लोय किवि पाविय सुहसय,
किं वि मइमंत महंत के वि किवि साहिय सिवपय,

के वि गंजियरिउवग्ग के वि जसधवलियभूयल,
मइ अवहीरहि केण पाससरणागयवच्छल॥२१॥
पच्चुवयारनिरीह नाह निप्पन्नपओयण,
तुह जिणपास परोवयारकरणिक्कपरायण।
सत्तुमित्तसमचित्तवित्ति नयनिंदयसममण,
मा अवहीरि अजुग्गहो वि मइ पास
निरंजण ॥ २२ ॥
हउँ बहुविहदुहतत्तगत्तु तुहु दुहनासणपरु,
हउँ सुयणह करुणिक्कठाणु तुहु निरु करुणायरु
हउँ जिण पास असामिसालु तुहु
तिहुअणसामिअ,
जं अवहीरहि मइ झखंत इय पास न
सोहिय ॥ २३ ॥
जुग्गाऽजुग्गविभाग नाह न हु जोयहि तुह सम,
भुवणुवयारसहाव भावकरुणारससत्तम।
समविसमइ किं घणु नियइ भुवि दाह समंतउ,
इय दुहिबंधव पासनाह मइ पाल थुणंतउ॥२४॥

न य दीणहदीणयं मुयवि अन्नु वि कि वि जुग्गय
जं जोई वि उवयारु करहि उवयारसमुज्जय ।
दीणह दीणु निहणु जेण तइ नाहिण चत्ताउ,
तो जुग्गउ अहमेव पास पालहि मइ चंगउ ॥ २५॥
अह अन्नु वि जुग्गय विसेसु कि वि
मन्नहि दीणह,
जं पासि वि उवयारु करइ तुहु नाह समग्गह ।
सुच्चिय किल कल्लाणु जेण जिण तुम्ह पसीयह
किं अन्निण तं देव मा मइ अवहीरह ॥ २६ ॥
तुह पत्थण न हु होइ विहलु जिण जाणउ किं पुण
हउँ दुक्खिय निरु सत्तचत्त दुक्कहु उस्सुयमण ।
तं मन्नउ निमिसेण एउ एउ वि जइ लब्भइ,
सच्चं जं भुक्खियवसेण किं उंबरु पच्चइ ॥२७॥
तिहुअणसामिय पासनाह मइ अप्पु पयासिउ,
किज्जउ जं नियरूव सरिसु न मुणउ
बहु जंपिउ ।
अन्नु न जिण जगि तुह समो वि दक्खिन्नु

हयासउ,
जइ अवगन्नसि तुह जि अहह कह होसु
हयासउ ॥ २८ ॥
जइ तुह रूविण किण वि पेयपाइण वेलावियउ,
तु वि जाणउ जिणपास तुम्हि हउँ अंगीकारिअउ
इय मह इच्छिउ जं न होइ सा तुह ओहावणु,
रक्खंतह नियकित्ति णेय जुज्जइ अवहीरणु॥२९॥
एहु महारिय जत्त देव इहु न्हवणमहूसउ,
जं अणलियगुणगहण तुम्ह मुणिजण
अणिसिद्धउ ।
एम पसीहसु पासनाह थंभणयपुरट्ठिय,
इय मुणिवरु सिरिअभयदेउ विन्नवइ
अणिंदिय ॥ ३० ॥

जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतिय सुहफलय, जय समत्थ--परमत्थ जाणय जय जय गुरुगरिम गुरु। जय दुहत्त-सत्ताण ताणय थंभणयट्ठिय पासजिण, भवियह

भीमभवत्थु भय अवागीतारणांतगुण, तुज्झ तिसंझ नमोऽत्थु ॥ १ ॥

॥ अथ श्री सकलार्हत ॥

सकलार्ह त्प्रातिष्ठान । मधिष्ठानं शिव श्रिय ।
भूर्भुवः स्वस्त्रयीसान । मार्हत्यं प्रणिदध्महे ॥१॥
नामाकृति द्रव्यभावैः । पुनत स्त्रिजगज्जन ।
क्षेत्रे कालेच स्र्वस्मि । न्नर्हतः समुपास्महे ॥२॥
आदिमं पृथिवीनाथ । मादिमं निःपरिग्रह ।
मादिमं तीर्थनाथंच । ऋषभस्वामिनं स्तुमः॥३॥
अर्हत मजितं विस्व । कमलाकर भास्करं ।
अम्लान केवला दर्श । संक्रान्त जगतं स्तुवे॥४॥
विस्व भव्य जनाराम । कुल्यातुल्या जयंतु ताः ।
देशना समये वाचः । श्रीसंभव जगत्पतेः ॥५॥
अनेकांत मतांभोधि । समुल्लासन चंद्रमाः । द्द्या दमद मानंद । भगवान् भिनंदन ६ द्युसत्किरीट । शाणाग्रो तेजितांद्रि नखावालि भगवान सुमति-स्वामि तनोत्वाभिमताभिवः ७ पद्म प्रभ प्रभोर्देह

भासः पुष्णंतु वः श्रियम् । अंतरंगारिमथने, कोपाटोपादिवारुणाः ॥८॥ श्रीसुपार्श्वजिनेंद्राय, महेंद्रमहितांघ्रये । नमश्चतुर्वर्णसंघ,—गगना भोगभास्वते ॥९॥ चंद्रप्रभप्रभोश्चंद्र, मरीचिनिचयोज्वला । मूर्तिर्मूर्त्तसितध्यान,—निर्मितेव श्रियेऽस्तुवः ॥ १० ॥ करामलकवद्विश्वं । कलयन् केवलश्रिया । अचिंत्यमाहात्म्यनिधिः सुविधिर्बोधयेऽस्तु वः ॥११॥ सत्वानां परमानंद कंदोद्भेदनवांबुदः । स्याद्वादामृतनिस्यंदी, शीतलः पातु वो जिनः ॥१२॥ भवरोगार्त्तजंतूना मगदंकारदर्शनः । निःश्रेयसश्रीरमणः, श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तु वः ॥१३॥ विश्वोपकारकीभूत, तीर्थ कृत्कर्मनिर्मितिः । सुरासुरनरैः पूज्यो वासुपूज्यः पुनातु वः ॥१४॥ विमलस्वामिनो वाचः कतकक्षोदसोदराः । जयंति त्रिजगच्चेतो,—जलनैर्मल्यहेतवः ॥१५॥ स्वयंभूरमणस्पर्द्धि,—करुणारसवारिणा ॥ अनंतजिदनंतां वः,

प्रयच्छतु सुखश्रियम् ॥१६॥ कल्पद्रुमसधर्माण,
मिष्टप्राप्तौशरीरिणाम् । चतुर्द्धाधर्मदेष्टारं, ध-
र्मनाथं सुपास्महे ॥१७॥ सुधासोदर वाग्ज्यो
त्स्ना । निर्मली कृत दिङ्मुखः । मृगलक्ष्मा
तमःशांत्ये । शांतिनाथ जिनोस्तुवः ॥ १८ ॥
श्रीकुंथुनाथो भगवान, सनाथोऽतिशयर्द्धिभिः
सुरासुरनृनाथाना।मेकनाथोऽस्तुवःश्रिये॥१९॥
अरनाथस्तु भगवां, श्चतुर्थारनभोरविः चतुर्थ
पुरुषार्थश्री)विलासं वितनोतु वः ॥२०॥सुरासु
रनराधीश । मयूरनववारिदम् । कर्म्मद्रून्मूलने
हस्ति । मल्लं माल्लमभिष्टुमः ॥ २१ ॥ जगन्म
हामोहनिद्रा । प्रत्यूषसमयोपमम् । मुनिसुव्रत
नाथस्यदेशना वचनं स्तुमः ॥ २२ ॥ लुठंतो
नमतां मूर्ध्नि । निर्मलीकारकारणं । वारिप्लवा
इव नमेः पांतु पादनखांशवः ॥ २३ ॥ यदुवंश
समुद्रेंदुः । कर्म्मकक्षहुताशनः । अरिष्ठनेमि
-भगवान । भूयाद्वोऽरिष्ठनाशनः ॥२४॥ कमठे

धरणेंद्र च, स्वोचितं कर्म कुर्व्वति। प्रभुस्तुल्य मनोवृत्तिः । पार्श्वनाथ श्रियेऽस्तुवः ॥ २५ ॥ श्रीमते वीरनाथाय । सनाथायादभुत श्रिया महानन्दसरोराज मरालायार्हते नमः ॥ २६ ॥ कृतापराधेऽपिजने । कृपामन्थरतारयोः । ईषद्बाष्पार्द्रयोर्भद्रं । श्रीवीरजिननेत्रयो ॥ २७ ॥ जयति विजितान्यतेजाः सुरासुराधीश सेवितः श्रीमान विमलस्त्रासविरहितः। त्रिभुवनचूडामणिर्भगवान ॥ २८ ॥ वीरः सर्व्वसुरासुरेंद्रमहितो वीरं बुधा संश्रिता वीरेणाभिहत स्वकर्मनिचयो वीराय नित्यं नमः वीरातीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं वीरस्य घोरं तपो वीरे श्री धृतिकीर्तिकांतिनिचयः श्रीवीर भद्रं दिश ॥२९॥ अवनितलगतानां कृत्रिमाकृत्रिमानां, वरभुवनगतानां दिव्यवैमानिकानाम्, इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां, जिनवरभुवनानां, भावतोऽहंनमामि ॥ ३० ॥ इति

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइ-गराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहि-आणं लोगपइवाणं लोगपज्जोअगराणं अभ-यदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदया-णं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवरनाणदंसण-धराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरु-अमणं तमक्खय मव्वाबाहमपुणरावित्ति-सिद्धिगइ नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं जे अ अईया सिद्धा, जे अ भवस्संतिऽणागए काले संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वं-

दामि ॥ १८ ॥

(अब चरवला लेकर खडे होकर बोलना चाहिये ।)

अरिहन्तचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अङ्गसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहियो हुज्ज मे काउसग्गो जाव अरिहंताणं भगवन्ताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि

(एक नवकार का काउसग्ग करके "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कहकर पहली थुइ करना)

द्रेंद्रेंकि धपमप, धुधुमि धों धों, ध्रसांकिधर धपधोरवं। दोंद्रोंकि दों दों, दाग़डदि दागिडदिांकि, द्रमकि द्रण रण द्रेणवं ॥ झाझिंझेंांकि झूं झूं झणण रण रण, निजाकि निजजन रञ्जनं। सुरशैल शिखरे भवतु सुखदं पार्श्वजिनपति मंजनं ॥ १ ॥

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे, शच्या विभो शैशवे । रूपालोकनविस्मयाहृतरस,—भ्रांत्या भ्रमच्चक्षुषा ॥ उन्मृष्टं नयनप्रभाधवलितं, क्षीरा-दकाशंकय ॥ वक्त्रं यस्य पुनः पुनः सजयाति श्रीवर्द्धमान जिनः ॥१॥

लोगस्स उज्जोगरे, धम्मातित्थयरे जिणे अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ उसभमजिअं च वन्दे, सम्भवमभिणंदणं च सुमइं च पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वन्दे ॥ सुविहिं च पुप्फदन्तं, सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं

संतिं च वंदामि ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वय नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ एवं मए अभिथुआ विहुअरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवर-गम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिस-

ग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अङ्ग-संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठसंचालेहिं एवमाएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहियो हुज्ज मे काउसग्गो जाव अरिहं-ताणं भगवन्ताणं, नमुक्कारेसं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अपाणं वोसिरामि

कटरेंगिनि थोंगिनि, किटाति गिगुड़दां, धुधुकि धुटनट पाटवं । गुणगुणगा गुणगणा, रणकि णें णें, गुणगणगुणगण गौरवं ॥ झझिंझें किं झूं झूं झणण रणं रणं, निजाकि निजजन सज्जना । कलयंति कमला, कलितकलमल, मुकलमीश महेज्जिनाः ॥ २ ॥

हंसांसाहतपद्मरेणुकपिशक्षीरार्णवांभोभृतैः ॥ कुंभैरप्सरसां पयोधरभरप्रस्पर्द्धिभिः कांचनैः यषां मंदुररत्नशैलशिखरे जन्माभिषेकः कृतः ॥ सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमान् ॥ ३

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे

अ । भरहेरवयाविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि॥१॥
तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स सुरगणनरिंदमहि
-अस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजा-
लस्स ॥ २ ॥ जाई-जरामरण-सोग पणासणस्स
कल्लाण पुक्खल-विसाल सुहावहस्स । को देव-
दाणवनरिंदगणच्चिअस्स धम्मस्स सारमुवलब्भ
करे पमायं ॥ ३॥ सिद्धे भो पयओणमो जिण
मए नंदी सया संजमे, देवंनागसुवन्नकिन्नर
गणस्सब्भूअभावाच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ
जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मा वड्ढउ सासओ
विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भग-
वओ करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअण
वत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्ति, बोहि
लाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए,
मेहाए धिइए धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए
ठामि काउसग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं

छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं, अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकारका काउस्सग्ग करके तीसरी थुइ कहना)

ठकि ठूंकि ठूं ठूं ठर्हिक ठर्हिक, ठर्हि पट्ट। ताड्यतं तललोंकि लोंलों त्रेंषि त्रेंषिनि, डेंषि डेंषिनि वाद्यते। ॐ ॐ कि ॐ ॐ, थुंगि थुंगिनि धोंगि धोंगिनि कलरवे। जिनमतमनंतं, महिम तनुतां, नमति सुरनर मुच्छवे॥ ३॥

अर्हद्वक्त्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशांगं विशालं, चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभैधारितं बुद्धिमद्भिः॥ मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञेयभावप्रदीपं, भक्त्या नित्य प्रपद्ये श्रुतमहम-

खिलं सर्वलोकैकसारम् ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं॥१॥
जो देवाण विदेवो, जं देवा पंजली नमसंति
तं देवदेवमहिअं सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥
इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स
संसारसागराओ, तारेई नरं नारिं वा ॥ ३ ॥
उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खानाणं निसीहिआ जस्स
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥
चत्तारि अट्ठ दस दो, य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठ निट्ठिअट्ठा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अङ्ग-

संचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउसग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्गकर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः" कहकर चोथी थुइ कहना—)

धुन्दांकि धुन्दां धुधुद्दिदि धुन्दां धुधुद्दिदि दों दों अम्बरे। चाचपट चचपट, रणाकि णों णों डणाणा डें डें डम्बरे॥ तिहां सरगमपधुनि, निधपमगरस, सस ससस सुर सेवता। जिननाट्यरङ्ग कुशलमुनि शं दिशतु शाशनदेवता॥४

निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं बालचन्द्राभन्दष्ट्रम्, मत्तं घण्टारवेण प्रसृतमदजलं पूरयन्तम् समन्तात्॥ आरूढो दिव्यनागं विचरति गगने कामदः कामरूपी यक्षः सर्वानुभूतिर्दिशतु मम सदा सर्वकार्येषु सिद्धिं॥४॥

(अब नीचे बैठकर नमोऽत्थुणं बोलना ।)

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपइवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ।७। जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ।९। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए

काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वं-
दामि ॥१०॥

१ यहां चार बार एक एक 'खमासमण' देकर 'श्री आ-
चार्यजी मिश्र' आदि एक एक पद कहना जैसे:-

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि। श्री आचार्य
जी मिश्र।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि। श्रीउपाध्याय
जी मिश्र।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि। जंगम युग-
प्रधान वर्त्तमान आचार्यजी मिश्र।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए
निसीहिआए मत्थएण वंदामि। सर्वसाधु
जी मिश्र।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसियं

प्रतिक्रमणो ठाउं ? 'इच्छं'।

(ऐसे कहकर दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रखकर बायां हाथ मुहपत्ति सहित मुखके आगे रख कर शिर झुका कर 'सव्वस्सवि' का पाठ बोलना)

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

(अब खडे होकर बोलना)

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि। तस्स भंते? पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं। जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते

सुए सामाइए, तिराहं गुत्तीणं, चउराहं, कसायणं पंचण्हमणुव्वयाणं, तिराहं गुणव्वयणं चउराहं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं, अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं, खलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

('आजुणा चार प्रहर दिवसमें' का पाठ मन में चिन्तवन करे या आठ नवकार का काउस्सग्ग करे पीछे

प्रगट लोगस्स कहे ।)

लोगस्स उज्जोगरे, धम्मातित्थयरे जिणे अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ उसभमजिअं च वन्दे, सम्भवमभिणंदणं च सुमइं च पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वन्दे ॥ सुविहिं च पुप्फदन्तं, सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वन्दामि ॥ ३ ॥ कुन्थुं अरं च मल्लिं वन्दे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वन्दामि रिठ्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विषहुरयमला पहीणजरमरणा चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयन्तु॥५॥ कित्तियवंदिय—मंहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, अइच्चेसु अहियं पयासरा । सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसन्तु ॥ ७ ॥

(अब नीचे बैठ कर तीजा आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहना और दो बार वांदणा देना—)

इच्छामि खमासमणो । वंदिउ जावणि ज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पाकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं आवास्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसा यणाए तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि मिच्छाए मण दुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए मा णाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमि- च्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसाय णाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए

निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पाकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो जत्ता भे? जवणिज्जं च भे। खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं। पडिकमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्न यराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्व मिच्छोवयाराए सव्व धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो! पड़िक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

[अब खडा होकर बोलना.]

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअं आलोउं? 'इच्छं' आलोएमि। जो मे देवसिओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ

दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असवगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ता चरित्ते सुए समाइए। तिण्हं गुत्तिणं चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं तिगहं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्य मिच्छामि दुक्कडम।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! गमणा गमणे आलोउं? 'इच्छं'—

आजुणा चार प्रहर दिवस में मैंने जिन २ जीवों की विराधना की हो। सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउ काय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पति काय, दो लाख दोइंद्रिय, दो लाख तेइंद्रिय, दो लाख चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चौदह लाख मनुष्य। एवं कुल चौरासी लाख

जीव योनियोंमेंसे किसी जीवका मैंने हनन किया, कराया या करते हुवे का अनुमोदन किया वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडम ।

पहला प्राणातिपात, दूसरा मृषावाद, तीसरा अदत्तादान, चौथा मैथुन, पांचवां परिग्रह, छट्ठा क्रोध, सातवां मान, आठवां माया नववां लोभ, दशवां राग, ग्यरहवां द्वेष, बारहवां कलह, तेरहवां अभ्याख्यान, चौदहवां पैशुन्य, पन्द्रहवां रति अरति, सोलहवां परपरिवाद सत्तरहवां मायामृषावाद, अठारहवां मिथ्यात्वशल्य। इन अठारह पापस्थानोंमेंसे किसीका मैंने सेवन किया, कराया या करते हुए का अनुमोदन किया, वह सब मन बचन काया करके मिच्छा मिं दुक्कडं ।

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी कवली, नवकारवाली देवगुरुधर्म की आशातना

की हो। पन्नरह कर्मादानों की आसेवना की हा राज कथा, देश कथा, स्त्री कथा, भक्त कथा की हो। और जो कोई परनिन्दादि पाप किया हो, कराया हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो, व २ सब मन, वचन, काया, करके दिवस अतिचार आलोयण करके पड़िक्कमणामें आ-लोउं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ इच्छाकारेण संदिसह भगवन! इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

अब नीचे बैठकर, दाहिना गुटना खड़ा करके 'भगवन सूत्र भणं ? इच्छं,' ऐसा कहे। पीछे तीन नवकार और तीन वार 'करेमि भंते' कहे। तपगच्छ वाले एक वार 'नवकार' तथा एक वार 'करेमि भंते' कहे।

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहुणं। एसो पंच नमुक्कारो। सव्वपाव

प्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसि । पढमं हवइ मंगलं ।

करोमि भंते समाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावनियमं पज्जुवासामि । दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करोमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अजकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग–पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए । तिण्हं गुत्तिणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हंगुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खवयाणं, वारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

वंदित्तु—श्रावक प्रतिक्रमणसुत्र ।

वंदित्तु सव्वसिद्धे धम्मायरिए अ सव्व साहु अ । इच्छामि पडिक्कमिउ सावगधम्माइ आरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो नाणे तह दंसणे चरित्ते अ । सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहंमि सावज्जे बहुविहे अ आरंभे । कारावणे अ करणे पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे । अभिओगे अ निओगे, पड़िक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कंख विगिच्छा. पसंस तह संथवो कुलिं गीसु । सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं

च तिण्हमइयारे । सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयंमि थुलगपाणाइवायविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध छविच्छेए अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमेदेसिअं सव्वं ॥ १० ॥ बीए अणुव्व यम्मि, परिथूलगअलिअवयणविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहस्सारहस्सदारे, मोसुवयसे अ कूडलेहे अ । बीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १२ ॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरूद्धगमणे अ । कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयम्मि निच्चं परदारगमणविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ

इत्तर, अणंगवीवाहतिव्वअणुरागे। चउत्थवयस्स इआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वाए पंचमम्मि, आयरिअसप्पसत्थंमि। परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१७॥ धण-धन्न खित्तवतु, रुप्प-सुवन्न अ कुविअपरिं माणे। दुपए चउप्पयम्मि, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १८ ॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च। बुड्ढि सइअन्तरद्धा पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ। उवभोगपरिभोगे, बीअम्मि गुण-व्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोलि दुप्पोलिअं अ आहारे। तुच्छोसहिभक्खणया पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ २१ ॥ इंगालीवणसाडी भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं। वाणिज्जं चेव य दंत-लक्खरस-केसविसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण-कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं। सरद-

हतलायसोसं, असईयोस च वज्जिज्जा ॥ २३
सत्थग्गिमुसलजंतग-तडकट्ठे मन्तमूल भेसज्जे
दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसिअं सव्वं
॥ २४ ॥ राहाणुव्वट्टण वन्नग, विलेवण सद्दरू-
वरसगंधे। वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे देसि-
अं सव्वं ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरिअ-
हिगरण भोगअइरित्ते । दण्डम्मि अणट्ठाए,
तइअम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे
दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे
सामाइअ वितहकए, पढमे सिक्खावए निंदे
॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गल
क्खेवे, देसावगासियम्मि, बीए सिक्खावए
निंदे ॥ २८ ॥ सथारुच्चारविही, पमाय तह चेव
भोअणाभोए पोसहविहिविवराए, तइए सिक्खा
निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पहिणे वंव
एसंमच्छरे चेव । कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सि
क्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु

अ जा मे अस्संजएसु अणुकंपा। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरणकरणजुत्तेसु संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए जीविअ मरणे अ आसंसपओगे । पंचविहो अइआरो, मा मज्झं हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए । मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय सिक्खागारवेसु सन्नाकसायदंडेसु । गुत्तीसु अ समिइसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो जइ वि हु पावं समायरइ किंचि । अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च । खिप्पं उवसामेई, वाहिव्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया । विज्जा हणंति

मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोषसमज्जिअं । आलोअंतो अ निंदतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कयपावो वि मणुस्सो, आलोइय निंदिअ य गुरुसगासे । होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरु व्व भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण-सावओ जइ वि बहुरओ होइ । दुक्खाणमंताकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ सव्वाइं ताइं वन्दे, इह सन्तो तत्थ संताइं ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहु, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं

इसी प्रमाणे फिर वांदणा देवे ।

(अब गुरु कहे कि—"पुण्णवंतो देवसिय की जगह पक्खिय चउमासिय या संवच्छरिय पढना, छींक की जयणा करना, मधुर स्वर से प्रतिक्रमण करना खांसना हो तो त्वरित शुद्ध खांसना और मंडल में सावधान रहना" इस प्रकार गुरु के कहने बाद सब 'तहत्ति' कहे और खडे होकर 'अब्भुट्ठिओमि' खामे)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! संबुद्धा खामणेणं अब्भुट्ठिओहं, अब्भिंतर *पक्खिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि पक्खिअं, एगपक्खस्स पन्नरसण्हं दिवसाणं पन्नरसण्हं राइणं जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते, पाणे विणए वेया-वच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतर भासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

* चउमासी प्रतिक्रमण में "चउमासिअं खामेउं ? इच्छं खामेमि चउमासिअं चउण्हं मासाणं, अट्ठण्हं पक्खाणं वीसोत्तरसयं राइदिवसाणं" इस प्रकार बोलना और संवच्छ

री प्रतिक्रमण में "संवच्छरिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि संवच्छरिअं, दुवालसण्हं मासाणं, चउवीसण्हं पक्खाणं तिन्निसयसट्ठि राइदिवसाणं" इसी तरह बोलना चाहिये ।

(अब खडे होकर बोले)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन पाक्खिअं आलोउं 'इच्छं' आलोएमि । जो मे पाक्खिओ अइयारो कओ, काइया, वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्वि चिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामा इए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं पंचण्हम णुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खा-वयाणंबारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिय अतिचार आलोउं ? 'इच्छं' ।

(ऐसे कहकर पक्खिय अतिचार कहे)

अथ पाक्षिक अतिचार ।

समझा । श्वान बिल्ली आदि पोषे पाले । महा सावद्य पापकारी कठोर काम किया । इत्यादि सात में भोगोपभोग विरमणव्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं ।

आठवें अनर्थदण्ड के पांच अतिचार—

कंदप्पे कुक्कुइए०" कंदर्प—कामाधीन होकर नट विट वेश्या आदिक से हास्य खेल क्रीड़ा कुतुहल किया । स्त्री पुरुष के हावभाव रूप श्रंगार सम्बन्धी वार्ता की । विषयरस पोषक कथा की । स्त्री कथा, देश कथा, भक्त कथा, राज कथा ये चार विकथा की, पराइ भांजगड की, किसी की चुगलखोरी की, आर्त्तध्यान रौद्रध्यान ध्याया । खांडा, कटार, काशि, कुल्हाडी, रथ, ऊखल, मूसल, अग्नि, चक्की आदिक वस्तु दाक्षिण्यतावश किसी को मांगी दी ।

पापोपदेश दिया। अष्टमि चर्तुदशी के दिन दलने पीसने का नियम तोडा। मूर्खता से असंबंध वाक्य बोला। प्रमादाचरण सेवन किया। घी, तेल, दूध, दही, गुड, छाछ आदि का भाजन खुला रखा, उसमें जीवादिकका नाश हुआ वासी मक्खन रखा और तपाया। न्हाते, धोते, दांतन करते, जीव आकुलित मोरी में पानी डाला। झूले में झूला। जुआ खेला। नाटक आदि देखा। ढोर डंगर खरीदवाये। कर्कश वचन कहा, किचाकिची ली। ताडना तर्जना की, मत्सरता धारण की। श्राप दिया भैंसा सांड मेंडा मुरगा, कुत्ते आदिक लडवाये, या इनकी लड़ाई देखी। ऋद्धिमान् की ऋद्धि देख इर्षा की। मिट्टी, नमक, धान, बिनोले विना; कारण-मसले हरी वनस्पति खूंदी। शस्त्रादिक बनवाये। रागद्वेष के वश से एक का भला चाहा। एक का बुरा चाहा। मृत्यु की वांछा

की । मैना, तोते, कबूतर, बटेर, चकोर आदि पक्षियों को पींजरे में डाला । इत्यादि आठवें अनर्थदण्ड विरमणव्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं ।

नवमें सामायिकव्रत के पांच अतिचार- 'तिविहे दुप्पणिहाणे०' सामायिक में संकल्प विकल्प किया । चित्त स्थिर न रखा । सावद्य वचन बोला । प्रमार्जन किये बिना शरीर हलाया, इधर उधर किया । शक्ति होने पर भी सामायिक न किया । सामायिक में खुले मुंह बोला । नींद ली । विकथा की घर संबंधी विचार किया । दीपक या बिजली का प्रकाश शरीर पर पडा । सचित वस्तु का संघटन हुआ स्त्री तिर्यंच आदि का निरन्तर परस्पर संघटन हुआ । मुहपत्ति संघट्टी । सामायिक अधुरा

पारा, बिना पारे उठा। इत्यादि नवमें सामायिकव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन बचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

दशमें देशावगासिकव्रत के पांच अतिचार— 'आणवणे पेसवणे.' आणवण. पेसवण. सद्दाणुवाई रूवाणुवाई. बहियापुग्गलपक्खेवे। नियमित भूमी में बाहर से वस्तु मंगवाई। अपने पाससे अन्यत्र भिजवाई। खुंखारा आदि शब्द करके, रूप दिखाके या कंकर आदि फेंककर अपना होना मालूम किया। इत्यादि दशमें देशावगासिक व्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन बचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं॥

ग्यारहवें पौषधोपवासव्रतके पांच अतिचार- "संथारुच्चार विहि०" अप्पडिलेहिअ दुप्पडि-

लेहिअ सिज्जासंथारए। अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय उच्चार पासवण भूमि। पौषध लेकर सोने की जगह बिना पूंजे प्रमार्जे सोया। स्थंडिल आदिकी भूमि भले प्रकार शोधी नहीं लघुनीति बडी नीति करने या परठने समय "अणुजाणह जस्सग्गो" न कहा। परठे बाद तीन बार 'वोसिरे' न कहा। जिनमन्दिर और उपाश्रय में प्रवेश करते हुए 'निसीहि' और बाहिर नीकलते 'आवस्सही' तीन बार नहीं कही। वस्त्र आदि उपधि की पडिलेहणा न की पृथ्वीकाय, अप्पकाय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकायका संघट्टन हुआ। संथारा पोरिसी पढ़नी भुलाई। बिना संथारे जमीन पर सोया। पोरिसी में नींद ली, पारना आदि की चिंता की। समयपर देव बन्दन न किया प्रतिक्रमण न किया। पौषध देरीसे लिया और जल्दी पारा, पर्वतिथी को पोसह न लिया।

इत्यादि ग्यारवें पौषधव्रतसंबंधी जो कोई अति चार पक्ष दिवश में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

बारहवें अतिथि संविभाग व्रत के पांच अतिचार—"सचित्ते निक्खिवणे०" सचित वस्तु के संघट्टेवाला अकल्पनीय आहार पानी साधू साध्वी को दिया। देने की इच्छा से सदोष वस्तु को निर्दोष कही। देने की इच्छा से पराई वस्तु को अपनी कही न देने की इच्छा से निर्दोष वस्तु को सदोष कही। न देने की इच्छा से अपनी वस्तु को पराई कही गोचरी के वक्त इधर उधर हो गया। गोचरी का समय टाला। बेवक्त साधू महाराज को प्रार्थना की। आये हुवे गुणवान की भक्ती न की। शक्ति के होते हुवे स्वामीवात्सल्य न किया। अन्य किसी धर्मक्षेत्र को पडता देख

मद्द न की। दीन दुःखी की अनुकंपा न की इत्यादि बारहवें अतिथि संविभाग व्रतसंबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

संलेषणा के पांच अतिचार—'इहलोए परलोए०' इहलोगासंसप्पओगे। परलोगासंसप्पओगे। जीविआसंसप्पओगे। मरणासंसप्पओगे। कामभोगासंसप्पओगे। धर्म के प्रभाव से इह लोकसंबंधी राजऋद्धिभोगादि की वांछा की। परलोकमें देवदेवेन्द्र चक्रवर्ती आदि पदवी की इच्छा की। सुखी अवस्था में जीने की इच्छा की। दुःख आने पर मरने की वांछा की। इत्यादि संलेषणा व्रतसंबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

तपाचार के बारह भेद—छ बाह्य छ अभ्यंतर । "अणसणमुणो आरिया०" अनशन शक्ति के होते हुवे पर्वतिथि को उपवास आदि तप न किया । ऊनोदरी—दो चार ग्रास कम न खाये । वृतिसंक्षेप—द्रव्य.-खाने की वस्तुओं का संक्षेप न किया । रस विगय त्याग न किया कायक्लेश लोच आदि कष्ट न किया । संलिनता अंगोपांग का संकोच न किया । पच्चक्खाण तोडा । भोजन करने समय एकासणा आयं विलप्रमुख में चौकी, पटडा, अखला आदि हिलता ठीक न किया । पच्चक्खाण पारना भूलाया, बैठते नवकार न पढा । उठते पच्चक्खाण न किया । निवि, आयंबिल उपवास आदि तप में कच्चा पानी पिया । वमन हुआ इत्यादि बाह्य तपसंबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस मे सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा

मि दुक्कडं।

अभ्यंतर तप—"पायछितं विणओ०" शुद्ध अंतःकरण पूर्वक गुरुमहाराजसे आलोचना न ली। गुरु की दी हुइ आलोचना संपूर्ण न की। देव गुरु संघ साधर्मिका विनय न किया। बाल वृद्ध ग्लान तपस्वी आदिकी वेयावच्च न की वाचना पुच्छना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथा लक्षण पांच प्रकार का स्वाध्याय न किया। धर्मध्यान, शुक्लध्यान ध्याया नहीं आर्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया। दुःख क्षय कर्म क्षय निमित्त दश बीस लोगस्स का काउस्सग्ग न किया। इत्यादि अभ्यंतरतप संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

वीर्याचारके तीन अतिचार—'अणिगूहिय बलाविरिओ०' पढते, गुणते, विनय, वेयावच्च,

देवपूजा, सामायिक, पोषध, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्यमें मन वचन काया का बल वीर्य पराक्रम फोरा नहीं। विधिपूर्वक पंचांग खमासमण न दिया। द्वादशावर्त्त वंदन की विधि भले प्रकार न की। अन्य चित्त निरादरसे बैठा। देववंदन प्रतिक्रमण में जल्दी की इत्यादि वीर्याचार संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

"नाणाई अट्ठ पइवय, समसंलेहण पण पन्नर कम्मेसु। बारस तव विरिअ तिगं, चउव्वीसं सय अइयारा॥"

"पडिसिद्धाणं करणे॰" प्रतिषेध—अभक्ष्य अनंतकाय बहुबीज भक्षण, महारंभ परिग्रहादि किया। देव पूजन आदि षटकर्म सामायिकादि छ आवश्यक विनयादिक अरिहंत की भक्ति

प्रमुख करणीय कार्य किये नहीं। जीवाजीवादि के सूक्ष्म विचार की सद्दहणा न की। अपनी कुमति से उत्सूत्र प्ररूपणा की। तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति, अरति, परपरिवाद, माया मृषावाद, मिथ्यात्वशल्य, ये अठारह पापस्थान किये कराये अनुमोदे। दिनकृत्य प्रतिक्रमण, बिनय, वैयावृत्य न किया और भी जो कुछ वीतरागकी आज्ञा से विरुद्ध किया, कराया या अनुमोदन किया। इन चार प्रकार के अतिचारों में जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं।

एवंकारे श्रावक धर्म सम्यक्त्व मूल बारह व्रतसंबधी एकसो चोवीस अतिचारों में से जो कोई अतिचार पक्ष दिवश में सूक्ष्म या बादर

जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं ।

सव्वस्स वि पक्खिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन ? इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

फिर वांदणा दो वक्त देवे ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो ? जत्ता भे, जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ? पक्खिअं वइक्कम्मं आवस्सीआए पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंची मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छो वयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए,

जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिं निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इसी तरह फिर वांदणा देवे ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! देवसियं आलोइय पडिक्कंता पत्तेयखामणेणं अब्भुट्ठिओहं अब्भिंतर* पक्खिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि पक्खिअं एगपक्खस्स पन्नरसण्हं दिवसाणं पन्नरसण्हं राइणं जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स

* चउमासि प्रतिक्रमणमें "चउमासिअं खामेउं ? इच्छं खामेमि । चउमासिअं, चउण्हं मासाणं, अट्ठण्हंपक्खाणं वीसोत्तरसयं राइदिवसाणं" इस तरह बोलना और संवच्छरी प्रतिक्रमण में "संवच्छरीअ खामेउं ? इच्छं, खामेमि संवच्छरिअं, दुवालसण्हं मासाणं चउवीसण्हंपक्खाणं, तिन्निसयसट्ठि राइदिवसाणं" इस तरह बोलना चाहिये ।

मिच्छा मि दुक्कडं ।

यहां प्रत्येक जनसे खमतखामणा करके पीछे दो वांदणा देवे ।

करेमि भंते सामाइअं जोगं पच्चक्खामि । जावनियमं पज्जुवासामि । दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गारिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि पडिक्कमिउं जो में पक्खिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए । तिण्हं गुत्तिणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

तस्स उत्तारीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं, कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, निससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं, अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं, दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि; ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहां सब जन काउस्सग्ग में पक्खिसूत्र सुने और एक जन खमासमण पूर्वक आदेश मांगकर सूत्र प्रकट कहे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिसूत्र पढुं ? 'इच्छं'

(एसे खमासमण पूर्वक आदेश मांगकर, खडे होकर प्रगट तीन नवकार कह कर, साधू हो तो पक्खिसूत्र कहे और साधू न हो तो श्रावक वंदित्तुसूत्र कहे)

(वंदितु पेज नंबर ३४ में देखकर पढो)

अब नमो अरिहंताणं प्रकट कहकर सब काउस्सग्ग पारे और खडे होकर बोलने वाला तीन नवकार गिन कर बैठ जाय । पीछे दाहिना घुटना खडा करके तीन नवकार तीन करेमि भन्ते और इच्छामि पडिक्कमिउं कह वंदितु । सुत्र कहे)

णमो अरिहंताणं । णमोसिद्धाणं । णमो आयरियाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्वसाहुणं । एसोपंचनमुक्कारो । सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ।

करेमि भंते सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते ! पड़िक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि पडिक्कमिउं । जो मे पक्खिओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए समाइए, तिण्हं गुत्तिणं, चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

वंदित्तु पेज नम्बर ३४ में देखकर पढो ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन । मूलगुण-उत्तरगुण-विशुद्धि निमित्तं काउस्सग्ग करूं ? इच्छं ।

अब खडे होकर बोलो ।

करेमि भंते सामाइअं सावज्जं जोगं पच्च-

क्खामि । जावनियमं पज्जुवासामि । दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि। तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे पक्खिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए । तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हं मणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छितकरणेणं विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएण, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमालिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं, अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जावअरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि, तावकाय ठाणेणं, मोणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि।

(*१२ लोगस्स का या ४८ नवकार का काउस्सग्ग करना पारके प्रकट लोगस्स कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥
उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं

---

* चउमासी प्रतिक्रमणमें बीस लोगस्स या अस्सी नवकार का काउस्सग्ग करना ओर संवत्सरी प्रतिक्रमण में ४० लोगस्स ओर एक नवकार का काउस्सग्ग करना।

वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस वासुपूज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धर्म संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च वंदामि रिट्ठनेमि पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसियंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वन्दिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभम समाहिवरमुत्तमम् दिंतु ॥ ६ ॥ चन्देसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियम पयासयरा । सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसन्तु ॥ ७ ॥

नोटः—पक्खी, चउमासी तथा छमछरी समाप्त ।

अब बैठकर मुहपत्ति पडिलेहना और वंदना दो देना ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह, मे मिउग्गह निसीहि, अहोकाय कायसंफासं । खमणिज्जो

मे किलामो । अप्पकिलंताण बहुसुभेण मे पक्खो वइक्कन्तो ? जत्ता मे । जवणिज्जं च मे ? खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कमं आवस्सिआए पडिक्कमामि, खमासमणाणं, पक्खिए आसायणाए तित्तिसन्नयराए जं किंचि मिच्छाएमणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइ-क्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरि-हामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इसी माफक फिर वांदणा देना ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! समास खामणेणं अब्भुट्ठिओहं अब्भिंतर* पक्खिअं

---

*चउमासि प्रतिक्रमण में "चउमासिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि । चउमासिअं, चउण्हं मासाणं, अट्ठण्हंपक्खाणं वीसोत्तरसयं राइदिवसाणं" इस तरह बोलना चाहिये और संवच्छरी प्रतिक्रमण में "संवच्छरीअं खामेउं ? इच्छं

खामेउं ? इच्छं, खामेमि पक्खिअं, एगपक्खस्स पन्नरसण्हं, दिवसाणं, पन्नरसण्हं, राइणं, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमम् वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिखामणा खामु ? 'इच्छं'

ऐसे कहकर नीचे मुजब खामणा देना ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

खामेमि संवच्छरिअं, दुवालसण्हं मासाणं, चउवीसण्हं पक्खाणं, तिन्निसयसट्ठि राइंदिवसाणं" इस तरह बोलना चाहिये ।

कहकर दाहिना हाथ चरवला या आसन पर रखकर मस्तक झुका कर तीन नवकार बोले।

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्व साहुणं एसो पंच नमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं।

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

मस्तक झुकाकर तीन वार नवकार बोलना।

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

मस्तक झुकाकर तीन वार नवकार बोलना।

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

मस्तक झुकाकर तीन वार नवकार बोलना।

पखी खामणा खाम्या छेजी।

"इच्छं" इच्छामि अणुसाहि—पुयन्वंतो

१पाखी के निमित्त एक उपवास, दो आयंबिल, तीन निवि, चार एकासना दो हजार सज्झाय करी एक उपवास की पेठ पूरना और पाक्खि के स्थान में देवसिय कहना ।

यहां यथाशक्ति तप किया हो तो 'पइठ्ठिय' कहना ओर जिन्होंने तप न किया वे 'तहत्ति' कहे । अब देवसिक प्रतिक्रमण में वंदिता सूत्र कहने बाद जो विधि है इस मूजब करना चाहिये ।

इच्छामि खमासमणो ? वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कन्तो ? जत्ता भे । जवणिज्जं च

१- चउमासिय में इससे दूना अर्थात- दो उपवास, चार आयंबिल, छह निवि, आठ एकासना ओर चार हजार सज्झाय करी दो उपवास की पेठ पूरना । संवच्छरीय में तिगुना--तीन उपवास, छह आयंबिल नो निवि बारह एकासना ओर छह हजार सज्झाय करी तीन उपवास की पेठ पूरना । इस प्रकार कहना ।

भ ? खामेमि खमासमणो देवसिअं वइकम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए।तित्तिसन्नयराए जं किंचि मिच्छाएमणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्व-कालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइ-क्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरि-हामि अप्पाणं वोसिरामि। फिर वांदणा देना।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन ? अब्भुट्ठिओमि, अब्भिंतर देवसिअ खामेउं ? इच्छं, खामेमि देवसिअं, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते, पाणे विणए, वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भेजाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

भे इच्छामि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए असायणाए तित्तिसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

५ लाइन वंदना ८३ में है इसी माफक फिर वांदणां देना ।

अब खडे होकर कहना चाहिये ।

आयरिअ–उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ । जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे । सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहि-

अनिअचित्तो । सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥

करेमि भंते सामाइअं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए । तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हं मणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं वि सोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएण, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं, अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं. आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जावअरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि, तावकाय ठाणेणं, मोणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।

दो लोगस्स का या आठ नवकार का काउस्सग्ग करना पारकर प्रगट लोगस्स कहना ।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥
उसभ-मज़िअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च

सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस वासुपूज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धमं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च वंदामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसियंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वन्दिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभम समाहिवरमुत्तमम् दिंतु ॥ ६ ॥ चन्देसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियम पयासयरा । सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसन्तु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गम् वन्दनवत्तिआए पूअनवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए सम्मानवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिइए धारु-

णाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणिए ठामि काउस्सग्गं.

अन्नत्थ ऊससिएणं, निससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं, अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं, दिट्ठिसंचालेहिं,, एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

एक लोगस्स का या चार नवकार का काउसग्ग करना ।

पुक्खरवरदिवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ । भरहेरवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स सुरगण नरिंदमहियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाई—जरामरणसोगपणासणस्स कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स । को

देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिणमये नंदी सया संजमे, देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं वन्दनवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवस्सग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिइए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणिए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएण, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं, अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं,

अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जावअरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि, तावकाय ठाणेणं, मोणेणं झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।

एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना ।

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं लोअग्गमुवगयाणं, नमो सायसव्वसिद्धाणं ॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स । संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खानाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टि, अरिट्ठनेमिं नमंसामि चत्तारि अट्ठ दस दोय, वंदिया जिणवरा, चउव्वीसं । परमट्ठ निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।

खरतरगच्छ तपगच्छ वाले नीचे प्रमाणे थुइयां कहवे इतनी देर तीन थुइ वाला रुक जावे । ओर नवकार देवसी समाप्त मुपति पडिलेवणा में शामिल हो जावे ।

सुअदेवआए करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं, भगवंताणं नमुक्कारेणं, न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

एक नवकार का काउस्सग्ग करना । पीछे नमोऽर्हत्सिद्धाचर्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः" कहकर सुअदेवया की थुइ कहना ।

यह थुइ देवसी मे कहना ।

सुवर्णशालिनी देयाद्द्वादशांगी जिनोद्भवा । श्रुतदेवी सदा मह्य-मशेष-श्रुत-सम्प-

दम ॥ १ ॥

यह थुइ पखि मे कहना ।

॥ अथ कमलदल की स्तुति ॥

कमलदल विपुलनयना कमलमुखी कमलगर्भ समगोरी ॥ कमलेस्थिता भगवती ददातुश्रुत देवता सोख्यम् ॥ १ ॥ इति श्रुत देवता थुइ ।

देवसी मे क्षेत्र देवता की थुइ अन्नस्थ बोलकर एक नवकार का काउस्सग्ग करके पारके नमोर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य इस तरह कहना ।

यस्या क्षेत्रगताः संति, साधवः श्रावकादयः ॥ जिनाज्ञां साधयंतस्ता रक्षंतु क्षेत्र देवता ॥ २ ॥

यह थुइ पखि में इस तरह कहना ।

यस्या क्षेत्र समाश्रित्य साधुभि साध्यते क्रिया साक्षेत्रदेवता नित्यं भूयान्नःसुखदायिनी ॥ ३ ॥ इति

भुवन देवयाए करेमि काउस्सग्गम् अन्नत्थ ऊससिएणं, निससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं, अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं, खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं, दिट्ठिसंचालेहिं,, एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

एक नवकार का काउस्सग्ग करके पारके "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्य" कहकर भुवन देवता की थुइ कहना ।

ज्ञानादि गुणयुतानां स्वाध्यायध्यानसंयमरतानाम विदधातु भुवन देवी शिवंसदासर्वसाधूनाम ॥ ३ ॥

नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो

आयरियाणं नमो उवज्झायाणं नमो लोए सव्व साहुणं एसो पंच नमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मगलं ।

अब बैठकर छठ्ठा आवश्यककी मुहपत्ति पडिलेहना बाद वंदना दो देना ।

इच्छामि खमासमणो ? वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कन्तो ? जत्ता भे । जवणिज्जं च भे खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं, आवास्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवासिआए आसायणाए तित्तिसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइ-

थारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

एकवार फिर वांदना देना ।

इच्छामो अणुसट्ठि नमो खमासमणाणं, नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः"

कहकर पुरुषवर्ग 'नमोऽस्तुवर्द्धमानाय' कहे और स्त्रीवर्ग 'संसारदावा' की तीन थुइ कहे ।

नमोस्तु वर्द्धमानाय स्पर्धमानाय कर्म्मणा तज्जया वासमोक्षाय परोक्षाय कुतीर्थिनां । येषां विकचारविन्दराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलि दधत्या सदृशैरिति संगत प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः । कषायतापार्दितजन्तुनिर्वृत्तिं, करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गतः । स शुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम

॥ संसार दावानल—स्तुति ॥

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरं । मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं

गिरसारधीरं ॥ १ ॥ भावावनामसुरदानवमान वेन, चूल विलोलकमलावली मालितानि । सम्पूरिताभिनतलोकसमीहितानि कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाऽविरल-लहरीसंगमागाहदेहं । चूलावेलं गुरुगममणी-संकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधू सेवे ॥ ३ ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपइवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं धम्मसारहीण धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवरनाणदंसण-धराणं,

त्रिअट्ठछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमण तमक्खय मव्वाबाहमपुणरावित्ति-सिद्धिगइ-नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जि-अभयाणं। जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भ-विस्सन्ति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि।

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् स्तवन भणुं इच्छं।

एमे कहकर 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः' कहकर अजितशांति स्तवन कहे।

॥ अथः अजितशांति स्तवन ॥

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतस-व्वगयपावं। जय गुरु संतिगुणकरे, दो वि जिण-वरे पणिवयामि ॥ १ ॥ गाहा। ववगयमंगुलभावे

ते हं विउलतवनिम्मलसहावे ! निरुवम महप्प-भावे, थोसामि सुदिट्ठसब्भावे ॥२ ॥गाहा ॥ सव्वदुक्खप्पसंतिणं, सया अजिअसंतीणं, नमो अजियजिणं ॥३॥ सिलोगो ॥ अजियजिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं । तह य धिइमइप्पवत्तणं तव य जिणुत्तम संति कित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ ॥ किरिआविहिसंचिअकम्मकिलेसविमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणिसिद्धिगयं । अजिअस्स य संति महामुणिणो वि अ संतिकरं; सययं मम निव्वुइकारणयं च नमंसणयं ॥५॥ आलिंगणयं ॥ पुरिसा जइ दुक्खवारणं, जइ अ विमग्गह सुक्खकारणं । अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइरइतिमिरविरहिअमुवरयजरमरणं, सुर असुर गरुलभुयगवइपययपणिवइअं अजिअमहमवि अ सुनयनयनिउणमभयकरं,

सरणमुवसरिआ भुविदिविजमहिअं सययमुवणमे ॥७॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तममुत्तमनित्तमसत्तधरं, अज्जवमद्दवखंतिविमुत्तिसमाहिनिहिं । संतिकरं पणमामि दमुत्तमतित्थयरं, संतिमुणी मम सन्तिसमाहिवरम् दिसउ ॥८॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थिमत्थयपसत्थविच्छिन्नसन्थिअं, थिरसरिच्छवच्छं मयगललीलायमाणवरगन्धहत्थिपत्थाणपत्थियं सन्थवारिहं । हत्थिहत्थबाहुं धन्तकणरुअगनिरुवहयपिञ्जरं पवरलक्खणोवचिअसोमचारुरूवं सुइसुहमणाभिराम परमरमणिज्जवरदेवदुन्दहिनिनायमहुरयरसुहगिरम् ॥ ८ ॥ वेड्ढओ ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअसव्वभयं भवोहरिउं । पणमामि अहम् पयओ, पावं पसमेउ मे भयवम् ॥ १० ॥ रासालुद्धओ ॥ कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमम् तओ महाचक्कवट्टिभोए महप्पभावो, जो बावत्तरिपुरवरसहस्स-

वरनगरनिगमजणवयवई, बत्तीसारायवरसह-
स्साणुयायमग्गो । चउदसवररयणनवमहानि
हिचउसट्ठिसहस्सपवरजुवईण सुन्दरवई, चुल-
सीहयगयरहसयसहस्ससामी, छण्णवइगामको
डिसामी आसिज्जो भारहम्मि भयवं ॥ ११ ॥
वेड्ढओ ॥ तं सन्ति सन्तिकरं सन्तिण्णं
सव्वभया । सन्तिम् थुणामि जिणं, सन्तिम्
विहेउ मे ॥ १२ ॥ रासानंदियं ॥ इक्खाग
विदेहनरीसर नरवसहा मुणिवसहा । नवसार
यससिसकलाणणा, विगयतमा विहुअरया ।
अजिउत्तम तेअ गुणेहिं महामुणिअमिअबला
विउलकुला । पणमामि ते भवभयमूरण
जग सरणा मम सरणम् ॥ १३ ॥
चित्तलेहा ॥ देवदाणविंदचंदसुरविंद हठतुट्ठजि.
ट्ठपरम—लट्ठरूव धंतरुप्प-पट्ट सेअ सुद्ध निद्ध
धवल । दंतपंति संति सत्तिकित्तिमुत्तिजुत्तिगु-
त्तिपवर, दित्ततेअवंद धेअ सव्वलोअभाविअ-

प्पभाव णोअ पइस मे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायओ ॥ विमल ससिकलाइरेअसामं वितिमिर सुरकराइरेअतेअं । तिअसवइमणाइरेअरूवं, धरणिधरप्पवराइरेअसारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजितवसंजमे अ अजिअं एस थुणामि जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ भुअगपरिरंगिअं ॥ सोमगुणेहिं पावई न तं नवसरयससी ते अगुणेहिं पावइ तं नवसरयरवी । रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवइ सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिअयम् ॥ तित्थवरपवत्तयम् तमरयरहिअम् धीरजणथुअच्चिअम् चुअकालिकलुसम् । सन्तिसुहप्पवत्तयम् तिगरणपयओ सन्तिमहम् महामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयम् ॥ विणओणयसिररइअन्जलिरिसिगणसन्थुअम्, थिमिअम्, विबुहाहिवधणवइनरवइथुअमहिअच्चिअम् वहुसो ।

अइरुग्गयसरयदिवायरसमाहिअसप्पभम् तवसा
गयणंगणवियरणसमुइअचारनवंदिअम् सिरसा
॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥ असुरगरुलपरिवन्दि-
अम् किन्नरोरगनमंसिअम् ॥ देवकोडिसयसं
थुअम, समनसंघपरिवन्दिअम् ॥ २० ॥ सुमु
हम ॥ अभयम् अणहम्, अरयम् अरुयम् ॥
अजिअम् पयओ पणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविल
सिअम् ॥ आगया वरविमानदिव्वकनग,-
रहतुरयपहकरसएहिं हुलिअम् ॥ ससंभमोअर
नखुभिअलुलिअचल,-कुन्डलमगयतिरीडसो-
हन्तमउलिमाला ॥ २२ ॥ वेड्ढओ ॥ ज सुर
संघा सासुरसंघा वेरविउत्ता भत्तिसुजुत्ता, आ
यरभूसिअसंभमपिंडि अरुटठुसुविम्हिअस्व
वलोघा । उत्तमकन्चनरयनपरूविअभासुरभूस
नभासुरिअन्गा, गायरुमोणय भत्तिवसागय
पन्जलिपेसियसीसपनामा ॥ २३ ॥ रयणमा
ला ॥ वान्दिऊण थोउण तो जिणम, तिगुण

मेव य पुणो पयाहिणं । पणमिऊण य जिणं
सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइं तो गया ॥२४॥
खित्तयं ॥ तं महामुणिमहंपि पंजली, रागदो-
स भय मोह वज्जिअं। देव दाणव नरिंद वंदिअं
सन्तिमुत्तममहातवं नमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥
अम्बरंतरविआरणिआहिं, ललिअहंसवहुगामि-
णि आहिं । पीणसोणिथणसालिणिआहिं,
सकलकमलदललोअणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥
पीणनिरन्तरथणभरविणमियगायलयाहिं, म-
णिकंचणपसिढिलमेहलसोहिअसोणितडाहिं ।
वरखिंखिणिणेउरस तिलयवलयविभूसणिआहिं
रइकरचउरमणोहरसुन्दरदंसणिआहिं ॥ २७॥
चित्तक्खरा ॥ देवसुन्दरीहिं पायवन्दिआहिं व-
न्दिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो
निडालएहि मण्डणोड्डणप्पगारएहिं केहिं २
वि । अवंगतिलयपत्तलेहनामएहिं चिल्लएहिं
संगयंगयाहिं, भत्ति सन्निविठ्ठ वन्दणा गयाहिं

हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥२८॥ नारायओ तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं। धुअसव्वकिलेसं, पयओ पणमामि ॥२९॥ नंदिअयं॥ थुअवन्दिअस्सा, रिसिगणदेवगणेहिं, तो देव वहुहिं पयओ पणामिअस्सा, जस्स जगुत्तम सासण अस्सा, भत्तिवसागयपिंडिअआहिं, देववरच्छरसाबहुआहिं सुरवर रइगुण पण्डिअआहिं ॥ ३० ॥ भासुरयं ॥ वंससद्दतंतितालमेलिए तिउक्खराभिरामसद्दमीसए कए अ, सुइसमाणणे अ सुद्धसज्जगीअपायजालघंटिआहिं। वलयमेहलाकलावनेउराभिरामसद्दमीसए कए अ देवनट्टिआहिं हाव भावविब्भमप्पगारएहिं नाच्चिऊण अंगहारएहिं वन्दिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा तयं तिलोअसव्वसत्त सान्तिकारयं, पसन्तसव्वपावदोसमेस हं नमामि सन्तिमुत्तम जिणं ॥ ३१ ॥ नारायओ ॥ छत्तचामरपडागजूअजवमण्डिआ, झयवरमगरतुरयसिरिवच्छसुलंछणा। दीवस

सुइसन्दरादिसागयलोहिआ, सत्थिअवसहसी हरहचक्कवरांकिया ॥ ३२ ॥ ललिअयं ॥ सहाव-लट्ठा समप्पइट्ठा, अदोसदुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा । पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअ-सव्वपावया, सव्वलोअहिअमूलपावया । संथुआ अजिअसान्तिपायया, हुंतु मे सिवसुहा-णदायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिका ॥ एवं तव बलाविउलं, थुअं मए अजिअसान्तिजिणजुअलं । ववगयकम्मरयमलं, गइं गयं सासयं वि-उलं, ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं बहुगुणप्पसायं, मुक्खसुहेण परमेण अविसायं । नासेउ मे वि-सायं, कुणउ अ परिसा वि अ पसायं ॥३६॥ गाहा ॥ तं मोएउ अ नन्दिं, पावेउ अ नन्दि सेणमभिनन्दिं । परिसा वि य सुहनन्दिं मम य दिसउ संजमे नन्दिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ प-क्खिअ चाउम्मासिअ, संवच्छरिए अवस्स

भणिअव्वो । सो अव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओकालम्पि अजिअ सन्तिथयं न हु हुन्ति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परमपयं, अहवा किर्त्ति सुवित्थडं भुवणे। तातेल्लुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति ॥

अजितशांति तो पखि आदि मे कहना देवसी मे ११ गाथा से कम स्तवन नहीं कहना कम कहो तो ओमवर कनक बोलना ।

॥ ॐवर कणय सङ्ख विद्दुम, मरगय घण सन्निहं विगय मोहं। सत्तरि सयं जिणाणं, सव्वामर पूईयं वन्दे ॥ स्वाहा ॥१॥

तपगच्छ वाला चार ओर खरतरगच्छ वाला तीन खमासणा देवे, वो खमासणा इस प्रमाणे ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । श्री भगवानजी महाराज ने वांधु ।

यह खमासमणा तपगच्छ वाला देके ओर निचे वाला खमासमणा दोनों गच्छ साथ देवे । तपगच्छ वाला शामिल नहीं होवे तो खरतरगच्छ वाला निचे की तीन खमासमणा देवे ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । श्री आचार्य जी मिश्र ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । उपाध्यायजी मिश्र ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । सर्व साधू जी मिश्र ।

खमासमणा दिया बाद खरतरगच्छ वाला अढाइ दिवस्सु नहीं बोलते हैं, तपगच्छ वाला बोलते हैं जो निचे प्रमाणे ।

॥ अथः अढाइ झेसु ॥

अढाइ झेसु । दीव समुद्देसु । पन्नरस सुक

म्मभूमीसु । जावंत केवि साहू । रयहरण गुच्छपडिग्गहधारा पंचमहव्वयधारा । अढारसहस्स सीलंगधारा । अखियायारचरित्ता । ते सहे । सिरसा मणसा मत्थएण वंदामि ।

(अब खडा होकर बोलना चाहिये)

इच्छामि खमासमणो वन्दिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण सन्दिसह भगवन्! देवासिअ पायच्छित्तविसोहणत्थं काउस्सग्ग करूं ? इच्छं । देवसिअपायच्छित्तविसोहणत्थं करोमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिंदिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठा-

णेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(चार लोगस्स का या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना पारके प्रगट लोगस्स कहना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहन्ते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ उसभमजिअं च वन्दे, सम्भवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वन्दे ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं धम्मं संतिं च वन्दामि ॥ कुन्थुं अरं च मल्लिं वन्दे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वन्दामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ कित्तियवन्दियमाहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग बोहिलाभं समाहिवर मुत्तमादिन्तु चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।

सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।

तपगच्छ की विधी न्यारी है सो निंचे दीजावेगा यहां से खरतरगच्छ की विधी चालू है ।

इच्छामि खमासमणो वन्दिउ जावणि ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वन्दामि । इच्छा कारेण सन्दिसह भगवन खुद्दोपद्दव उड्डावण निमित्तं करोमि काउस्सग्गं ।

अनत्थ कहकर चार लोगस्स या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना ।

यहां उपर प्रमाणे प्रगट लोगस्स कहे ।

इच्छामि खमासमणो वन्दिउ जावणि-ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वन्दामि । इच्छा कारेण सन्दिसह भगवन चैत्यवन्दन करूं 'इच्छं' ।

श्री सेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तम्भने स्वर्गिरो, श्रीपूज्याभयदेवसूरिविबुधा—धीशैः समारोपितः । संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिव फलैः स्फुर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः स

प्रथयतां नित्यं मनोवांछितम् ॥ १ ॥ आधि-व्याधिहरो देवो, जीरावल्ली शिरोमणी । पार्श्व नाथो जगन्नाथो, नितन थो नृणां श्रिये ॥२॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपइवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवरनाणदंसण-धराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणतमक्खय मव्वाबाहमपुणरावित्ति-सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जि-

अभयाणं । जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भ
विस्सन्ति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा,
सव्वे तिविहेण वंदामि ।

जावन्ति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ
तिरि अ लोएअ । सव्वाइं ताइं वन्दे, इह
सन्तो तत्थ सन्ताइं ॥ १ ॥

जावन्त के वि साहू, भरहेरवय महावि-
देहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण
तिदण्डविरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

उवसग्गहरं पासं, पासं वन्दामि कम्म-
घणमुक्कं । विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण-
आवासं ॥ १ ॥ विसहर फुल्लिंगमन्तं, कंठे
धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गहरोगमारी,
दुट्ठजरा जन्ति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे
मन्तो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नर
तिरिएसु वि जीवा, पावन्ति न दुक्खदोगच्चं॥३॥

तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणिकप्पपायवब्भहिए। पावन्ति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ।४। इअ सन्थुओ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिएण । ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास-जिणचन्दम् ॥ ५ ॥

जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ भयवं । भवनिव्वेओ मग्गाणुसारि-आ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयण सेवणा आभवमखण्डा ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

सिरि-थम्भणय-ट्ठिय-पाससामिणो सेस तित्थसामीणं। तित्थसमुन्नइकारणं सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥ १ ॥ एसिमहं सरणत्थं, काउ-स्सग्गं करेमि सत्तिए । भत्तीए गुणसुट्ठियस्स संघस्स समुन्नइ-निमित्तं ॥ २ ॥

(अब खड़ा होकर बोलना चाहिये)

श्रीथम्भण पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं । वन्दणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीसासिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमालिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खिलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

चार लोगस्स का या सोलह नवकारका काउस्सग्गकरना ।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।

अरिहन्ते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ उसभमजिअं च वन्दे, सम्भवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंद-प्पहं वन्दे ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं धम्मं संतिं च वन्दामि ॥ कुन्थुं अरं च मल्लिं वन्दे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वन्दामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ कित्तियवन्दियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग बोहिलाभं समाहिवर मुत्तमं दिन्तु चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।

इच्छामि खमासमणो वन्दिउं जावणि-ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । श्रीचौ-राशिगच्छ श्रृंगारहार जंगमयुगप्रधान भट्टारक

दादाजी श्रीजिनदत्तसूरिजी चारित्र चूड़ामणि-जी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ।

यहां अन्नत्थ कहके चार नवकारका काउस्सग्ग कह प्रगट लोगस्स कहना ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । श्री चौरासि-गच्छ श्रृंगारहार जंगमयुगप्रधान भट्टारक दादाजी श्री जिनकुशलसूरिजी चारित्र चूड़ामणिजी आराधवा निमित्तं करेमि काउ-स्सग्गं ।

(अन्नत्थ कहकर चार नवकार का काउस्सग्ग करके प्रगट लोगस्स कहे ।)

[अब नीचे बैठकर बांया गोडा ऊंचा करके चैत्यवन्दन करे ।]

इच्छामि खमासमणो वन्दिउ जावणि-ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वन्दामि । इच्छा कारेण सन्दिसह भगवन चैत्यवन्दन करूं 'इच्छं' ।

चउक्कसायपडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जयमयणबाण-मुसुमूरणू। सरसपिअंगुवन्नु गयगामिउ, जयउ पासु भुवणत्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसु तणुकंति-कडप्प सिणिद्धउ, सोहइ फणिमणिकिरणालिद्धउ, नं नवजलहरतडिल्लयलंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥ २ ॥

अर्हतो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः। श्रीसिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वंतु वो मंगलं ॥ १ ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहि-आणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभ-यदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदया-

णं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवरनाणदंसण-धराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमण तमक्खय मव्वाबाहमपुणरावित्ति-सिद्धिगइ-नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं। जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्सन्ति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि।

जावन्ति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरि अ लोएअ। सव्वाइं ताइं वन्दे, इह सन्तो तत्थ सन्ताइं ॥ १ ॥

जावन्त के वि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदण्डविरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वन्दामि कम्म-घणमुक्कं । विसहरविसनिन्नासम्, मंगल-कल्लाण-आवासम् ॥ १ ॥ विसहर फुलिंगमंतं कण्ठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गहरोग मारी, दुट्ठजरा जन्ति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मन्तो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नरतिरिएसु वि जीवा पावंति न दुखदोगच्चं ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणिकप्पपायवब्भहिए पावन्ति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ।४। इअ सन्थुओ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिएण । ता देव दिज्जबोहिं, भवे भवे पास-जिणचन्दम् ॥ ५ ॥

अब दोनों हाथ जोडकर जय वीअराय कहना ।

जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ भयवं । भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धच्चाओ,

गुरुजणपुआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः

॥ अथ बडी शांति ॥

भो भो भव्याः श्रणुत वचनं प्रस्तुत सर्वमेतद्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः । तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा-दारोग्यश्रीधृतिमतिकरि क्लेशविध्वंसहेतु ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरवतविदेहसम्भवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघंटाचालनानन्तरं सकलसुरासुरेन्द्रे सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृंगे विहितजन्माभिषेकः शान्तिमुद्घोषयति । ततोऽहं कृतानुकारामिति कृत्वा महाजनो येन गतः स पन्थाः । इति भव्यजनैः सह समागत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं

विधाय शांतिमुद्घोषयामि तत्पूजायात्रास्ना-
त्रादिमहोत्सवानन्तरमिति कृत्वा कर्ण दत्वा
निशम्यतां २ स्वाहा) ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीय
न्तां प्रीयन्तां भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शी
न स्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहिता-स्त्रिलोक्यपूज्या-
स्त्रिलोकेश्वरा स्त्रिलोकोद्योतकराः । ॐ श्रीके-
वलज्ञानि-निर्वाणि-सागर-महाशय-विमल-सर्वा-
नुभुति-श्रीधर-दत्त-दामोदर-सुतेज स्वामि-
मुनिसुव्रत-सुमति-शिवगति-अस्ताग-नमीश्वर-
अनिल-यशोधर-कृतार्थ-जिनेश्वर-शुद्धमति-
शिवकर-स्यन्दन-सम्प्रति इति एते अतीत-
चतुर्विंशतितीर्थकराः । ॐ श्रीऋषभ-अजित-
सम्भव-अभिनन्दन-सुमति-पद्मप्रभ-सुपार्श्व-
चन्द्रप्रभ-सुविधि-शीतल-श्रेयांस-वासुपूज्य-वि-
मल-अनन्त-धर्म-शांति-कुन्थु-अर मल्लि-मुनि-
सुव्रत-नमि-नेमि-पार्श्व-वर्द्धमान इति एते वर्त-
मानाजिनाः । ॐ श्रीपद्मनाभ-शूरदेव सुपार्श्व

स्वयंप्रभ-सर्वानुभूति-देवश्रुत-उदय-पेढाल-पोट्टिल शतकीर्ति-सुव्रत-अमम-निष्काय-निर्मम-चित्रगुप्त-समाधि-संवर-यशोधर-विजय-मल्लि-देव-अनन्तवीर्य-भद्रंकर इति एते भावितीर्थकराः। शांताः शांतिकरा भवन्तु। ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्षकांतारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यं। ॐ श्रीनाभि-जितशत्रु-जितारि-संवर-मेघधर-प्रतिष्ठ-महसेन-सुग्रीव दृढरथविष्णु-वासुपुज्य-कृतवर्म-सिंहसेन-भानु-विश्वसेन-सूर-सुदर्शन-कुम्भ सुमित्र-विजय-समुद्रविजय-अश्वसेन-सिद्धार्थ इति एते वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः। ॐ श्रीमरुदेवा-विजया-सेना-सिद्धार्था-सुमंगला-सुसीमा-पृथ्वीमाता-लक्ष्मणा-रामा-नन्दा-विष्णु-जया-श्यामा-सुयशासुव्रत-अचिरा-श्रीदेवी-प्रभावती-पद्मा वप्रा-शिवा-वामा-त्रिशला इति एते वर्त्तमानजिनजनन्यः। ॐ

श्रीगोमुख—महायक्ष—त्रिमुख—यक्षनायक—तुम्बरु-कुसुम-मातंग-विजय—अजित-ब्रह्मा—यक्षराज-कुमार-षण्मुख-पाताल-किन्नर-गरुड-गंधर्व-यक्षराज-कुवेर-वरुण-भृकुटि गोमेध—पार्श्व ब्रह्मशांति इति एते वर्त्तमानाजिनयक्षाः। ॐ श्रीचक्रेश्वरी अजितबला दुरितारि काली महाकाली श्यामा शांता भृकुटि सुतारका अशोका मानवी चण्डा विदिता अंकुशा कन्दर्पा निर्वाणि बला धारिणि धरणप्रिया नरदत्ता गांधारी अम्बिका पद्मावती सिद्धायिका इति एते वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थंकर शासनदेव्यः। ॐ ह्रीं श्रीं धृतिकीर्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी मेधा विद्या साधन प्रवेशन निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयन्तु ते जिनेंद्राः। ॐ रोहिणी प्रज्ञप्ति वज्रशृंखला वज्रांकुशी चक्रेश्वरी पुरुषदत्ता काली महाकाली गौरी गांधारी सर्वास्त्रा महाज्वाला मानवी वैरोट्य अछुप्ता मानसी महा-

मानसी एता षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु मे स्वाहा । ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु । ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु । ॐ ग्रहाश्चन्द्रसूर्यांगारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोम यमवरुण कुबेर वासवादित्य स्कन्द विनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगर क्षेत्र देवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्तां अक्षीण कोशकोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा । ॐ पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृद् स्वजन संबंधि बन्धु वर्गसहिताः नित्यं चामोदप्रमोद कारिणः । अस्मिंश्च भूमण्डले आयतनिवासिनां साधु साध्वी श्रावक श्राविकाणां रोगोपसर्गव्याधिदुःखदुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाय शांतिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टिपुष्टिऋद्धिवृद्धि मांगल्योत्सवाः भवन्तु सदा प्रादुर्भूतानि(दुरितानि) पापानि शाम्यन्तु शत्रवः परांमुखा भवन्तु

स्वाहा । श्रीमते शांतिनाथाय, नमः शांति
विधायीने । त्रैलोक्यस्यामराधीश मुकुटाभ्य-
र्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शांतिः शांतिकरः श्रीमान्,
दिशतु मे गुरुः । शांतिरेव सदा तेषां येषां शांति
गृहे गृहे ॥ २ ॥ ॐ उन्मृष्टरिष्ट दुष्ट ग्रहगतिदुः
स्वप्नदुर्निमित्तादि सम्पादितहितसम्पन्नामग्रहणं
जयति शांतेः ॥ ३ ॥ श्रीसंघपौरजनपद, राजा-
धिपराजसन्निवेशानाम् । गोष्ठिकपुरमुख्यानां
व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसं
घस्स शांतिर्भवतु, श्रीपौरलोकस्स शांतिर्भवतु
श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां,
शांतिर्भवतु, श्रीराजसन्निवेशानां, शांतिर्भवतु,
श्रीगोष्ठिकानां शांतिर्भवतु ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा । एषा शान्तिः
प्रतिष्ठायात्रास्नात्राद्यवसानेषु शान्तिकलशं गृ-
हित्वा कुंकुमचन्दनकर्पूरागरुधूपवासकुसुमांज-
लिसमेतः स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः शुचिशुचि

वपुः पुष्पवस्त्रचन्दनाभरणालंकृतः पुष्पमालां कंठे कृत्वा शांतिमुद्घोषयित्वा शांतिपानियं मस्तके दातव्यमित्ति । नृत्यन्ति नित्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजान्ति गायन्ति च मंगलानि स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मंत्रान् कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥ १ ॥ अहं तित्थयरमाया सिवादेवी तुम्हनयरनिवासिनी । अम्ह सिवं तुम्ह सिवम् असिवोवसमं सिवं भवतु स्वाहा ॥ २ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनरता भवन्तु भूतगणा । दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवन्तु लोकाः ॥ ३ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पुज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम् ॥

(चीराक या बीजली का प्रकाश शरीर पर गिरा हो या कोई दोष लगा हो तो इरयावहियं कहकर पीछे सामा-

यक पारे दोष न लगा हो तो इरयावहियं करने की आवश्यकता नहीं आवश्यकता हो तो नीचे पाठ है)

(पाक्षिक आदि प्रतिक्रमण करते समय यदि छींक हो जाय या बिल्ली आदि के अपशुकन हो जाय तो नीचे मुजब काउस्सग्ग करके पीछे सामायिक पारे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वन्दामि । इच्छाकारेण सन्दिसह भगवन् 'अपशुकन उड्डावण निमित्तं करेमि काउस्सग्गं' ।

अन्नत्थ कहकर चार लोगस्स का या सोलह नवकार का काउसग्ग कर फिर प्रगट लोगस्स कहे ।

॥ सामायक पारने की विधि ॥

सामायक पारने कीविधि शुरु प्रतिक्रमण में देख लेना ।

दासानुदासा इव सर्वदेवा, यदीयपादाब्जतले लुठन्ति ।
मरुस्थली कल्पतरुः स जीयाद् युगप्रधानो जिनदत्तसूरिः ॥१॥

कुशलगुरु देव के दर्शन, मेरा दिल होत है परसन । जगत में आप समा कोई, न देखा नयन भर जोई ॥ कु० ॥१॥ बीरुद भूमण्डले छाजे, फरसता पाप सहु भाजे । पूजतां संपदा पावे, अचिन्ती लक्ष्मी घर आवे ॥कु०।२॥ इक मुखे गुण कहुं केता, मुझे विज्ञान नहीं हेता । लालचन्द की अरज सुन लीजे, चर की शरण मोहि दीजे ॥ कु० ॥ ३ ॥ इति ॥

तपगच्छ वाले सझाय करते हैं सो १२९ वों पाना से शुरु है।

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएणवंदामि सझाय संदिसाहु

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। सझाय करूं

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥ १ ॥ विसहरफुल्लिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामोवि बहुफलो होई। नरतिरिएसु वि

जीवा, पावंति न दुक्खदोहग्गं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं, ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस, भत्तिभरनिब्भरेण हियएण। ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचन्द ॥ ५ ॥

आमूला लोल धूली बहुल परिमला लीढ लोला लिमाला झंकारा रावसारा मलदल कमला गार भूमि निवासे छाया संसार सारे वर कमल करे ताहाराभिरामे वाणी संदोह देह भवविरहवरं देहि मे देवी सारं ॥ ४ ॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

तीन थुइ वाले सज्झाय नहीं करते है।

फिर दुक्ख को कम्मक्खो निमित्तं का-उस्सग्गम् करूं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिंदिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भग-वंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, तावकायं ठा-णेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

चार लोगस्स का या सोलह नवकार का काउस्सग्गकरना।

सब जणा ध्यान में रहे एक जणा काउस्सग्ग पारके शांत कहे।

॥ अथः लघु शान्ति स्तवन ॥

शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताशिवम् नमस्कृत्य। स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ ओमिति निश्चितवच-

से नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् । शांति-
जिनाय जयवते, यशास्विने स्वामिने दामिनां
॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहासम्पात्तिसमान्विताय
शस्याय । त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः
शांतिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह,-स्वामिक-
सम्पूजिताय निजिताय । भुवनजनपालनोद्यत
तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ५ ॥ सर्वदुरितै-
घनाशनकराय सर्वाशिवप्रशमनाय । दुष्टग्रह-
भुतपिशाचशाकिनीनां प्रमथनाय ॥५॥ यस्याति
नाममंत्र-प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा । विज-
या कुरुते जनाहितमित च नुता नमत तं
शांतिम् ॥६॥ भवतु नमस्ते भगवाति, विजये
सुजये परापैराजिते । अपराजिते जगत्यां,
जयतीाति जयावहे भवाति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि
च संघस्य, भद्रकल्याणमंगलं प्रददे । साधूनां
च सदाशिव—सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥
-भव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृतिनिर्वाणजननि !

सत्त्वानां। अभयप्रदाननिरते नमोऽस्तु स्वस्ति-प्रदे तुभ्यं ॥ ९ ॥ भक्तानां जन्तूनां, शुभा-वहे नित्यमुद्यते देवि !। सम्यग्दृष्टीनां धृति-रतिमतिबुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासन-निरतानां, शांतिनतानां च जगति जनतानां। श्रीसम्पत्कीर्त्तियशो-वर्द्धिनि ! जय देवि वि-जयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानलविषविषधर-दुष्ट-ग्रहराजरोगरणभयतः। राक्षसरिपुगणमारि, चौरेतिश्वापदादिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शांति च कुरु कुरु सदेति। तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरुत्वं ॥ १३ ॥ भगवति गुणवति शिवशांति तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरु जनानां। ओ-मिति नमो नमो ह्राँ ह्रीँ हूँ ह्रः यः क्षः ह्रीँ फुट् फुट् स्वाहा ॥ १४ ॥ एवं यन्नामाक्षर-पुरस्सरं संस्तुता जया देवी। कुरुते शांतिं नमतां नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति

पूर्वसूरीदर्शित—मंत्रपदविदर्भितः स्तवः शांतेः सलिलादिभयविनाशी, शांत्यादिकरश्च भक्तिमतां ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, श्रृणोति भावयति वा यथायोग्यं । सहि शांतिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥१७॥ उपसर्गाः क्षयं यांति छिद्यंते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणं । प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनम् जयत्ति शासनम् ॥ १९ ॥

यह शांति तो देवसी में कहने की है। तीन थुई वाले शांति नहीं कहते हैं।

पाक्षिक छमछरी चोमासे में वडी शांति कहने की है सो पृष्ट १२१ में देख लेना।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे अरिहन्ते कित्तइस्सं, चउवीसम्पि केवली ॥१॥ उसममजिअं च वन्दे, सम्भवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्द-

प्पहं वन्दे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदन्तं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च विमलमणंतं च जिणं, धम्मं सन्तिं च वन्दामि ॥३॥ कुन्थुम अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वन्दामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहूयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसम्पि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयन्तु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चन्देसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसन्तु७.

इरयावहिए ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउम्, इरियावहियाए, विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे

ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया संघट्टि-या, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणा-ओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

॥ तस्स उत्तरी ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकर-णेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ कहकर एक लोगस्स अथवा चार नवकार का काउस्सग्ग, प्रगट लोगस्स करे फिर पेज ११८ से १२१ तक चउक्कसाय का चैत्य वन्दन पूरा करके जैवीयराय तक पूरा करके समायिक पारे । समायक पारने की विधि राइप्रति-क्रम में है सो देखलो, तपगच्छ वालों की ।



॥ श्री वासक्षेप पूजा ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

तीर्थपति अरिहा नमुं, धर्मधुरंधर धीरोजी ॥ देशना अमृत वरसता, निज वीरज वड वीरोजी ॥उलालो॥ वर अखय निर्मल ज्ञान भासन, सर्व भाव प्रकाशता। निज शुद्ध श्रद्धा आतम भावे, चरण थिरता वासता ॥ निज नाम धर्म प्रभाव अतिशय, प्रातिहारज शोभता ॥ जग जन्तु करुणावन्त भगवन्त, भाविक जनने थोभता ॥ १ ॥

ॐ ह्रीँ श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरुपाय जन्म जरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय अरिहन्तपदं वासक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥१

नमोऽर्हत्० ॥ सकल करम मल क्षयकरी, पूरण शुद्ध स्वरूपो जी ॥ अव्याबाध प्रभुता मयी, आतम संपत्ति भूपो जी ॥ १ ॥ (उलालो) जेह भूप आतम सहज संपत्ति शक्ति व्यक्ति

पणे करी । स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकालभावे, गुण अनन्ता आदरी । सुस्वभाव गुण पर्याय परिणति, सिद्ध साधन परभणी । मुनिराज मानस हंस सम बड़, नमो सिद्ध महागुणी ॥ २ ॥

ॐ ह्रीँ श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय सिद्धपदं वासक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥ २ ॥

नमोऽर्हत्० ॥ आचारज मुनिपति गणी, गुण छत्तीसी धामोजी । चिदानन्द रसस्वादता, परभावे निःकामोजी ॥ उलालो ॥ निःकाम निर्मल शुद्ध चिद्घन, साध्य निज निरधारथी । निज ज्ञान दर्शन चरण वीरज, साध्यना व्यापारथी । भवि जीव बोधक तत्व शोधक सयल गुण संपत्ति धरा । संवर समाधि गत उपाधि, दुविध तप गुण आगरा ।

ॐ ह्रीँ श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय

आचार्यपदं वासक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥ ३ ॥

नमोऽर्हत्० ॥ खंति जुत्र्मा मुत्ती जुत्र्मा अज्जव मद्दव जुत्ता जी । सच्चं सोयं अकिंचणा, तव गुण संजम रत्ताजी ॥ १ ॥ (उलालो) जे रम्या ब्रह्म सुगुप्ति गुप्ता, सामिति सामिता श्रुत-धरा, स्याद्वाद वादे तत्ववादक, आत्म पर विभ, जनकरा । भव भीरु साधन धीर शासन, वहन धोरी मुनिवरा । सिद्धान्त वायणदान समरथ, नमो पाठक पद धरा ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरू-पाय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय उपाध्यायपदं वासक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

नमोऽर्हत्० ॥ सकल विषय विष वारिने, निःकामी निःसंगी जी । भव दव ताप शमावता । आतम साधन रंगी जी ॥ १ ॥ (उलालो) जे रम्या शुद्ध स्वरूप रमणे देह निर्ममनिर्मदा । काउसग्ग मुद्रा धीर आसन, ध्यान अभ्यासी

सदा । तप तेज दीपे कर्म झीपे, नेव छीपे पर भणी । मुनिराज करूणा सिन्धु त्रिभुवन, वंदु प्रणमु हित भणी ॥

ॐ ह्रीँ श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय साधुपदं वासक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

नमोर्हत्० ॥ सम्यग् दर्शन गुण नमो, तत्व स्वरूप प्रतीत जी ॥ जसु निराधार स्वभाव छे, चेतन गुण जे अरूपोजी ॥ १ ॥ (उलालो) जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटे, सयल पर इहा टले । निज शुद्ध सत्ता प्रगट अनुभव, करूणा रुचिता उछले । बहुमान परिणति वस्तुतत्वे, अहवतसु कारण पणे । निज साध्य दृष्टे सर्वकरणी तत्वता संपत्ति गणे ॥

ॐ ह्रीँ श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरुपाय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेन्द्राय दर्शनपदं वासक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥ ६ ॥

नमोऽर्हत्० ॥ भव्य नमो गुण ज्ञानने, स्वपर

प्रकाशक भावेजी । पर जय धर्म अनन्ता, भेदाभेद स्वभावे जी ॥ १ ॥ (उल्लालो) जे मुख्य परिणति सकल ज्ञायक, बोधक भाव विलक्षणा । स्याद्वाद-संगी तत्वरंगी, प्रथम भेदा भेदता । सविकल्पने अविकल्पवस्तु, सकल संशय छेदता ।

ॐ ह्रीँ श्री परमात्मानेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमाज्जिनेन्द्राय ज्ञानपदं वासक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥७॥

नमोऽर्हत० ॥ चारित्र गुण वली वली नमो, तत्व रमण जसु मुलोजी ॥ पर रमणीय पणुं टले, सकल सिद्ध अनुकूलोजी ॥१॥ (उल्लालो) प्रतिकूल आश्रव त्याग संजम, तत्व थिरता दम मयी ॥ शुचि परम खंति मुत्ति दश पद, पंच संवर उपचयी ॥ सामायिकादिक भेद धर्मे, यथाख्याते पूर्णता ॥ अकषाय अकलुष अमल उज्वल, काम कश्मल चूर्णता ॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मानेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्री मज्जिनेन्द्राय चारित्रपदं वासक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥८॥

इच्छारोधन तप नमो, बाह्य अभ्यंतर भेदजी आतम सत्ता एकता, पर परिणति उच्छेदजी॥१॥
(उलालो) उच्छेदे कर्म अनादि संतति जेह सिद्धपणुं वरे। योग संगे आहार टाली, भाव अक्रियता करे। अंतर मुहूरत तत्त्व साधे, सर्व संवरता करी। निज आत्म सत्ता प्रगट भावे, करो तप गुण आदरी॥

ॐ ह्रीं श्री परमात्मनेऽनन्तानन्तज्ञानस्वरूपाय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय तपपदं वासक्षेपं यजामहे स्वाहा ॥ ९ ॥ इति

श्री देवचन्द्रजी स्नात्रपूजा.

प्रथम हाथमें कुसुमांजलि लेइने नमोऽर्हत् कही पढे।

दोहा—चउतीस अतिशय जुओ, वचनातिसय

जुत्त । सो परमेश्वर देखि भवि, सिंघासण संपत्त ॥ १ ॥

ढाल—सिंघासण बेठा जग भाण, देखि भाविकजन गुणमणि खाण । जे दीठे तुझ निरमल नाण, लहियें परम महोदय ठाण ॥१॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा, तोरा चरण कमल (सेवे चोसठ इंदा) चोवीश पूजोरो चोवीश सोभागी चोवीश वैरागी, चोवीस जिणंदा ॥ कु० ॥ १ ॥ (एम कही कुसुमांजलि चढाववी तथा प्रभुना चरणें पूजा करीयें, पाछी हाथ में कुसुमांजलि लेइने नमोऽर्हत् कही नीचे मुजब गाथा कहवी

गाथा—जो नियगुण पज्जव रम्यो, तसु अनुभव एगत्त । सुहपुग्गल आरोपतां, जो तसु रंग निरत्त ॥ २ ॥

ढाल—जो निज आतमगुण आणंदी, पुग्गल संगे जेह अफंदी । जे परमेश्वर निजपद लीन, पूजो प्रणमो भव्य अदीन ॥ कुसु-

मांजालि मेलो शान्तिजिणंदा तो० ॥ कु० ॥२॥
(एम कही प्रभुना जानुपर पूजा करीयें)

गाथा—निम्मल नाण पयास कर, निम्मल गुण संपन्न। निम्मल धम्मोवएसकर, सो परमप्पा धन्न ॥ ३ ॥

ढाल—लोकालोक प्रकाशक नाणी, भविजन तारण जेहनी वाणी । परमानन्द तणी नीसाणी तसु भगते मुझ मति ठहरांणी । कुसुमांजालि मेलो नेमिजिणंदा ॥ तो० ॥ कु० ॥ (एम कही प्रभुना बे हाथे पूजा करियें)

गाथा—जे सिज्झा सिज्झंति जे सिज्झसंति अणंत। जसु आलंबन ठविमण, सो सेवो अरिहंत ॥ ४ ॥

ढाल—शिव सुख कारण जेह त्रिकालें, सम परिणामें जगत निहाले । उत्तम साधन मार्ग देखाडे, इन्द्रादिक जसु चरण पखाले । कुसुमांजालि मेलो पार्श्व जिणंदा ॥ तो ॥ कु ॥ ४ ॥

(एम कही प्रभुना खंधोये पूजा करियें)

—सम्मादिट्ठी देसंजय, साहु साहुणी सार आचारिज उवज्झाय मुणि, जो निम्मल आधार ॥ ५ ॥

ढाल-चउविह संघेंजे मनधार्युं, मोक्ष तणु कारण निरधार्यु। विविह कुसुम वर जाति गहेवी, तसु चरणे प्रणमंत ठवेवी। कुसुमांजलि मेलो वीर जिणंदा ॥तो०॥कु०॥५॥

(एम कही प्रभुने मस्तकें पूजा करियें) ॥ इति पांखडी गाथा

॥ वस्तुछंद ॥ सयल जिनवर सयल जिनवर, नामिय मनरंग। कल्लाणक विहि संठविय करिसुधम्म सुपवित्त सुन्दर। सय इगसित्तरि तिर्थंकर, इगसमय विविहरान्ति माहियल। च्यवण समय इगवीश जिण, जन्म समय इगवीश। भवित्त भावें पूजिया, करो संघ सुजगीस.

॥ एक दिन आचिरा हुलरावती ॥ ए चाल

॥भव तीजे समकित गुण रम्या, जिन भक्ती

प्रमुख गुण परिणाम्या । तजी इन्द्रिय सुख आशंसना, करी थानक वीशनी सेवना ॥ १ ॥ अति राग प्रशस्त प्रभावता, मन भावना एहवी भावता । सबि जीवकरूं शासन रसी, एसी भावदया मन उल्लसी ॥ २ ॥ लही परिणाम एहवुं भलुं, निपजावी जिनपद निरमलुं । आउ बंध विचे एक भव करी, श्रद्धा संवेग ते थिर धरी ॥ ३ ॥ तिहां चविष लहे नरभव उदार, भरते तिम ऐरवतेज सार महाविदेह विजय परधान । मध्यखंडे अवतरे जिन निधान ॥ ४ ॥

(ढाल)—पुन्यें सुपनाहे देखै, मनमां हरष विशेषै । गजवर उज्जवल सुन्दर, निरमल वृषभ मनोहर ॥ १ ॥ निरभय केशरी सिंह, लक्षमी अतिहि अबीह । अनुपम फूलनी माला, निरमल शशी सुकुमाला ॥ २ ॥ तेज तरणि अति दीपे, इन्द्रधजा जगजीपे । पूरण कलश पंडूर,

पद्मसरोवर पूर ॥ ३ ॥ इग्यारमें रयणायर, देखै माताजी गुणसायर। बार में भुवन विमान, तेर में रतन निधान ॥ ४ ॥ अगनि शिखा निरधूम, देखे माताजी अनोपम। हरखी राय ने भाषे, राजा अरथ प्रकासै ॥ ५ ॥ जगपति जिनवर सुखकर, होस्यै पुत्र मनोहर। इन्द्रादिक जसु नमसैं, सकल मनोरथ फलसै ॥६॥

(वस्तु) पुन्य उदय २, उपना जिन नाह। माता तव रयणी समें, देखि सुपन हरखंत जागीय। सुपन कही निज कंतने, सुपन अरथ सांभलो सोभागीय। त्रिभुवन तिलक महागुणी, होस्यै पुत्र निधान। इन्द्रादिक जसु पाय नमी, करसे सिद्धि विधान ॥ १ ॥

(ढाल)—चन्द्रा उल्लालानी। सोहमपति आसन कम्पीयो, देई अवधि मन आंणंदीयो। मुज आतम निरमल करण काज, भवजल तारण प्रगट्यो जिहाज ॥ १ ॥ भव अटवीपारग

सत्थवाह, केवलनाणाईं गुण अगाह । शिव साधन गुणअंकुर जेंह कारण उलट्यो आसा ढिमेह ॥ २ ॥ हरखै विकसे तब रोमराय, बलयादिकमां निज तनुं नमाय । सिंहासणथी उठ्यो सुरिंद, प्रणमंतो जिन आनन्द कन्द ॥ ६ ॥ सग अड पय साहमो आवि तत्थ, करी अंजली प्रणमिअ मत्थ सत्थ । मुख भाषे ए क्षण आज सार, तियलोय पहु दीठो उदार ॥ ४ ॥ रे रे निसुणो सुरलोय देव, विषयानल तापित तनु समेव । तसु शान्तिकरण जलधर समान, मिथ्याविष चूरण गरुडवान ॥ ५ ॥ ते देव जगतारण समत्थ प्रगट्यो तसु प्रणमी हुवो सनत्थ । इम जंपी शक्र स्तव करेवि, तव देव देवी हरखे सुणेवि ॥ ६ ॥ गावे तब रम्भा गतिगान, सुरलोक हुवो मंगल निधान । नरखेत्रे आरज वंसठाम । जिनराज वधे सुर हर्ष धाम ॥ ७ ॥ पिता माता घरे उच्छव अलेख,

जिनेश जनम मंगल अति विशेष । सुरपति देवादिक हरखसंग, संयम अरथी जननें उमंग ॥८॥ सुभवेला लगनें तीर्थनाथ, जनम्या इन्द्रादिक हर्ष साथ । सुखपाम्यां त्रिभुवन सर्वजीव । बधाई बधाई थई अतीव ॥ ९ ॥

फूल अक्षत से बधावे तीन प्रदक्षिणा देवे, पीछे शक्रस्तव 'ठागां संपाविउं' तक कहे । पीछे रोली तथा केशर का हाथ में साथिया करैं, धूप खेवैं ॥

(ढाल)—श्री शान्ति जिनानां कलश कहिशु० ॥ ए चाल ॥ श्री तीर्थपतिनो कलश मज्जन गाईये सुखकार । नरखते मंडण दुह विहंडण भाविक मन आधार ॥ तिहां रावराणा हरष उच्छव थयो जय जयकार । दिशीकुमरी अवधि विशेष जाणी लह्यो हरष अपार ॥ १ ॥ निज अमर अमरी संग कुमरी गावती गुण छंद । जिनजननी पासे आय पहुती गहगती आणंद ॥ हे माय तें जिनराज जायो शुचि वधायेरम्म । अम्हजम्म निम्मल करण कारण करि

सूईअ कम्म ॥ २ ॥ तिहां भूमी शोधन दीप दरपण वाय बींजणधार । तिहां करिय कदली गेह जिनवर । जननी मज्जनकार । वर राखडी जिनपाणि बांधी । दीयै इम आसीस । युग-कोडा कोडीचिरंजीवो धर्मदायक ईस ॥ ३ ॥

(ढाल) उल्लालानी—जिन रयणीजी दश दिश उज्जलता धरै । शुभलगनेंजी ज्योतिसचक्र ते संचरे ॥ जिनजनम्याजी तिन अवसर माता घरे । तिण अवसरजी इन्द्रासन पण थरहरे ॥ (त्रुटक) थरहरे आसन इन्द्र चिंतें कौन अवसर ए बन्यो । जिन जन्म उच्छव काल जाणी अतिहि आणंद ऊपन्यो ॥ निज सिद्ध संपत्ति हेतु जिनवर जाणि भगतें उमह्यो । विकसंत वदन प्रमोद बधते देवनायक गह-गह्यो ॥ १ ॥

(ढाल)—तब सुरपतिजी घंटानाद कराव ए । सुरलोकें जी घोषणा एह दिवरावए ।

नरक्षेत्रैंजी जिनवर जनम हुवो अछे। तसु भगतें जी सुरपति मंदिर गिरि गच्छे॥ (त्रुटक) गच्छेति मंदिर शिखर ऊपर भुवन जीवन जिन तणो। जिन जन्म उच्छव करण कारण आ-वज्यो सवि सुरगुणो॥ तुम सुद्ध समकित थास्ये निरमल देवाधिदेव निहालता। आपणा घातिक सर्व जास्ये नाथ चरण पखालतां॥२॥

(ढाल)—इम सांभलीजी सुरवर कोडि बहु मिली, जिन वंदनजी मंदरगिरि साहमी चली। सोहमपतिजी जिन जननी घर आविया, जिन माताजी वांदी स्वामी वधाविया॥ (त्रुटक) वधाविया जिनवर हर्ष बहुलै धन्य हु कृतपुन्य ए, त्रैलोक्यनायक देव दीठो मुज समोकुण अन्य ए। हे जगत जननी पुत्र तुह्मचो मेरु मज्झन वर करी, उच्छंग तुह्मचै वलिय थापिस आतमा पुन्यें भरी॥ ३

(ढाल)—सुरनायकजी जिन निज कर

कमलें ठव्या, पांच रूपें जी अतिसय महिमायें स्तव्या । नाटक विधिजी तव बत्तीस आगल वहे, सुर कोडिजी जिन दरससनें उमहे, (त्रुटक) सुर कोडाकोडी नाचती वलि नाथ शुचि गुण गावती, अपछरा कोडी हाथ जोडी हाव भाव दिखावती ! जयो जयो तूं जिनराज जगगुरु एम दे आसीसए, अम्ह त्राण शरण आधार जीवन एक तूं जगदीश ए ॥ ४ ॥

(ढाल)—सुरगिरि जी पांडुक वन में चिहूं दिसैं, गिरिसिल परजी सिंहासण सासय वसे । तिहां आणीजी शक्रें जिन खोले ग्रह्या, चौसठे जी तिहां सुरपति आवी रह्या ॥ (त्रुटक) आविया सुरपति सर्व भगतें कलश श्रेणि बणाव ए, सिद्धार्थ पमुहा तीर्थओषिया सर्व वस्तु अणाव ए । अच्यूयपति तिहां हूकम कीनो देव कोडा कोडिनें, जिन मज्झनारथ नीर ल्यावो सवै सुर कर जोडिनें ॥ ५ ॥

सर्व स्नात्रिया जलका कलश हाथमें लेकर खडा रहै, और नीचे मुजब मुखसें पढै—

(ढाल)—शांन्तिं कारणे इन्द्र कलशा भरै, ए चाल ॥ आतम साधन रसी देव कोडी हसी, उल्लसीनें धसी खीरसागर दिशी । पउमदह आदि दह गंग पमुहानई तीर्थजल अमल लेंवा भणी ते गई ॥ १ ॥ जाति अड कलश करि सहसअठोत्तरा, छत्र चामर सिंहासण सुभतरा । उपगरण पुष्फ चंगेरि पमुहासवे, आगमें भासिया तेम आणी ठवे ॥ २ ॥ तीर्थ जल भरिय करि कळश करि देवता, गावता भावता धर्म्म उन्नतिरता । तिरय नर अमरने हर्ष उपजावता, धन्य अम्ह सगति सुचि भगति इम भावता ॥ ३ ॥ समकित बीज तिज आतम आरोपिता, कलश पाणि-मिसें भक्तिजल सींचता । मेरुसिहरो वरे सर्व आव्या वही, शक्रउच्छंग जिन देखी मन गह गही ॥ ४ ॥

(गाथा) हंहो देवा २ अणाई कालों अदिट्ठपुव्यो, तिलोयतारणो। तिलोयवन्धू, मिच्छत्तमोह विद्धंसणो। अणाई तिन्ना विणासणो, देवांहि देवा दिठ्वो २ हिअष कामेहिं॥१॥

(ढाल तेहज) एम पभणंति वण भुवन जोईसरा, देव वेमाणिया भत्ति धम्मायरा। केवि कप्पाठिया केवि मित्ताणुगा, केई वररमण वयणेण अइउच्छगा ॥ ५ ॥

(वस्तु) तत्थ अच्चुय २ इन्द्र आदेश, करजोडी सर्व देवगण। लेई कलश आदेश पामीय, अद्भुत रूप सरूप जुय। कवण एह पुछंति सामीय, इन्द्र कहै जगतारणो। पारग अम्हपरमेस। नायक दायक धर्म्मनिधि करीय तसु अभिषेस ॥ १ ॥

(ढाल ९मी) तीर्थ कमल वर उदक भरीनें पुषकर सागर आवै, ए चाल ॥ पूर्ण कलश सुचि उदकनी धारा, जिनवर अंगे नामें।

आतम निरमल भाव करंता, वधतें शुभ परिणामें। अच्चुतादिक सुरपति मज्जन, लोकपाल लोकान्ते । सामानिक इन्द्राणी पमुहा इम अभिषेक करंतं ॥१॥ पू० ॥ गाहा ॥ तब ईसान सुरिंदो, सक्कं पभणेई करि हु सुपासाओ। तुह्य अंके महनाहो, खिणमित्तं अह्य अप्पेह ॥ १ ॥ तासक्कंदो पभणई, साहमीय वच्छलंमि बहूलाहो। आणाइ वंतेणं गिण्ह होउ कयत्थभो ॥२

इतना कहके सर्व स्नात्रियां, भगवान ऊपर कलश ढोले पीछे नीचे मुजव मुखै पढे—

(ढाल) सोहम सुरपति वृषभ रूप करि, नहवण करै प्रभु अंगे । करिय विलेपण पुष्प माल ठवि वर आभरण अभंगे ॥ सो० ॥१॥ तव सुरवर बहु जय जय रव करैं, नीश्चे धरी आणंद । मोक्ष मारग सारथ पति पास्यो, भांजिसु हिव फन्द ॥ सो० ॥ २ ॥ कोडिबत्तीस सोवन्न उवरी वाजंते वरनादे । सुरपति संग अमर श्रीप्रभुने, जननीनें सुप्रसादे ॥ सो०

॥३॥ आणी थापे एम पयंपे अह्म निसतरिया आज, पुत्र तुह्मारो धणीय हमारो, तारण तरण जहाज ॥ सो० ॥४॥ मात जतन करि राखिज्यो एहनें, तुह्म सूत अह्म आधार। सूरपति भगति सहित नंदिसर, करै जिन भगति उदार ॥ सों० ॥५॥ निय निय कप्प गया सवि निर्ज्जर, कहितां प्रभु गुणसार। दिक्षा केवल ज्ञान कल्याणक इच्छा चित्त मझार ॥ सो० ॥ ६ ॥ खरतर गच्छ जिन आणारंगी राजसागर उवज्झाय। ज्ञान धरम दीपचन्द सुपाठक, सुगुरु तणे सुपसाय ॥ सो० ॥ ७ ॥ देवचन्द जिन भगतें गायो, जनम महोच्छव छन्द। बोध बीज अंकूरो उह्लस्यो, संघ सकल आणंद ॥ सो० ॥ ८ ॥

(ढाल) इम पूजा भगतैं करो, आतम हित काज। तजिय विभाव निज भावना, रमतां शिवराज ॥ इ० ॥ १ ॥ काल अनन्त

ते जे हुआ, होस्ये जेह जिणंद। संपई श्रीमन्दर प्रभु, केवल नाण दिणंद ॥ इ० ॥२ ॥ जनम महोच्छव इणि परे श्रावक रुचिवन्त। विरचै जिन प्रतिमा तणो अनुमोदन खन्त॥ इ० ॥३॥ देवचन्द जिन पूजना, करता भवनो-पार। जिन पडिमा जिन सारखी, कही सूत्र मझार ॥ इ० ॥ ४ ॥

॥ इति स्नात्रपूजा विधि सम्पूर्णम् ॥

अथ अष्ट प्रकारी पूजा लिख्यते

॥ श्लोक ॥

विमलकेवल भासन भासकरं, जगति जंतु महोदय कारणं। जिनवरं बहुमान जलौघतः, शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय, श्रीमज्जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥१॥ इति जलपूजा ॥

इसपूजा से संसार में मनुष्यों का अभ्युदय होता है

तथा उसके अन्तःकरण में संसार के परिभोग और शरीर आदि में अनित्य भावना का विकाश होता है।

॥ अथ चंदन पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकल मोहतिमिश्र विनाशनं, परमशीतल भावयुतं जिनं। विनयकुंकुचंदनदर्शनैः, सहज तत्वविकाशकृतेर्च्चये ॥१॥ ॐ ह्रीं परमा० अ० ज्ञान० जन्म जरा० निवा० श्रीमज्जिनें० चंदनं यजामहे स्वाहा ॥ इति चन्दन पूजा ॥

यह कहकर चन्दन चढावे ॥

इस चन्दन पूजा से अन्तःकरण में स्थित अज्ञान तथा मोहरूप अन्धकार का नाश होता है, हृदयमें शान्ति और समता उत्पन्न होती है तथा देव गुरु और धर्म में विनय और भक्ती का विकाश होता है।

॥ अथ भगवतके अंग पूजा ना दूहा ॥

जलभरी संपुट पात्रमां युगलिक नर पूजन्त ।
ऋषभ चरण अगूठडे, दायक भजवजल अन्त॥१॥
जानु बले काउस्सग रह्या, विचरया देश विदेश ।

खडां खडां केवल लह्या पूजो जानु नरेश ॥ २ ॥
लोकांतिक वचनें करी, वरस्या वरसीं दान ।
करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि वहुमान ॥ ३ ॥
मान गयुं दोय अंशथी, देखी वीर्य अनन्त ।
भुजावले भवजल तर्या, पूजो खंध महन्त ॥४॥
रत्नत्रय गुण ऊज्वली, सकल सुगुण विश्राम ।
नाभि कमल नी पूजना, करता अविचल धाम ॥५॥
हृदय कमल उपशम वले, वाल्या रागनें रोष ।
हेम दहै वन खंडनें, हृदय तिलक सन्तोष ॥६॥
सोल पहर देई देशना, कंठ विवर वर तूल ।
मधुर धुनी सुरनर सुणे, तिम गले तिलक अमूल ॥७॥
तीर्थंकर पद पुन्य थी, त्रिभुवन जन सेवन्त ।
त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवन्त ॥८॥
सिद्धशिला गुण ऊजली, लोकान्तिक भगवन्त ।
वसिया तिण कारण सही, सिद्ध शिखा पूजन्त ॥९॥
उपदेशक नव तत्वनां तिम नव अंग जिनन्द ।
पूजो वहुविधि भावथी, कहे सहु वीर मुणिंद ॥१०॥

॥ अथ पुष्पपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

विकचनिर्मलशुद्धमनोरमै-र्विशदचेतनभावसमुद्भवैः । सुपरिणामप्रसूनघनैर्नवैः, परमतत्त्वमयं

हि यजाम्यहं ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० पुष्पं यजामहे स्वाहा ॥ इति पुष्प पूजा ॥

॥ यह कहकर पुष्प चढ़ावे ॥

इस पुष्पपूजा से अन्तःकरणमें सद्भावना जागृत होती है, चित्त की स्थिरता होकर शुभ परिणामों का उदय होता है तथा यथार्थ तत्व का बोध होता है ।

॥ अथ धूप पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलकर्ममहेंधनदाहनं, ।विमलसंवरभावसुधूअशुभपुद्गलसंगविवर्जितं, जिनपतेः पुरतोऽपनं स्सुसुहर्षितः ॥१॥ ॐ ह्रीं पामात्मने० धूपं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥ इति धूप पूजा ॥

॥ यह कहकर धूप अगरबत्ती खेवें ॥

इस धूप पूजा से आठ प्रकार के कर्मरूप इंधन का दाहक निर्मल संवर भाव उत्पन्न होता हैं अर्थात् कर्म पुद्गलों का शनैः परिशाटन होकर कर्मबन्धन छूटता जाता है तथा अन्तःकरण से रागद्वेषादि का विनाश होकर आनंद संचार होता है ।

॥ अथ दीप पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

भविकानिर्म्मलबोधविकाशकं, जिनगृहे शुभ-दीपक दीपनं । सुगुणरागविशुद्धसमन्वितं, दधतु भावविकाशकृतेर्जनाः ॥१॥ ॐ ह्रीं पर-मात्मने० दीपं यजामहे स्वाहा ॥ इति दीप पूजा ॥ मंगलदीपकचढावे ॥

इस दीपपूजा से भव्यजनों के हृदय में निर्मल वोध का विकाश होता है उसके प्रभाव से सद्गुणों के उपार्जन में रुचि उत्पन्न होती है तथा शनैः २सद्गुणों के उपार्जन के द्वारा मनुष्य शान्तिसुख का पात्र बनता है ।

॥ अथ अक्षत पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलमंगलकेलिनिकेतनं, परममंगलभावमयं जिनं। श्रयति भव्यजना इति दर्शयन, दधतु नाथपुरोक्षतस्वास्तिकं ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० अक्षतं यजमहे स्वाहा ॥ इति अक्षत पूजा ॥

॥ अखंड चावल चढावें ॥

इस अक्षत पूजा से मनुष्य सम्पूर्ण मंगलों का स्थान बनता है, उसका सद्भाव मगलरूप बन जाता है, उसके सर्व कार्य उसके लिये मंगलकारी होते हैं तथा उसकी पवित्र कीर्ति सर्वत्र विस्तृत होती है ।

॥ अथ नैवेद्य पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

सकलपुद्गलसंग विवर्जितं, सहज चेतन भाव विलासकं । सरसभोजननव्यनिवेदनात्, परम निर्वृतिभावमहं स्पृहे ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्माने० नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ इति नैवेद्य पूजा ॥

॥ नैवेद्य मिठाइ पक्वान्न चढावें ॥

इसनैवेद्यपूजा से मनुष्यका अन्तःकरण कर्म रजसे रहित होने के कारण स्वच्छ होकर दर्पण के समान बन जाता है, उसमें सहज निर्मल चेतन आत्मा का साक्षात् दर्शन होता हैं तथा उसे मोक्ष के यथार्थ स्वरूप का बोध होजाता है ।

॥ अथ फल पूजा ॥

॥ श्लोक ॥

कटुककर्मविपाकविनाशनं, सरसपक्वफलव्रजढौकनं । विहितमोक्षफलस्य प्रभो पुरः, कुरुत सिद्धिफलाय महाजनाः ॥१॥ ॐ ह्रीं परमात्माने० फलं यजामहे स्वाहा ॥ इति फलपूजा ॥

॥ श्रीफल नीलाफल प्रमुख चढावें ॥

इस फल पूजा से कटुविपाक वाले अर्थात् जन्म और

मरणरूप फलवाले समस्त कर्मों का क्षय होजाता है, सब कर्मों का क्षय होजाने से मोक्षरूप फलकी प्राप्ति होती है तथा उक्त मोक्ष धाम में पहुंच कर मनुष्य एकान्तिक शाश्वत शांति सुख का भोग करता है।

॥ अथ अर्घ्यपूजा ॥

॥ श्लोक ॥

इति जिनवरवृन्दं भक्तितः पूजयन्ति, सकल गुणनिधानं देवचन्द्रं स्तुवन्ति। प्रतिदिवस मनन्तं तत्त्वमुल्लासयान्ति, परमसहजरूपं मोक्ष सौख्यं श्रयंति॥ ॐ ह्रीं परमात्मने० अर्घ्यं यजामहे स्वाहा। चारखूणें धार दीजे॥ इति अर्घ्य पूजा॥

॥ अथ वस्त्र पूजा ॥

॥ वस्त्र लेके खडा रहै, और यह श्लोक पढे ॥

शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैलचूला, सिंहासनोपरिमितस्नपनावसाने। दध्यक्षतैः कुसुमचंदन गन्धधूपैः, कृत्वार्च्चनंतु विदधाति सुवस्त्रपूजां॥ तद्वत् श्रावकवर्ग एष विधिनालंकारवस्त्रादिकं, पूजातीर्थकृतां करोति सततं शक्त्यातिभक्त्या-

हतः। नीरागस्य निरञ्जनस्य विजित। रातोस्त्रि-लोकिपतेः, स्वस्यान्यस्य जनस्य निर्वृत्तिकृतै क्लेशक्षयाकांक्षया ॥२॥ ॐ ह्रीं परमात्माने वस्त्रेण यजामहे स्वाहा ॥ वस्त्र चढावे ॥

॥ इति अष्ट प्रकारी पूजा ॥

अथ श्री मौन एकादशीनुं गणणुं

४ श्री महायशः सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री सर्वानु भूति अर्हते नमः ॥
६ श्री सर्वानुभूति नाथाय नमः ॥
६ श्री सर्वानुभूति सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री श्रीधर नाथाय नमः ॥

॥ जंबुद्वीपे भरते वर्तमान चोवीशी ॥

२१ श्री नमिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ श्री मल्लिनाथ अर्हते नमः ॥
१९ श्री मल्लिनाथ नाथाय नमः ॥
१९ श्री मल्लिनाथ सर्व ज्ञाय नमः ॥
१८ श्री अरनाथ नाथाय नमः ॥

॥ जंबुद्वीपे भरते अनागत चोवीशी ॥

४ श्री स्वयंप्रभ सर्वज्ञाय नमः ॥

६ श्री देवश्रुत अर्हते नमः ॥
६ श्री देवश्रुत नाथाय नमः ॥
६ श्री देवश्रुत सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री उदयनाथ नाथाय नमः ॥

। धातकीखंडे पूर्वभरते अतीत चोवीशी ॥

४ श्री अकलंक सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री शुभंकरनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री शुभंकरनाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री शुभंकरनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री सप्तनाथ नाथाय नमः ॥

॥ धातकीखंडे पूर्वभरते वर्तमान चोवीशी ॥

२१ श्री ब्रह्मेंद्रनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ श्री गुणनाथ अर्हते नमः ॥
१९ श्री गुणनाथ नाथाय नमः ॥
१९ श्री गुणनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ श्री गांगिकनाथ नाथाय नमः ॥

॥ धातकीखंडे पूर्वभरते अनागत चोवीशी ॥

४ श्री सांप्रत सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री मुनिनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री मुनिनाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

७ श्री विशिष्टनाथ नाथाय नमः ॥

॥ पुष्करवरद्वीपे पूर्वभरते अतीत चोवीशी ॥

४ श्री सुमृदुनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

६ श्री व्यक्तनाथ अर्हते नमः ॥

६ व्यक्तनाथ नाथाय नमः ॥

६ व्यक्तनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

७ श्री कलाशत नाथाय नमः ॥

॥ पुष्करवरद्वीपे पूर्वभरते वर्तमान चोवीशी ॥

२१ श्री अरण्यवास सर्वज्ञाय नमः ॥

१९ श्री योगनाथाय नमः ॥

१९ श्री योगनाथ नाथाय नमः ॥

१९ श्री योगनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

१८ श्री अयोगनाथ नाथाय नमः ॥

॥ पुष्करवरद्वीपे पूर्वभरते अनागत चोवीशी ॥

४ श्री परम सर्वज्ञाय नमः ॥

४ श्री शुद्धार्तिनाथ अर्हते नमः ॥

६ श्री शुद्धार्तिनाथ नाथाय नमः ॥

५ श्री शुद्धार्तिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

७ श्री निःकेशनाथ नाथाय नमः ॥

॥ धातकीखंडे पश्चिमभरते अतीत चोवीशी ॥

४ श्री सर्वार्थ सर्वज्ञाय नमः ॥

६ श्री हरिभद्र अर्हते नमः ॥

६ श्री हरिभद्र नाथाय नमः ॥
६ श्री हरिभद्र सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री मगधाधिप नाथाय नमः ॥

॥ धातकीखंडे पश्चिमभरते वर्तमान चोवीशी ॥

२१ श्री प्रयच्छ सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ श्री अक्षोभनाथ अर्हते नमः ॥
१९ श्री अक्षोभनाथ नाथ यनमः ॥
१९ श्री अक्षोभनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ श्री मलयसिंह नाथाय नमः ॥

॥ धातकीखंडे पश्चिम भरते अनागत चोवीशी ॥

४ श्री दिनरुक् सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री धनदनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री धनदनाथाय नमः ॥
६ श्री धनदनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री पौषधनाथ नाथाय नमः ॥

॥ पुष्करवरद्वीपे पश्चिमभरते अतीत चोवीशी ॥

४ श्री प्रलम्ब सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री चारित्रनिधि अर्हते नमः ॥
६ श्री चारित्रनिधि नाथाय नमः ॥
६ श्री चारित्रनिधि सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री प्रशमराजित नाथाय नमः ॥

॥ पुष्करवर द्वीपे पश्चिमभरते वर्तमान चोवीशी ॥

२१ श्री स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ श्री विपरीतनाथ अर्हते नमः ॥
१९ श्री विपरीतनाथ नाथाय नमः ॥
१९ श्री विपरीतनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ श्री प्रसादनाथ नाथाय नमः ॥

॥ पुष्करवरद्वीपे पश्चिमभरते अनागत चोवीशी ॥

४ श्री अघटितनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री भ्रमणेंद्रनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री भ्रमणेंद्रनाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री भ्रमणेंद्रनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री ऋषभचन्द्र नाथाय नमः ॥

॥ जम्बुद्वीपे ऐरवते अतीत चोवीशी ॥

४ श्री दयान्त सर्मज्ञाय नमः ॥
६ श्री अभिनन्दननाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री अभिनन्दननाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री अभिनन्दनन थ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री रत्नेशनाथ नाथाय नमः ॥

॥ जम्बुद्वीपे ऐरवते अनागत चोवीशी ॥

२१ श्री श्यामकोष्ट सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ श्री मरुदेवनाथ अर्हते नमः ॥
१९ श्री मरुदेवनाथ नाथाय नमः ॥

१९ श्री मरुदेवनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ श्री अतिपार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ जम्बुद्वीपे ऐरवते अनागत चोवीशी ॥

४ श्री नंदिषेण सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री व्रतधरनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री व्रतधरनाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री व्रतधरनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री निर्वाणनाथ नाथाय नमः ॥

॥ धातकीखंडे पूर्वऐरवते वर्तमान चोवीशी ॥

४ श्री सौंदर्य सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री त्रिविक्रमनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री त्रिविक्रमनाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री त्रिविक्रमनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री नरसिंहनाथ नाथाय नमः ॥

॥ धातकीखंडे पूर्व ऐरवते वर्तमान चोवीशी ॥

२१ श्री खेमंत सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ श्री सन्तोषिनाथ अर्हते नम ॥
१९ श्री सन्तोषिनाथ नाथाय नम ॥
१९ श्री सन्तोषिनाथ सर्वज्ञाय नम ॥
१८ श्री कामनाथ नाथाय नमः ॥

॥ धातकीखंडे पूर्वऐवरते अनागत चोवीशी ॥

४ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

६ श्री चंद्रदाह अर्हते नमः ॥
६ श्री चंद्रदाह नाथाय नमः ॥
६ श्री चन्द्रदाह सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री दिल्यादित्य नाथाय नमः ॥

॥ पुष्करार्ध्धे पूर्व ऐरवते अतीत चोवीशी ॥

४ श्री अष्टाहिक सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री वणिक्नाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री वणिक्नाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री वणिकनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ उदयज्ञान नाथाय नमः ॥

॥ पुष्कराध्ध पूर्व ऐरवते वर्त्तमान चोवीशी ॥

२१ श्री तमःकन्द सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ श्री सायकाक्ष अर्हते नमः ॥
१९ श्री सायकाक्ष नाथाय नमः ॥
१९ श्री सायकाक्ष सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ श्री क्षेमन्तनाथ नाथाय नमः ॥

॥ पुष्करार्ध्धे ऐरवते अनागत चोवीशी ॥

४ श्री नैर्वाणिक सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री रविराज अर्हते नमः ॥
६ श्री रविराज नाथायनमः ॥
६ श्री रविराज सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री प्रथमनाथ नाथाय नमः ॥

॥ धातकीखंडे पश्चिम ऐरवते अतीत चोवीशी ॥

४ श्री पुरूरवा सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री अवबोध अर्हते नमः ॥
६ श्री अवबोध नाथाय नमः ॥
६ श्री अवबोध सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री विक्रमेंद्र नाथाय नमः ॥

॥ धातखंडे पश्चिम ऐरवते वर्तमान चोवीशी ॥

२१ श्री सुशांति सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ श्री हरदेव अर्हते नमः ॥
१९ श्री हरदेव नाथाय नमः ॥
१९ श्री हरदेव सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ श्री नंदिकेश नाथाय नमः ॥

॥ धातकीखंडे पश्चिम ऐरवते अनागत चोवीशी ॥

४ श्री महामृगेंद्र सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री अशोचित अर्हते नमः ॥
६ श्री अशोचित नाथाय नमः ॥
६ श्री अशोचित सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री धर्मेंद्रनाथ नाथाय नमः ॥

॥ पुष्करवरद्वीपे पश्चिम ऐरवते अतीत चोवीशी ॥

२१ श्री अश्ववृंद सर्वज्ञानमः ॥
१९ श्री कुटिलक अर्हते नमः ॥
१९ श्री कुटिलक नाथाय नमः ॥

१९ श्री कुटिलक सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ श्री वर्द्धमान नाथाय नमः ॥
॥ पुष्करवरद्वीपे पश्चिम ऐरवते वर्तमान चोवीशी ॥
२१ श्री नंदिकेश सर्वज्ञाय नमः ॥
९१ श्री धर्म्मचन्द्र अर्हते नमः ॥
१९ श्री धर्म्मचन्द्र नाथाय नमः ॥
१९ श्री धर्म्मशन्द्र सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ श्री विवेकनाथ नाथाय नमः ॥
॥ पुष्करवरद्वीपे पश्चिम ऐरवते अनागत चोवीशी ॥
४ श्री कलापक सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री विसोम अर्हते नमः ॥
६ श्री विसोम नाथाय नमः ॥
६ श्री विसोम सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री अरण्यनाथ नाथाय नमः ॥

❀ एकादशीनुं गणणुं समाप्त ❀

अथ पञ्च कल्याणकी टीप
॥कार्तिक-कृष्णपक्ष-कातिक-वदी ॥
५ शम्भवनाथजिनाय उत्पन्न केवलज्ञानाय नमः ॥
१२ अरिष्टनेमिनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः ॥

१२ पद्मप्रभजिनाय जात जन्मने नमः ॥
१३ पद्मप्रभजिनाय गृहितदीक्षाय नमः ॥
३० महावीरजिनाय मोक्षगताय नमः ॥

॥ कार्तिक-शुक्लपक्ष-कातिक-सुदी ॥

३ सुविधिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः ॥
१२ अरनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः ॥

॥ मार्गशीर्ष-कृष्णपक्ष-मगसर-वदि ॥

५ सुविधिनाथजिनाय जातजन्मने नमः ॥
६ सुविधिनाथजिनाय गृहितदीक्षाय नमः ।
१० महावीरजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः ॥
११ पद्मप्रभजिनाय मोक्षगताय नमः ॥

॥ मार्गशीर्ष-शुक्लपक्ष-मगसर-सुदी ॥

१० अरनाथजिनाय जात जन्मने नमः ॥
१० अरनाथजिनाय मोक्षगताय नमः ॥
११ अरनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः ॥
११ मल्लिनाथजिनाय गृहीत दीक्षाय नमः ॥
११ मल्लिनाथजिनाय जातजन्मने नमः ॥
११ मल्लिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
११ अरिष्टनेमिजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः ॥
१४ शम्भवनाथजिनाय जातजन्मने नमः ॥

१५ शम्भवनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः ॥

॥ पौष-कृष्णपक्ष-पौष-वदी ॥

१० पार्श्वनाथजिनाय जातजन्मने नमः ॥

११ पार्श्वनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः ॥

१२ चन्द्रप्रभजिनाय जातजन्मने नमः ॥

१३ चंद्रप्रभजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः ॥

१४ शीतलनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः ॥

॥ पौष-शुक्लपक्ष-पौष-सुदी ॥

६ विमलनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः ॥

९ शांतिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः ॥

११ अजितनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः ॥

१४ अभिनन्दनजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः ॥

१५ धर्मनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः ॥

॥ माघ-कृष्णपक्ष-माघ-वदी ॥

६ पद्मप्रभजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः ॥

१२ शीतलनाथजिनाय जातजन्मने नमः ॥

१२ शीतलनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः ॥

१२ ऋषभदेवजिनाय मोक्षगताय नमः ।

३० श्रेयांसजिनाय उत्पन्नकेवल ज्ञानाय नमः ॥

॥ माघ-शुक्लपक्ष-माघ-सुदी ॥

१ अभिनंदनजिनाय जातजन्मने नमः ॥
२ वासुपूज्यजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः ॥
३ विमलनाथजिनाय जातजन्मने नमः ॥
३ धर्मनाथजिनाय जातजन्मने नमः ॥
४ विमलनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः ॥
८ अजितनाथजिनाय जातजन्मने नमः ॥
९ अजितनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः ॥
१२ अभिनंदनजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः ॥
१३ धर्मनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः ॥

॥ फाल्गुण-कृष्णपक्ष-फागण-वदी ॥

६ सुपार्श्वनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः ।
७ सुपार्श्वनाथजिनाय मोक्षप्राप्ताय नमः ॥
७ चंद्रप्रभजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः ॥
९ सुविधिनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः ॥
११ ऋषभदेवजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः ॥
१२ श्रेयांसनाथजिनाय जातजन्मने नमः ॥
१२ मुनिसुव्रतजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः ॥
१३ श्रेयांसनाथजिनाय गृहितदीक्षाय नमः ॥
१४ वासुपुज्यजिनाय जातजन्मने नमः ॥
३० वासुपुज्यजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः ॥

॥ फाल्गुन-शुक्लपक्ष-फागण-सुदी ॥

२ अरनाथजिनाय च्यवनक्षाय नमः ॥
४ मल्लिनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः ॥
८ शम्भवनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः ॥
१२ मल्लिनाथजिनाय मोक्षगताय नमः ॥
१२ मुनिसुव्रतजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः ॥

॥ चैत्र-कृष्णपक्ष-चैत्र-वदी ॥

४ पार्श्वनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः ॥
४ पार्श्वनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः ॥
५ चन्द्रप्रभजिनायच्यवनप्राप्ताय नमः ॥
८ ऋषभदेवजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
८ ऋषभस्वामिजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः ॥

॥ चैत्र-शुक्लपक्ष-चैत्र-सुदी ॥

३ कुन्थुनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः ॥
५ अजितनाथजिनाय मोक्षगताय नमः ॥
५ शम्भवनाथजिनाय मोक्षगताय नमः ॥
५ अनन्तनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
११ सुमतिनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
१३ महावीरजिनाय जातजन्मने नमः
१५ पद्मप्रभजिनाय उत्पन्नकेवल ज्ञानाय नमः
१ कुंथुनाथजिनाय मोक्षगताय नमः

॥ वैसाख-कृष्णपक्ष-वैसाख-वदी ॥

१ कुंथुनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
२ शीतलनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
५ कुंतिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
६ शीतलनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
१० नेमिनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
१३ अनन्तनाथजिनाय जातजन्मने नमः
१४ अनंतनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
१४ अनंतनाथजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
१४ कुन्थुनाथजिनाय जातजन्मने नमः

॥ वैसाख-शुक्लपक्ष-वैसाख-सुदी ॥

४ अभिनन्दनजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
७ धर्मनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
८ अभिनंदनजिनाय मोक्षगताय नमः
८ सुमतिनाथजिनाय जातजन्मने नमः
९ सुमतिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः
१० महावीरजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः
१२ विमलनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
१३ अजितनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः

॥ ज्येष्ठ-कृष्णपक्ष-जेठ-वदी ॥

६ श्रेयांसनाथजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
८ मुनिसुव्रतजिनाय जातजन्मने नमः
९ मुनिसुव्रतजिनाय मोक्षगताय नमः

१६ शीतलनाथजिनाय जातजन्मने नमः
१३ शांतिनाथजिनाय जातजन्मने नमः
१३ शांतिनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
१४ शांतिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ जेष्ठ-शुक्लपक्ष-जेठ-सुदी ॥

५ धर्म्मनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
९ वासुपूज्यजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
१२ सुपार्श्वनाथजिनाय जातजन्मने नमः
१३ सुपार्श्वनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ आषाढ़-कृष्णपक्ष-आषाढ़-वदी ॥

४ ऋषभदेवजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
७ विमलनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
९ नमिनाथजिनाय गृहीतदीक्षाय नमः

॥ आषाढ़ शुक्लपक्ष-आषाढ़-सुदी ॥

६ महावीरजिनाय च्यवनप्राप्ताय नमः
८ अरिष्टनेमिजिनाय मोक्षगताय नमः
१४ वासुपुज्यजिनाय मोक्षगताय नमः

॥ श्रावण-कृष्णपक्ष-श्रावण-वदी ॥

४ श्रेयांसनाथजिनाय मोक्षगताय नमः

७ अनंतनाथजिनाय च्यवनमासाय नमः
९ कुंथूनाथजिनाय च्यवनमासाय नमः
८ नमिनाथजिनाय जातजन्मने नमः

॥ श्रावण-शुक्लपक्ष-श्रावण-सुदी ॥

२ सुमतिनाथजिनाय च्यवनमासाय नमः
५ अरिष्टनेमिजिनाय जातजन्मने नमः
६ अरिष्टनेमिजिनाय गृहितदीक्षाय नमः
८ पार्श्वनाथजिनाय मोक्षगताय नमः
१५ मुनिसुव्रतजिनाय च्यवनमासाय नमः

॥ भाद्रपद-कृष्णपक्ष-भाद्रपद-वदी ॥

७ चंद्रप्रभजिनाय मोक्षगताय नमः
७ शांतिनाथजिनाय च्यवनमासाय नमः
८ सुपार्श्वनाथजिनाय च्यवन मासाय नमः

॥ भाद्रपद-शुक्लपक्ष-भादों-वदी ॥ सुदी

९ सुविधिनाथजिनाय मोक्षगताय नमः

॥ आश्विन-कृष्णपक्ष-आश्विन-वदी ॥

१२ महावीरजिनाय च्यवन मासाय नमः
३० अरिष्टनेमिजिनाय उत्पन्नकेवलज्ञानाय नमः

॥ आश्विन-शुक्लपक्ष-आसोज-सुदी ॥

१५ अरिष्टनेमिजिनाय च्यवन मासाय नमः

॥ इति पंचकल्याणक टीप समाप्त ॥

कल्याणक के दिन २१ नवकारवाली गुणनी तथा बारह लोगस्स का काउस्सग्ग करना सर्व उपवास १२१ पांच वर्ष में करणा ।

॥ अथ दीपमालाको गुणनो लिख्यते ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामीनाथाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामीसर्वज्ञाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामीपारंगताय नमः

ॐ ह्रीं श्रीगोतमस्वामीकेवलज्ञानाय नमः

॥ इति दीपमाला को गुणनो ॥

॥ अथ २० विहरमनों के नाम ॥

१ श्री समन्धर स्वामी	२ श्रीयुगन्धर स्वामी
३ श्री बाहुस्वामी	४ श्री सुबाहु स्वामी
५ श्री सुजात स्वामी	६ श्री स्वयंप्रभस्वामी
७ श्री ऋषभानन स्वामी	८ श्री अनंतवीर्य स्वामी
९ श्री सुरप्रभवस्वामी	१० श्री विशालधर स्वामी
११ श्री वज्रधर स्वामी	१२ श्री चंद्रानन स्वामी
१३ श्री चंद्रबाहु स्वामी	१४ श्री भुजंग स्वामी
१५ श्री ईश्वर स्वामी	१६ श्री नेमप्रभ स्वामी

१७ श्री वीरसेन स्वामी   १८ श्री महाभद्रस्वामी
१९ श्री देवयस स्वामी   २० श्री अजितवीर्य स्वामी

चार सा:श्वते जिनवर के नाम ॥

१ श्री ऋषभानन स्वामी   २ श्री चंद्रानन स्वामी
३ श्री वारिषेण स्वामी   ४ श्री वर्द्धमान स्वामी

अथ नव पदों के नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा नव थुइ

॥ अथ अरिहंतपद चैत्यवन्दन ॥

जय २ श्रीअरिहंत भानु, भविकमल विकासी ॥ लोकालोक अरूपि रूपि, सम वस्तु प्रकासी ॥ १ ॥ समुद्घात शुभ केवले, क्षयकृत मलरासी, शुक्ल चरम शुचि पादसें, भयो वर अविनाशी ॥२॥ अंतरंग रिपुगुण हणिए, हुय अप्पा अरिहंत ॥ तसु पद पंकज में रमत, हीरधरम नित संत ॥ ३ ॥ इति ॥ 'जंकिंचि नामतित्थं' से नमोऽर्हत् तक ॥

॥ अथ अरिहन्तपद स्तवन ॥

(पूजो मनरली हां हो दादा कुशलसूरिंद, ए चाल)

श्री तेरम गुण वसिके कंत, कर्मकुं भंजे श्री अरिहन्त ॥ मन मानले ॥ अष्ट समय में समय तीन, सर्व आ-

हारथी होवे हीन ॥ म० ॥१॥ वादर काये मन वच योग तनु से फुन दृढ तनुयोग ॥ म० सुक्षम काय तें मन वच रोक, निज विर्ये ताकुं कर फोक ॥ म० ॥ २ ॥ संज्ञी मात्र के मन व्यापार, वेइंद्रीने वाक्य प्रचार ॥ म० ॥ आदि समय लह्यो पनकसु जीव, सुषम लह्यो तिण योग अतीव ॥ म० ॥३॥ एषां योग थी समयमें एक, हीना संख गुणोकर छेक ॥ म० ॥ समया संखे जोग निरोध, कृत्वा जो लह्यो जोगी सोध ॥ म० ॥ ४ ॥ वेदसमेनाहारता पाय, कुशल कहे ते श्रीजिनराय ॥ म० ॥ तेरमें गुणमें गुण समें देव, आपो सा जगकुं नितमेव ॥ म० ॥ ५ ॥ इति अरिहन्तपद स्तवन ॥

॥ अथ अरिहंतपद स्तुति ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररूपक लोकालोक सरूपोजी, केवल ज्ञान की ज्योति प्रकाशक अनन्त गुणे करि पूरोजी ॥ तीजे भव थानक आराधी गोत्र तीर्थंकर नूरोजी, बारे गुणां करि अहवा अरिहन्त आराधो गुण भूरोजी ॥ इति अरिहन्त पद स्तुति ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवंदन ॥

श्रीशैलेशी पूर्व प्रांत, तनुहिनत भागी ॥ पुव्व पउयपसंग से, ऊरधगत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत, गयो

निगुण निरागी ॥ चेतनभूपें आत्मरूप, सुदिशा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दंशणनाण थी ए, रूपातीत स्वभाव ॥ सिद्ध भये तसु हीरधर्म, वन्दे धरि शुभ भाव ॥ ३ ॥ इति सिद्धपद चैत्यवन्दन ॥

॥ सिद्धपद स्तवन ॥

(थांरे महिलां ऊपर मेह झरोखे वीजली, ए चाल)

अष्ठ वरस नग मास हीना कोडी पूर्वमें ॥ म्हारालालजी ही० ॥ उत्कृष्टो करे वास सयोगी धाम में ॥ म्हा० स० ॥ अजोगीके अन्त तजे भवितव्यता ॥ म्हा० त० ॥ शलेसी लहै कर्म दलै गुण श्रेणिता ॥ म्हा० द० ॥ १ ॥ ह्स्वाक्षर पञ्च काल रहै ते योगमें म्हा० र० ॥ तेरस प्रकृतिनो अन्त करीने अन्त में ॥ म्हा० क० ॥ गमन करे नगरझसे अक्रीय होयने ॥ म्हा० अ० ॥ पुव्वपयोग असङ्ग स्वभाव अबन्धने ॥ म्हा० स्व० ॥ २ ॥ इषुगुण नव परमाण योजन लक्षें कही ॥ म्हा० यो० ॥ वर्तुल विशदा भास निरालंबन सही ॥ म्हा० नि० ॥ मध्ये योजन अष्ठ घनाकृति अन्तमें ॥ म्हा० घ० ॥ मक्षी पक्ष थी हीन भणी सिद्धांत में ॥ म्हा० भ० तनुपब्भारा नाम शिलार्स जोयने ॥ म्हा० सि० ॥ युग लोचन मे भाग अलोककुं स्पर्शने ॥ म्हा० अ० ॥ लघु अंगुल बत्तीस प्रमाणऽवगाहना ॥ म्हा० प्र० ॥ ॥ वृद्धी धनुशतपच गुणसै हीनता ॥म्हा०

गु० ॥४॥ मलिया एकमें अनंत अबाधा ना लही ॥म्हा० अ० ॥ अष्ट प्राण धरि रम्य सिरीही जो सही ॥ म्हा०सि० ॥ बीजो पद श्री सिद्ध धरो मनगेह में ॥ म्हा० धरो० ॥ कुशल भये जग जीव मिलोगा तेहमें ॥ म्हा० मि० ॥ ५ ॥ इति सिद्धपद स्तवन ॥

॥ सिद्धपद स्तुति ॥

अष्ट करमकुं धमन करीने गमन कियो शिववासीजी । अव्याबाधे सादि अनादि चिदानन्द चिदरासीजी ॥ परमातमपद पूरण विलासी अघ घन दाघ विनाशीजी । अनंत चतुष्टमय शिवपद ध्यावो केवल ज्ञानी भासीजी ॥१॥ इति सिद्धपद स्तुति ॥

॥ तृतीय आचार्य पद चैत्यवंदन ॥

जिन पद कुल मुखरस अनिल । मितरस गुण धारी । प्रबल सबल घन मोहकी । जिण तें चमूहारी ॥ १ ॥ ऊज्वादिक जिनराज गीत । नवतन विस्तारी । भव कूपें पापै पडण्त । जगजन निस्तारी ॥ २ ॥ पंचाचारी जीवकें, आचारिजपद सार । तिनकुं बंदे हीर धर्म, अष्टोत्तर सो वार ॥ ३ ॥ इति आचार्यपद चैत्यवन्दन ॥

॥ अथ आचार्य पद स्तवन ॥

(नणदल बींदली दें, ए चाल)

खंती खडगथी जेणे, हण्यो क्रोध सुभट सम देखे हो,

गणपति गुण पेखी ॥ टेर ॥ मान महागिरि वयरे, अति-शोभन मद्दव वयरे हो ॥ ग० ॥ १ ॥ दम्भरूप विसवेली, वर अज्झव कीले ठेली ॥ ग० ॥ मुच्छा वेलथी भरियो, लोह सागर मुत्ते तरियो हो ॥ ग० ॥ २ ॥ मदन नाग मद हीनो, जिन दम शम जन्त्रे कीनो हो ॥ ग० ॥ मोह महामल्ल त.ड्यो, पुण वैराग मुगरें पाडयो हो ॥ ग० ॥ ३ ॥ दोस गयंद वस कीनो, धरि उपशम अंकुश लीनो हो ॥ ग० ॥ अन्तरंग रिपु भेद्या, सुरवर पिण जिण निषेद्या हो ॥ ग० ॥ ४ ॥ रस वृति गुणथी लीनो, सूत्र अरथे आगम पीनो हो ॥ ग० ॥ आचारज पद एहवो, धरि जीव कुशलता सेवो हो ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति आचार्यपद स्तवनं ॥

॥ अथ आचार्यपद स्तुति ॥

पञ्चाचारकुं पाले उजवाले दोष रहित गुणधारीजी । गुण छत्तीसे आगमधारी द्वादश अंग विचारीजी । भवल सवल घन मोह हरणकूं अनिल समो गुण वाणीजी । क्षमा सहित जे सञ्जम पाले आचारज गुण ध्यानीजी ॥ इति आचार्यपद स्तुति ॥

॥ चतुर्थ उपाध्यायपद चैत्यवन्दन ॥

धन धन श्री उवज्झाय राय, शठताघन भंजन । जिनवर दिसत दुवाल संग, कर कृत जन रंजन ॥ १ ॥ गुणवण भंजण मण गयंद, सुय शृणि कियगंजण । कुणालंध लोय

लोयणे, नत्थय सुयभंजण ॥ २ ॥ महा प्राण में जिन लखो ए, आगम से पद तुर्य । तिनपें एहनिश हीरधर्म वन्दे पाठक वर्य ॥ ३ ॥ इति उपाध्यायपद चैत्यवन्दन ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तवन ॥

(सांवलिया अलगा रहोने, ए चाल)

हुयने २ दूरी हुयने, चेतन भाषे सठने ॥ दूरी हुयने ॥ तू मुझ पास क्युं आवे ॥ दू० ॥ तुझने कुण बतलावे, दू० ॥ ए आंकणी ॥ तो संगे निज दर्वेंद्रीनो, रचना चरम सुलणो । नाणा वरणी खय उपशमसे, भावेंद्री मण्डाणो ॥ दू० ॥ १ ॥ द्रव्ये ते परजा में कीना, जाति नाम व्यपदेश । एवंतो गो तुरग गजादिक, किण कर्मे उपदेश ॥ दू० २ ॥ इत्यादिक बहु मुझकुं सङ्गा, तेरे संगे लागी । नीलवर्ग की समता सेती, मैं भ्यो तोसुं रागी ॥ दू० ॥ ३ ॥ उप कहिये हणियो मवियालो, अधियां लाभत आय । आधीनां मन पीड़ानामें, मायो येन विलाय ॥ दू० ॥ ४ ॥ आधीक्ये समरियें वर आगम, सूत्र सेतें उवज्झाय । तव सेवातें हणि सठताकुं, चेतन कुशलता पाय ॥ दू० ॥ ५ ॥ इति उपाध्याय स्तवन ॥

॥ अथ उपाध्यायपद स्तुति ॥

अङ्ग इग्यारे चउदे पूरव गुण पचवीसना धारीजी, सूत्र अरथधर पाठक कहिये जोग समाधि विचारीजी । तपगुण

सुरा आगम पूरा नय निक्षेपे तारीजी, मुनि गुणधारी बुध विस्तरीं पाठक पूजो अविकारीजी ॥ १ ॥ इति उपाध्याय स्तुति ॥

॥ अथ पंचम साधुपद चैत्यवन्दन ॥

दंसण नाण चरित्त करी, वर शिवपद गामी, धर्म शुक्ल शुचि चक्रसे, आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुणपमत्त अपमत्तते, भये अन्तरजामी । मानस इन्द्रिय दमन भूत, सम दम अभिरामी ॥ २ ॥ चारुतिसन गुण गणा भरयो ए, पञ्चम पद मुनिराज । वत्पङ्कज नमत है हीरधर्म के काज ॥ ३॥ इति साधुपद चैत्यवन्दन ॥५॥

॥ साधुपद स्तवन ॥

(मालन मालन मति कहो, ए चाल)

निकषाया जगजन कहे, धारे चउगति वसन से रोसहो ॥ मुनींदजी ॥ राग हीन भयतुं करे ॥ साविहा ॥ शिव रमणी से हेत हो ॥ मुनींदजी ॥१॥ सर्व प्रमाद तजी रहे ॥ सा० ॥ छठे पूरव कोड हो ॥ मु० ॥ श्रत सोगम आगम करे ॥सा.॥ लघुकाले गुण आदि हो ॥ मु० ॥ २ ॥ स्त्यानर्द्धि निद्रा उदै ॥ सा० ॥ पामे कर्म निकंद हो ॥मु.॥ प्रचला निद्रा मे रही ॥ सा. ॥ चारम गुणना वास हो ॥ मु. ॥ ३ ॥ स्थिति रस घात प्रमुख धरे ॥ सा. ॥ जो गुण संख्या तीत हो ॥ मु० ॥ तो पिण तिण जग मे लही ॥ सा. ॥ त्रिक-

घन-गुणनी ख्यात हो ॥ मु० ॥ ४ ॥ रयण त्रय से शिव पथे ॥ सा० ॥ साधन पर वर जीवहो ॥ मु० ॥ साधु हुवइ तसु धर्म में ॥ सा०॥ कुशलु भवतु जगतीवहो ॥ मु० ॥ ५ ॥ इति पंचम साधुपद स्तवनं ॥

अथ साधु पद स्तुति ॥

सुमति गुपति कर संजम पाले दोष बयालीश टाले जी, षटकाया गोकुल रखवाले नवविध ब्रह्मव्रत पालेजी। पंचमहाव्रत सूधा पाले धर्म शुक्ल उजवालेजी। क्षपक श्रेणी कर कर्म खपावे दम पद गुण उपजावें जी ॥ इति साधु पद स्तुति ।

॥ छठे दर्शनपद चैत्यवन्दन ॥

हुय पुग्गल परियट्ट, अद्ध परिमत संसार । गंठिभेद तव करि लहे, सब गुण आधार ॥१॥ क्षायक वेदक शशि असंख, उवशम पण वार । विना जैण चारित्र नाण, नहीं हुवे शिव दातार ॥ २ ॥ श्रीसुदेव गुरु धर्मनीए, रूचि लछन अभिगम । दरशनकुं गणि हीरधर्म, अह निश करत प्रणाम ॥ इति दर्शनपद चैत्यवन्दन ॥

॥ दर्शनपद स्तवन ॥

(रामचन्द्र के बाग में आंबो मोहि रह्यो री, ए चाल)

देव श्री जिनराज, गुरु ते साधु भण्योरी। धर्म जिनेश्वर प्रोक्त, लछण वोधि तणोरी ॥१॥ वोधि लाभके काज

सप्तम नरक भलोरी । तेण विना सुर लोय तांते अधिक चुरोरी ॥ २ ॥ मिथ्या तापे तप्त, बीधही छांह लहेरी । उपशम क्षायक छेद, ईश्वर तीन कहेरी ॥ ३ ॥ भवसायर है अपार, फुण अस्ताघ कह्योरी । जस्सु लाभे ते होय, गोस षद मात्र खरोरी ॥ ४ ॥ यद भावें अप्रमाण, नाण चारित्र भलारी बोध धर्म में जीव, लाभे कुशल कलारी ॥ ५ ॥ इति दर्शन पद स्तवन ॥

अथ दर्शनपद स्तुति

जिनपणत्ततत्त सुधा सरधे समकित गुण उजवालेजी भेद छेद करि आतम निरखी पशु टाली सुर पावै जी । प्रत्याख्याने सम तुल्य भाख्यो गणधर अरिहंत सूरा जी, ए दर्शनपद नित नित वंदो भवसागर को तीरा जी ॥१॥ इति दर्शनपद स्तुती ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञान पद चैत्यवंदन ॥

क्षिप्रादिक रस राम वह्नि, मित आदम नाग भाव । मिलाप सें जिन जनित, सुय वीस प्रमाणे ॥ १ ॥ भवगुण पज्ञवि ऊहि दोय, मण लोचन नांण । लोकालोक स्वरूप जाण, इक केवल भांण ॥ २ ॥ नाणावरणी नासथी ए, चेतन नाण प्रकास । सप्तम पद में हीर धर्म नित चाहत अवकाश ॥ ४ ॥ इति ॥ ज्ञानपद चैत्यवंदनं ॥

अथ ज्ञानपद स्तवन

(म्हारे अति उछरंगे ए चाल)

जिनवर भाषित आगम भणिया, तत्व यथास्थित गमियाजी म्हारे जग जन तारू ॥ ते उत्तम वर नाण कहाये, भविजन अहनिश चाहे जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ भक्षाभक्ष कुपंथ सुपंथा, पेयापेय अग्रन्था जी ॥ म्हा० ॥ देव कुदेव अहित हितधारी, जाणें जेण विचारी जी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रुति मति दोय छे इन्द्री सारू तेण परोक्ष विशारू जी ॥ म्हा० ओही मण केवल हे वारू, जीव प्रत्यक्ष सुधारू जी ॥ म्हा० ॥ ३ ॥अग विजस्स बलें जग जाणें, लोकादिक अनुमाने जी ॥ म्हा० ॥ त्रिभुवन पूजे जासु पसाये, धारी शुभ अध्यवसायें जी ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ नाणावरणी उपशम क्षयथी, चेतन नाणांकु विलसै जी ॥ म्हा० ॥ सप्तम पदमें भविजन हरखे, निसदिन कुशलता निरखे जी ॥म्हा० ॥ ५ ॥ इति ज्ञानपद स्तवन ॥

अथ ज्ञान पद स्तुति

मति श्रुति इन्द्री जनित कहिये लहिये गुण गंभीरो जी, आतमधारी गणधर विचारी द्वादश अंग विस्तारो जी। अवधि मन पर्यव केवल वलि, प्रत्यक्ष रूप अवधारो जी, ए पांच ज्ञानकू वंदो पूजो भविजनने सुख कारो जी ॥ इति ज्ञान पद स्तुति ॥

अथ अष्टमचारित्रपद चैत्यवंदन ॥

जस्स पसाये साहु पाय, जुग २ समितेंद । नमन करे शुभ भाव लाय, फुननरपति वृन्द ॥ १ ॥ जंपे धरि अरिहंत राय करि कर्म निकन्द । सुमति पंच तीन गुप्ति युत, दै रक अमंद ॥ २ ॥ इग्यु कृति माज कसायथी ए, रहित लेस सुभिवन्त । जीव चरित्तकू हीरधर्म, नमन करत नित सन्त ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवन्दन ॥

॥ चारित्रपद स्तवन ॥

निर्विकल्प अज निर्गुणी । चिदाभास निस्संग (सुज्ञानी सांभलो) टेर ।। मूर्ति हीन चेतन करे, रूपी पुदगल रंग (सु०) ॥ १ ॥स्पर्द्धक कारण वर्गणा, कार्ये कारण भाव (सु०) कृत्वा जोग सुधा मता, लब्धासंख स्वभाव सु०२॥ पर्याप्ता लघु जोग में, वृद्धी लहे गुणमान (सु०)मध्ये वसु समये लहे, अंत द्वौते जाण (सु०) ॥ ६ ।। सहकारी मान ससुखा, कारण रम्य वलेण (सु०) भासा घस प्रकारता, सप्त प्रभृत का तेन (सु०) ॥४॥ तद्रो धन रूपी भलो चेतन संयम धाम (सु०) कर घन मिल पद धर्म में, कुसल भवतु अभिराम (सु०) ॥ ५ ॥ इति चारित्रपद स्तवन ॥

नवमो तपपद चैत्यवन्दन ॥

श्रीऋषभादिक तीर्थनाथ तद्भव शिव जाण । विहि

अन्तेरपि बाह्य, मध्य द्वादश परिमाण ॥ १ ॥ वसु करमित आमो सही आदिक लब्धि निदान। भेदें समता युत खिणें दृगघन कर्म विमान ॥ २॥ नवमो श्री तपपद भलोए, इच्छा रोध सरूप। वंदन से नित हीरधर्म दूर भवतु भवकूप ॥३॥ ॥ इति तप चैत्यवंदन ॥

॥ अथ चारित्रपद स्तुति ॥

करम अपचय दूर खपावे आत्म ध्यान लगावे जी, बारे भावना सुधि भावे सागर पार उतारे जी, । खटखंड राज्य कुं दूर तजी ने चक्री संयम धारे जी । एहवो चारित्र पद नित वन्दो आतम गुण हित कारे जी ॥ इति चारित्र पद स्तुति ॥

॥ अथ तपपद स्तुति ॥

बारस भेद भण्या जिनराजे, बाह्य तणा जग काजेरे (शिव पद श्रेणी) । तिण भव सिद्धि तणा वर ज्ञाता । जिनवर पिण तपना कर्ता रे ॥ १ ॥ शि० ॥ समता सहिते जिनतें भारी, भली कर्मचमू पिणहारीरे ॥ शि० ॥ जीव कनक सें कर्म कचोरा । दहे तप पावक का जोरा रे ॥ शि० ॥ ॥ २ ॥ तप तरुवर ना कुसम है ऋद्धि, देव नर नी फलते सिद्धि रे ॥ शि० ॥ पाप सकल है तमनी राशी, तप भानू से जाय नाशी रे ॥ शि० ॥ ३ ॥ जस्स पसाये ल-

हियें वारू, लब्धा सगली जगहित कारू रे ॥ शि० ॥ अति दुक्कर फुन साध्यता हीना, काम तातें वारू कीना रे ॥ ४ ॥ इच्छा रोधन रूपी कहियै, तपपदही चैतन वहियें रे ॥ शि० ॥ पाठक श्रीहीरधर्म कृपासे, नवपद कुसलाकूं भासेरे ॥ शि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ तपपद थुइ ॥

इच्छारोधन तप ते भाख्यो आगम तेहनो साखी जी, द्रव्य भावसे, द्वादश दाखी जोग समावी राखी जी ॥ चेतन निजगुण परणित पेखी तेहिज तपगुण दाखी जी, लबधि सकलनो कारण देखी ईश्वर सें मुख भाखी जी ॥ १ ॥ इति तपपद स्तुति ॥

॥ अथ नवपद वृद्ध स्तवन ॥

सुरमणी सम सहु मंत्रसा, नवपद अभिरामी रे लोय ॥ अहो न० ॥ करुणासागर गुणनिधि, जग अंतरजामी रे लोय ॥ अहो ज० ॥ १ ॥ त्रिभुवनजन पूजित सदा, लोकालोक प्रकासी रे लोय ॥ अहो लो० ॥ महदा श्रीअरिहंत जी नमुं चित्त उल्लासी रे लोय ॥ अहो न० ॥ २ ॥ अष्ट करमदल क्षय करी, थया सिद्ध सरूपी रे लोय ॥ अहो थ० ॥ सिद्ध नमो भवि भावथी, जे आगम अरूपी रें लोय ॥ अहो जे० ॥ ३ ॥ गुण छत्तीसे सोभता, सुन्दर सुखकारीरे लोय

॥ अहो सु० ॥ आचारज तीजै पदै, वंदू अविकारी रे लोय ॥ अहो वं० ॥ ४ ॥ आगमधारी उपशमी, तप दु विध आराधी रे लोय ॥ अहो त० ॥ चोथे पद पाठक नमो, संवेग समाधी रे लोय ॥ज० सं० ॥ ५ ॥ पंचाचार पालण परापंचाश्रव त्यागी रे लोय ॥ अ० पं० ॥ गुणरागी मुनि पांच में, पणमुं वडभागी रे लोय ॥ अ० प्र० ॥ ६ ॥ निज पर गुणनें उलखै, श्रुत श्रद्धा आवै रे लोय ॥ अ० श्रु० ॥ छठे गुण दरसण नमो, आतम शुभ भावे रे लोय ॥ अ० आ० ॥ ७ ॥ ग्यान नमो गुण सातमे जे पंच प्रकारे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ स्व पर प्रकाशक दिनमणी, अज्ञान निवारे रे लोय ॥ अ० अ० ॥ ८ ॥ आठ में चारित्रपद नमो, परभाव निवारी रे लोय ॥ अ० प० ॥ खन्त्यादिक दस धर्मनो, जे अधिकारी रे लोय ॥ अ० जे० ॥ ९ ॥ नवमे वलि तप पद नमो वाह्याभ्यन्तर भेदे रे लोय ॥ अ० वा० ॥ बांध्या काल अनन्तन', ने कर्म्म उछेदे रे लोय ॥ अ० जे० ॥ १० ॥ ए नवपद बहुमानथी, ध्यावे शुभ भावै रे लोय ॥ अ० ध्या० नृप श्रीपालतणी परै, मन वंछित पावै रे लोय ॥ अ० म० ॥ ११ ॥ आसू चैत्रक मासमां, नव आंविल करिये रे लोय ॥ अ० न० ॥ नव उली विधि युत करी, शिव कमला वरिये रे लोय ॥ अ० शि० ॥ १२ ॥ सिद्धचक्रनी बहु परे वर महिमा कीजे रे लोय ॥ अ० व० ॥ श्रीजिनलाभ

कहे सदा, अनुपम जस लीजे रे लोय ॥ अ० अ० ॥१३॥
इति नवपद स्तवनं ॥

अथ नवपद स्तवन २ जुं ॥ राग मारू ॥

तीरथनायक जिनवरू जी, अतिसय जास अनूप ॥ सिद्ध अनन्त महागुणी जी, परमानन्द सरूप ॥ भविक मन धारज्यो रे ॥ धारज्यों नवपद ध्यान ॥ भ० ॥ १ ॥ ए टेर ॥ श्रीआचारज गण धरू रे गुण छतीस निवास ॥ पाठक पदधर मुनिवरू जी, श्रुत दायक सुविलास ॥ भ० ॥ २ ॥ सुमति गुपति धर शोभता जी, साधू समतावन्त ॥ सम्यग्दर्शन सुंदरू जी ज्ञान प्रकाश अनन्त ॥ भ० ॥ ३ ॥ सम्वर साधना छै रे, तप उत्तम विधि दोय ॥ ए नवपदना ध्यानथी रे, निरुपाधिक सुख होय ॥ भ० ॥ ४ ॥ अमृत सम जिनधर्मनो रे, मूल ए नवपद जाण ॥ अविचल अनु भव कारणे जी, नितप्रति नमत कल्याण ॥ भ० ॥ ५ ॥
इति पदं ॥

अथ नवपद स्तवन २ जुं ॥ राग प्रभाती ॥

नवपद ध्यान धरो रे, भविका न. ॥ मन वच काया कर एकंते, विकथा दूर हरो रे ॥ न. ॥ १ ॥ मंत्र जडी अरु तंत्र घणेरा, इन सबकु विसरो रे ॥ अरिहंतादिक नवपद जपनें, पुण्य भंडार भरो रे ॥ न. ॥ २ ॥ अडसिद्ध नवनिधि

मंगलमाला, संपत्ति सहज करोरे ॥ बालचन्द याकी बलिहारी, सुरतरु बीज खरोरे, न. ॥ ३ ॥

॥ पुनः ॥ जीया चतुर सुजाण, नवपद के गुण गाय रे, जो ॥ नवपद महिमा जगमें मोटी, गणधर पारन पाय रे ॥ जी. ॥ १ ॥ जो अपणो आतमसुख चाहे, तो इक ध्यान लगाय रे ॥ जी. ॥ करम निकाचित दूर करणकुं, सुंदर शुद्ध उपाय रे ॥ जी. ॥ २ ॥ इनको पुष्ट आलम्बन करतां, अजर अमर पद थाय रे ॥ जी. ॥ इय जिन भए आगामी होंयगे, नवपद संग पसाय रे ॥ जी. ॥३॥ इति ॥

॥ श्री नवपद स्तुति ॥

मम वंदन हो सिद्धचक्रपदम्,
मन वांछित दे शिवराज पदम् ।
सहु मंत्रन में पढ मंत्र पदम्,
शुभ ध्यान नमे शुभ ध्येय पदम् ॥ १ ॥
अरिहंत पदं दुय सिद्धपदम्,
तिय सूरिपदं चऊज्झायपदम् ।
साहू सहू दरशनज्ञानचरम्,
तपकर्म दलं क्षय होय अरम् ॥ २ ॥
अहो भव्यजनो नव आम्लकरो,
तनु रोग हरो कहे शास्त्र खरो ।

तुम ध्यान धरो बहुमान करो,
भवपार परो शिवराज वरो ॥ ३ ॥
गच्छ खरतरमें सुख पूर्ण लियो,
विमलेश्वर व्रतमें साज्य दियो ।
जय हो २ मुझ प्राण प्रियो,
कहै क्षेमसागर आराम लियो ॥ ४ ॥

श्री नवपद स्तुति

सिद्धं चक्रं चाहं वन्दे ॥ १ ॥ श्रीप्रत्येकं पादं नौमि ॥ २ ॥
शास्त्रे चोक्तं कर्तुं भव्याः ॥ ३ ॥ सानिध्यं कुर्वन्तु देवाः ॥ ४ ॥

॥ नवपद चैत्यवन्दनानि ॥

उप्पन्नसन्नाणं महोमयाणं, सप्पाडिहेरासण संठियाणं । सदेसणाणं दियसज्झणाणं, नमो २ होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥ सिद्धाणमाणं सुरमालयाणं, नमो नमोऽणंतचउक्कयाणं सूरीण दूरीकयकुग्गहाणं, नमो २ सूरसमप्पहाणं ॥ २ ॥ सुतत्थवित्थारणतप्पराणं, नमो २ वायगकुंजराणं । साहूण संसाहिअसंजमाणं, नमो नमोसुद्धदयाद्दमाणं ॥ ३ ॥ जिण-तत्ते रुइ लक्खणस्स, नमो २ निम्मलदंसणस्स । अन्नाण संमोहतमोहरस्स, नमो २ नाणदिवायरस्स ॥ ४ ॥ आरा-हिअखंडीय सक्कियस्स, नमो २ सज्जमवीरियस्स । कम्मदु-मोम्मूलणकुंजरस्स, नमो २ तिव्वतवोभरस्स ॥ ५ ॥ इइ

नवपयर्थसिद्धं लद्धिविज्जासमिद्धं, पयडियसुरवग्गं ह्रीँ तिरेहा-समग्गं । दिसवइ सुरसारं, खोणिपिढावयारं । विजय २ चक्रम् सिद्धचक्रम् नमामि ॥ ६ ॥ इति प्रथमम् ॥

॥ पुनः द्वितीय प्रारम्भ ॥

श्रीअरिहन्त उदार कांति, अति सुन्दर रूप । सेवो सिद्ध अनन्त अंत आतमगुण भूप ॥ १ ॥ आचारज उव-ज्झाय साधु, समता रसधाम । जिन भाषित सिद्धान्त शुद्ध अनुभव अभिराम ॥ २ ॥ बोध बीज गुण संपदाए, नाण चरण तव शुद्ध । ध्यावो परमानन्द पद, ए नव पद अवि-रुद्ध ॥ ३ ॥ इह परभव आनन्दकन्द, जग माहि प्रसिद्धो चिंतामणि सम जास जोग, वहु पुरायै लद्धो ॥ ४ ॥ तिहु-अण सार अपार एह महिमा मनधारो, परिहर पर जंजाल जाल नित एह संभारो ॥ ५ ॥ सिद्धचक्र पद सेवतां, सह-जानन्द स्वरूप । अमृतमय कल्याणनिधि, प्रगटे चेतन भूप ॥ ६ ॥ द्वितीयं सम्पूर्णम् ॥

अथ द्वादश आर्हत गुणाः ॥

१ अशोकवृक्षप्रातिहार्यसंयुताय श्रीअर्हते नमः
२ पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसंयुताय श्री अ.
३ दिव्यध्वनिप्रातिहार्यसंयुताय श्री अ.
४ चामरयुगप्रातिहार्यसंयुताय श्री अ.
५ दुंदुभिप्रातिहार्यसंयुताय श्री अ.

६ छत्रत्रयप्रातिहार्यसंयुताय श्री अ.
७ सुवर्णसिंहासनप्रातिहार्यसंयुताय श्री अ.
८ भामंडलप्रातिहार्यसंयुताय श्री अ.
९ ज्ञानातिशयसंयुताय श्री अ.
१० पूजातिशयसंयुताय श्री अ.
११ वचनातिशयसंयुताय श्री अ.
१२ आपायापगमातिशयसंयुताय श्री अ.

॥ इतिद्वादश आर्हत गुणाः ॥

इत्यादि नमस्कार करके अन्नत्थ ऊस्ससिएणं कह के १२ लोगस्सका काउस्सग्ग करे, काउस्सग्ग पार कर एक लोगस्स प्रगट कहे, पीछे स्वस्थानक जाकरके चैत्यवन्दन करे, पच्चक्खाण पारके आंबिल करे पहले वक्त जल पीवे तव चैत्यवन्दन कर के पीवे, पीछे मध्यान्ह समय पांच शक्रस्तव से देव वांदे। देव वांधणे की विधि आगे लिखी है सो देख लेणा। गुणना नवे पदां का दो दो हजार २००० करणा—

१ ॐ ह्रीँ नमो अरिहंताणं, २ ॐ ह्रीँ नमो सिद्धाणं, ३ ॐ ह्रीँ नमो आयरियाणं, ४ ॐ ह्रीँ नमो उवज्झायाणं ५ ॐ ह्रीँ नमो लोय सव्वसाहूणं ६ ॐ ह्रीँ नमोदंसणस्स ७ ॐ ह्रीँ नमो नाणस्स ८ ॐ ह्रीँ नमो चारित्तस्स ९ ॐ ह्रीँ नमो तवस्स

२५ अनित्यभावनाभावकाय श्री आ. ॥
२६ अशरणभावनाभावकाय श्री आ. ॥
२७ संसारस्वरुपभावना भावकाय श्री आ. ॥
२८ एकत्वस्वरुपभावना भावकाय श्री आ. ॥
२९ अन्यत्वभावना भावकाय श्री आ. ॥
३० अशुचिभावना भावकाय श्री आ. ॥
३१ आश्रवभावना भावकाय श्री आ. ॥
३२ संवरभावना भावकाय श्री आ. ॥
३३ निर्जराभावना भावकाय श्री आ. ॥
३४ लोकस्वरुपभावना भावकाय श्री आ. ॥
३५ वोधिदुर्लभभावना भावकाय श्री आ. ॥
३६ धर्मदुर्लभभावना भावकाय श्री आ. ॥

॥ इति आचार्य षट्त्रिंशत् गुणाः ॥

॥ अथ उपाध्यायजी के २५ गुण लिख्यते ॥

१ श्री आचारांगसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उपाध्याय नमः ॥
२ श्री सुयगडांगसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ. ॥
३ श्री ठाणांगसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ. ॥
४ श्री समवायांगसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ. ॥
५ श्री भगवतीसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ. ॥
६ श्री ज्ञातासूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ. ॥

७ श्री उपासगदसासूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ. ॥

८ श्री अंतगडसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ. ।

९ श्री अणुत्तरोववाइयसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ. ॥

१० श्री प्रश्नव्याकरणसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ. ॥

११ श्री विपाकसूत्रपठनगुणयुक्ताय श्री उ. ॥

१२ श्री उत्पादपूर्वपठनगुणयु. ॥

१३ अग्रायणीपूर्वपठनगुण यु. ॥

१४ वीर्यप्रवादपठनगुणयु. ॥

१५ अस्तिप्रवादपूर्वपठनगुणयु. ॥

१६ ज्ञानप्रवादपूर्वपठनगुणयु. ॥

१७ सत्यप्रवादपूर्वपठनगुणयु. ॥

१८ आत्मप्रवादपूर्वपठनगुणयु. ॥

१९ कर्मप्रवादपूर्वपठनगुणयु. ॥

२० प्रत्याख्यानप्रवादपूर्वपठनगुणयु. ॥

२१ विद्याप्रवादपूर्वपठनगुणयु. ॥

२२ अविंध्यप्रवादपूर्वपठनगुणयु. ॥

२३ प्राणायामप्रवादपूर्वपठनगुणयु. ॥

२४ क्रियाविशालपूर्वपठन गुणयु. ॥

२५ लोकविन्दुसारपठनगुणयु. ॥

॥ इति पंचविंशत्योपाध्यायगुणाः ॥

इस प्रकार गुणना करे।

॥ अथ सिद्धअष्टगुणाः ॥

१ अनन्तज्ञानसंयुताय श्रीसिद्धाय नमः
२ अनन्तदर्शन संयुताय श्री सि०
३ अव्याबाधगुणसंयुताय श्री सि०
४ अनन्तसम्यक्त्वचारित्रगुणा संयुताय श्री सि०
५ अक्षयस्थितिगुण सयुताय श्री सि०
६ अरूपिनिरंजनगुण संयुताय श्री सि०
७ अगुरुलघुगुण संयुताय श्री सि०
८ अनन्तवीर्य संयुताय श्री सि०

॥ इति सिद्ध अष्टगुणाः ॥

यह आठ नमस्कार करके अन्नत्य ऊस्ससि० कहके आठ लोग्गस्स का काउस्सग्ग करे एक लोग्गस्स प्रगट कहे, फीर पूर्वोक्त करणी करे ॥ जितना खमाश्रमण जिन पद में है उतना लोग्गस का काउस्सग करे, प्रगट लोग्गस्स कहिके उपर प्रमांणे गुणना लिखा है सो करे—

॥ अथ आचार्य छत्रीस गुणाः ॥

१ प्रतिरूपगुणसंयुताय श्री आचार्याय नमः
२ सूर्यवत्तेजस्विगुणसंयुताय श्री आ.
३ युगप्रधानागमसंयुताय श्री आ.

४ मधुरवाक्यगुणसंयुताय श्री आ.
५ गांभीर्यगुणसंयुताय श्री आ.
६ धैर्यगुणसंयुताय श्री आ.
७ उपदेशगुणसंयुताय श्री आ.
८ अपरिश्रावि‍गुणसंयुताय श्री आ.
९ सोम्यप्रकृतिगुणसंयुताय श्री आ. ॥
१० शीलगुणसंयुताय श्री आ. ॥
११ अविग्रहगुणसंयुताय श्री आ. ॥
१२ अविकथकगुणसंयुताय श्री आ. ॥
१३ अचपलगुणसंयुताय श्री आ. ॥
१४ प्रसन्नवदनगुणसंयुताय श्री आ. ॥
१५ क्षमागुणसंयुताय श्री आ. ॥
१६ मृदुगुणसंयुताय श्रीं आ. ॥
१७ सर्व्वसंगमुक्तीगुणसंयुताय श्री आ. ॥
१८ ऋजुगुणसंयुताय श्री आ. ॥
१९ द्वादसविधतपगुणसंयुताय श्री आ. ॥
२० सप्तदशविधसंयमगुणसंयुताय श्री आ. ॥
२१ सत्यव्रतगुणसंयुताय श्री आ.
२२ शोचगुणसंयुताय श्री आ. ॥
२३ अकिंचनगुणसंयुताय श्री आ. ॥
२४ ब्रह्मचर्यगुणसंयुताय श्री आ. ॥

॥ अथ साधु पद के २७ गुण लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणव्रतयुक्ताय श्री साधवे नमः ॥
२ मृषावादविरमणव्रतयुक्ताय श्री सा. ॥
३ अदत्तादानविरमणव्रतयुक्ताय श्री सा. ॥
४ मैथुनविरमणव्रतयुक्ताय श्री सा. ॥
५ परिग्रहविरमणव्रतयुक्ताय श्री सा. ॥
६ रात्रिभोजन विरमणव्रतयुक्ताय श्री सा. ॥
७ पृथ्वीकायरक्षकाय श्री सा. ॥
८ अप्पकायरक्षकाय श्री सा. ॥
९ तेउकायरक्षकाय श्री सा. ॥
१० वाउकायरक्षकाय श्री सा. ॥
११ वनस्पतिकायरक्षकाय श्री सा. ॥
१२ त्रयसकायरक्षकाय श्री सा. ॥
१३ एकेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा. ॥
१४ वेइन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा. ॥
१५ तेइन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा. ॥
१६ चउइन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा. ॥
१७ पंचेन्द्रियजीवरक्षकाय श्री सा. ॥
१८ लोभनिग्रहकाय श्री सा. ॥
१९ क्षमागुणयुक्ताय श्री सा. ॥
२० शुभभावना भावका श्री सा. ।

२१ प्रतिलेखनादिकक्रियाशुद्धकारकाय श्री सा. ॥
२२ संजमयोगयूक्ताय श्री सा. ॥
२३ मनोगूपस्तियूक्ताय श्री सा. ॥
२४ वचनगूप्तियूक्ताय श्री सा. ॥
२५ कायगूप्तियूक्ताय श्री सा. ॥
२६ शीतादिद्वाविंशतिपरीसहसहनतत्पराय श्री सा. ॥
२७ मरणांतउपसर्गसहनतत्पराय श्री सा. ॥

॥ अथ सम्यक के सडसठ भेद लिख्यते ॥

१ परमार्थसंस्तवनारूपश्रीसद्दर्शननाय नमः ॥
२ परमार्थज्ञनृसेवनारूप सद्.
३ व्यापन्नदर्शनवर्जनरूप सद. ॥
४ कुदर्शनवर्जनरूप सद. ॥
५ शुश्रूषारूप सद. ॥
६ धर्मरागरूप सद. ॥
७ वैयावृत्त्यरूप सद. ॥
८ अर्हद्विनयरूप सद. ॥
९ सिद्धविनयरूप सद. ॥
१० चैत्यविनयरूप सद. ॥
११ श्रुतविनयरूप सद. ॥
१२ धर्म्म विनयरूप सद ॥

१३ साधुवर्गविनयरूप सद्द. ॥
१४ आचार्यविनयरूप सद्द. ॥
१५ उपाध्यायविनयरूप सद्द. ॥
१६ प्रवचनविनयरूप सद्द. ॥
१७ दर्शनविनयरूय सद्द० ॥
१८ संसारे जिनाज्ञासारमिति चिंतवनरूप सद्द. ॥
१९ संसारे जिनमतसारमिति चिंतवनरूप सद्द. ॥
२० संसारे जिनमतस्थितसाध्वादिसारमिति चि. ॥
२१ शङ्कादूषणरहिताय सद्द ॥
२२ कांक्षादूषण रहिताय सद्द. ॥
२३ विचिकित्सारूपदूषणरहिताय सद्द ॥
२४ कुदृष्टिप्रशंसारूपदूषणरहिताय सद्द. ॥
२५ तत्परिचयदूषणरहिताय सद्द. ॥
२६ प्रवचनप्रभावकरूप सद्द. ॥
२७ धर्मकथाप्रभावकरूप सद्द. ॥
२८ वादिप्रभावकरूप सद्द. ॥
२९ नैमत्तिकप्रभावकरूप सद्द. ॥
३० तपस्विप्रभावकरूप सद्द. ॥
३१ मज्ञप्त्यादिकविद्याभृत्प्रभावक सद्द. ॥
३२ चूर्णअञ्जनादिसिद्धप्रभावक सद्द. ॥
३३ कविप्रभावकरूप स. ॥

३४ जिनशासने कोशलता भूषण स. ॥
३५ प्रभावनाभूषणरुप स. ॥
३६ तीर्थसेवाभूषणरुप स. ॥
३७ स्थैर्यताभूषणरुप स. ॥
३८ जिनशासने भक्तीभूषणरूप स. ॥
३९ उपशमगुणरुप स. ॥
४० संवेगगुणरुप स. ॥
४१ निर्वेदगुणरुप स. ॥
४२ अनुकंपागुणरुप स. ॥
४३ आस्तिक्यगुणरुप स. ॥
४४ परतीर्थकादिवन्दनवर्जनरुप स. ॥
४५ परतीर्थकादिनमस्कारवर्जनरुप स. ॥
४६ परतीर्थकादिआलापवर्जनरूप स. ॥
४७ परतीर्थकादिसंलापवर्जन रुप श्री स. ॥
४८ परतीर्थकादिअशनादिदानवर्जन श्री स. ॥
४९ परतीर्थकादिगंधपुष्पादिप्रेषणवर्जन श्री स. ॥
५० राजाभियोगाकारयुक्त श्री स० ॥
५१ गणाभियोगाकारयुक्त श्री स. ॥
५२ बलाभियोगाकारयुक्त श्री स. ॥
५३ सुराभियोगाकारयुक्त श्री स ॥
५४ कांतारवृत्याकारयुक्त श्री स. ॥

५५ गुरुप्रतिग्रहकारयुक्त श्री स. ॥
५६ सम्यक्त्वचारित्रधर्मस्य मूलमितिचिन्तनरूप सद. ॥
५७ चारित्रधर्म्मस्यपुरस्य द्वारमितिचिन्तनरूप श्री सद. ॥
५८ चारित्रधर्म्मस्य प्रतिक्रानमिति चिन्तनरूप सद. ॥
५९ चारित्रधर्म्मस्य प्रतिष्ठानमिति चितवनरूप सद. ॥
६० चारित्रधर्म्मस्य धारकमिति चिंतनरूप सद. ॥
६१ चारित्रधर्म्मस्य भाजनमिति चिन्तनरुप सद. ॥
६२ चारित्रधर्म्मस्य सन्निभमिति चिन्तनरुप सद. ॥
६३ अस्तिजीव इति श्रद्धानस्थानयुक्त श्री स. ॥
६४ सचजीवोनित्यइति श्रद्धानस्थानयुक्त श्री स. ॥
६५ सच जीवः कर्माणिकरोतीति श्रद्धानस्थानयुक्त स० ॥
६६ सच जीवः कृतकर्म्माणि वेदयतीति श्रद्धास्थानयुक्त स.
६७ जीवस्यास्तिनिर्व्वाणमिति श्रद्धानस्थानयुक्त श्री स.
६८ अस्ति पुनर्मो क्षोपायेति श्रद्धानस्थान युक्त श्री स.
इसी तरहअडसठ खमासमण देना

अथ ज्ञानपदके ५१ भेद लिख्यते

१ स्पर्शनेंद्रियव्यंजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
२ रसनेंद्रियव्यंजनावग्रहमतिज्ञानाय नमः ॥
३ घ्राणेंद्रियव्यंजनावग्रह मति. ॥
४ श्रोत्रेंद्रियव्यंजनावग्रह मति. ॥
५ स्पर्शनेंद्रियअर्थावग्रह मति. ॥

६ रसनेंद्रिय अर्थावग्रह मति. ॥
७ घ्राणेंद्रियअर्थावग्रह मति. ॥
८ चक्षुरिन्द्रियअर्थावग्रह मति. ॥
९ श्रोत्रेंद्रिय अर्थावग्रह मति. ॥
१० मन इन्द्रिय अर्थावग्रह मति. ॥
११ स्पर्शनेन्द्रिय ईहा मति. ॥
१२ रसनेन्द्रिय ईहा मति. ॥
१३ घ्राणेन्द्रिय ईहा मति. ॥
१४ चक्षुरिन्द्रिय ईहा मति. ॥
१५ श्रोत्रेंद्रिय ईहा मति. ॥
१६ मन इन्द्रिय ईहा मति. ॥
१७ स्पर्शनेंद्रिय अपाय मति. ॥
१८ रसनेंद्रिय अपाय मति. ॥
१९ घ्राणेंद्रिय अपाय मति. ।
२० चक्षुरिन्द्रिय अपाय मति. ॥
२१ श्रोत्रेंद्रिय अपाय मति. ॥
२२ मन इन्द्रिय अपाय मति. ॥
२३ स्पर्शनेंद्रियधारणा मति. ॥
२४ रसनेंद्रिय धारणा मति. ॥
२५ घ्राणेन्द्रिय धारणा मति. ॥
२६ चक्षुरिन्द्रिय धारणा मति. ।

२७ श्रोत्रेंद्रिय धारणा मति. ॥

२८ मन इंद्रिय धारणा मति. ॥

२९ अक्षरश्रुतज्ञानाय नमः ॥

३० अनक्षअक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥

३१ संज्ञि श्रुत ज्ञानाय नमः ॥

३२ असंज्ञि श्रुत. ॥

३३ सम्यक् श्रुत. ॥

३४ मिथ्या श्रुत. ॥

३५ सादि श्रुत. ॥

३६ अनादि श्रुत. ॥

३७ सपर्यव सति श्रुत. ॥

३८ अपर्यवसति श्रुत. ॥

३९ गमिक श्रुत. ॥

४० अगमिक श्रुत. ॥

४१ अंगप्रविष्ट श्रुत. ॥

४२ अनंग प्रविष्ट श्रुत. ॥

४३ अनुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥

४४ अननुगामि अवधि. ॥

४५ वर्द्धमान अवधि. ॥

४६ हीयमान अवधि. ॥

४७ प्रतिपाति अवधि. ॥

४८ अप्रतिपाति अवधि. ॥
४९ ऋजुमतिमनः पर्यवज्ञानाय नमः ॥
५० विपुलमतिमनः पर्यवज्ञा. ॥
५१ लोकालोकप्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः ॥

॥ इति ज्ञानपद के ५१ भेद ॥

इस तरह इकावन ५१ नमस्कार करे ।

॥ अथ चारित्रपद के ७० भेद लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूपचारित्राय नमः ॥
२ मृषावादविरमणरूपचारि. ॥
३ अदत्तादानविरमणरूपचारि. ॥
४ मैथुनविरमणरूपचारि. ॥
५ परिग्रहविरमण रूपचारि. ॥
६ क्षमाधर्मरूपचारि. ॥
७ मृदुताधर्मरूपचारि-
८ आर्जवधर्मरूपचारि.
९ मुक्तीधर्मरूपचारि. ॥
१० तपोधर्मरूपचारि. ॥
११ संयम धर्मरूपचारि. ॥
१२ सत्यधर्मरूपचारि. ॥
१३ शौचधर्मरूपचारि. ॥

१४ अकिंचनधर्मरूपचारि. ॥
१५ वंभ धर्मरूपचारि. ॥
१६ पृथवीरक्षासंयमचारि. ॥
१७ उदगरक्षासंयमचारि. ॥
१८ तेउरक्षासंयमचारि. ॥
१९ वनस्पतिरक्षासंयमचारि. ॥
२० वाउरक्षासंयमचारि. ॥
२१ बेइन्द्रियरक्षासंयमचारि. ॥
२२ तेइन्द्रियरक्षासंयमचारि. ॥
२३ चउइन्द्रियरक्षासंयमचारि. ॥
२४ पंचेन्द्रियरक्षासंयमचारि. ॥
२५ अजीवरक्षासंयमचारि. ॥
२६ प्रेक्षासंयमचारि. ॥
३७ उपेक्षासंयमचारि. ॥
२८ अतिरिक्तवस्त्रभक्तादिपचनत्यागरूपसंयमवा. ॥
२९ प्रमार्जनरुपसंयमचारि. ॥
३० मनः संयमचारि. ॥
३१ वाक्यसंयमचारि. ॥
३२ कायासंयमचारि. ॥
३३ आचार्यवैयावृत्यरुपसंयमचारि. ॥
३४ उपाध्यायवैयावृत्यरुपसंयमचारि. ॥

३५ तपस्विवैयावृत्यरूपसंयमचारि. ॥
३६ लघुशिष्यादिवैयावृत्यरुपसंयम चारि. ।
३७ ग्लानसाधुवैयावृत्यरूपसंयमचारि. ॥
३८साधुवैयावृत्यरूपचारि. ॥
३९ समणोपासकवैयावृत्यरुपचारि. ॥
४० संघवैयावृत्यरुपचारि. ॥
४१ कुलवैयावृत्यरुपचारि. ॥
४२ गणवैयावृत्यरुपचारि. ॥
४३ पशुपंडगादिरहितवसतिवसनब्रह्मगुप्तिचारि. ॥
४४ स्त्रीहास्यादिविकथावर्जनब्रह्मगुप्तिचारि. ॥
४५ स्त्रीआसन वर्जनब्रह्मगुप्तिचारि. ॥
४६ स्त्रीअंगापांगनिरिक्षणवर्जनचारि. ॥
४७ कुडयंतरसहितस्त्रीहावभावश्रवणवर्जनचारि. ॥
४८ पूर्व्वस्त्रीसंभोगचिन्तनवर्जनब्रह्मगुप्तिचारि. ॥
४९ अतिसरसआहारवर्जनब्रह्मगुप्तिचारि. ॥
५० अतिआहारकरणावर्जनब्रह्मगुप्तिचारि. ॥
५१ अंगविभुषावर्जन ब्रह्मगुप्तिचारि. ॥
५२ अणसणतपोरुपचारि. ॥
५३ ऊणोदरीतपोरुपचारि. ॥
५४ वृतिसंक्षेपरुपचारि. ॥
५५ रसत्यागतपोरुपचारि. ॥

५६ कायक्लेशतपोरुपचारि. ॥
५७ संलेखणातपोरुपचारि. ॥
५८ प्रायच्छित्ततपोरुपचारि. ॥
५९ विनयतपोरुपचारि. ॥
६० वैयावृत्यतपोरुपचारि. ॥
६१ सज्झायतपोरुपचारि. ॥
६२ ध्यानतपोरुपचारि. ॥
६३ उपसर्गतपोरुपचारि. ॥
६४ अनन्तज्ञानसंयुक्तायचारि. ।
६५ अनन्तदर्शनसंयुक्तायचारि. ॥
६६ अनन्तचारित्रसंयुक्ताय चारि. ॥
६७ क्रोधनिग्रहकरणचारि. ॥
६८ माननिग्रहकरणचारि. ॥
६९ मायानिग्रहकरणचारि. ॥
७० लोभनिग्रहकरणचारि. ॥

अथ तपपद्के ५० भेद लिख्यते

१ यावत्कथिनतपसे नमः ॥
२ इत्वरतपोभेदतपसे नमः ॥
३ बाह्यऊणोदरीतपभेदतपसे नमः ॥
४ अभ्यंतरऊणोदरीतपभेदतपसे नमः ॥
५ द्रव्यतपवृतिसंक्षेपतपभेदत. ॥

क्षत्रतपवृत्तिसंक्षेपतपभेदत. ॥
७ कालतपवृत्तिसंक्षेपतपभेद त० ॥
८ भावतपवृतिसंक्षेपतपभेदत. ॥
९ कायक्लेशतपभेद त. ॥
० रसत्यागतपभेद त. ॥
११ इन्द्रियकषाययोगविषयकसंलीनतातपसे नमः ॥
१२ स्त्रीपशुपंडकादिवर्जितस्थानअवस्थितसंलीनता त. ॥
१३ आलोयणप्रायच्छित्त त. ॥
१४ प्रतिक्रमणप्रायच्छित्त त. ॥
१५ मिश्रप्रायच्छित्त त. ॥
१६ विवेकप्रायच्छित त. ॥
१७ उपसर्गप्रायच्छित्त त. ॥
१८ तपप्रायच्छित त. ॥
१९ भेदप्रायच्छित त. ॥
२० मूलप्रायच्छित्त त. ॥
२१ अणवस्थितप्राच्छित्त त. ॥
२२ पारंचियप्रायच्छित्त त. ॥
२३ ज्ञानविनयरुप त. ॥
२४ दर्शनविनयरुप त. ॥
२५ चारित्रविनयरुप त. ॥
२६ गुर्वादिकमनविनयरुप त. ॥
२७ वचनविनयरुप त. ॥

२८ कायविनयरूप त. ॥
२९ उपचारकविनयरूप त. ॥
३० आचार्यवेयावच्च त. ॥
३१ उपाध्यायवेयावच्च त. ॥
३२ साधुवेयावच्च त. ॥
३३ तपस्विवेयावच्च त. ॥
३४ लघुशिष्यादिवेयावच्च त. ॥
३५ ग्लानसाधुवेयावच्च त. ॥
३६ श्रमणोपासकवेयावच्च त. ॥
३७ संघवेयावच्च त. ॥
३८ कुलवेयावच्च त. ॥
३९ गणवेयावच्च त. ॥
४० वायणतपसे नमः ॥ ४१ पृच्छनातपसे नमः ॥
४२ परावर्त्तनातपसे नमः ॥ ४३ अनुप्रेक्षातपसे नमः ॥
४४ धर्म्मकथातपसे नमः ॥ ४५ आर्त्तध्याननिवृत त. ॥
४६ रौद्रध्याननिवृत त. ॥ ४७ धर्म्मध्यानचिन्तन त. ॥
४८ शुक्लध्यानचिन्तन त. ॥ ४९ बाह्यउपसर्गतपसे नमः ॥
५० अभ्यंतरउपसर्गतपसे नमः ॥

॥ इतिपंचाशततपभेदाः ॥

इस तरह ५० नमस्कार करे

॥ अथ आलोयण जीवरासि खमावण पद्मावती लिख्यते ॥

॥ हिव राणी पद्मावती, जीवरास खमावे ॥ जांण पणो जगदोहिलो, इण वेला आवे ॥ ते मुझ मिछामिदुक्कडम ॥ १ ॥ अरिहंतनीसाख ॥ जे मैं जीव विराधिया, चोरासी लाख ॥ ते. मु. ॥ २ ॥ सात लाख पृथ्वीतणा, साते अप्प काय ॥ सात लाख तेऊकायना, साते वलि वाय ॥ ते. ॥ ३ ॥ दस प्रत्येक वनस्पति, चवदे साधारण ॥ विति चउरेंडी जीवना, बे २ लाख विचार ॥ ते. ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, च्यार २ प्रकाशी ॥ चवदे लाख मनुष्यना ए लाख चोरासी ॥ ते. ॥ ५ ॥ इण भव परभव से विया जे पाप अढार ॥ त्रिविध २ कर वोसरू, दुरगति दातार ॥ ते. ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद ॥ दोष अदत्तादांनना, मैथुन उनमाद ॥ ते. ॥ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष ॥ मांन माया लोभ में कीया, वलि राग ने द्वेश ॥ ते. ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्या, दीधा कूडा कलंक ॥ निंद्या कीधी पारकी, रति अरति निस्संक ॥ ते. ॥ ९ ॥ चाडी खाधी चोतरे, कीधो थापणमोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आंण्यो भरोसो ॥ ते. ॥ १० ॥ खाटकीने भव जे किया, जीवना वध घात ॥ चिडीमार भव चिडकला, मारया दिन ने रात ॥ ते. ॥ ११ ॥ माछीगर भव माछला झाल्या जलवास ॥ धीवर भील कोली भवे, मृग मारया पास ॥ ते. ॥ १२ ॥ काजी

मुल्लाने भवे, पढी मंत्र कठार । जीव अनेक जवे किया, कीधा पाप अघोर ॥ ते. ॥ १३ ॥ कोटवालभवमें किया आकाराकरदंड ॥ वंदीवान मराविया कोरडा छडी दंड ॥ ते. ॥१४॥ परमाधामीने भवे, दीधा नार की दुक्ख ॥ छेदन भेदन वेदना, ताडना, अति तिक्ख ॥ ते. ॥ १५ ॥ कुंभारने भवमें किया, निमाह पचाया ॥ तेलीभव तिल पिलिया, पापी पेट भराया ॥ ते. ॥ १६ ॥ हालीने भव हल खड्या फाड्या पृथवी पेट ॥ सूडा निदन किया घणा, दीधा बलध चपेट ॥ ते. ॥ १७ । मालीने भव रोपिया, नानाविध वृक्ष, मूल पत्र फल फूलना, लागा पाप ते लक्ष ॥ ते. ॥ १८ ॥ आधोवाही आंगमी, भरया अधिका भार ॥ पोठी ऊंट कीडा पड्या, दया नावी लिगार ॥ ते. ॥ १९ छीपाने भव छेतरियो, कीधा रांगणपास ॥ अगनि आरंभ किया घणा, धातुरवाद अभ्यास ॥ ते. ॥ २० ॥ सूरपणे रणझूंझता मारया माणस वृन्द ॥ मदिरा मांस माखण भख्या खाधा मूला ने कन्द ॥ ते. ॥२१॥ खाण खिणाई धातुनी, पाणी ऊलंच्या ॥ आरंभ कीधा अतिघणा, पोते पाप ते संच्या ॥ ते. ॥ २२ ॥ अंगारकर्म किया वली, घरमें दव दीधा ॥ सून्स लेइ वीतरागना, कूडा कोसज पीधा ॥ २३ ॥ विल्ली भव ऊंदर लिया, गिलोइ हत्यारी ॥ मूढ गिमारतणे भवे, में जूं लीख मारी ॥ ते. ॥ २४ ॥ भाड

भूजातणे भवे एकेंद्री जीव, ज्वार चिणा गहुं सेकिया पांडंता रीव ॥ ते. ॥२५॥ खांडण पीसण गारना, आरंभ अनेक ॥ रांधण इंधण अगनिना, किया पाप उदेग ॥ ते. ॥ २६ ॥ विकथा च्यार कीधी वली, सेव्या पांच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग पमाडिया, कियारोदनविखवाद ॥ते.॥२७॥ साधु अने श्रावकतणा, व्रत लेइने भागा, मूल अने उत्तर तणा मुझ दूषण लागा ॥ ते. ॥ २८ ॥ सांप विच्छू सिंह चीतरा, सिकरा ने समली ॥ हिंसक जीवतणे भवे हिंसा कीधी सबली ॥ ते. ॥ २९ ॥ सूआवडे दूषण घणा, वलि गरभ गलाया ॥ जीवाणी ढोल्या घणा, शीलव्रत भंजाय ॥ ते. ॥ ३० ॥ भव अनन्त ममतां थकां किया कुटुम्ब संबन्ध ॥ त्रिविध २ कर वोसरू, तिणसुं प्रतिबन्ध ॥ ते. ॥ ३१॥ इगभव परभव इण परे, कीधा पाप अखत्र ॥ त्रिविध २ कर वोसरू करूं जनम पवित्र ॥ ते. ॥ ३२ ॥ राग वेरागी जे सुणे, ए तीजी ढाल ॥ समय सुंदर कहे पापथी छूटे ततकाल ॥ ते. ॥ ३३ ॥ इति आलोयण सिझाय सं०

अथ गोड़ीपार्श्वनाथजी का वृद्ध स्तवन लिख्यते

॥ दोहा ॥

वाणी ब्रह्मा वादनी जागे जग विख्यात ॥ पासतणा गुण गावतां मुझ मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगे अण-

हिलपुरे अहम्मदावादे पास ॥ गोडीनो धणी जागतो. सहूनी पूरे आस ॥ २ ॥ शुभ वेला शुभ दिन घडी, महुरत एक मंडाण ॥ प्रतिमा ते इह पांसनी, थइ प्रतिष्ठा जांण ॥३॥

॥ ढाल ॥

गुण विशाला मंगलीक माला वामनो सुत सांचो जी ॥ धण कण कंचण मणि माणक दे, गोडीनो धणी जाचो जी ॥ गु० ॥४॥ अणहिलपुर पाटण मांहे प्रतिमा तुरकतणे घर हूंती जी ॥ अश्वनीं भूमे अश्वनी पीडा, अश्वनीं वाली विगूती जी ॥ गु. ॥ ५ ॥ जागतो जक्ष जेहने कहिये सुहणो तुरकने आपे जी ॥ पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवग तुझ संतापे जी ॥ ६ ॥ गु. ॥ महऊठीने परगट करजे मेघागोठीने देजे जी ॥ अधिको मले जे ओछो मले जे टका पांच से लेजे जी ॥ ७ ॥ गु. ॥ नहि आपिस तो मारोस मुरडीस, मोर बन्ध बन्धास्ये जी पुत्र कलत्रधन हय हाथी तुझ, लाचे घणी घर जास्ये जी ॥ ८ ॥ गु. ॥ मारग पहिलो तुझने मिलस्ये सारथवाहो गोठी जी ॥ निल वट टीलो चोखा चढ्या वस्तु वहे तस्य पोठी जी ॥गु.॥१०

॥ दूहा ॥

मनसुं त्रिहतो तुरकडो, मांने वचन प्रमांण ॥ बीबीने सुहणातणो, संभलावे सहिनांण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुर-

कने वडा देव हे कोइ ॥ अत्र सत्तावपरगट करो, नहितर मारे सोर ॥ ११ ॥ पाछलीरात परोडिये पहिली वान्धे पाज ॥ सुहणमांहे सेठने, सम्भलावे यक्षराज ॥ १२ ॥

॥ ढाल ॥

एम कही यक्ष आयो राते, सारथवाहूने सुहणे जी ॥ पास तणी प्रतिमा तुं लेजे, लेतो सिर मत धूणे जी ॥ ए. ॥ १३ । पांचसे टका तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी ॥ जतन करी पहुंचाडे थांनक प्रतिमा गुण संभारू जी ॥ ए. ॥ १४ ॥ तुझने होसी वहुफलदायक, भाइ गोठी सुण जे जी ॥ पूजीस प्रणमीसतेहना पाया प्रहउठीने थुणजेजी ॥ ए. ॥ १५ ॥ सुहणो देइने सुर चाल्यो, आपणे थांनक पहूतो जी ॥ पाटण मांहे सारथवाहू, हीडे तुरकने जोतो जी ॥ ए. ॥ १६ ॥ तुरके जातो दीठो गोठी चोखा तिलक ल्लिलाडे जी संकेत पहुतो साचो जाणी, वोलावे वहु लाडे जी ॥ ए. ॥ १७ ॥ मुझ घर प्रतिमा तुझने आपू श्रीपास जिनेसर केरी जी ॥ पांच से टका जो मुझ आपे, तो मोल न मांगू फेरी जी ॥ ए. ॥ १८ ॥ नाणो देइ प्रतिमा लेइ, थानक पहुतो रंगे जी केशर चंदन मृगमद घोली त्रिधसुं पूजा रंगे जी ॥ ए. ॥ १९ ॥ गादी रूडी रूनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखे जी ॥ अनुक्रम आव्या परकर मांहे, श्रीसंघने सुख भाखेजी ॥ ए. ॥ २० ॥ उछव दिन २ अधिका

थाये, सत्तर भेद सनाओ जी, ठांम २ ना दरसण करवा, आवे लोक प्रभातो जी ॥ ए. ॥ २१ ॥

॥ दूहा ॥

एक दिन देखे अवधिसुं पारकर पुरनो भंग ॥ जतन करू प्रतिमा तणो तीरथ अछे अभंग ॥ २२ ॥ सुहणो आपे सेठने थल, अटवी उजाड ॥ महिमा थास्ये अतिघणी, प्रतिमा तिहां पहुंचाड ॥ २३ ॥ कुसल क्षेम तिहां अछे, तुझने मुझने जांण, संका छोडी काम कर करतो म करीस कांण ॥ २४ ॥

॥ ढाल ॥

॥ पास मनोरथ पूरा करे, चाहुण एक हर्षभ जोतरे ॥ पर करथी परियाणो करे इक थल चढ बीजे ऊतरे २५. बारे कोश आयां जेतले, प्रतिमा नविचाले तेतले ॥ गोठी मनह विमासण थइ, पास भवन मंडावुं सही २६. आ अटवी किम करू मयाण, कुट को कोइ न दीसे वहाण ॥ देवल पास जिनेसर सरतणो मंडाऊं किम घरथे विणो २७. जल विन श्रीसंघ रहस्ये किहा, सिलावटो किम आवे इहां ॥ चिंतातुर थयो निद्रा लहे यक्षराज आवे ॥ इम कहे २८. गुंहली ऊपर नाणो जिहां, गरथ घणो जाणीज तिहा ॥ स्वस्तिक सोपारी सहिनांण पाहणतणी उघटस्ये खांण २९. श्रीफल सजल तिहां किल जुउ अमृत जल निसरिस्ये कूउ ॥ खार

कूआनो इह सहनांण भूसी पड्यो छे नीलो छाण ३०. सिलावटो सीरोही वसे , कोढ पराभवियो किसमिसे ॥ तिहांथकी तु इहा आणजे, सत्य वचन माहरो मानजे ३१. गोठीनो मन थिर थापियो सिलावटाने सुहणो दियो ॥ रोग समाउ ने पुरुं आस पासतणो मंडे आवास ३२. सुपन मांहि यांन्यो ते वेण हेथ वरण देखाड्यो नेण ॥ गोठी मनह मनोरथ हुआ, शिलावटेने गया तेडवा ३३. शिला-वटो आवे सूरमो, जीमे खीर खांड घृत चूरमो ॥ घडे घाट करे कोरणी, लगन भले पाया रोपणी ३४. थंभ २ कीधी पूतली, नाटक कोतुक करती रली ॥ रंगमंडप रलि-यामणो, रसे जोतां मानवनो मन वसे ३५. नीपायो पूरो आसाद स्वर्ग समो मंडे आवास ॥ दिवस विचारी इंडो गड्यो तत्खिण देवल ऊपर चड्यो ३६. शुभ लगन शुभ वेला चास पब्बासण बेठा श्री पास ॥ महिमा मोटी मेरु समान एकलमल वगडे रहे वान ३७. कात पुराणि में सांभली, स्तवनमांहि सूधी सांकली ॥ गोठी तणा गोत्तरिया अछे, यात्राकरीने परणे पछे ॥ ३८ ॥

॥ दूहा ॥

विघन विडारण जस जग, तेहनो अकल सरूप ॥ प्रीत करे श्रीसंघने, देखाडे निजरूप ३९. गिरउ गोडीपास जिन ॥ आपे अरथ भण्डार ॥ सानिध करे श्रीसंघने, आस्या

पूरणहार ४०. नील पलाणे नील हय, नीलो थइ असवार मारग चूकां मानवी, वाट दिखावणहार ४१.

॥ ढाल ४ ॥

वरण अढारतणो लहे भोग. विघन निवारे टाले रोग ॥ पवित्र थइ समरे जे जाप, टाले सगला पाप संताप ४२. निरधनने घर धननो सूत, आपे अपुत्रियाने पूत ॥ कायर ने सूरापणो धरे, पार उतारे लच्छी घरे ॥ ४३. दोभागी ने दे सोभाग ॥ पग विहूणाने आपे पाग ॥ ठांम नहीं तेहने घे टाम ॥ मन वंछित पूरे अभिराम ४४. निरधाराने घे आधार. भवसायर उतारे पार. ॥ आरतियाने आरत भंग, धरे ध्यान ते लहे सरंग ४५. समर्यां साद दिये जक्षराज, जेहना मोटा अछे दिवाज ॥ बुद्धीहीनने बुद्धी प्रकाश ॥ गूंगाने, घे वचन विलास ४६. दुखियाने सुखनो दातार, भयभंजण, रंजण अवतार ॥ बंधन तूटे बेडी तणा, श्रीपार्श्वनाम अक्षर समरणा ४७.

॥ दूहा ॥

श्रीपार्श्वनाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल ॥ हस्तयुद्ध दूरे टले, दुद्धर सींह सियाल ४८. चोरतणा भव चूकवे विष अमृत उडकार ॥ विष धरना विष ऊतरे, संग्रामे जय जयकार ४९. रोग शोग दालिद्र दुख दोहग दूर

पूजा५ ॥ परमेसर श्री पासनो, महिमा मंत्र जपाय ५०.

॥ ढाल ५ ॥ चाल कडखानी ॥

उँजतू २ उँज उपशम धरी, ॐ ह्रीँ श्रीँ श्रीपार्श्व अक्षर जपंते ॥ भूतने प्रेत झोटिंग विंतर सुरा, उपशमे वार इक्कवीस गुणंते ॥ ५१. उँ. ॥ दुद्धरा रोग शोग। जरा ज्रंतरा ताव एकंतरा दुत्तपंते ॥ गर्भ बन्धन व्रणं सर्प बिछु विषं, चालिका वाल मेवाझखंते ॥ ५२. उँ. ॥ साइणी डाइणी रोहणी रंकणी, फोटका मोटका दोष हुंते ॥ दाढ ऊंदर तणी कोल नोलां तणी ॥ श्वान सियाल विकराल दंते ॥ ५३. उँ. ॥ धरणेंद्र पद्मावती समरे सोभावती, वाटआघाट अटवी अटंते ॥ लखमी लोदु मिले सुजस वेला वले ॥ सयल आस्या फले मन हसंते ॥५४.उँ॥ अष्ट महाभय हरे कानपीडा टले ॥ ऊतरे शूल शीसग भणंते ॥ उदत वर प्रीतसुं प्रीतविमल प्रभु, श्रीपास जिण नांम अभिराम मंते ५५. ॥ इति श्रीगोडीपार्श्व जिन स्तवनं

॥ अथ मंगलीक लिख्यते ॥

धम्मो मंगल मुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो ॥ देवा वितं नमं संति, जस्स धम्मे सयामणो ॥ १ ॥ जहा दुम्म स्स पुप्फेसु भमरो आवि अइरसं ॥ नय पुप्फं किलांमेइ, सोइ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ एमेए समणा वुत्ता, जे लोए

मंति साहुणो ॥ विहंगमाइ पुप्फेसु, दाण भत्ते सणरया ॥ ३ ॥ वयं च वि त्तिं लिब्भामो ॥ नहीं कोइ उवहम्मइ ॥ अहागडे सुरीयंते, पुप्फेसु भमरो जहा ॥ ४ ॥ महुकार समा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया । नाणापिण्ड रयादिंता तेण वुच्चं ति साहुणोत्तिवेमि ॥ ५ ॥ इति ॥ सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणं ॥ प्रधानंसर्वधर्माणं जैनं, जय ति शासनं ॥ १ ॥ मंगलं भगवान्वीरो, मंगलं गौतम प्रभु मंगलं स्थूलभद्राद्या, जैनोधर्मोस्तु मंगलं ॥ २ ॥

॥ अथ आत्मरक्षा स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ ॐ नमो परमेष्ठी नमस्कारं सारं नवपदात्मकं ॥ आतम रक्षा करं वज्र पंजरा भस्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं ॥ शिरस्कंशिर संस्थितं, ॐ नमो सिद्धा सिद्धाणं मुखे मुखपटम्वरं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरियाणं, अंगरक्षाति शायिनी ॥ ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढं ॥३॥ ॐ नमो लोय सव्व साहूणं, नमः मोचके पादयो शुभे ॥ एसो पंच नमुक्कारो, शिला वज्रमई तले ४ . सव्व पावप्पणासणो वप्रो वज्रमयोवहि ॥ मंगलाणं च सर्वेसिं खादिरंगार खातिका ५- स्वहांतंच पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मंगलं ॥ वप्रो परिवज्रमयं विधानं देहरक्षणे ६. महाप्रभावात् रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रव नाशनी ॥ परमेष्टि पदोद्भुता, कथिता पूर्वसूरिभिः ७. यश्चैवं कुरुते रक्षां परमेष्ठीपदे हृद ॥ तस्य नस्याद्भय

व्याधिराधि श्चापि कदाचनः ८. इति आत्मरक्षा० स्तोत्रं संपूर्ण

॥ अथ नवकार स्तवनं ॥ (छंद)

सुखकारण भवियण समरो नित नवकार, जिनशासन आगम चवदे पूरब सार ॥ इण मंत्रनी महिमा कहितां न लहुं पार, सुरतरु जिम चिन्तित वंछितफल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव सेव करे कर जोड, भूयमंडल विचरे तारे भवियण कोडि ॥ सुरछन्दे विलसे अतिशय जास अनन्त, पहिले पद नमिये अरिगंजन अरिहन्त ॥ २ ॥ जे पनरे मेदे सिद्ध थया भगवन्त, पञ्चमि गति पुहता अष्ट कर्म करि अंत ॥ कल अकल सरूपी पञ्चानन्तक जेह ॥ सिद्धना पाय प्रणमुं वीजे पद वलि एह ॥ ३ ॥ गच्छभार धुरंदर सुन्दर शशिहर शोम, कर शारणवारण गुण छतीसे थोम ॥ श्रुत जांण शिरोमण सागर जेम गम्भीर, तीजे पद नमिये आचारज गुण धीर ॥४॥ श्रुतवर गुण आगम सूत्र भणावे सार, तप विध संयोगे भाखे अरथ विचार ॥ मुनिवर गुणयुक्ता ने कहिये उवझाय, चोथे पद नमिये अहनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पञ्चाश्रव टाले पाले पञ्चाचार, तपसी गुणधारी वारी विषय विकार ॥ त्रस थावर पीहर लोकमांहि ते साध, त्रिविधे ते प्रणमुं परमारथ जिण लाध ॥ ६ ॥ अरि हरि करि सायण डाइण भूत वेताल, सब पाप पणासे विलसे मंगलमाल ॥ इण समरियां संकट

दूर टले ततकाल, जंपे जिण गुण इम सुरवर सीस रसाल ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री संखेश्वरा पार्श्वनाथ स्तवनं (छंद)

॥ शेवो पास संखेश्वरो मन शुद्धे, नमुं नाथ निश्चे करी एक बुधे ॥ देवी देवता अन्यने शुं नमो छो, अहो भव्य लोको भुलाकां भमो छो ॥ १ ॥ त्रैलोक्यना नाथने सुं तजो छो, पड्या पाश मे भूतडाने भजो छो ॥ सुराघेनु छंडी अजाने अजो छो, महापन्थ मूकी कुपन्थे भजो छो ॥ २ ॥ तजे कोण चिन्तामणि काच मांटे, ग्रहे कोण राशभने हस्ति साटे ॥ सुरदुम उपाडने आक वावे, महा मूढ ते आकुला अंत पावे ॥३॥ किहां काकरोने जे किहां मेरु श्रृंग, किहां केशरीने किहां ते कुरंग ॥ किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा, करो एक चित्ते प्रभु पार्श्व सेवा ॥ ४ ॥ पूजी देव प्रभावती प्राणनाथं, सहू जीवने करे सह सनाथं ॥ महातत्व जाणी सदा जेह ध्यावे, तेहना दुख दालिद्र दूरे गमावे ॥ ५ ॥ पामी मानुषोने वृथा क्यु गमो छो, कुसीले करी देहने कां दमोछो, नहीं मुक्ती वासं विना वितरागं ॥ भजो भगवन्तं तजो दृष्टिरागं ॥ ६ ॥ उदय रत्न भाखे सदा हेत आणी, दयाभाव कीजे मोहे दास जाणी ॥ मारे आज मोतीअडे मेह छूठा, प्रभु पास संखेसरो आप तूठा ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लघु गोतम रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिनेसर केरो शीश, गोतम नांम जपो निश दीश ॥ जो कीजे गोतमनो ध्यांन, तो घर विलशे नवे निधान ॥ १ ॥ गोतम नांम गिरवर चढे, मन वन्छित लीला सम्पजे ॥ गोतम नांमे नावे रोग, गोतम नांमे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंकडा, तसनांमे नावे ढूंकडा ॥ भूत प्रेत नवि मंडे प्राण, ते गोतमना करू वखाण ॥३ ॥ गोतम नांमे निरमल काय, गोतम नांमे वाधे आय ॥ गोतम जिनशाशन सिणगार, गोतम नांमे जय २ कार ॥४॥ शाल दाल सदा घृत घोल, मनवन्छित कांपड तम्बोल ॥ घरे सुघरणी निरमल चित्त, गोतम नांमे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गोतम उदयो अविचलभांण, गोतम नांम जपो जगजांण ॥ मोटा मन्दिर मेरु समान, गोतम नांमे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयघल घोडानी जोड, वारू विलसे वंछित कोड ॥ महियल मांने मोटाराय जो तूठे गोतमना पांय गोतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम नरनी संगत मिले। गोतम नांमे निरमल ज्ञान, गोतम नांमे वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्य वन्त अवधारो सहू, गुरु गोतमना गुण छे बहू ॥ कहे लावण्य समय कर जोडि, गोतम तूठा सम्पत कोड ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शोल शती छंद ॥

आदिनाथ आदि देइ जिनवर वांदी, सफल मनोरथ कीजिये ए ॥ प्रभात उठी मंगलीक काजे शोले शती नांम लीजिये ए ॥१॥ बालकुमारी जगहितकारी, ब्राह्मी भरत नी बहिनडी ए ॥ घट २ व्यापक अक्षररूपे शोल शती मांहि जे वडी ए ॥ २ ॥ बाहुबल भगनी सतिय शिरोमणि सुन्दरी नांम ऋषभ सुता ए ॥ अंग स्वरूपी त्रिभुवनमांहे, जेह अनोपम गुणयुक्ता ए ॥३॥ चन्दनबाला बाल पणेथी शीलवती शुद्ध श्राविका ए, उडदना बाकला वीर मति लाभ्या, केवल लहि व्रत भाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धूआ धारणी नन्दन राजेमती नेम वल्लभा ए, योवन वेशें कामने जीती, संजम लेइ देव दुल्लभा ए ॥ ५ ॥ पञ्च भरतारी पांडव नारी, द्रुपदा नांम बखाणिये ए, एकशो आठे चीर पुराणा, शील महिमा तस जाणिये ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारि निरोपम कोशल्या कुलचन्द्रिका ए, शीयल सलूणी रांम जनीता पुण्यतणी प्रनालिका ए ॥७॥ कोशंबिक ठांमे शतानिक नामे, राज्य करे रंग राजियो ए, तस घर घरणी मृगावती नांमे सुरभुवने जश गाजियो ए ॥ ८ ॥ सुलशा साची शील न काची राची नहीं विषयारसें ए, मुखडो जोतां पाप पुलाये नांम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ९ ॥ रामरघुवंशी जेहनी कामणी जनकसुता सीता शति ए, जग

सहू जाणे धीज करंता अनल शीतल थयो शीलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतण चालणी बांधी कूवाथकी जल काढियो ए, कलंक उतारवा शतिया सुभद्रा चंपा बार उघाडियो ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शील अङ्कपित शिवा शिवपद गांमनी ए ॥ जेहने नामे निरमल थइये बलिहारी तसु नांमनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुर पांडवरायनी कूंता नांमे कामनी ए, पांडव माता दशे दशारनी, बहिन पतिव्रता पदमनी ए ॥ १३ ॥ शीलवती नामें शीलव्रत धारणी त्रिविधे तेहने वंदीय ए ॥ नांम जपता पातिक जाए, दरसन दुरित निकंदि ए ॥ १४ ॥ निषध नगरी नल नरपतनी, दवदन्ती तसु गेहनी, संकट पडियां शीलज राख्यो, त्रिभुवन कीर्ती जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनङ्ग अजीता जघजन जीता, पुष्पचूला ने प्रभावती ए ॥ विश्व विख्याता कामित दाता, शोलमी शती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे दाखी शास्त्र छे साखी, उदयरत्न भाषे मुदा ए ॥ प्रह ऊठीने जे नर भणसे ते लहिस्ये सुख सम्पदाये ॥ १७ ॥

॥ अथ गोतम मंगल लिख्यते ॥

जय २ मंगलनिधान गोतम जयकारी ॥ ज० ॥ पृथ्वी कूख रत्नहीर, विश्वभूति पितु सधीर ॥ च्यार वेद चतुरवीर मन्मथ अवतारी ॥ ज० ॥ १ ॥ जज्ञ रंगि विप्र संग, नृभा सुरलोक गङ्ग ॥ करत धरत छात्र पात्र, विरुद विबुध

चारी ॥ ज० ॥ २ ॥ विचरत प्रभु आये चङ्ग, वाणी गुण सप्त भङ्ग ॥ वर्द्धमान जित अनङ्ग, शंशय तम हारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ देवागम त्रिगढो देख इन्द्रजाल सङ्क रेख ॥ वीतराग वचन पेख, मिथ्यामत टारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ त्रिपदी पाय अंग बार, रचना कृत अति अपार, बोधन जग जीव सार भये गुरु गणधारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ केवल चिद सरस पीन, मुक्ती लक्ष्मी धरमलीन ॥ मुनिमन जल चरण मीन कुंदन द्युति सारी ॥ ज० ॥ ६ ॥ सिद्धीयोग नन्द चन्द, कार्तिक शित संघ वृन्द ॥ फूलत घर कल्प कन्द, दूज कुमति हारी ॥ ज० ॥ ७ ॥ गुणशीलपुर देवमणि इन्द्रभूति जग धणी ॥ कुशल निधान सुख भणी, पाठक ऋद्धिसारी ॥ ज० ॥ ८ ॥

॥ अथ मुनिवेष संबंधे लिख्यते ॥

म्हांने प्यारो लागे छे जी मुनिवर भेस ॥ म्हांने० हाथ लकडिया कांधे कंवलियां, शिर शोभित तनु केश म्हा० ॥ १ ॥ चोलपट्टो चादर पांगरणी, उज्वल रहत हमेश ॥ म्हा० ॥ २ ॥ जयणा कर मुहपति धारक, रजोहरण सविसेस, ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ थिवरकलप जिनमुद्राधारी ॥ काटत कर्म कलेश ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ दे उपदेश भविक जनतारक, तमहर प्रगट दिनेश ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ करत राम ऋद्धिसार वन्दना, निरखत एसो भेस ॥ म्हा० ॥

॥ ३ ॥ इति पदं ।

॥ अथ अरिहन्त स्तवनं पद ॥

॥ राग नाटक ॥

॥ जबसे सरधा शुद्ध भई, मन अरिहन्त २ ध्याते हे ॥ अरिहन्त ध्यावत गुणगण पावत कर्म रहित हो जाते हे ॥ १ ॥ जय २ जय २ श्रीजगदीश्वर, शङ्कर ब्रह्मा कहाते हे ३ सहजानन्दी जगत उधारण, सुरनर चरण लुभाते हे ॥ सब देव मिल त्रिगढो रचाते, अपछर मंगल धुनि गाते हे ॥ देवदुन्दुभि नाद बजाते हे, धर्म केते हे सुख देते हे ॥ भविक जीव तिर जाते हे, जो निश्चय मन में लाते हे ॥ रामउद्धार कहे रिद्धीसार, तू आधार प्रभु मोहे तार ॥ ज० ॥

॥ अथ श्री श्रावक करणीनी सज्झाय ॥

॥ चोपाई ॥ श्रावक तु उठे परभात, चार घडी ले पाछली रात ॥ मनमां समरे श्री नवकार, जेम पामे भव सायर पार ॥१॥ कवण देव कवण गुरु धर्म, कवण अमारु छे कुलकर्म, कवण अमारो छे व्यवसाय, एवुं चिंतवजे मन माय ॥ २ ॥ सामायिक लेजे मन शुद्ध, धर्मनी हेड धरजे बुध ॥ पडिक्कमणुं करे रयणी तणु, पातक आलोई आपणुं ॥३॥ कायाशक्ती कर पच्चक्खाण सुधि पाले जिननी आण ॥ भणजे गणजे स्तवन सज्झाय, जिणहुंती निस्तारो

सामी ठव्यो, हउ तो जयजयंकार ॥ १६ ॥ भास ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इन्दभूय भूयदेव तो ॥ हुंकारो कर सं चरिय,ते कवणसु जिणवर देवतो ॥ जोजन भूमी समोसरण, पेखवि प्रथमारंभ ॥ तो दहदिस देखे विबुधवधू, आवन्ती सुररंभ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरणदण्ड ध्वज, कोसीसे नवघाट तो ॥ वयरवि वर्जितजगुगण, प्रातिहारिज आठ तो ॥ सुरनर किन्नर असुरवर, इन्द्र इन्द्राणी राय तो ॥ चित चमक्रिय चिंतवे ए, सेवन्ता प्रभु पाय तो ॥ १८॥ सहस किरण सामी वीरजिण पेखवी रूप विसाल तो ॥ एह असंभव संभव ए, साचो ए इन्द्र जाल तो ॥ तो बोला वइ त्रिजग गुरु, इन्द्रभूइ नामेण तो ॥ श्रीमुख संसा सामि सवे, फेडे वेदपएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल मद ठेल करे भगतहि नाम्यो सीस तो ॥ पंच सयांसूं व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ वन्धव संजम सुणवि करे, अग निभूइ आवेय तो ॥ नाम लेइ आभास करे, ते पण प्रति बोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहररयण, थाप्या वीर इग्यार तो ॥ तो उपदेसे भुवन गुरु, संयमशुं व्रत बार तो ॥ विहुं उपवासें पारणो ए, आपणपें विरहन्त तो गोयम संयम जग सयल, जय जय कार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इन्द्रभूइ इन्द्रभूइ चढियो बहुमान हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पहुतो तुरंतो ॥ जे संसा सामि सवे, चरमनाह

फेडे फुरंततो ॥ बोध बीज सझ्यायमनें, गोयम भवहि विरत्त ॥ दिख लेई सिरखा सही, गणहरपयसंपत ॥ २२॥भास ॥ आज हुउ सुविहाण, आज पचेलिमां पुण्य भरो ॥दीठा गोयम सामि, जो नियनयणें अमिय झरो ॥ समवसरण मझार, जे जे संसा ऊपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनि पवरो ॥ २३ ॥ जीहां दीजें दीख, तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कनें अणहुंत, गोयम दीजें दान इम ॥ गुरु ऊपर गुरु भक्ती, सामी गोयम ऊपनिय ॥ अणचल केवल नाण रागज राखे रंग भरे ॥ २४ ॥ जों अष्टा पद सेल वन्दे चढ चवीस जिण ॥ आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सोज मुनि ॥ इय देसणा निसुणेह, गोयम गणहर संचरिय ॥ तापस पररसएण, जो मुनि दीठो आवतोए ॥ २५ ॥ तपसोसि यनिय अंग, अह्मां सगति न ऊपजे ए ॥ किम चढसे दृढ काय गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुउ ए अभिमान, तापस जो मन चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढयो वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न, दण्ड कलस ध्वज वड सहिया ॥ पेखवि परमाणंद; जिणहर भरतेसर मंडिय ॥ निय निय काय प्रमाण, चिहुं दिसि संडिय जिणह विंब ॥ पणमवि मन उल्लास गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७॥ वयर सामीनो जीव, तिर्यक जृंभक देव,तिहां ॥ प्रति वोध्या पुंडरिक कंडरीक अध्ययन

तुम देह गेह गुण गण गह गहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरि भरहखित्त खोणी तल मंडण, मगहदेस सेणियनरेस रिउदल वलखंडण ॥ घणवर गुव्वर गाम नाम जिहां गुणगण सज्या, विप्प वसे वसुभूइ तच्छ तसु पुहवी भज्या ॥ २ ॥ ताणपुत्त सिरिइन्द भूय भूवलयपसिद्धो, चवदह विज्या विविहरूव नारी रस लुद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार गुण गणह मनोहर, सात हाथ सुपमाणदेह रूवहि रंभावर ॥ ३ ॥ नयणवयण कर चरण जणवि पङ्कजजलपाडिय तेजहिं ताराचन्द सूरि आकाश भमाडिय ॥ रूवहि मयण अनङ्ग करवि मेल्यो निरधाडिय, धीरम मेरु गम्भीर सिन्धु चङ्गम चयचाडिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जण जम्पे किंचिय, एकाकी किल भीत्त इच्छ गुण मेल्या संचिय ॥ अह वा निच्चयपुव्व जम्म जिणवर इण अंचिय, रंभा पउमा गवरि गङ्ग रतिहा विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नय बुध नय गुर कविण कोय जसु आगल रहियो, पञ्चसयां गुण पात्र छात्र हींडे परवरियो ॥ करय निरंतर यज्ञ करम मिथ्यामति मोहिय, अणचल होसे चरमनाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जम्बूदीव जम्बूदीव भरह वास खिखोणीतल मंडण, मगह देस सेणिय नरेसर, वरगुव्वरगाम तिहां विप्प वसे वसभूइ, सुन्दर तसु पुहवि भज्या, सयलगुणगणरूवनिहाण, ताणपुत्त विज्यानिलो, गोयम

अतिही सुजाण ॥ ७ ॥ भास ॥ चरम जिनेसर केवलनाणी चोविहसंघ पइठा जाणी ॥ पावा पुर सामी सम्पत्तो, चउविह देव निकायाहें जुत्ता ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहां किजें, जिण दीठे मिथ्यामत छीजे ॥ त्रिभुवनगुरु सिंहासन वेठा, ततखिण माह दिङ्गत पइट्टा ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा ॥ देव दुंदुभि आकासें वाजे, धम्म नरेसर आव्यो गाजो ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टी अरच तिहां देवा, चउसठ इन्द्रज मांगे सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसभर वरवरसन्ता, जोजे नवाणि वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कन्त समोहियजलहलकन्ता, गयण विमाणहि रणरणकन्ता ॥ पेखवि इन्द्रभूइ मन चिंते, सुर आवे अम यज्ञ हुवन्ते ॥ १३ ॥ तीरतरंडक जिम ते वहिता, समवसरण पुहता गहगहिता ॥ तो अभिमानें गोयम जंपे इण अवसर कोपे तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्युं वोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले ॥ मो आगल कोइ जाण भणीजें, मेरु अवर किम उपम दीजे ॥ १५ ॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर विर जिणवर नाण सम्पन्न पावापुरसुर महिय, पत्तनाह संसारतारण ॥ तिहिं देवइ निम्महिय, समवसरण वहु सुख कारण ॥ जिणवर जग उज्योय करे, तेजहि कर दिन कार सिंहासण

थाय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदे नीम, पाळे दया जीवतां सीम ॥ देहरे जाई जुहारे देव, द्रव्यभावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोषालें गुरु वन्दन जाय, सुणो वखाण सदा चित्त लाय ॥ निरदूषण सूजंतो आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहम्मिवत्सल करजे घणां सगपण महोटा साहम्मी तणां ॥ दुःखीया हीणा दीना देखि, करजे तास दया सुविशेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारें देजे दान, महोटासुं म करे अभिमान ॥ गुरु ने मुखे लेजे आखडी, धर्म न मूकीश एके घडी ॥८॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, ओछा अधिकानो परिहार ॥ म भरिशकेनी कूडी साख, कूडा जनशुं कथन म भांख ॥९॥ अनंतकाय कहिये बत्रीश, अभक्ष्य बाविशे विश्वावीश ॥ ते भक्षण नवि कीजें किमे, काचां कवला फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रि भोजनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबू लोह ने गुली, मधु धावडी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली म करावे रंगण पास, दूषण घणां कह्यां छे तास ॥ पाणी गळजे बेबे वार, अणगल पीतां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करजे यत्न, पातक छंडी करजे पुण्य ॥ छाणा इन्धण चूले जोय, वावरजे जिम पाप न होय ॥ १३ ॥ घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर म धोइश चीर ॥ बारेव्रत सुधुं पालजे, अतिचार सघला टालजे ॥ १४ ॥ कह्यां पन्नरे कर्मादान, पापतणी

परहरजे खाण ॥ किशु म लेजे अनरथ दण्ड, मिथ्या मेल म भरजे पिंड ॥ १५ ॥ समकित शुद्ध हेडे राखजे, बोल विचारी ने भांखजे ॥ पांच तिथि म करो आरंभ, पालो शीयल तजो मन दण्ड ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूध ने दहिं, उघाडां मत मेलो सही ॥ उत्तम ठामे खरचो वित्त पर उपगार करो शुभचित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चोविहार, चारे आहार तणो परिहार । दिवस तणां आ-लोए पाप, जिम भांजे सघला संताप ॥ १८ ॥ संध्यायें आवश्यक साचवे, जिनवर चरण शरण भव भवें ॥ चारे शरण करी दृढ होय, सागारी अण सण ले सोय ॥ १९॥ करे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जायवा ॥ समेत शिखर आबू गिरनार, भेटीश हुं घन धन अवतार ॥२०॥ श्रावकनी करणी छे एह, एहथी थाये भवनो छेह ॥ आठे कर्म पडे पातलां, पाप तणा छूटे आमला ॥ २१ ॥ बारु लहियें अमर विमान, अनुक्रमें पामे शिवपुर थाम ॥ कहे जिनहर्ष घणे सस नेह, करणी दुःखहरणी छे एह ॥ २२ ॥ इति श्रावकनी करणीनी स० ॥

॥ अथ गोतम स्वामीनो रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिनेसर चरण कमल कमलाकय वासो, पण मविष भणिसुं सामी साल गोयम गुरुरासो ॥ मणतणु वयणे एकन्द करवि निसुणहु भो भविया, जिम निवसे

भणी ॥ वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेई आपण साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांड घृत आण, अमिय वूट अंगूठ ठवे गोयम एकण पात्र करावे पारणो सवे । पंचस यां शुभ भाव उज्वल भरियो खीर मिसे ॥ साचा गुरु संयोग, कवल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पंचसयां जिण नाह समवसरण प्राकारत्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्योय करे ॥ जाणे जणवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम जिनवाणी निसुणेवि, नाणी हुया पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण पन्नरेसें, उपन्न परिवरिय, हरिदुरिय जिणनाह वंदइ जाणेवी जग गुरु वयण, तिहिं नाण अप्पाण निंदइ, चरम जिनेसर इम भणे, गोयम म करिस खेम छेह जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला बेव ॥ ३१ ॥ भास ॥ सामियो ए वीर जिणंद पूनमचंद जिम उल्लसिय ॥ विहरियो ए भरहवा संमि, वरत बहुत्तर संवसिय ॥ ठवतो ए कणय पउमेण, पायकमल सघें सहिय ॥ आवियो ए नयणाणंद नयर पावा पुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखयो ए गोयमसामि, देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए तिसलादेवि, नन्दन पुहतो पर मपए ॥ वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाण्यो जिण समे ए ॥ तो मुनि ए मन विखवाद, नादभेद जिम उपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामिय देखि, आपकनासुं टालियो ए

॥ जाण तो ए तिहु अण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अतिभलो ए कीधलो सामि जाण्यो केवल मांगसे ए चिंतव्यो ए बालक जेंम, अहवा केडें लागसे ए ॥ ३४ ॥ हुं किम ए वीर जिणंद, भगतहिं भोलें भोलव्यो ए ।' आपणो उंचलो नेह, नाह न संपे सांचव्यो ए ॥ साचो ए ए वीत राग, नेह न हेजें टालियो ए ॥ तिणसमे ए गोयम चित्त, राग वैरागें वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लट्ट, रहितो रागें साहियो ए ॥ केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज उमाहियो ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे ए ॥ घणधरु ए करय वखाण भविया भव निस्तरे ए । ३६ ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गण हर वरस पचास गिहवासें संवसिय तीसवरससंजम विभूसिय सिरि केवलनाणपुण, बार वरस तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, बाणवइ वरसाउ सामी गोयम गुण निलो होसे सिवपुर ठाउ ॥ ३७ ॥ भास ॥ जिम सहकारें कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिमचंदन सो गन्धनिधि ॥ जिम गंगाजल लहिरयां लहके, जिम कणयाचल, ते जें झलके, तिम गोयम सोभागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे हंसा, जिम सुरतरुवर कणयव तंसा जिम महुयर राजीवनें ॥ जिम रयणायर रयण विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे तिम गोयम गुरु केल घने

॥ ३९ ॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे सुरतरु महिमा जिम जगमांहे पूरव दिसि जिम सहस करो ॥ पंचानन जिम गिरिवर रांजे नर वइ घर जिम मेगल गाजे, तिम जिन-शासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा जिम वन केतकि महमदे ए ॥ जिम भूमीपति भुयबल चमके जिम जिनमन्दिर घंटा रणके गोयमलब्धे गहगह्यो ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढीयो आज सुरतरु सारे वंछिय काज कामकुंभ सहु वशि हुआ ए ॥ कामगवी पूरे मन कामी अष्टमहासिद्धी आवे धामी सामी गोयम अणुसरी, ए ॥४२॥ पणवक्षर पहिलो पभणी जें माया बीजो श्रवण सुणजें ॥ श्रीमिति सोभा संभवो ए ॥ देवा धुर अरिहन्त नमीजें, विनय पहू उव-झाय थणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥ ४३ । परघर वसतां काय करीजें, देस देसांतर काय भमीजें कवण काज आयास करो मह उठी गोयम समरीजें, काज समग्यल ततखिण सीझे, नवनिधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चउदयसय वारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसें, कीयो कवित उपगारपरो ॥ आदहिं मगल ए ॥ पभणीजें, परव महोछव पहिलो दीजें, रिद्धी वृद्धी कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरें धरियो धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिणे दीक्षियो ए ॥विनयवन्त

विद्या भण्डार, तसु गुण पुहवी न लब्भइ पार वड जिम सखा विस्तरो ए ॥ गोयमस्वामी नो रास भणीजें, चउविह संघ रलियायत कीजें रिद्धीवृद्धी कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चन्दन छडो दिवरावो, माणक मोतीना चोक पूरावो, रयण सिंहासण बेसणो ए ॥ तिहां बेठी गुरु देशना देशी भविक जीवना काज सरेसी,×नित नित मंगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगोतम स्वामीनो रास संपूर्ण

॥ राग प्रभाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर ॥ भूख्यां भोजन संपजे, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अंगूटे अमृत वसे लब्धी तणा भण्डार ॥ जे गुरु गोतम समरियें, मन वंछित दातार ॥ २ ॥ पुण्डरीक गोयम पमुहा, गणधर गुण संपन्न ॥ प्रह उठीनें प्रणमता, चवदसे बावन्न ॥ ३ ॥ खंतिखमंगुणकलियं सुविणियं सव्वलद्धी सपणं ॥ वीरस्स पढम सीसं, घोयम सामी नमंसामी ॥ ४ ॥ सर्वारिष्टप्रणाशाय, सर्वाभिष्टार्थदायिने ॥ सर्वलब्धिनिधानाय, गोतमस्वामिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सेत्रुंज रास लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

श्री रिसहेसर पाय नमी, आणी मन आनंद ॥ रास भणूं रलियामणो, सेत्रुंजय सुखकन्द ॥ १ ॥ संवत च्यार सतोतरेहुआधनेश्वरसूर ॥ तिण सेत्रुंज महातम कियो शिला

दैत्य हजूर ॥ २ ॥ वीर जिणंद समवसर्‍या, सेत्रुंज ऊपर जेम । इन्द्रादिक आगलि कह्यो । सेत्रुंज माहातम एम ॥३॥ सेत्रुंज तीरथ सारिषो । नहींछे तीरथ कोय । स्वर्ग मृत्यु पातालमै । तीरथसघला जोय ॥ ४ ॥ नामैनवनिधिसंपजे । दीठादुग्तिपुलाय ॥ भेटन्तां भवभयटलै । सेवन्तांसुखथाय ॥ ५ ॥ जंबूनामैदीपए । दक्षिणभरतमझार । सोरठदेशसुहामणो । तिहां छै तीरथसार ॥ ६ ॥

॥ ढाल पहिली ॥ राग रामगिरी ॥

॥ सेत्रुंजोनेश्रीपुण्डरीक । सिद्धक्षेत्रकहुं तहतीक । विमलाचलनेकरूपरणाम । एसेत्रुंजेना इकवीसनाम ॥ १ ॥ सुरगिरिनें महागिरि पुण्यरास । श्रीपद पर्वत इन्द्रप्रकाश । महातीरथ पूरवे सुखकाम ए० ॥ २ ॥ सासतो पर्वतमें दृढ शक्ति । मुक्ति निलो तिण कीजे भक्ति । पुष्फदन्त महापदम सुठाम ॥ ए० ३ ॥सेपृथ्वी पीठ सुभद्र कैलाश ॥ पाताल मूल अकर्मक तास । सर्वठाम कीजे गुणग्राम ॥ ए० ४ ॥ श्रोसेत्रुंजैना इकवीसनाम । जपै जो बैठा अपणे ठाम । सेत्रुंजजात्रानोफल लहे । महावीर भगवन्त इमकहे ॥ ५ ॥ ११

॥ दुहा ॥

सेत्रुञ्जो पहिले अरे असीजोयणपरमाण । पिहुलो मूल ऊंचपण । छव्वीस जोयण जाण ॥ १ ॥ सित्तरजोयण जाणवो । बीजे अरे विशाल । वीस जोयण ऊञ्चोकह्यो ।

मुखवन्दन त्रिकाल ॥ २ ॥ साठ जोयण तीजै अरे। पिहुलो तीरथ राय । सोल जोयण ऊञ्चो सही । ध्यानधरू चितलाय ॥ ३ ॥ पचासजोयण पीहुलपण । चोथे अरे मझार, ऊञ्चो दस जोयण अचल । नित मणमेंनरनार ॥ ४ ॥ बार जोयण पञ्चम अरे । मूलतणे विशनार । दो जोयण ऊञ्चो अछे । सेत्रुञ्ज तीरथ सार ॥ ५ ॥ सात हाथ छठे अरे पिहुलो परवत एह । ऊचो होस्ये सौ धनुष । सासतोतीरथ एह ॥ ६ ॥ १७ ॥

॥ ढाल ॥ जिनवरसुं मेरोमनलीणो ॥

केवलन्यानी प्रमुख तीर्थंकर । अनन्तसीधाइण ठामरे, अनन्तवली सिझसे इणठामैं तिणकरू नितपरणामरे ॥ १ ॥ सेत्रुञ्जैसाधुअनन्ता सीधा । सीझसीवलीय अनंतरे । जिण सेत्रुञ्जयतीरथ नहीं भेट्यो । ते गरभावास कहंतरे ॥ से० ॥ ७ ॥ फागुण सुदि आठमने दिवसे । ऋषभदेव सुखकाररे । रायणरूख समोसऱ्या स्वामी । पूरब निनाणु वाररे ॥ से० ॥ ३ ॥ भरत पुत्र चैत्री पूनम दिन । इण सेत्रुञ्ज गिरि आयरे । पांच कोडिसु पुंडरिक सीधा । तिण पुंडरीक कहायरे ॥ से० ॥ ४ ॥ नमि विनमि राजाविद्याधर । बे २ कोडिसंघातरे । फागुण सुदी दशमीदिन सीधा । तिणमणसुंपरभातरे ॥ से० ॥ ५ ॥ चैत्रमासवदि चऊदसने दिन नमि पुत्री चौसठीरे । अणसणकरि सेंत्रुञ्जे गिर ऊ-

पर ॥ एसहु सीधा एकठरे ॥६॥ पोतराप्रथम तीर्थंकरकेरा। द्रावडने वारि खिल्लरे। काति सुदी पूनमदिन सीधा। दश कोडिसुं मुनिशिल्लरे॥ ७ ॥ पांचे पांडव इण गिरसीधा। नव नारद रिपिरायरे। सात्र प्रजून गया इहांमुगते। आठे काम खपायरे ॥ ८ ॥ नेमिविना तेविस तीर्थंकर। समोसऱ्या गिरिश्रृंगरे। अजित शांति तीर्थंकर बेऊं। रह्या चौमासो रंगरे ॥ ९ ॥ सहस साधुपरिवार संघाते। था वचा सुकशाथरे। पांचसे साधुसुसे लगमुनिवर। सेत्रुंजे सिवसुख लाधरे ॥ १० ॥ असंख्यातामुनि सेत्रुंज सीधा। भरतेसरने पाटरे। रामअने भरतादिक सीधा। मुक्तितणी एवाटरे ॥ ११ ॥ जालिमयालीने उवयाली। प्रमुख साधुनी कोडिरे। साधु अनन्ता सेत्रुंजे सीधा। प्रणमुं बेकर जोडिरे ॥ १२ ॥ २९॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ चोपाइकी ॥

॥ सत्रुंजना कहुं सोल उद्धार, ते सुणज्यो सहुको सुविचार। सुणतां आणंद अंग न माय जनम रनापातिक जाय ॥ १ ॥ रुपभदेव अयोध्यापुरी, समवसऱ्या स्वामी हितकरी ॥ भरत गयो वन्दणने काज, ए उपदेश दियो जिनराज ॥२॥ जगमांहे मोटा अरिहन्त देव, चोसठ इन्द्र करे जसु सेव ॥ तेहथी मोटा संघ कहाय, जेहनें प्रणमें जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथी मोटो संघनी कह्यो भरत सुणी

गहगह्यो ॥ भरत कहे ते किम पामिये, प्रभु कहे सेत्रुंज्ज जात्रा किये ॥ ४ ॥ भरत कहे संघवीपद मुझ, थे आपो मे अंगज तुझ ॥ इन्द्रे आण्या अक्षतवास, प्रभु आपे संघ-वीपद तास ॥ ५ ॥ इन्द्रे तिण वेला ततकाल, भरत सुभद्रा विहुंने माल ॥ पहिरावी घर संप्रेडीया, सरव सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ रिषभदेवनी प्रतिमा वली, रत्नतणी दीधी मन रली ॥ भरते गणधर घर तेडिया, शांतिक पो-ष्टिक सहुं तिहां किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मूकी सहु देस, भरत तेडायो संघ असेस ॥ आयो संघ अयोध्यापुरी, प्रथम थकी रथजात्रा करी ॥८॥ संघ भगती कीधी जति-घणी, संघ चलायो सेत्रुंज्ज भणी ॥ गणधर वाहूवल केवली मुनिवर कोड साथे लिया वली ॥ ९ ॥ चक्रवर्त्तनी सघली रुद्धि भरते साथे लीधीसिद्धी ॥ हय गय रथ पायक परिवार ते तो कहतां नावे पार ॥ १० ॥ भरतेसर संघवी कह-वाय, मारग चैत्य ऊधरतो जाय ॥ संघ आयो सेत्रुंज्जा पास, सहुनी पूगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे निरख्यो सेत्रुंज्जराय, मणि माणिक मोत्यांसुं वधाय ॥ तिण ठांमे रही महोछव कियो भरते आणंद पुर वासियो ॥ १२ ॥ संघ सेत्रुंज्जा ऊपर चढयो, फरसंतां पातिक झड पड्यो ॥ केवलग्यानी पगला तिहां, प्रणम्यां रायणरूख छै जिहां ।

१३ ।। केवलनाणी सनात्रनिमित्त । ईशानेंद्र आणी सुपवित्त ॥ नदी सेत्रुंजे सोहामणी भरतें दीठो कोतुक भणी ॥१४॥ गणधरदेव तणे उपदेश इन्द्रे वलि दीधो आदेश ॥ श्रीआदिनाथतणो देहरो भरत करायो गुरि सेहरो १५. सोनानो प्रसाद उत्तंग रतनतणी प्रतिमा रंग ॥ भरते श्री आदीसर तणी ॥ प्रतिमा थापी सोंहामणी १६. मरुदेवानी प्रतिमा भली माही पूनम थापी रली ॥ ब्राह्मी सुंदरि प्रमुख प्राशाद भरते थाप्या नवले नाद १७. इम अनेक प्रतिमा प्राशाद भरत कराया गुरु सुप्रशाद ॥ भरततणो पहिलो उद्धार, सगलोही जाणे संसार १८.॥४७॥

ढाल चोथी ॥ राग सींधूडो आसाउरी ॥

भरततणे पाटे आठमे, दण्ड वीरज थयो रायो जी ।। भरततणी परे संघ कियो सेत्रुंज संघवी कहायो जी १. सेत्रुंज उद्धार सांभलो सोल मोटा श्रीकारो जी । असंख्यात बीजा वलि, तेहनो कहुं अधिकारो जी से. २. चैत्य करायो रुपातणो, सोनानो बिंब सारो जी ॥ मूलगो बिम्ब भंडारियो पछिमदिशा तिण वारो जी से. ३. सेत्रुंजेनी जात्रा करी, सफल कियो अवतारो जी ॥ दण्ड वीरज राजातणो ए बीजो उद्धारो जी ॥ से. ४ सो सागरोपम । वितिक्रम्या दंडवीर जथी जिवारो जी, इशानेंद्र करावियो ॥ ए तीजो उद्धारो जी से. ६. पांचमा देवलोकनो धणी,

ब्रह्मेंद्र समकित धारोजी । तिणसेत्रुंजैनो करावियो । ए पांचमो उद्धारोजी ॥ से० ७ ॥ भुवनपति इन्द्रनो कियो । ए छठो उद्धारोजी । चक्रवर्ति सगर तणो कियो । ए सातमो उद्धारोजी ॥ से० ८ ॥ अभिनन्दन पासे सुण्या । सेत्रुंजनो अधिकारोजी । व्यंतर इन्द्र करावियो । ए आठमो उद्धारोजी ॥ से० ९ ॥ चन्द्रप्रभुस्वामिनो पोतरो । चन्द्रशेखरनाम मल्हारोजी । चन्द्रजसराय करावियो । ए नवमो उद्धारोजी ॥ से० १० ॥ शांतीनाथनी सुणी देशना । शांतिनाथ सुतविचारोजी । चक्रधर राय करावियो। ए दशमो उद्धारोजी । से० ११ ॥ दशरथ सुत जग दीपतो । मुनि सुव्रतस्वामी वारोजी रामचन्द्र करावियो । ए ग्यारमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १२ ॥ पांडव कहे अम्हे पापिया। किम छूटां मोरी मायोजी । कहे कुन्ती सेत्रुंजतणी यात्रा कियां पाप जायोजी ॥ से० १३ ॥ पांचे पांडव संघ करी । सेत्रुंज भेट्या अपारोजी ॥ काष्ट चैत्य बिम्बलेपना । ए बारमो उद्धारोजी ॥ से० १४ ॥ मम्माणी पाषाणनी । प्रतिमा सुंदर सरूपोजी । श्री सेत्रुंजनो संघ करी । थापी सकल सरूपोजी ॥ १५ ॥ अठोत्तर सोवरसांगयां । विक्रम नृपथी जिवारोजी । पोरवाडजावड करावियो । ए तेरमो उद्धारोजी ॥ १६ ॥ संवत बार तिहोत्तरे । श्रीमाली सुविचारोजी चाहडदे मुहते करावियो । ए चवदमो उद्धारोजी ॥ संवत

तेरे इक्कोत्तरे । देसल हर अधिकारोजी । समरे साहकरा-
वियो । ए पनरमो उद्धारोजी ॥ १८ ॥ संवत पनर सत्या-
सिये । वैसाख वदी शुभवारोजी । करमे डोसी करावियो ।
ए सोलमो उद्धारोजी ॥ १९ ॥ संभतिकाले सोलमो । ए
वरतेछे उद्धारोजी । नित नित कीजे वन्दना । पामीजे भव
पारोजी ॥ २० ॥ ६८०॥

॥ दोहा ॥

वलि सेत्रुञ्ज महातम कहयूं । सांभलो जिम छे तेम । सूरि
धनेसर इम कहे । महावीर कह्यो एम ॥१॥ जेहवो तेहवो
दरसणी । सेत्रुञ्जय पूजनीक । भगवन्तनो वेसवांदतां ।
लाभ हुवे तहतीक ॥ २ ॥ श्री सेत्रुञ्जा ऊपरे । चैत्य करा
वे जेह । दल परमाण समोल है । पल्योपम सुखदेह ॥३॥
सेत्रुंजऊपर देहरो, नवो नीपावे कोय । जीर्णोद्धार करा-
वतां, आठगुणो फल होइ ॥४॥ सिरऊपरि गागरधरी,
स्नात्र करावे नारि, चक्रवर्तिनी स्त्रीथई, सिवसुख पामेसार
॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुंजे, चढिने करे उपवास । नारकी
सौसागर समो, करे करमनो नास ॥ ६ ॥ काती परब
मोटो कह्यो, जिहां सीधा दशकोडि । ब्रह्म स्त्री बालकहत्या
पापथी नाखे छोड ॥ ७ ॥सहस लाख श्रावगभणी, भोजन
पुण्य विशेष । सेत्रुंज साधु पडी लाभतां, अधिको तेहथी
देख ॥ ८ ॥ ७५॥

॥ ढाल ५ ॥

धन २ अयवंती सुकुमालनेएहनी ॥ ७त्रैञ्जेगयां पाप छूटीये, लीजे आलोयण एमोजी। तप जप कीजे तिहां रही तीर्थंकर कह्यो तेमोजी। १. जिण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासोजी चैत्रि दिन सेत्रुंञ्ज चडी, एक करे उपवासोजी (२) वस्तु तणी चोरी करी, सात आंविल सुध थायोजी। काती सात दिन तप कियां, रतन हरण पाप जायोजी (३) कांसी पीतल तांबा रजतनी। चोरी कीधी जेणोजी।सातदिवस पुरुसुढ करे।तो छूठे गिरि एणोजी (४) मोती प्रवाला मूङ्गिया। जिण चोऱ्या नरनारोजी। आंविलकरि पूजा करे। त्रिणटंक सुद्ध आचारोजी (५) धान पाणी रस चोरिया। जे भेटे सिद्धक्षेत्रोजी। सेत्रुंजा तलहटीसाधुनें। पढिलाभे सुध चितोजी (६) वस्त्राभरण जिणेंहऱ्या। तेछूटे इण मेलोजी। आदिनाथनी पूजाकरे। महढठीवहुवेलोजी (७) देवगुरुनो धन जेहरे। तेसुद्ध थायेएमोजो। अधिकोद्रव्य खरचै तिहां। पात्रपोषे वहुभेमोजी (८) गायभेसघोडामही। गजनोचोरणहारोजी। द्यतेवस्तु तीरथे। अरिहन्तध्यान भकारोजी (९) पुस्तक देहरापांरका। तिहां लिखे अपणो नामोजी। छूटेछम्मासीतपकीयां। सामायक तिणठामो जी (१०) कुंवारी परिवाज्रका। सघवा अथवा गुरु नारोजी। व्रतभांजे तिणनें

कह्यो । छम्मासी तप सारोजी (११) गो विप्र स्त्री बालक रिषी । एहनोघातक जेहोजी । प्रतिमा आगै आलोवत्तां । छूटे तप करि तेहोजी ॥ १२ ॥ ९८ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ संप्रति काले सोलमो ए ए वरते छे उद्धार ॥ सेत्रुंज यात्रा करू ए सफल करू अवतार ॥ १ ॥ से० ॥ छहरी पालतां चालिये ए, सेत्रुञ्ज केरी वाट ॥ ते० ॥ पालीताणे पोहचिये ए संघ मिल्या बहु आट ॥ से० ॥ २ ॥ ललित सरोवर पेखिये ए, वलि सत्तानी वावि ॥ विहां विसरांमो लीजिये ए, वडने चौंतरे आवि ॥ ३ ॥ से० ॥ पालीताणे पाजडी ए, चढिये ऊठ परभात ॥ सेत्रुञ्जनदिय सोहामणी ए, दूरथकी देखन्त ॥ से० ॥ ४ ॥ चढिये हिंगलाजने हडे ए, कलिकुण्ड कमिये पास ॥ वारीमांहे पैसिये ए, आंणी अंग उल्लास ॥ से० ॥ ५ ॥ मरुदेवीटूंक मनोहरू ए, गज चढी मरुदेवी माय ॥ शांतिनाथ जिण सोलमो ए, प्रणमीजे तसु पाय ॥ से० ॥ ६ ॥ वंस पोरवाडे परगडो ए, सोमजी साह मलार ॥ रूपजी संघवी करावियो ए, चोमुख मूल उद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चोमुख प्रतिमा चरच्चिये ए, भमतीमांहे भलाविम्ब ॥ पांचे पांडव पूजिये ए, अद्भुत आदि प्रलम्ब ॥ से० ॥ ८ ॥ खरतर सही खांतिसु ए, विम्ब जुहारू अनेक नेमनाथ चवरी नमूं

ए, टालू अलग उदेग ॥ से० ॥ ॥ धरमदुवारमांहि नीसरू ए, कुगति करू अतिदूर ॥ आउं आदिनाथ देहरे ए, करम करू चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥ मूलनायक प्रणमुं मुदाए, आदिनाथ भगवन्त ॥ देव जुहारू देहरे ए, भमती मांहे भमन्त ॥ ११ ॥ से० ॥ सेत्रुंञ्ज ऊपर कीजिये ए, पांचे ठाम स्नात्र ॥ कलश अठोत्तर सो करिये, निरमल नीरसु गात्र ॥ से० । १२ ॥ प्रथम आदीसर आगले ए, पुण्डरीक गणधर ॥ रायण तल पगला नमुं ए, शांतिनाथ सुखकार ॥ १३ ॥ से० ॥ रायणतणपगलानमूंए । चोमुख प्रतिमाच्यार ॥ से० ॥ १४ ॥ सूरजकुंडनिहालिये ए । अतिमलीउलकाझोल ॥ से० ॥ चेलणातलाई सिद्ध सिलाये । अंगफरसु उल्लोल ॥ से० ॥ १५ ॥ आदिपुरपाजे ऊतरूंए । सिद्धवडलुंविसरांम ॥ से० ॥ चैत्यप्रवाडी इणपरि करीयै । सीधावन्छित काम ॥ से० । १६ ॥ जात्राकरी सेत्रुंज तणीए । सफल कियो अवतार ॥ से० ॥ कुसलखेमसुं आवीयोए । संघसहूपरिवार । से० ॥ १७॥ सेत्रुंज रास सोहामणो ए, सांभलज्यो सहू कोय ॥ घर बेठा भणे भावसुं ए तसु यात्रा फल होय ॥ से० ॥ १८ ॥ संवत सोल बयासिये ए, श्रावण वदि सुखकार ॥ रास रच्यो सेत्रुंजतणो ए, नगर नागोर मझार ॥ से० ॥१९॥ गिरुवो गच्छ खरतर तणो ए, श्रीजिनचन्द सूरीस प्रथम शिष्य श्री

पूजना ए, सकलचन्द सुजगीस ॥ से० ॥ २० ॥ ताससीस जग जाणिये ए, समय सुंदर उवझाय ॥ रास रच्यो तिण रूवडो ए, सुणतां आणंद थाय ॥ से० ॥ २१ ॥ इति श्रीसेत्रुंजरास संपूर्ण ॥१०८॥

* श्री जिनदत्तसूरिभ्यो नमः *

दादा गुरुदेव की पूजा

(पहले स्थापना करके आह्वान का श्लोक पढे)

काव्य—सकलगुणगरिष्ठान्सत्तपोभिर्वारिष्ठान् । शम दमयमयुष्टांञ्चारुचारित्रनिष्ठान् ॥ निखिल जगत पीठे दर्शितात्म प्रभावान् ॥ मुनिपकुशल (दत्त) सूरीन्स्थापयाम्यत्र पीठे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनदत्त श्री मणिधर जिनचन्द्र श्री जिन कुशल श्री जिनचन्द्र सूरि गुरो अत्रावतरावतर स्वाहाः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनदत्त श्री मणिधर श्री जिनचन्द्र श्री जिन कुशल श्री जिनचन्द्र सूरिः अत्र तिष्ठ ठः ठः ठः स्वाहा ॥ इति प्रतिष्ठापनं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनदत्त श्री मणिधर जिनचन्द्र श्री जिनकुशल श्री जिनचन्द्र सूरि गुरो अत्र मम संनिहितो भववपद् (इति संनिधि करणं) ॥ ३ ॥

(स्नात्रिया शुचि होके जल का कलश ले खडा रहे)

॥ दोहा ॥

ईश्वर जग चिन्तामणि, कर परमेष्ठी ध्यान ।
गणधर पदगुण वर्णना, पूजन करो सुजान ॥ १ ॥
सोधर्म्मा मुनिपतीप्रगट, वीर जिनेश्वर पाट ।
मिथ्या मत तम हरन कूं, भव्य दिखावन वाट ॥ २ ॥
सुस्थित सु प्रतिबद्ध गुरु, सूरि मंत्र को जाप ।
कोटिकियो जप ध्यानधर, कोटिक गच्छ सुथाप ॥ ३ ॥
दस पूर्व्वी श्रुत केवली, भये वज्र धर स्वाम ।
तादिन तें गुरु गच्छ को, वज्र शाख भयो नाम ॥ ४ ॥
चन्द्रसूरि भये चन्द्रसम, अति ही बुद्धी निधान ।
चन्द्रकुली सब जगत में, पसर्यो बहु विज्ञान ॥ ५ ॥
वर्द्धमान के पाट पद, सूरि जिनेश्वर भास ।
चैत्यवासि कूं जीतकर, सुविहित पक्ष प्रकाश ॥ ६ ॥
अणहिल्लपुर पाटण सभा, लोक मिले तिहां लक्ष ।
खरतर बिरुद सुधानिधि, दुर्लभ राज समक्ष ॥ ७ ॥
अभय देव सूरि भये, नव अङ्ग टीकाकार ।
थंभन पारस प्रगट कर, कुष्ट मिटावन हार ॥ ८ ॥
श्री जिन वल्लभ सूरि गुरु, रचना शास्त्र अनेक ।
प्रति बोधे श्रावक बहुत, ताके पट्ट विशेख ॥ ९ ॥
हुंवड श्रावक बागडी, अट्ठारे हज्जार ।

जैन दया धर्मी किये, वरते जय २ कार ॥ १० ॥
दादा नाम विख्यात जस, सुर नर सेवक जास ।
दत्त सूरि गुरु पूजतां, आनन्द हर्ष उल्लास ॥ ११ ॥
दिल्ली में पतसाह ने, हुकम उठाया शीश ।
मणिधारी जिनचन्द गुरु, पूजो विसवा वीस ॥ १२ ॥
ताके पट्ट परम्परा, श्री जिन कुशल सूरिंद ।
अकबर कू परचा दिया, दादा श्री जिनचन्द ॥ १३ ॥
ऐसे दादा चार कू, पूजो चित लगाय ।
जल चन्दन कुसुमादिकर, ध्वज सोगन्ध चढाय ॥ १४ ॥

[चाल—दादा चिरंजीवो]

गुरुराज तणी कर पूजन भवि सुखकर मिलसी लच्छि घणी (टेर) गुरु दत्त सुरिन्द जग उपगारी, गुरु सेवक ने सानिधकारी । गुरु चरण कमलनी बलिहारी ॥ गु० ॥ १ ॥ संवत इग्यारे वार शशी, बत्तीसे जनम्या शुभ दिवसी श्रावक कूल हुम्बडने हुलसी ॥ गु० ॥ २ ॥ जसु वाछग- मापितु नाम भणे, वाहडे दे माता हर्ष घणे । इकतालीसे दीक्षापभणे ॥ गु० ॥ ३ ॥ गुण हतरे बल्लभ पाटधरो, गुरु माया बीजनो जाय करी । गुरु जग में प्रगट्या तरण तरी ॥ गु० ॥ ४ ॥ मणिधारी जिनचन्द उपगारी, जिन दत्त सूरिन्द के पटधारी । भये दादा दूजा सुखकारी ॥गु० ॥ ५ । रासल पितु देल्हण दे माता, श्रीमाल गोत्र बोधन

शा।। दिल्ली पत साह सुगुण गाता ॥ गु० ॥ ६ ॥ जसु चोथे पाट उद्योत करी, जिन कुशल सुरिंद अति हर्ष भरी। तेरेसैतीसे जनम धरी ॥ गु० ॥ ७ ॥ जसु जिल्हा जनक जगत्र जियो, वर जैतिसिरी शुभ स्वप्न लियो। गुरु छाजेड गोत्र उद्धार कियो ॥ गु० ॥८॥ धन सैंतालीसे दीक्षा धरी जिनचन्द सूरीश्वर पाट वरी। गुण सतरे सूरि मंत्र जाप-करी ॥ गु० ॥ ९ ॥ सेवा में बावन वीर खरा, जोगणियां चोसठ हुक्म धरा। गुरु जग में केई उपगार करा ॥ गु० ॥ १० ॥ माणक सूरिश्वर पद छाजे, जिनचन्द्र सूरि जग में गाजे। भये दादा चोथा सुखकाजे ॥ गु० ॥११॥ जिन चांद उगायो उजियालो, अम्मावस की पूनम वालो। सब श्रावक मिल पूजन चालो ॥ गु० ॥ १२ ॥ जिम अकबर कूं परचा दीना, काजी की टोपी वस्तु कीना। बकरी का भेद कहा तीना ॥ गु० ॥ १३ ॥ गंधोदक सुरभि कलस भरी, प्रक्षालन सदगुरु चरण परी। या पूजन कवि ऋद्धि सारकरी ॥ गु० ॥ १४ ॥ इति न्हवण पूजा ॥

श्लोक

सुरनदीजलनिर्मल धारयः ॥ प्रबलदुष्कृतदावनिवारयः ॥ सकलमंगलवंछितदायकं ॥ कुशलसूरिगुरोश्चरणोयजे ॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय ॥ परमगुरुदेवाय ॥ भगवतेश्री जिनशासनोदीपकाय ॥ श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय ॥ मणि-

॥ श्लोक ॥

अगरचंदन धूपदशांगजे ॥ प्रसरिताखिलदिक्षुसुधूम्रकैः ॥ सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री परमपुरुषाय० श्री जिनदत्त० ॥ धूपंनिर्विपामिते स्वाहाः ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

दीप पूजकर सुगुण नर, नित २ मंगल होत ।
उजियालो जग में जुयत, रहे अखंडित जोत ॥ १ ॥

॥ राग कालिंगड़ा ॥

चाल ख्यालकी ।

पूजन कीजो जी नर नारी, गुरु महाराज का हो । (टेर)

सिन्धु देश में पंच नदी पर, साधे पांचो पीर। लोई ऊपर पुरुष तिराये, एसे गुरू सधीर ॥ पूज० ॥१॥ प्रगट होय के पांच पीर ने, सात दिया वरदान। सिन्धु देश में खरतर श्रावक, होवेगा धनवान ॥ पूज० ॥ २ ॥ सिन्धु देश मुलतान नगर में बड़ा महोच्छव देख ।, अम्बड और गच्छ का श्रावक, गुरु से कीना द्वेष । पूज० ॥ ३ ॥ अणहिलपुर पट्टन में आवो तो मैं जानूं सच्चा। बड़े महोच्छव आवेंगे, तुं निर्धन होगा कच्चा ॥ पूज० ॥ ४ ॥

पत्तन बीच पधारे दादा सन्मुख निर्धन आया । गुरु बतलाया क्युंरे अंवड, अहंकार फल पाया ॥ पूज्ज० ॥५॥ मन में कपट किया अम्बड ने खरतर महिमाधारी । जहर दिया उन अशन पान में गुरु विथ जानी सारी ॥ पूज० ॥ ६ ॥ भणसाली मुखधर श्रावक से, निर्विष मुद्रा मंगाई जहर उतारा जस लोकों में, अंवड निंदा पाई ॥ पूज० ॥ ७ ॥ मरके व्यंतर हुआ वो अम्बड रजो हरण हर लीना । भणशाली व्यंतर वचनों से, गोत्र उतारा कीना ॥ पूज० ॥८ ॥ सज्ज होय गुरु ओघा लेके गोत्र बचाया सारा । ऋद्धिसार महिमा सद्गुरु की दीपक का उजियारा ॥ पूज० ॥ ॥ ९ ॥ इति ॥

श्लोक ।

अतिमु दीसमयेखलुदीपकैः विमल कञ्चन भाजन संस्थिते ॥ सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री परम० श्रीजिनदत्त दीपं निर्विपाभिते स्वाहाः ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

अक्षत पूजा गुरुतणी, करो महाशय रंग ।
क्षती न होवे अंगमें, जीते रण में जंग ॥ १ ॥

राग आसावरी ।

चितोड नगरी वज्र खम्भ में, विद्या पोथी रही । मंत्र यंत्र विद्या से पूरी, गुरु निज हाथ ग्रही । गु. निज. । गु. पर. । १ । पुर उज्जयनी महाकाल के मन्दिर थंभ कही । सिद्धसेन दिन करकी पोथी, विद्या सरव लही । विद्या. । गु. पर. । २ । उज्जयनी व्याख्यान वीच में श्राविका रूप ग्रही । जोगणियां छलने कू आई सब कू खील दई ॥सब. । गु. पर. ३ । दीन होय जोगणियां चोसठ, गुरु की दास भई । सात दिया बरदान हरख सें, पसन्या सुजस मही । पस. । गु. पर. ४ । पुष्प माल गुरु गण की गून्थी, चाढो चित्त चही । कहे राम ऋद्धिसार सुजस की, बून्टी आप दई ॥ बून्टी. ॥ गु. पर. ॥ ५ ॥

॥ श्लोक ॥

कमल चम्पक केतकी पुष्पकै ॥ परिमलाहृतषट्पदवृन्दकैः सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं जिनदत्त० पुष्पंनिर्विपामिते-स्वाहाः ॥ ३ ॥

❀ दोहा ❀

धूप पूज कर सुगुरु की, पसरे परिमल पूर ।
यश सुगंध जग में वढे, चढे सवाया नूर ॥ १ ॥

राग सोरठा ।

(चाल—कुबजाने जादूडारा)

अम्बिका विरुद बखाने, गुरु तेरो अं० । तुम युग प्रधान नहीं छाने, गुरु तेरो अं० (टेर)

गढ गिरनार पे अम्बड श्रावक, ऐसो नियम चित ठाने । युग प्रधान इस जुग में कोई देखु जन्म प्रमाने ॥ गु० ते० ॥ १ ॥ कर उपवास तीन दिन बीते, प्रगटी अम्बा ज्ञाने । प्रगट होय कर में लिख दीना, सुवरण अक्षर दाने ॥ गु० ते० ॥ २ ॥ या गुण संयुत अक्षर वांचे ताकू युग वर जाने । अम्बड मुलक २ में फिरता, सूरि सकल पतवाने ॥ गु० ते० ॥ ३ ॥ आया पास तुमारे सद्गुरु, कर पमार दिखलाने । वासक्षेप उन ऊपर डाला, चेला पांच सुनाने ॥ गु० ते० ॥ ४ । सर्व देव हैं दास जिनों के मरु धर कल्प प्रमाने । युग प्रधान जिनदत्त सूरिश्वर अम्बड शीस झुकाने ॥ गु० ते० ॥ ५ ॥उद्योतन सूरिने निज हथ, चोरासी गच्छ ठाने, वह सब तुमरी सेवा सारे, चोरासी गच्छ माने ॥ गु० ते० ॥ ६ ॥ जो मिथ्यात्वी तुम कू न पूजे, वह नहिं तत्व पिछाने । भद्र बाहु स्वामी तुम कीर्तन, कीनी ग्रन्थ प्रमाने ॥ गु० ते० ॥ ७ ॥ युग प्रधान प्रकीये गंडिका, गणधर पद्धति ग्याने । कहे राभ ऋद्धीसार गुरु कू पूजा धूप कराने ॥ गु० ते० ॥ ८ ।

मंण्डितभालस्थल श्री जिनदत्तसूरीश्वराय ॥ श्री जिनकुशल सूरीश्वराय ॥ अकबर असुर त्राणप्रतिबोधकाय ॥ श्री जिनेचन्द्रसूरीश्वराय ॥ जलंनिर्विपामिते स्वाहाः ॥ इति प्रथम पूजा ॥

अथ केशर चन्दन पूजा

❀ दोहा ❀

केशर चन्दन मृगमदा, कर घनसार मिलाप ।
परचा जिनदत्त सूरिका, पूज्यां तूटे पाप ॥ १ ॥

(चाल बीन बाजे की)

दीन के दयाल राज साज सार २ तूं (टेर)

आये भरु अच्छ नग्र, धाम धूम धुं, बादते निशान ठोर, हर्ष रंग हूं ॥ दी० ॥ १ ॥ मुसलमान मुगल पूत फोज मोजमूं । फोत मोत होगया, हायकार सू ॥ दी० ॥ २ ॥ सघ्र विघ्र देख आप, हुक्म दीन युं । लाओ मेरे पास आस जीव दान दुं ॥ दी० ॥ ३ ॥ मृतक पूत मंत्र सें, उठाय दीन तुं देख के अचंभ रंग, दास खास कुं ॥ दी० ॥ ४ ॥ करत सेव भाव पूर, तुरक राज जुं । छोड के अभक्ष खाण, हाजरी भरू ॥ दी० ॥ ५ ॥ बीज खीज के पडी, प्रति क्रमण के सुं । हाथ से उठाय पात्र, ढांक दीन छुं

॥ दी० ॥ ६ ॥ दामनी अमोल बोल, सिद्ध राज तुं । देउँ दरदान छोड वंध कीन क्युं ॥ दी० ॥ ७ ॥ दत्त नाम जपत जाप, करत नांहीं चुं । फेर मैं पद्धशी नांहीं छोड दीन फुं ॥ दी० ॥ ८ ॥ करोगे निहाल आप, पाव पलक ज्ञुं । राम ऋद्धि सार दास, चरण छांह लुं ॥ दी० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ श्लोक ॥

मलयचन्दनकेशरवारिणा ॥ निखिलजाड्यरुजातपहारिणा ॥सकल॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री जिनदत्तकेशरचन्दनंनिर्विपःमिते स्वाहा ॥ २ ॥

—:दोहा:—

चम्पा चमेली मालती, मरुआ अरु मचकुन्द ।
जो चाढे गुरु चरण पर, नित घर होय आनन्द ॥१॥

राग माड

(चाल—नींद तो गई रे बादीला म्हारी)

गुरु परखित सुरतरु रूप सुगुरु सम दूजो तो नहीं, दूजो तो नहीं, म्हारा चेतन दूजो तो नहीं । गुरु परखित सुरतरु रूप सुगुरु नें पूजो तो सही । (टेर)

(चाल—अवधू सो जोगी गुरु मेरो)

रतन अमोलक पायो, सुगुरु सम रतन० । गुरु संकट सब ही मिटायो, सु० ॥ टेर ॥

विक्रमपुर नगरी लोकन कूं हैजा रोग सतायो । बहुत उपाय किया शांतिक का, जरा फरक नहीं आयो ॥ सु० ॥ १ ॥ योगी जंगम ब्रह्म सन्यासी, देवी देव मनायो । फरक नहीं किनही ने कीना, हाहाकार मचायो ॥सु०॥२॥ रतन चिन्तामणि सरिखो साहिब, विक्रमपुर में आयो । जैन संघ का कष्ट दूर कर, जैजै कार वरतायो ॥सु०॥३॥ महिमा सुन माहेश्वर ब्राह्मन, सब ही शीस नमायो । जीवित दान करो महाराज, गुरु तब यूं फरमायो ॥ सु० ॥ ४ ॥ जो तुम समकित व्रत कूं धारो, अब ही करदूं उपायो । तहत्त वचन कर रोग मिटायो, आनन्द हर्ष बढायो ॥ सु० ॥ ५ ॥ जो कोई श्रावक व्रत को न धार्यो, पुत्री पुत्र चढायो । साधु पांचसै दीक्षित कीना, साधवियां समुदायो ॥ सु० ॥ ६ ॥ मंत्र कला गुरु अतिशय धारी ऐसो धर्म्म दिपायो । ऋद्धि सार पर किरपा कीनी, सांचो इलम बतलायो ॥ सु० ॥ ७ ॥

श्लोक ।

सरल तंदुल कैरति निर्म्मलै । प्रवरमोच्चिक पुंजव दुज्वलैः ॥

सकल० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्री परम० श्रीजिनदत्त० अक्षतं निर्विपामिते स्वाहा ॥ ६ ॥

—:दोहा:—

नैवेद्य पूजा सातमी, करो भविक चित चाव ।
गुरुगुण अगणित कुणगिणे, गुरु भव तारण नाव ॥ १ ॥

राग कल्याण

(चाल—तेरी पूजा बनी है रस में)

हो गुरु किया असुर कू वश में । (टेर)

बड नगर में आप पधारे, सामेला धसमसमें ।ब्राह्मण लोक बडे अभिमानी, मिलकर आया सुसमे ॥ हो० ॥ ॥१॥ महिमा देख सके नहीं गुरु की, भरे मिथ्यात्वी गुस्से । मृतक गउ जिन मंदिर आगे रख दी सन्मुख चस में ॥ हो० ॥ २ ॥श्रावक देख भये आकुलता, कहे गुरु से कस में । चिन्ता दूर करी है संघ की गउ उठ चाली डस में ॥ हो० ॥ ३ । मरी गउ को जीती कीनी, लोक रहे सब हस में । जाके गाय पडी रुद्रालय, संघ भया सब सुख में ॥ हो० ॥ ४ ॥ ब्राह्मन पांव पडे सब गुरु के, देख तमाशा इस में हुक्म उठावेंगे शिर ऊपर, तुम संतति

कीं दिवश में ॥ हो० ॥ ५ ॥ नमस्कार है चमत्कार कुं, कीनी पूजा रस में । कहे राम ऋद्धिसार गुरु की, आनंद मंगल यश में ॥ हो० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ श्लोक ॥

वहुविधैश्चरुभिर्वटकैर्यकै ॥ प्रचुरसर्पिशिषिपक्वसुखञ्जकैः ॥ सकल० ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीपरम० श्रीजिनदत्त० नैवेद्यंनिर्विपामिते स्वाहाः ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

फल पूजा से फल मिले, प्रगटे नवे निधान ।
चिहुंदिशि कीरत विस्तरे, पूजन करो सुजान ॥ १ ॥

राग ठुमरी ।

(चाल—रथ चढ़ यदुनन्दन आवत हैं)

चलो संघ सब पूजन को, गुरु समर्च्या सन्मुख आवत है ॥ चलो० ॥ टेर ॥

आनंद पुर पट्टन को राजा, गुरु शोभा सुन पावत है । भेज्या निज प्रधान बुलाने, नृप अरदास सुनावत है ॥ चलो० ॥ १ ॥ लाभ जान गुरु नगर पधारे, भूपती आय

बधावत है । राज कुमर को कुष्ट मिटायो, अचरज तुरत दिखावत है ॥ चलो. ॥ २ ॥ दश हजार कुटुम्ब संग नृप को. श्रावक धर्म धरावत है । प्रतापगढ को पमार राजा, पुर में गुरु पधरावत है ॥ चलो. ॥ ३ ॥ दया मूल आज्ञा जिनवर की, बारे व्रत उचरावत है । चउहाण भाटी पमार ईन्दा, पुन राठोड सुहावत है ॥ चलो ॥ ४ ॥ सीसोद्या सोलंखी नरवर, महाजन पदवी पावत हैं । ऐसे सात राज समकित धर, खरतर संघ बनावत है ॥ चलो. ॥ ५ ॥ कुष्ट जलन्धर क्षयन भगन्दर, केइयक लोक जीवावत है । ब्राह्मन क्षत्री अरुमाहेश्वर, ओसवंश पसरावत है ॥ चलो. ॥ ६ ॥ तीस हजार एक लख श्रावक, खरतर संघ रचावत है । कहत राम ऋद्धिसार गुरु की, फल पूजा फल पावत है ॥ चलो. ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ श्लोक ॥

पनस मोचसदाकलफर्कटैः ॥ सुमुखदेकिलश्रीफलचिंभटैः ॥ सकल. ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परम. जिनदत्त. फलं निर्वपामिते स्वाहाः ॥ ८ ॥

❋ दोहा ❋

वस्त्र अतर गुरु पूजना, चोवा चन्दन चम्पेल ।

दुश्मन सब सज्जन हुये, करे सुरंगी खेल ॥ १ ॥

देशी।

(चाल—मनडो किम हीन वाजे)

लखमी लीला पावेरे सुंदर, ल० जे गुरु वस्त्र चढावेरे सुन्दर, ल० सुयश अतर महकावे रे सुन्दर ल० दुरजन शीश नमावेरे, सुन्दर ॥ ल० ॥ टेर ॥

दरिया बीच जहाज श्रावक की डूवण रूतरे आवे, साचे मन सुमरे सद्गुरु कू, दुःख की टेर सुणावेरे ॥ सु० १ ॥ वांचतां व्याख्यान सूरीश्वर, पंखीरूपे थावे, जाय समुद्र में जहाज तिराई, फिर पीछा जब आवेरे ॥ सु० ॥ २ ॥ पूछे संघ अचरज में भरिया, गुरु सब बात सुनावे ऐसे दादा दत्त कुशल गुरु, परचा प्रगट दिखावेरे ॥सु०॥ ३ ॥ वोथरा गूजरमल श्रावक की, दादा कुशल तिरावे, सुख सूरी गुरु समय सुंदर की, जहाज अलोप दिखावेरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ बारें सोइग्यारे दत्त सूरि, अजमेर अणसण ठावे । ऊपज्यासोधर्मा देवलोके, सीमंधर फरमावेरे ॥सु० ॥ ५ ॥ इक अवतारी कारज सारी, मुक्ती नगर में जावे, कुशलसूरि देराउर नगरे, भुवनपती सुर थावे रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ फागण वदी अम्मावस सीधा पूनम दरस दिखावे,

मणिधारी दिल्ली में पूज्यां, सांकट सुपने नावेरे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रथी उठी नहीं देख बादशा, वांही चरण पधरावे, वस्त्र अतर पूजा सद्गुरु की, ऋद्धिसार मन भावे रे ॥ सू० ॥ ८ ॥

श्लोक ।

अखिल हीर शुचि नवचीरकैः ॥ प्रवरप्रावरणै खलु गंधतः ॥ सकलमंगलवंच्छितदायक ॥ कुशलसूरिगुरोश्चरणोयजे ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय ॥ परमगुरुदेवाय ॥ भगवतेश्री जिनशासनोद्दीपकाय ॥ श्रीजिनदत्तसूरीश्वराय ॥ मणिमण्डितभालस्थल श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय ॥ श्री जिनकुशल सूरीश्वराय ॥ अकबर असुर त्राणप्रतिबोधकाय ॥ श्री जिनचन्द्रसूरीश्वराय ॥ वस्त्रंचोवाचन्दनं पुष्पसारं-निर्विपामिते स्वाहाः ॥ ९ ॥

॥ इति नवमी पूजा सम्पूर्णम् ॥

अथ दशमी ध्वज पूजा।

(सधवा स्त्री चांदी आदि के उज्वल थाल में कुंकुम का साथिया करे, थाल में अक्षत, रूपानांणी और सुंदर ध्वजा लेकर प्रदक्षिणा देवें)

॥ दोहा ॥

ध्वज पूजा गुरु राज की, लहके पवन प्रचार ।
तीन लोक के शिखर पर, सो पहुंचे नरनार ॥ १ ॥

श्री राग

(चाल–जिन गुणगान श्रुति अमृतंरे)

ध्वज पूजन कर हरख भरीरे, धृ० ॥ टेर ॥

सज शोले सिणगार सहेल्यां, श्री सद् गुरु जी द्वार खरीरे । ध्व० । अपछर रूप सुतन सुकलीनी, ठम २ पग झणकार करीरे ॥ ध्व० ॥ १ ॥ गावत मंगल देत प्रदक्षणा, धन २ मंगल आज घडी रे । ध्व० । निर्धन कू लखमी वखसावत पुत्र विनाजाके पुत्र करीरे ॥ ध्व० । २॥ जो जो परतिख परचा देख्या, सुणो भविक दिल बीच धरीरे । ध्व० । फतेमल्ल भडगतिया श्रावक, पहली शंका जोर करीरे ॥ ध्व० । ३ ॥ परतिख देखू जब मैं जाणू प्रगट्या ततखिण तरण तरीरे । ध्व० । पुष्प माल सिर केशर टीका, अधर श्वेत पोसाक करीरे ॥ ध्व० ॥ ४ ॥ मांग २ वर बोले वाणी फरक बतावी गुरु मेघ झरीरे । ध्व० । फरक उगायो दोय लाख पर, तेरी महिमा नित हरीरे ॥ ध्व० ॥ ५ ॥ ज्ञान चंद गोलेछा कूं तें परतिख

दीना दरस फरीरे । ध्व० । बीकानेर में थुंभ तुमारा, चित्र करावत सुर सुंदरीरे ॥ ध्व० ॥६॥ थानमल लूनियां पर किरपा कीनी, लखमी लीला सहज वरीरे। ध्व० लक्ष्मीपति दूगड की साहिब, हुंडी की भुगताण करीरे ॥ ध्व० ॥ ७ ॥ जो उपगार करा तें मेरा, दीनी सन्मुख अमृत जडीरे । ध्व० । तेरी कृपा से सिद्धी पाई, जागे जस अरु भागे परीरे ॥ ध्व ॥ ८ ॥ भूखां भोजन तिसियां पानी, भरत हाजरी देव परीरे । ध्व । विषम वखत पर सहाय हमारे, ऋद्धिसार की गरज सरीरे ॥ ध्व० ॥ ९ ॥

श्लोक

मृदुमधुर ध्वनि किङ्किणी नादकैर्ध्वजविचित्रितविस्तृत वासकैः । र.कल्प० शिर.रोपरिध्वजाम् आरोपयामि स्वाहाः

❀ दोहा ❀

भट्टारक पदवी मिली, जीते वादीवृन्द ।
कंठ विराजत सरस्वती, जगमें श्रीजिनचन्द ॥

॥ राग आसावरी अथवा धनाश्री ॥

पूजन जग सुखकारी, सुगुरु तेरी पूजा० । तेरे चरण कमल बलिहारी सु० । साह सलेम दिल्लीको बादस्या सुन के शोभ दिहारी । भट्ट हरायो चरचा करके भट्टारक पद

धारी ॥ सु० १ । अम्मावसकी पूनम कीनी चन्द उगायो भारी ॥ चढ़के गगन करी है चरचा सूरजसे तपधारी ॥ सु० ॥ चौदासे उगणीस सालमें लखनऊ नगर मझारी । गोरा फिरंगी टोपीवाला दिलमें यह बात विचारी ॥ सु० ॥ ३ ॥ जैन सितंबर देव जोसच्चा पूरे मनसा हमारी । वाणी निकसी राज्य तुम्हारा, होवेगा अधिकारी ॥ सु० ४ ॥ अंधे की खोली आंख मू त में पूजे सब नरनारी । कहां लग गुण वरणू मैं तेरा तू ईश्वर जयकारी ॥ सु० ॥ ५ ॥ उगणी से संवत्सर तेपन, मंगसर मास मझारी । शुक्ल दूज जिन चन्द सूरीश्वर, खरतर गच्छ आचारी ॥ सु० ॥ ६ ॥ कुशल सूरी के निज संतारी, क्षेम कीर्ती मनुहारी । प्रतिबोध्या जिन क्षत्री पांचसे, जान सहित अणगारी ॥ सु० ॥ ७ ॥ सेमधाड शखा जब प्रगटी जग में आनन्दकारी । धर्मशील साधु गुण पूरे, कुशल निधान उदारी ॥ सु० ॥ ८ ॥ यः पूजा करंता सुख आनन्द, अन्न धन लक्ष्मी सारी । कहत राम ऋद्धिसार जय २ शब्द उचारी । अर्घ दीजे इति श्री दादा गुरुदेव की पूजा सम्पूर्ण ॥

॥ अथ आरती ॥

जय जय गुरुदेवा, आरती मंगल मेवा ।
आनन्द सुख लेवा, जय जय गुरु देवा ॥ टेर ॥
एक व्रत दुय व्रत तीन चार व्रत, पञ्चव्रत में सोहे ।

॥ गुरु पं० ॥ भविक जीव निस्तारण, सुरनर मन मोहे ॥ जय० ॥ १ ॥ दुःख दोहग सब हर कर सद्गुरु राजन प्रति बोधे । सुत लक्ष्मी वर देकर, श्रावक कुल सोधे ॥ जय० ॥ २ ॥ विद्या पुस्तक धरकर सद्गुरु, मुगल पूत तारे । वस कर जोगणी चोसठ पांच पीर सारे ॥ जय० ॥ ३ ॥ बीज पडणजी वारी सद्गुरु समंद्र जिहाज तारी । वीर किये वस बावन, प्रगटे अवतारी ॥ जय० ॥ ४ ॥ जिनदत्त जिनचन्द कुशल सूरि गुरु, खरतर गच्छ राजा। चोरासीगच्छ पूजे मन वन्छित ताजा ॥ जय० ॥ ५ ॥ मन शुद्ध आरती कष्ट निवारन सदगुरु की कीजे । जो मांगे सो पावे, जग में यश लीजे ॥ जय० ॥६॥ विक्रमपुर में भक्त तुमारो, मंत्र कलाधारी । नित उठ ध्यान लगावत, मन वन्छित फल पावत, रामऋद्धि सारी ॥ जय० ॥ ७ ॥

इति सदगुरु आरती सम्पूर्ण ॥

॥ आरती दूजी ॥

जय २ सद्गुरु आरती कीजे श्रीजिन कुशलसूरि समरीजे जय० ॥ टेर ॥

पहली आरती दादा जी नी कीजे, दुःख दोहग सब हरीजे । जय० ॥ १ ॥ बीजा बीज पण्डित वारी भय

वारण तू ही सुखकारी ॥ जय० ॥ तीजी परचा पूरण तेरा दूर हरो सब दुर्मति मेरी ॥ जय० ॥ २ ॥ चोथी मुगल पूतजीवदायक सुर नर हुकम धरे ज्युं पायक ॥ जय० ॥ पांचमी पंच नदी जिन साधी संघ सकलनो संकट वारी ॥ जय० ॥ ३ ॥ छट्टो थांभो वज्र विदारी विद्या पोथी परगटकारी ॥ जय० ॥ सातमी चोसठ योगन साधी सूरि मंत्र कर सुर आराधी । जय० ॥ ४ ॥ इण विध सात आरती कीजे मन वन्छित सुख संपति लीजे ॥ जय० ॥ जैन लाभ खरतर गणधारी सद्गुरु चरण कमल बलिहारी ॥ जै जै० ॥ ५ ॥ इतिपदं ॥

॥ मङ्गल दीपक ॥

मङ्गल दीपक गुरु का कीजे मन वन्छित फल कारज सीझे ॥ मं० ॥ टेर ॥ मंगल दीप मंगल अहभासे, घर घर मंगल भाव प्रकाशे ॥ मं० ॥ करे करावे मंगल माला, अन धन लच्छी लहे सुविशाला ॥ मं० ॥ ३ ॥ अलिय विघ्न हर मंगल दीवो, ऋद्धिसार भविजन चिरंजीवो ॥ मं० ४॥

इति मंगल दीपक ।

स्तवन संग्रहः ।

॥ अथ श्री सद्गुरुगुणाष्टक ॥

भजामि पूज्यं च नमामि नित्यं,
वक्ष्यामि भक्त्या प्रणतान्तरात्मा ।
यथाभिधानं किल सद्गुणीयं,
तस्य स्वरूपं शुभभावभाव्यं ॥ १ ॥

पिता कुलीनश्च मनःसुखाख्यः,
सुशीलधर्मी जननी हि जेती ।
श्राद्धोऽस्यवंश्यः सुखलालसञ्ज्ञो,
ग्रामः प्रसिद्धः सरसेति नाम्ना ॥ २ ॥

आब्रह्मचारी जिनधर्मरागी,
सम्यक्त्वधारी विरतिप्रभावी ।
संत्यज्य संसारमसारमृद्धी,
रत्नाकराख्यस्य गुरोश्च पार्श्वात् ॥ ३ ॥

चारित्रमादाय सदा विहारी,
विनाऽतिचारं यतिधर्मधारी ।
श्रीमान् जिताक्षो गुणभूतपोतं,
संसारपाराय परं दधार ॥ ४ ॥

सुबुद्धिसङ्गी कुमतिप्रणाशी,

खलप्रवोनी शुभमार्गदर्शी ।
सार्थानि सूत्राणि पपाठ धीरः,
गजेन्द्रतुल्यो वचनेषु वीरः ॥ ५ ॥
रराज नित्यं करुणैकपात्रं,
जीवोपकारी सुखसागराख्यः ।
सत्यार्थवक्ता सुजनाभिनन्द्यः,
साधुप्रभावोज्झितमोहमायः ॥ ६ ॥
अन्तारिपून् वाह्यपरिग्रहहादीन्,
त्यागी निरागी सविशर्मकारी ।
जगत्प्रसिद्धो बहुमानधाम,
एभिर्गुणैः सत्पथजगाम ॥ ७ ॥
त्रैलोक्यसिन्धो हरितामुपेत,
आनन्ददात्रीं शुभभावभक्ति ।
कुर्वन्ति लोका नवतत्त्वसिद्धिं,
ते वल्लभां वै द्रुतमाप्नुवन्ति । ८ ॥

—ःशिखरिणीवृत्तम्ः-

ब्रुडन्तीं वीक्षायामुं मतिशुभगृणाचारतरणिम्,
गणाधीश ! स्वामिन् ! युगपदचदभ्रे भवजले ।
कथं नोपास्या मे तव शुभगृणा मंगलकराः,
गुरोः पूर्णाब्धेवैं चरणयुगले क्षेमनमनम् ॥ ९ ॥

॥ श्री कुशलसूर्यष्टकम् ॥

शिखरिणी—सुखं सर्वा सम्पद्वसति पदयोर्यस्य वदने,
विनिद्रा वागीशो हृदयकमले संविदधिकम् ।
विरागः सर्वाङ्गेष्वपि च भगवद्भक्तिरनिशं,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥ १ ॥
निशि स्वापाधीनं ह्यनुदिवमधीनो समयिनां,
परं वाणी लक्ष्म्यो--र्निलयमपि तद्दाननिपुणो ।
सपा यो वर्त्तेते जयत इव पाथो०युगलं,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥ २ ॥
क्षिपन्तौ तौ प्रेक्षां सरसिरुहयोर्यौ मृदुलयोः,
जपापुष्पाभासौ किसलयजिताशेषमहसौ ।
लसल्लेखालक्ष्मप्रकटितपरा श्रीसदनयोः,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥ ३ ॥
सुरेभ्यः स्वःस्थेभ्यः कतिपयदिनैर्यः फलमथो,
कदाचिद्दत्ते द्राक् श्रियमपि दरिद्राय परमाम् ।
सुरद्रुं त्यक्त्वा यो बुधजनसुसेव्यो भुविगतो,
समृद्ध्यर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥ ४ ॥
सुरैरास्वाद्यन्ते परमगुरुधर्मोपदिशतः,
सदा कामं पीतामृतरसपरांशैरपि गिरः ।
श्रुता यस्य श्रेयः श्रियमपि दिशंति स्थिरधियां,

समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥ ५ ॥
निधि सर्वश्रीणामनधिकरणौ सर्वविपदां,
मृदुस्निग्धौ शाणावुपचितनखौ गूढघुटिकौ ।
समानौ प्रोत्तुंगप्रपदपदशाखाविलसितौ,
समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥ ६ ॥
ययोरर्चा सूते धनसुखधरा धामरमणी,
शरीरारोगत्वं विनयनयविद्यानिपुणताम् ।
गुणानौदार्यादीनपि तनयलक्ष्म्यौ तनुभृतां,
समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥ ७ ॥
भयंकारागारामयसमरपारिन्द्रफणभृन्—
महापारावारद्विरदवनवैश्वानरभवम् ।
नृडाकिन्याद्युग्रग्रहगरलजं यत्स्मरणतः
समृद्धयर्थं वन्दे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥ ८ ॥

* शार्दुलविक्रीडितम् *

इत्थं श्रीजिनपद्मसूरिरचितं दिव्याष्टकं सद्गुरोः
पुण्यं मंत्रमयं मनोज्ञफलदं पापौघविध्वंसनं ।
भक्त्या यः पठति प्रभातसमये सर्वत्र तस्य ध्रुवं,
वश्या भूपतयो भवन्ति सततं लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी ॥ ९ ॥

* ओ३म् *

॥ श्रीवीतरागायनमः ॥

महावीर स्वामी के आयुष्यका खुलासा ।

प्रश्न—श्रीवीरपरमात्मा का आयुष्य बहत्तर वर्ष का है यह कथन योग्य नहीं कारण की इन प्रभु का जन्म शुभ मिति चैत्र शुक्ला तेहरस का है और निर्वाण कार्तिक कृष्णा अमावस का है इस हिसाब से तो पांच मास तेरह-दिन न्यून होते हैं इसलिये पूर्ण बेहतर वर्ष की आयुष्य घटित नहीं है।

उत्तर—जैन मजहब की ॥ शैली स्याद्वादरहस्यसें ॥ भरी हुई है ॥ हरेक वस्तुसापेक्ष सिद्ध है ॥ अब देखीये वीर जिनेश्वर ॥ की आयुष्य इस प्रमाण सें ॥ साबित है ॥ चन्द्र समंत् सर ॥ चवमालीस वर्ष तथा ॥ अभिवद्धित संवत् सर में अठावीस वर्ष एवं बहत्तर वर्ष होते हैं।

चन्द्र संवत् सर वर्तमान संवत् सर सें छः दिन कम होते हैं और अभि वर्द्धित संवत् सर पन्द्रह दिन पन्द्रह घडी अधिक होते हैं।

अभिवर्द्धित संवत् सरों में कुल चवदाह माह और

सात दिन बडे और चन्द्र संवत सरों में नो माह और चोवीस दिन घडी।

अब इन वढे हुये मेंसे घटे हुये वजा करने से पांच माह और तेरह दिन बाकी रहे यही विशेप रूप मालूम होते हैं।। सम्पूर्ण ॥

॥ अथ आलोयण विधि लिख्यते ॥

शुद्ध दिन देख नें आलोयण लैणी चोमासा में मल मासमें न लेणी प्रथम । इच्छामिखमासमणो० इच्छाकारेण संदिसह भगवन सोधि मुहपति पडिलेऊँ गुरु कहै पडिलेह पछै वांदणां २ दीजे पछै सोधि संदेसाउ गुरु कहै संदेसा वेह पछै इच्छामिण इच्छाकारेण संदिस्सह भगवान सोधि करस्युं गुरु कहे करेह पछे १ नोकार पछे इच्छाकार भगवन पसाउकरी सोधि अतिचारआलोउं आवो गुरु कहे आलोएह पछे १२ व्रतना ६० अतिचार आलोईजें गुरु सन्मुख अथ आलोयण । वरप २७ का ने उपवास १८० की आलोयण आवै २८ वरप कानें उपवास १८० पांच हजार स्वध्याय की आलोयण आवै २९ वरप काने १८० उपवास । दस हजार स्वाध्याय को आलोयण आवै ३० वरस का नें उपवास १८० पनरे हजार की स्वाध्याय आलोयण आवै इसी तरे सुं आगे वास वरस दिठ ५००० स्वाध्याय वधारीजे इसी तरे तो गयां वरसां की आलोयण

है अरजो आगलावरसां कीआलोयण कीयो चावे तो वरस वरस दीठ ६६ उपवास फेर करे इतना उपवास की सद्धो नहो तो एकलाख व तीस हजार स्वाध्याय वरस वरस दीठ करे अथवा १३२ आमिल करे अथवा २६४ एकासना करे अथवा १९८ नीवी करे शक्ती माफिक करे फेर जितना जापा हुआ होवे जितना तेला करे आलोयणा लियां पछे आगलां वरसा में वरस वरस दीठ ६६ उपवास पाछे लिख्या है आलोयणा का सु जो समर्थी न होय तो वरस वरस दीठ उपवास २ आमिल करे एक अथवा ५००० स्वाध्याय करे द्वीन्द्रीय विनाशे उपवास २ तृतीया इन्द्रिय विनासे तो तीन उपवास चउ इन्द्रिय विनासे तो ४ उपवास करे पंचे इन्द्रिय विनासे तो पांच उपवास करे सर्व इन्द्री ज्यादा विनासे तो दुगुणा उपवास करे आरंभ में पंचेइन्द्रिय विनासे तो उपवास २ प्रमाद सु विनासे तो उपवास ३ पर पुरुष से गमन करे तो उपवास १० स्वाध्याय हजार वीस बला-त्कारें पर पुरुष से सील भांगे तो उपवास १०८ नवकार ९०००० स्वप्न में शील भांगे तो एकासन १ अथवा लोगस्स १०० नो काउस्सग करे ॥ इति ॥

॥ अथ अणसण देने की विधि लिख्यते ॥

प्रथम इरिया वही पडिकमावे सक्रस्त कही रावियें

संपूर्ण देव वन्दा के अणसण उचरानिये भवचरी मम पच्छ काइमं तीविंडम पी आहारं सव्वं असणं सव्वं खाइमं रुव्वं साइमं अनत्थणा भोगे णमं सहसा गारेणं महत्रा गारेणं सव्वसमाहि वत्तिया गारेणऽअयं निन्दामि पढिुनं संवरामि असणागयं पच्छकामि अरिहन्त सक्खियं सिद्ध सखियं साहू सखियं देव सखियं अप्प सखियं वोसरामि अरिहन्तो महादेवो जाव जीव सुसाहुनो गुरुनो जिण पन्नत्तम तत्तं इय समत्तम मये गइयं कहियं १ ए गाथा गुणवी हिवे १० गाथा वलि कहेवि ते गाथा आसव कषाय वंधण कलहा बखाण परि २ वओ अईइरई पेसुनं माया मोह सञ्चय मिच्छतं १ वोसरेसु हम्माई मुख मग्गा संसगा विग्ग भूय इम दुग्गे निमं वंधणाये अठारस पाव ठाणाइम २ एगो में सासओ अप्पा नानंदं सणसं जुओ सेसा में वायरा भावा सव्वे संजोग लक्षणा ३ संजोग जीवा मूलेणं पत्ता दुख परम्परा तम्हा संजोग संवंधं सव्वं तिविहेण वोरिसियं ४ चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलि पन्नतो धमो मंगलं ५ चात्तारि लोगत्तमा सिद्धा लोगत्तमा साहू लोगत्तमा केवली पन्नतो धमो लोगुत्तमो ६ चत्तारि सरण पवजामी अरिहते सरणं पवज्ञा ने सिद्धे सरणं पवज्ञामि साहू सरणं पवज्ञामि केवली पन्नतो धम्मो सरणं पवज्ञामि ७ पुड वीदग अगणिमारुय इक्किकेसत्त जोणी

लखाओ पणपन्नत्तेय अंणते दस चउदस जोणि लखाओ ८ विगलिन्दयेसु दो दो चउरो २ नारय सूरेसु तिरयेसु अँ तिचउरो चउदस लखाओ मणुएसु१४ख मेमि सव्वेजीवे सव्वे जीवा खमतुमे मित्तमे सव्वे भूयेसु वेरं मझण केनइम एवमहम आलोए अनंदिय गिरिहीय दुमंचिय तिविहेण पढिकंतो वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ अणसण विधि संपूर्णम् ॥

अथ तपस्या ग्रहण करने को गुरु के पास जाणे की विधि लिख्यते ।

प्रथम शुभ दिने शुभ घडी देख के अच्छा वस्त्र आभूषण पहरे लिलाड के तिलक करे द्रोब सरसों मस्तक में धारण करे हाथ के मोली बांध के अक्षत सुपारी श्रीफल नेवेद्य यथाशक्ती रोक नाणो लेके नवकार गुणतो थको गुरु के पास जावे, द्वादशावर्त्त वांदणा करके ज्ञान पूजा करे, पीछे बहुत प्रमोदवत होके गुरु के मुख से ओली तप ग्रहण करे (सो) तपस्या ग्रहण करने की विधि आगे लिखेंगे ।

तपस्या ग्रहण करने को पोसाल जाने की विधि ।

अथ सर्व तपस्या प्रथम गुरु के पास ग्रहण करे(सो) विधि लिख्यते:—

(प्रथम) ५ साथिया करें नमंतसार्मतहोवर्ना देवाय पूयं सुविहेय पुव्विं । भत्तीय चित्तं मणिदाम एहिं मंदार पुप्फं पसेहिनाणं ॥१॥ तहेव सङ्ढा मणिमुत्ति एहिं सुगंध पुप्फेहि वरंसिएहिं । पूयंति वंदंति नमंति नाणं नाणस्स लाभाय भवक्खायाय ॥२। ये गाथाएं पढ के शक्तीमाफक ज्ञान पूजा करे ईरयावही पडिक्कमे, एक लोगस्स को काउस्सग्ग करे, (पारके) प्रगट लोगस्स कहे, नीचा बैठ के मुहपति पडिलेहै, दो वांदण देवे, स्थापनाजी की खमासयण देई (भगवन्) अमुक तप ग्रहणत्थं चेइयं वंदावेह (इसो कह के) चैत्यवंदन करे । णमोत्थुणं (इत्यादि) अरिहन्त चेइयाणं (अन्नत्थु) कह कर ।

नोटः—यह थुइयां दीक्षा विधिमें आगे आवेगी, सो देख कर उस प्रमाण करें ।

यह थुइ कहकर नीचा वैसे नमोत्थुणं कहकर जय वीय राय तांइ चैत्यवन्दन करे । खमासमण देकर भगवन् ! (अमुक तप ग्रहणत्थं करेमि काउस्सग्गं) एक लोगस्स को काउसग्ग करे (पारकर) लोगस्स कहे, खमासमण देकर ३ नवकार गुणे फेर खमासमण देकर (इच्छाकार भगवन्) अमुक तपग्रहण दण्डक उच्चरावो जी, गुरु कहें उच्चरावेमो (ऐसा कहे) अहण्णं भइंते तुम्हाणं समीवे अमुकतवं उवसंप जित्ताणं विहरामि तंजहा—दव्वओ खित्तओ

कालओ भावओ, दव्वओणं अमुकतपं, खित्तओणं इत्थ वा अन्नत्थवा, कालओणं जाव परिमाणं, भावओणं जाव गहेणं नगहिज्जामि छलेणं न छलिज्जामि संनिवाएणं न भविज्जामि जाव अण्णेण वा केणइ रोगायं काहि परिणाम वसेण एसो मे परिणामो न परिवज्जइ तावमे एस तवो (अन्नत्थ) रायाभिओगेणं गणाभिओगेणं बलाभिओगेणं देवाभिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तिकंतारेणं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरामि। जो तप ग्रहण करे उसी तप का नाम लेकर गुरु के पास ३ वेर यह पाठ सुने, गुरु न होतो स्थापनाचार्य जी समक्ष तीनवार यह पाठ पढे (पीछे गुरु कहे) हत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तदुभएणं सम्म धारणीयं गुरु गुणेहीं वुड्ढाहि नित्थारग पारगा होहि (एसो गुरु कहे) पीछे खमासमण देकर (गुरुमुखे) पच्चक्खाण करे अथवा गुरु न होतो आपमुखे करे।

॥ इति सर्व तपस्या ग्रहण विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ सर्व तपस्या पारण विधि ॥

प्रथम ज्ञान पूजा करके इरियावही पडिकमे अमुक तप परिवा मुहपत्ति पडिलेहे २ वांदण देवे। इच्छा कारेण संदिसह भगवन ! तुज्झे अम्हं अमुक तप पारावेह। (गुरु कहे पारावेमो) इच्छामि खमासमणो इच्छा कारेण संदि-

सह भगवन! अमुक तपनिक्खवणत्थं काउसग्ग करावेह (गुरु कहे करावेमो) पीछे देव वन्दन करके अमुक तप पारणार्थ करेमि काउसग्ग। अन्नत्थ० कहकर १ नवकार को काउसग्ग करे स्तुति गाथा कहे पीछे नमोत्थुणं कहे (बेठक) भगवन्! अमुक तप करतां अविधि आशा तनाय करी जो दूषण लागो होय सो मन वचन काया ये करी मिच्छामि दुक्कडम ओर ज्ञान भक्ती द्रव्य से भावसे किया होय सो प्रमाण फल दायक होजो (गुरु कहे नित्थारपारगा होह) पीछे पचक्खाण करे (अमुक तप आलोयण निमित्त करेमि काउसग्ग) अन्नत्थु कहे ४ लोगस्स कोकाउसग्ग करे। प्रगट लोगस्स कहे पीछे उपगरण पात्र भक्त पानादिक से साधु भक्ती करे, अपने शक्ती माफक जैन विद्याभ्यास कराने वाले विद्या गुरु की भक्ती करे, सामीवच्छल करे, पहरावणी करे पीछे याचकों को दान सन्मान करे।

॥ इति सर्व तपस्या पारण विधि सम्पूर्ण ॥

॥ अथ द्वादशव्रत ग्रहण करण विधी ॥

प्रथम जिन भुवन अथवा जिन प्रतिमा आगे शुद्ध सपेद वस्त्र पहिर के चन्दन केशर को तिलक करे, चांवल चढावे पीछे अखण्ड तंदुल मुट्ठी ३ थाल मध्ये रखे, तिन ३पर नारेल रोक नाणो धरे तीन प्रदिक्षणा देकर इरिया

वही पडिक्कमे (इच्छाकार०) सम्यक्त्व सामायिक आरो-हरणार्थ चेइयाइम् वन्दावेह (गुरु कहे वन्दावेमो) चैत्य वन्दण करे, वाम पासे चांवलां को साथियो करे श्रीफल धरे पीछे गुरु वर्द्धमान विद्या अभिमंत्रित श्रावक मस्तके वासक्षेप करे वर्द्धमान स्तुति से देव वन्दन करावे पीछे थुइ में नवकार १ को काउसग्ग करे, पीछे, शासन देवी निमित्त लोगस्स ४ काउसग्ग करे, पारकर प्रगट लोगस्स कहे, पीछे नवकार ३ गुणकर शक्रस्तव कहे । नमोऽर्ह-त्सिद्धा० कहकर बडो स्तवन कहे पीछे जय वीयराय कहे इति नन्दी विधि ॥ पीछे खमासमण देइ व्रत सामायिक आरोहरणार्थ काउसग्ग करावेह (गुरु कहे करावेमो) पीछे सम्यक्त्व सामायिक आरोपणार्थ करेमि काउसग्ग ४ लोगस्स को काउसग्ग करे पारकर प्रगट लोगस्स कहे, पीछे तीन वार नवकार गुणकर गुरु के पास ३ वार सम्यक्त्व दण्डक उच्चरे (गुरु) पाठ बोले उसी को मन में धारणा रखे ॥

॥ सूत्रम् ॥

अहन्नं भन्ते तुम्हाणं समीवे मिच्छात्ताओ पडिक्कमामि सम्मत्तं उवसंपज्जामि नोमे कप्पइ अज्जप्पभिइ अन्नतित्थिए वा अन्नतित्थिदेवयाणि वा अन्नतित्थिपरिग्गहिय अरिहन्त चेइयाणि वा वंदित्तए वा नमंसित्त एवा पुव्विं अणालित्त

एणं आलवित्तएवा [तेसिं] गंध मल्लाइं पेसिउ वा [नन्नथं] रायाभियोगेणं गणाभिओगेणं बलाभिओगेणम् गुरुनिग्गहेणं वित्तीकंतारेणं, तंचउव्विहं तञ्जहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, तत्थ [दव्वओ] दसणदव्वाइम् अहिगिच्च [खित्तओ) जाव भरहमज्झिमखण्डे (कालओ) जावज्जीवाए (भावओ)जाव छलेणम् न छलिज्जामि जावसंन्निवाएणम् न भविज्जामि जाव केणइ उम्मायवसेणम् एसोदंसणपालण परिणामो न परिवडइ तावमे एसोदंसणाभिग्गहोअन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ। पिछे ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हंनमः। ऐसे अक्षरश्री गुरुके पाप हाथमें लिखाके जिनप्रतिमाको वासक्षेप चढावे नवकार पढतो थको ३ प्रदिक्षणा देकर (देव गुरु मते वांदे) पीछे श्रुतसामायिक थिरीकरणार्थे सत्तावीस उच्छवास प्रमाणे एक लोगस्सको काउसग्ग करे, एक लोगस्स कहकर पारे; पीछे सम्यक्त्वरूपी कल्पवृक्ष पायकर अतिआनन्द से ऐसा अभिग्रह वचन बोले। अरिहन्तो महदेवो जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो। जिणपन्नत्तं तत्तं इय सम्पत्तम् मए गहियं ॥ १ ॥

पीछे गुरु धर्मदेशना देवे, मिथ्यात्ववरजै, नित्य चैत्य वन्दन इतनी वेर करूगा, इतना नवकार नित्य गुणूंगा, केशरादि द्रव्य वर्षप्रति इतना चढाऊंगा, ज्ञान दर्शन

चारित्रके भक्ति अर्थे इतनी द्रव्य खरचूंगा, शीलव्रत इतनी पर्वतिथि पालूंगा, नित्य पच्चक्खाण इस माफक करूंगा (दिन को) नवकारस्यादि व्रत (तथा) रात्रि को चउविहार त्रिविहार दुविहार प्रमुख और बावीस अभक्ष्य बत्रीस अनन्तकाय विदल प्रमुख सर्व छोडूंगा इत्यादि । अपनी धारणा माफक सर्व वस्तु का प्रमाण गुरु के सन्मुख करे । बार व्रत ग्रहण करे बारे व्रत की टीप सुणे जिसमें लिया हुआ व्रत को अतिचार न लगे ऐसा उपयोग सदा रक्खे ।

॥ इति सम्यक्त्वा रोपण विधि ॥

॥ प्राणातिपात दण्डक लिख्यते ॥

अहन्नं भन्ते तुम्हाणं समीवे थूल गपाणइ वायं संकप्पिओ निरवराहं पच्चक्खामि जावज्जीवं एगविहंणं अथवा दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भन्ते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि यह पहला व्रत का दंडक ३ वार उच्चरावे ॥

अहन्नं भन्ते तुम्हाणं समीवे थूलगं मुसावायं जीहा छेयाइहेउज्ज कन्नालियं गोवालियं भोमालियं थापणमोसा कूड साखियं पञ्चविहं पच्चक्खामि दक्खिन्नाइ अविसए दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं मुसावायं

खित्तओणं इत्थवा अणत्थ वा कालओणं जावज्जीवं भावओणं जाव गहेणं न गहिज्जामि छलेणं न छालिज्जामि अन्नेण केणवि रोगाइयं एसो परिणामो न परिवडइ ताव अभिगाह दुविह तिविहेणं अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेण सव्वसमाहि वतियागारेणं वोसिरइ ॥

(अहन्न भन्ते तुम्हाणं समीवे) अदिन्नादाणं खत्तख णणाइयं चोर काकरं राय निगाह कारयं सचित्ताचित्त वत्थुनिसयं पच्चक्खामि दव्वओखित्तओ कालओ भावओ दव्वओणं अदिन्नादाणं खित्तओणं इत्थ वो, अणत्थ वा, कालओण जावज्जीवं, भावओणं जाव गहेणं न गहिज्जमि छलेणं न छलिज्जामि अणेण केणवि रोगाइय एसो परिणामो न परिवडइ ताव अभिग्यह दुविह तिविहेणं अन्नत्थणा भोगेणँ सहसागारेणँ महत्तरागारेणं सव्वसमाहि वत्तिया गारेणँ वोसिरइ ॥

(अहन्न भन्ते) तुम्हाणं समीवे ओरालिय वेउव्विय भेयं थूलमे हुणं पच्चक्खामि अहागहिय भंगएणं दिव्व तिरिच्छ माणासियं एगविहं एगविहेणं पच्चक्खामि दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओणं मेहुणं खित्तओणं इत्थ वा अणत्थ वा, कालओणं जावज्जीवाए भावओणं जाव गहेणं न गहिज्जामि छलेणं न छलिज्जामि अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं महत्तरा गारेणं सव्वसमाहिवत्तिया

गारेणं वोसिरइ ॥

(अहन्न भन्ते) तुम्हाणं समीवे परिगाहं पडुच्च अपरिमिय परिगाहं पच्चक्खामि धणधन्नाइ नवविह वत्थुविसयं इच्छा परिमाणं उवसम्पज्जामि अहागहियभङ्गएणं (तंजहा) दव्वो खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओणं नवविहपरिगाहं, खित्तओणं इत्थवा अंणत्थवा, कालओणं जावज्जीवं, भावओणं जावगहेणं नगहिज्जामि छलेणं न छलिज्जामि अन्नत्थण भोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसगाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥

(अहन्न भन्ते) तुम्हाणं समीवे अनत्थ दण्ड पच्चक्खामि अवजाण पापोपदेश हिंसो पकरण दान प्रमाद चरितं चउविहं अनत्थदण्ड जहासत्तिए परिहरामि (तंजहा) दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओणं अनत्थदण्ड खित्तओणं इत्थ वा अन्नत्थ वा, कालओणं जावज्जीवाए, भावओणं जावगहेणं न रहिज्जामि छलेणं न छलिज्जामि अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं महत्तागारेणं सव्वसमाहि वत्तिया गारेणं वोसिरइ ॥

(अहन्न भन्ते) तुम्हाणँ समीवे सामाइयं पोसहोववासं देसावगा सिय अतिथि संविभाग वयं जहासतीए पडिवज्जामि, इच्चेयं सम्मतमूल पञ्चअणुवयं सत्त सिक्खा वयं दुवालसविहं सामागधम्मं उवसंपज्जिताणं विहरामि

(तञ्जहा) दव्वओ । अन्नत्थणा भोगेणं सहसागारेणं मह तरा गारेण सव्व समाहि वतिया गारेणं वोसिरइ पट साख छ छन्डी च्यार आगार सहित पालू ॥ ९, १०, ११, १२ ॥ इति श्री श्रावक की संक्षेप बारह व्रत उच्चरावण विधिः ।।

॥ श्रीरस्तु ॥

॥ दिक्षा के पाहिले क्रिया करने की बिधी ॥

दिक्षावारों का कपडा रंगावे केशरसे तथा चादर तीन एक पर साथ्या नन्द्या व्रत मुहपति २ के साथ्या नन्द्या व्रत का करावें उगेरिया १ के नन्द्या व्रत साथ्या करावें, चोल पट्टा नग ३ एक के छांटणां, २ कोरा, साध्वियां के साडा नग ४ जिसमें एकके छांटणा, एक रंगीन केसरका २ कोरा चोरा नग ४ एकके साथ्या तीन, ३ कोरा ओर ओगेन्या पाठो कसीदाका मंगावें डांडो १ ओगाकी डांडी १ डंडासणाकी डांडी ओगो डंडासणारी पुञ्जणी तीनही ऊन-की करावे । पातरा तिरपणी की जोड मंगावे । आसण नग १ कटोसणो १ कमली १ संथारिया १ श्रीसंघकेलिये एक थानकी मुपतियां करे । अथः दिक्षा लेने वाला प्रथम केसरका साथ्या करे अच्छा मुहूर्त दिखाय के डोरा बं-धावे, जिस वक्त भुमि शुद्धकर के कच्चागोवर का चोका

देके पांच साथ्या कंकूका करे उस पर चोकी रखकर वैरागी या वैरागणि बैठे जिस वक्त हाथ काम लेवें। वाद पीठी करावे फिर नवीन कपडा पहरके देव गुरुको वंदना करके वाक्षेप लेवें। इति डोरावांधने की विधी।

❀ उत्सव की विधी ❀

यथाशक्ति पूजा प्रभावना अठाई महोत्सव करे, स्वामी वत्सल्य करें, तीन टेम गीत गायन करे, प्रभावना सहित और दिक्षा होवे जितने दिन वन्दोला जीमे दिक्षा लेने वाले।

नोट—दिक्षा के मुहूर्त के एक दिन पहिली ओडी की सामग्री तैयार करावें। उस सामग्रीकीविधी।

कांकण डोरो लच्छा मे बांधनेकी लाख की बीटी लोहा की बीटी मरोडाकी फली कंवर गट्टो मिंडर यह ५ चीजां डोरडा में वांधे। टूलका कपडाकी पोटली में राई सरसुं, शुद्ध मिट्टी, अणविध्या मोती साल यह पांच ही चीजां पोटली में रख के कांकण डोरडामें वांधे। सुपारी गेहुंका आटा का फल फुल जिसके ऊपर कंकू की टीकी २१॥ या २७॥ देवे। श्रीफल १ रुपया १ या रूपानाणो ओर्ड़के लच्छो वांधे। कंकू का छांटा देकर सब चीजां मांही रखे। कपडा ओगा डांडो आदि सब उपकर्ण ओडी

में रखे, तलवार २ और घी कादिया और शुद्ध जल का कलस्या यह सब चीजें रखके गुरु के पास से मन्त्रावे वर्धमान विद्यासे वासक्षेप करे।

❀ वासक्षेप मंत्र ❀

ॐ नमो भगवओ मह वही महावीर वर्द्धमाण सामिस सिज्जओ मे भगवही महई माहा विज्ञा ओगं विरें विरें महा विरें सयण विरे जयंते अपरा जिते स्वाहाः॥

इस मंत्र से मंत्र कर गुरु महाराज सब चीजों उपगरण पर तलवार कलस्या दीपक पर वासक्षेप करे और एक २ वासक्षेप की पोटली सब चीजों के ऊपर रखे। फिर सदवा स्त्री के साथ ओडी रखे।

॥ ओडी फेरने की बिधी ॥

ओडी वारी के पास में अगाडी दीपक चले पानी का कलस्या भी चले दोनों नङ्गी तलवारों वाले दोनों पीछे जिमनी वो डांइ तरफ चलें दिसा लेने वाला साथ में रहे और श्री संग साथ में रहे। गाजते वाजा बजावे शहरमें फिरावे। फिर ओढी अच्छा मकान में रखके रात्री जागरण करें और रात्री जागने वाले को श्री फल की फजर में प्रभावना करे दीवा अखंड रहे दीक्षा वाला दीक्षाघर पहुंचे वहां तक॥

॥ दिक्षा लेने की विधी ॥

दिक्षा लेने वालों को क्या करना चाहिये सो नीचे लिखा प्रमाणे करे। दिक्षा लेने वाले सवेरे जल्दी से उठकर शुद्ध होकर अपने घर के देवता के धूप ध्यान करके ४ ही खूणे ओर बीच में यह पांच जगह श्रीफल वधारे। इतने घर वालो (थाल की तैयारी करे) पानी लापसी चांवल वगेरा की तैयारी करे। एक थाल में भर के उस दिक्षा वाले को पाटा पर विठा के उसको फुंके, ५ सदवा स्त्री उसके खोले में खोल भरे। फिर थाल मेंसे दिक्षा लेने वाला एक मुट्ठी लापसी, चावल की भर कर सदवा स्त्री के खोले में डाले। खोला भरी हुई वो भी उस स्त्री के खोले में डाले फिर वहां से (मामा या भाई) उठाकर मन्दिर पर लेजावे। फिर मन्दिर में भगवान की सेवा करे, भंडार में नगदी चढावे। चैत्यवन्दन करके फिर गुरु के पास आवें। विधि प्रमाणे गुरु को कुटुम्ब सहित वन्दना करे। कुटुम्ब वाला (गुरु) का अंग पूजे इच्छा कारण संदिसह सचित्त भिक्षा पडि ग्रहण करे (गुरु) भणे इच्छा मोवध आण जोगेणम् ततो दिक्षा ग्रही माहगच्छ मंगलं तुर्यादी घनोम मुक्कलती दिक्षा स्थान समा गच्छः तिः वरसिदान देता हुवा (दिक्षा स्थान पर जावे ओर नगर में अमारी घोसणा फिरावे, जीव

दया के वास्ते ।

॥ नांद करने की विधि ॥

घर वाला [श्रावक] प्रथम नांद करने की विधि इस प्रमाणे करे । कोई बगीचा तथा अच्छा स्थान शुद्ध देख के जहां [आसा पालव] का झाड तथा वड का झाड होवे वहां साफ जगह करवा कर ।

॥ भूमी शुद्ध करने का मंत्र ॥

भूर्र पोटलिय इत्यंत्र स्थाने एवद आपि वक्त सुवर्ण प्रक्षाला हुआ पानी से यह मंत्र गिन कर पृथ्वी पर छिटकना हफ्ते वारान चपिते । फिर बड़ा पाटा रखें उपर त्रिगडा करावें । त्रिगडा में चोमुख जिकी प्रतिमा रखावे जिस वक्त मंत्र बोले । भगवान पधरावने का नीचा मंत्र ॐ ह्रीं श्रीजी रावला पार्श्वनाथ रक्षां कुरु २ स्वाहाः

॥ ओविसहर २ प्रतिष्ठा देवते स्वाहाः ॥

पाटे के ऊपर च्यार ही कुणे या थापना जी के नीचे एक एक ढगली चांवल की करे एक २ रुपया ५ ही जगह रखे । मुंह कने ५ ही जगह दीवा जोत रखे ओर बडा पाटा के आगे २ पाटा लम्बा रखावे । एक पाटे पर १० दिगपाल के कारण १० ढिगली पर एक२ नारयल को

पावली रखावे । मंत्र नीचे लिख्या प्रमाणे बोले ।

एक पाटा लम्बा नवग्रह के वास्ते चाहिये वणी पाटा पर नव ढुगली कराकर नव श्रीफल ओर नव पावली एक एक ढुगली पर रखे जिस वक्त में नीचा लिखा मंत्र बोला जावे ओर रखवा जावे ॥

एक चोकी नीचे रखावणी जिसके ऊपर केशर का साथ्या कराकर ऊपर चांवल का साथ्या करा रखे जिसके ऊपर फिर गुरु महाराज कहे वैसी क्रिया करे गुरु महाराज की वन्दना आवे । जिस वक्त भगवान के आगे परदा कर देवें ।

॥ दस दिगपाल अह्वाहन मंत्र ॥

(१) ॐ ह्रीं इन्द्राय सायुधाये सवाहनाव सपरिजनाय इह नांद्यां आगछ २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं अग्नेय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इहनांदयां आगछ २ स्वाहा॥ ॐ ह्रीं यमाय सायुधाय सपरिजनाय ईहनांदयां आगछ २ स्वाहा ॐ ह्रीं नैऋताय सायुधाय सपरिजनाय इहनांदयां आगछ २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं वरुणाय सायुधाय सपरिजनाय इहनांदयां आगछ २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं वांय वे सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाव इहनांदयां आगछ २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं कुंवेरायस सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इहनांदयां आगछ २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं इसानाय सायुधाय सवाहनाय

सपरिजनाय इहनांदयां आगछ २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं ब्रह्मण सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इहनांदयां आगछ २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नागायं सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इहनांदयां आगछ २ स्वाहा ॥

॥ दिगपाल विसर्जन मंत्र ॥

ॐ ह्रीं इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पुनराग मनाय स्वस्थानंगछ २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं अग्नेय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पुनरागमनायस्वस्थानंगछ २ स्वाहा ॐ ह्रीं यमाय सायुधाय सपरिजनाय पुनरागमनाय स्वस्था नंगछ २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नैऋताय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पुनरागमनाय स्वस्थानंगछय२स्वाहा॥ ॐ ह्रीं वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इहनांदया गछ २ स्वाहा। ॐ ह्रीं वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पुन रागमनायस्वस्थानंगछय २ स्वाहा। ॐ ह्रीं कुवेराय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पुनरागमनाय स्वस्थानंगछय २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं इसानाय सायुधाय सवाहनाय पुनरागमनाय स्वस्थानंगछय २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं ब्रह्मणे सायुधाय सपरिजनाय पुनरागमनाय स्वस्थानंगछय २ स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय पुनरागमनाय स्वस्थानंगछय २ स्वाहा ॥

॥ अथ नवग्रहों के नाम ॥

सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहू, केतू उविसहर २ प्रतिष्ठा देवते स्वाहाः यह आवागमन का मंत्र है।

॥ मंत्र विर्सिजन ॥

ॐ नवग्रहदेवते शुभ स्थाने गच्छ गच्छ स्वाहाः ।

॥ दिक्षाकी क्रिया करने की विधी ॥

ततः इर्यापथि की प्रतिक्रम्य क्षमाश्रमण पूर्व श्राद्धो भणति इच्छाकारेणतुष्मे अहं सव्वविरइ सामाइय आरोवणथं चेईआइं वन्दावेह गुरुराह वंदावेमो अत्रायं विशेषः यः पूर्वमपि प्रतिपन्न सम्यक्त्वादिगुणः सः सम्मत सामाइय १ सुय सामाइय २ सव्वविरई सामाइय आरोवणत्थांति भणइ ततः पुनरपि क्षमाश्रमणं दत्वा गुरु पुरतोजानुभ्यां तिष्ठती गुरु रपितत्स्थिर सिर वासक्षेप करोति ततो गुरुणा सह चैत्यान्वंदनति गुरु रपि स्वयमेव।

नमोत्थुणं कहकर अरिहन्त चेइयाणं करेमि काउसग्गं अनत्थ कहकर एक नवकारको काउसग्ग करे । बाद में यदंद्रि प्रमुख १८ स्तुति कथयंति यदन्द्रिनमना देव देहिन संति सुस्थिताः तस्मै नमोस्तु वीराय। सर्व विघ्न विघा तिने ॥ १ । सुरपतिनत चरण युगान्। नाभेय जिनादि

जिन पतिर्नौमि यद्वचन पालनपरा फलं ग्लांजलिं ददतुदुःखे भ्यः ॥२॥ वदंति वृन्दारुगण प्रतो जिना। सदर्थतो यद्रम- यंति सूत्रतः। गणाधिपा स्तीर्थ समर्थन क्षणे। तदंगिना मस्तु मतंनाम मुक्तये॥ ३ ॥ शक्रः सुरा सुरवरैं देवतामिः सर्वज्ञः शासन सुखाय समुद्यतामिः। श्रीवर्द्धमान जिनदत्त मत प्रवृत्तान, भव्यान् जमानवतु नित्य ममङ्गलेभ्यः ॥४॥ शांतिनाथ आराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नथ. रोग शो- कादिभिर्दोषैरजिता यजितारस्मेनमः श्री शांतये तस्मैविहि तानक शांतये ॥ ५ ॥ श्री शांति देवता निमितं करेमि काउसग्गं श्री शांति जिनभक्ताय भव्याय सुख संपदा श्री शांति देवता देया दशांति मपनीयतां ॥ ६ ॥ श्रुत देवता निमितं करेमि सुवर्ण शाल्नी देयात् द्वादशांगी जिनोद्भवा श्रुत देवी सदा मशेष श्रुतसंपदम् ॥ ७ ॥ भुवन देवता निमित्तं करेमि काउसग्ग ॥ चतुर्वर्णाय संघा देवी भुवन वासिनी निहत्य दुरिता यस्या करोतु सुखम क्षयम् ॥ ८ ॥ क्षेत्र देवता आराधनार्थं करेमि काउसग्गं यस्याक्षेत्रम् गता शांति साध्य भाव का दय जिनाज्ञा साध्यं तस्तार संतु क्षेत्रदेवता ॥९ अंबिका आरधनार्थ करेमि० अंबानिह तडिम्बामे सिद्ध बुद्ध सुतां श्रीतां सिंहे स्थिता तथा गौरी वितनोतु समीहितां ॥१०॥ पद्मावतीदेवी अ० धराधिपति पत्नी या देवी पद्मावती सदा क्षुद्रो पद्रवतः साम्मां पातुफुल्ल

स्फणावली ॥ ११ ॥ चक्रेश्वरी देवी आराधनार्थं करेमि का० ॥ चंच चक्र करा चारु मवाल दलसन्निमा चिरं चक्रे श्वरी देवी नन्दता देवता त्वमां ॥ १२ ॥ अच्छुप्ता देवी आराधनार्थ करेमि काउ. खडग खेटकको दण्ड वाण पाणी स्तडिद्युति तूरंग गमना च्छुप्ता कल्याणानिकरोतुमे ॥१३ ॥ कुबेर देवता आराधनार्थ० मथुरापुरी सुपार्श्व श्रीपार्श्वस्तु परक्षका श्रीकुबेरानंरा रूढा सुखं काव तुनोमयात् ॥ १४ ॥ ब्रह्म शांति देवता आराधनार्थं करेमि० । ब्रह्म शांति सम्रा पाया दपाया द्वीर सेवक श्रीमत्सत्य पुरे सत्या येन कीर्ती कृतानिजा ॥ १५ ॥ गोत्र देवता आराधनार्थ करेमि० या गोत्रं पाल यत्येय सकला पायत सदा श्री गोत्र देवता रक्षां साकरोतु नतांगतिम् ॥ १६ ॥ शक्रादिसमस्तवेया वृत्ति कर आराधनार्थ करेमि० श्रीशक्र प्रमुखायक्षा जिनशासन संश्रो ताः देवान् देव्य स्तदन्येपि संघरक्षंच पायतः ॥१७॥ श्री सिद्धायिका शासन देवी आराधनार्थ करेमि. श्रीमद्विमान मारूढा यक्ष मातंग सेविता सामांसिद्धायिका पातु चक्र चापेषुधारिणी ॥ १८ ॥ शासन देवी का योत्सर्गे चंदे सुनिम्म लय रायावत् लोगस्स चतुष्कं चिन्तयते मांते गुरुः स्तुतिर्ददाति अन्ये कायोत्सर्ग स्थाएव श्रृण्वंति पारिते संपूर्णम् लोगस्सेति पठंति ततो नमस्कार त्रयं पूर्व जानुभ्यां स्थित्वा शक्रस्तवंच पठति ततः पुनः गुणावेषमिमंत्र्यतेक्षमा

क्षमाश्रमण पूर्वं शिष्यो भणति इच्छाकारेण संदिस्सहतु ष्भे अहं रयहरणा इवे संसमप्पह ततो नमस्कार त्रयें पूर्वं विदति सुग्गहं करेह ततो दक्षिण त्वा गावो संमुखा रजो हरणादसिकांतृत्वा पूर्वाभिमुखो उत्तराभिमुखो वा गुरुर्वेषं समर्प्पयति पुनः क्षमाश्रमणं दत्वा वेषं गृहीत्वा इसान कूणके गत्वा आभरणालंकारादि सर्वंमुक्तावेषंपरिधाय चतु रंगुल वर्जितोपनीतके सोलतां रक्षायित्वा गुरु समीपे समागत्य क्षमाश्रमण पूर्वं भणति इच्छाकारेण तुष्मे अहं-गिन्द्रह गुरु भणई गिन्द्रामो ततो गुरुः नमस्कार ॥ ३ ॥ पूर्वं स्थित्वा लग्नवेला यां समकाल नाडी दुगप वाहवङ्गं ऽष्भितर पविसमाण सासं अरकलियं लता त्रयं गृह्णाति तत्समी पस्थ साध्वादि सदैव वस्त्रेणा लतात्रयं पतिच्छति ततक्षमाश्रमणं दत्वा सव्वविरइ सामाइय आरोवणार्थं करेमि काउसग्गं अन्नथ उससिएणं सागवरगंभिरायावत् गुरु शिष्यो चिन्तयतः पारिते सम्पूर्णम् लोगस्स कथ नीयं ततः क्षमाश्रमणं दत्वा शिष्यो भणति ॥ तुष्मे अहम् सव्वविरइ सामाइयं मुत्तं उच्चरावेह ॥ गुरुराह उच्चरावेमो ततो नमस्कार ३ पूर्ववारत्रयं सामायिको च्चारः पश्चाद्वासक्षेपं ततोऽक्षता मंत्रिता संघायदीयते ततः क्षमाश्रमणं दत्वा शिष्यो भणति सव्वविरइ सामा इयं आरोवेह गुरुराह आरोवेमो ततः क्षमाश्रमणं दत्वा

शिष्यो भणति संदिसह किंभणमो गुरु राह वन्दित्तापवे यह पुनः क्षमाश्रमणं दत्वा शिष्योभणति इच्छाकारेण तुब्भेहिं अहं सव्व विरइ सामाइयं आरोविय गुरुर्वाक्षेप अक्षत केशर पूर्वं भणति आसेवियं ३ खमासमणाणं हत्थेणं सुत्तेणं अच्छेणं तदुभयेतं सम्मंधारणीयं चिरंपालणीयं ॥

नित्था रग पारगा होह गुरु गुणे यह बुद्दाही शिष्यो भणति सव्वं इच्छामोअणु सठिंत्त पुनः क्षमाश्रमणंदत्वा शिष्यो ॥ भणति तुम्हाण पवेइयं साहुणं पवेएमि ततः क्षमाश्रमणं दत्वा नमस्कार मुच्चरन् प्रदक्षिणात्रयंददाति संघश्चतथिर ॥ सि अक्षतादिनिक्षिपंति ततः क्षमाश्रमणं दत्वा शिष्योभणति ॥ तुम्हाण पवेइयं साहूणं पवेइयं संदिस्सह काउसग्गं करेमि गुरुराह ततः क्षमाश्रमणं दत्वा शिष्यो भणतिसव्वविरइसामाइयं आरोवणयम् करेमि कऊसग्गं अन्नथ. सागरवरयावत् लोगस्स चिन्तनं पारितेसम्पूर्ण लोगस्स कथनीयं ततः क्षमाश्रमणं दत्वा शिष्यो भणति इच्छाकारेण तुब्भे अहं सव्व विरइ सामाइय थिरीकरणं काउसग्गं करावेह सव्वविरइ सामाइय थिरीकरणत्थं करेमि काउ० सागरवरयावत् पारिते संपूर्ण लोगस्स कथनीयं ततः क्षमाश्रमण दत्वा भणति इच्छा कारेण तुब्भे अहं नामठवणं करेह गुरु भणइ करेमी ॥ ततो वासक्षेप पूर्वं यथोचित नामंगुरुर्द्ददाति ततः कृतनाम शिष्यो तुयेष्ट साधुन् वन्दते

साध्यादि सब्वभतांगंदति चत्तारिपरमंगाणी इत्यादि सङ्ग हो चेईवन्दण १ वेससमप्पण २ समइय ३ उस्सग ४ लग्न ५ अद्दग्गहो सामाइय ७ तिगकदण ८ तिपयाहिणा ९ वास १० उस्सग्गो ११ इति श्रीत्रिधि मपानुसारेग लघु दीक्षा विधि संपूर्ण ॥

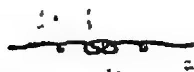
नाम देती वक्त नीचे ममाणे बोलनाः—कोटिगण वड शाखा चन्द्र कुल वड गच्छ खरतर त्रिरुद खेमा कल्याणकजी महाराज की वाशक्षेप सुखसागरजी महाराज का सिंघाडा पटधर साधु साध्वीं अमुक की चेली अमुक नाम चत्तारि परमंगाणी दुल्लहाणीह जंतुणो माणशत्तं सुइ सध्या संजमंमिय वीरयं ॥१॥ उजीया भक्षोया रक्षया रोहणी।

सरवर तरुवर सन्तजन चोथा वरसे मेह परउपकारके कारणे चारु धारी देह यह उपदेश देना दीक्षा दिये वाद।

॥ कवित्त ॥

आपतो अतीतनाथ, बाप तो वैरागी दास दादा तो दिगम्बर दास भिखारीदास भाई है। काका तो कंगालदास मामा तो भंगतराय नाना तो निरंजनदास जोगीदास जमाई है॥ पूत तो फकीरचन्द साला तो टण्डन पाल भूरा तो भवानीदास ऐसे परिवार की बडाई है। ऐसे घर आयकर मांगने की आश करे, आश तो रही दूर लाज गांठ की गमाई है॥ इति॥

पौषध-विधी ।



आठ प्रहर पौषध विधी—

पोषह के उपगरण लेकर उपाश्रय में जावे । वहां गुरु महाराज का संयोग न हो तो सामायक विधिके अनुसार स्थापनाचार्य की स्थापना करके विधि पूर्वक गुरुवन्दन करें। पीछे खमासमण पूर्वक 'इरियावहियं' पढकर एक लोगस्स का काउसग्ग करके प्रगट लोगस्स कहे । पीछे खमासमण देकर इच्छा कारेण संदिसह भगवन् ! पोसह मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं ऐसा कहकर मुहपत्ति की पडिलेहना करे । बाद खमासमण पूर्वक इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पोसह संदिसाहुं ? इच्छं फिर खमासमण पूर्वक इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पोसह ठाउं ? इच्छं, कहकर खमासमण देकर खडे हो जाय और हाथ जोडकर, आधा अंग नमाकर, तीन नवकार गिने । पीछे "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पसाय करी पोसह दण्डक उच्चरावोजी" एसा बोलकर नीचे लिखा हुआ पोसहका पच्चक्खाण तीनवार वडे आदमी उच्चरावे या स्वयं उच्चर ले ।

पोसह का पच्चक्खाण ।

करेमि भंते ! पोसहं, आहार पोसहं, देसओ सव्वओ वा, सरीसकार-पोसहं । सव्वओ बंभचेर-पोसहं । सव्वओ अव्वावार-पोसहं । सव्वओ चउव्विहे पोसहे । सावज्जं जोगं पच्चक्खामि,*जाव अहोरत्तिं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

पीछे 'इच्छामि० इच्छा० सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं', कहकर खमासमण देकर मुहपत्ति पडिलेहन करे । पीछे 'इच्छामि० इच्छा० सामायिक संदिसाहुं ? इच्छं' । 'इच्छामि० इच्छा० सामायिक ठाउं? इच्छं' कहकर खमासमण देकर, खडे होकर तीन नवकार गिने । पीछे "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक दण्डक उच्चरावोजी" ऐसा बोलकर 'करेमि भन्ते सामाइयं' का पाठ तीन वार उच्चरे, इसमें 'जाव नियम' की जगह 'जाव पोसहं' बोले। (यहां इरयावहियं न बोले) पीछे 'इच्छामि० इच्छा० वेसणो संदिसाहुं ? इच्छं', 'इच्छामि० इच्छा वेसणो ठाउं ?

---

* सिर्फ दिनका पौषध लेना होतो 'जावदिवस', दिन रात का करना हो तो 'जावअहोरत्तिं' और सिर्फ रातका करना हो तो 'जाव सेस दिवसंरत्तिं' कहना चाहिये ।

इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं' 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय करुं ? इच्छं' कहकर खमा-समण देकर खड़ेही खड़े आठ नवकार गिने। पीछे शीत आदि परिसह निवारण के लिये वस्त्र की आवश्यकता हो तो 'इच्छामि० इच्छा० पंगुरण संदिसाहुं ? इच्छं। इच्छामि इच्छा० पंगुरण पडिग्गहुं ? इच्छं' ऐसा कहकर वस्त्र ग्रहण करें। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० बहुवेलं संदिसाहू ? इच्छं। 'इच्छामि० इच्छा० बहुवेलं करू ? इच्छं', इस प्रकार पोषध लेकर राई प्रतिक्रमण पहले नहीं किया हो तो करें, किन्तु इसमें चार थुई के देववन्दन के बाद नमोऽथुणं कहकर खमासमण पूर्वक 'बहुवेलं', का आदेश लेकर पीछे आचार्य जी मिश्र इत्यादि कहे। प्रतिक्रमण पूर्ण होने बाद पडिलेहन नीचे लिखी विधिके अनुसार करे।

पडिलेहन विधी।

खमासमण देकर इरयावहि तस्सउत्तरी० अन्नत्थ० कह कर, एक लोगस्सका काउसग्ग करके प्रगट लोगस्स कहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० पडिलेहन संदिसाहू ? इच्छम्'। 'इच्छामि० इच्छा० पडिलेहन करू ? इच्छम्', कहकर मुह पत्ति पडिलेहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन संदिसाहू ? इच्छम्। इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन करू ?

इच्छम्', कहकर धोती और कटीसूत्र (कणदोरा) पडिलेहे।
पीछे 'इच्छामि० इच्छाकारेण संदिसह भगवन पसाय करी
पडिलेहण पडिलेहावोजी ? इच्छम् ऐसा कहकर स्थापनाचार्य
की पडिलेहना 'शुद्धस्वरूप धारे' का पाठ पूर्वक करके ऊंचे
स्थान पर रक्खे। पीछे इच्छामि० इच्छा० उपधि मुहपत्ति
पडिलेहुं ? इच्छम् कहकर मुहपत्ति पडिलेवे । पीछे
'इच्छामि० इच्छा० उपधि पडिलेहन संदिसाहु ? इच्छम्', ।
'इच्छामि० इच्छा० उपधि पडिलेहन करू ? इच्छम्' कहकर
कम्बल वस्त्र आदि सब पडिलेहे। पीछे पोषधशाला की
प्रमार्जना करके कचरे को जयणा पूर्वक परठे। पीछे खमा-
समण देकर इरयांवहि० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर
एक लोगस्स का काउसग्ग करके प्रगट लोगस्स कहे।
पीछे 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय संदिसाहू ? इच्छं, ।
'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय करू ? इच्छं, कहकर एक
नवकार गिने। पीछे उपदेश माला की सज्झाय कहकर
फिर एक नवकार गिने।

उपदेशमाला सज्झाय।

जग चूडामणि भूओ, उसभो वीरो तिलोय सिरितिलओ
एगो लोगाइच्चो, एगो चक्खू तिहुअणस्स ॥ १ ॥ संवच्छर-
मुसभजिणो, छम्मासे वद्धमाण जिणचन्दो। इह विहरिया

निणलणा, जए ज्जए ओवमाणेणं ॥२॥ जइत्ता तिलोग-
नाहो, विसहइ वहुयाइं अमरिसजणस्स । इय जीयंतकराइं
एस खमा सव्वसाहूणं ॥ ३ ॥ न चइज्जइ चालेउ, महइ
महावद्धमाण जिणचन्दो । उवस्सग्ग सहस्सेहिं वि मेरु जहा
वायगुंजाहिं ॥ ४ ॥ भद्दो विणीय विणओ, पढम गणहरो
समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वितमत्थं, विम्हिय हियओ
सुणई सव्वं ॥५॥ जं आणावेइ राया, पयइओ तं सिरेण
इच्छन्ति । इअ गुरुजण मुह भणियं, कयंजली उढेहिं सोयव्वं
॥६॥ जह सुरगणाण इन्दो गहगण तारागणाण जह चन्दो ।
जहय पयाण नरिन्दो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो ॥ ७ ॥
वालुत्तिमहीपालो, न पया परिहवइ एस गुरु उपमा । जं
वा पुरओ काउं, विहरंति मुणि तहा सोवि ॥८॥ पडिरूओ
तेहस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरवक्को । गंभीरो धिइमन्तो, उव
एसपरोय आयरिओ ॥९॥ अपरिस्सावी सोमो संगहसीलो
अभिग्गहमई य । अविकत्थणो अचवलो, पसंतहियओ गुरु
होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिन्दा, पत्ता अयरामरं पहं
दाउं । आयरियहिं पवयणं, धारिज्जइ संपयं सयलं ॥११॥
अणुगम्मए भगवइ, रायसुयज्जा सहस्स वंदाहिं । तहवि न
करेइ माणं, परियच्छइ तं तहा नूणं ॥१२। दिणदिक्ख-
यस्स दमगस्स, अभिमुहा अज्जचन्दणा अज्जा । नेच्छइ
आसणगहणं, सो विणओ सव्व अज्जाणं ॥१३॥ वरससय

दिक्खियाए, अज्जाए अज्जदिक्खओ साहू। अभिगमण वन्दण नमंसणेण, विणएण सोपुज्जो ॥१४॥धम्मो पुरिसप्पभो, पुरिसवरदेसिओ पुरिसजिट्ठो। लोएवि पहू पुरिसो किं पुण लोगुत्तमे धम्मे ।१५॥ संवाहणस्स रण्णो, तइया वाणरसीइ नयरीए। कन्ना सहस्स महियं, आसी किरस्वगं वीणं ॥ १६ ॥ तहविय सा रायसिरी, उल्लट्टंती न ताइया ताहिं। उयरट्ठिएण इक्केण ताइया, अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणसु बहुयाण वि मज्जाओ इह समत्त घरसारो। रायपुरिसेहिं निज्जइ, जणेवि पुरिसो जहिं नत्थि ॥ १८॥ किं परजण बहुजाणा वणाहिं, वरमप्प सक्खियं सुकयं। इह भरहचकवट्टी, पसन्नचन्दो य दिट्ठंता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो, असंजम पएसु बट्टमाणस। किं परियत्तिय वेसं विसं न मारेइ खज्जंतं ॥२०॥ धम्मं रक्खइ वेसो, संकइ वेसेण दिक्खओमि अहं। उम्मग्गेण पण्डतं, रक्खइ राया जणवओ य ॥२१॥ अप्पा जाणइ अप्पा, जहट्ठिओ अप्प सक्खिओ धम्मो। अप्पा करेइ तं तह जह अप्पसुहावहं होइ ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ जेण जेण भावेण। सो तम्मि तम्मि समए, सुहासुहँ बन्धए कम्मं ॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुन्तो, तो नवि सीउण्ह वायविज्जहिओ। संच्छवर मणासीओ, वाहुवली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विगप्पिय-चिंतएण, सच्छन्द बुद्धि

चरिएण । कत्तो पारत्तहियं कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥ २५ ॥ थद्धो निरोवयारी, अविणीओ गव्विओ निरव-णामो साहूजणस्स गरहिओ जणे वि वयणिज्जयं लहइ ॥२६॥थोवेण वि सप्पुहिसा सणंकुमारुव्व केइ बुज्झंति । देहे खणपरिहाणी जंकरि देवेहिं से कहियं ॥ २७ ॥ जइ तालाव सत्तम सुर, विमाणवासी वि परिवण्डति सुरा । चिंतिज्जंतं सेसं संसारे सासयं कयरं ॥ २८ ॥ कह तं भण्णइ सुक्खं सुचिरेण वि जस्स दुखमल्लि हियए । जं च मरणावसाणे, भव संसाराणुबंधि च ॥ २९ ॥ उवएस सहस्सेहिं, वोहिज्जंतो न वुज्जई कोई । जह वम्भदत्तराया उदाइनिव मारओ चेव ॥ ३० ॥गयकन्न चञ्चलाए, अपरि-चत्ताइ रायलच्छीये । जीवासकम्म कलिमल, भरिय भरातो पण्डति अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तूणवि जीवाणं, सदुदुकरा इति पावचरियाइम् । भयवंजा सा सासा, पच्चाएसो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पडिवज्जिऊण, दोसे नियए सम्मं च पाय वडियाए । तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥ इति ॥

इस प्रकार सज्झाय कहकर एक नवकार गिने । पीछे गुर्वादिक विद्यमान हो तो विधिपूर्वक वन्दना करे । बाद पच्चक्खाण करके बहुवेल का आदेश लेवे । पीछे देवदर्शन करने के लिये जिनमन्दिरमें जावे ।

(जिसने पोसह किया हो वह यदि देवदर्शन न करे तो दो या पांच उपवास के प्रायश्चित का भागी होता है)।

मंदिर में इरयावहियं पूर्वक विधिसे चैत्यवन्दन करके पच्चक्खाण करे। मंदिर और उपाश्रय से निकलते समय तीनवार "आवस्सही" कहे और प्रवेश करते समय तीन वार "निस्सीही" कहे। अब उपाश्रय आकर 'इरियावहियं पडिक्कमे। पीछे धर्मध्यान करे पढे गुने या व्याख्यान सुने। लघुनीति और वडीनीति परठनी हो तो पहले "अणुजाणह जस्स गो" कहे और पीछे से तीनवार "वोसिरे" कहे। और 'इरियावहियं' पडिकमे। जब पोन पोरसी (पहर) दिन चढने पर उग्घाडा पोरसी या वहू पडिपुन्ना पोरसी भणावे। यथा-इच्छामि० इच्छा० उग्घाडा पोरसी इच्छम् कहकर 'इच्छामि० इच्छा० इरयावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर, एक लोगस्सका काउसग्ग करे। पीछें प्रगट लोगस्स कहकर, 'इच्छामि० इच्छा० उग्घाडा पोरसी मुहपत्ति संदिस्साहुं ? इच्छम् इछामि० इच्छा० उग्घाडा पोरसी मुहपत्ति पडिलेहु इच्छम्'। कहकर मुहपत्ति पडिलेहे। उपधानवाही भोजनपात्र पडिलेहो रखे। पीछे सज्झाय ध्यान करे। जब कालवेला हो तब मंदिर में या उपाश्रयमें नीचे लिखी, हुई विधिके अनुसार पांच शक्रस्तवसे देववन्दन करे।

॥ अथ आठ–थुई से देववांदने की विधि ॥

पहला खमासमण देकर चैत्यवन्दन करना ।

सकलकुशलवल्ली पुष्करावर्त्तमेघो,
दुरिततिमिरभानुः कल्पवृक्षोपमानः ।
भवजलनिधिपोतः सर्वसम्पत्तिहेतुः
स भवतु सततं वः श्रेयसे पार्श्वदेवः ॥ १ ॥

नमोत्थुणं अरिहन्ताणं भगवन्ताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरिआणं पुरिसवरगन्धहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खय-मव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं जे अ अइआ सिद्धा जे अ भविस्संति णागए काले संपइ अ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १ ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए

गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा उत्तिंग पणगदग-मट्टीमकडासंताणा संकमणे जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइन्दिया तेइन्दिया चउरिंदिया पंचिं-दिया अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परि-याविया किलामिया उद्दविया ठाणाओठाणं संकामिया जीवियाओ ववारोविया तस्समिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छितकरणेणं विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जम्भाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अवि राहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहन्ताणं भग-वंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

एक लोगस्स या चार नवकारकाकाउस्सग्ग करे फिर प्रगट लोगस्स कहे:—

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहन्ते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वन्दे सम्भवमभिणंदणंच सुमइंच । पउमप्पहं सुपासं, जिणं

च चन्दप्पहं वन्दे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदन्तं, सीअल-सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वन्दामि ॥ ३ ॥ कुन्थुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वन्दामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहूयरयमला पहीणजरमरणा। चउव्वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयन्तु ॥ ५ ॥ कित्तिय वन्दिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चन्देसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इसके पीछे चैत्यवन्दन करें:—

जय जय नाभि नरिन्द नन्द सिद्धाचल मण्डण ।
जय जय प्रथम जिणन्द चन्द भव दुःख विहंडण ॥
जय जय साधु सुरिन्द विन्द वंदिय परमेसर ।
जय जय जगदानन्द कन्द श्रीरिषभ जिणेसर ॥
अमृत सम जिनधर्मनो ए दायक जग मे जाण ।
तुझ पद पङ्कज भीति धर निशि दिन नमत कल्याण ॥

नमोत्थुणं अरिहन्ताणं भगवन्ताणं आइगराणं तित्थ-यराणं सयंसंवुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवर-पुंडरिआणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं

चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणम् बोहियाणम् मुत्ताणम् मोअगाणम् सव्वन्नूणम् सव्वदरिसीणम् सिवमयल मरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणराविति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं सम्पत्ताणम् नमो जिणाणम् जियभयाणम् जे अ अईया सिद्धा जे अ भविस्संति णागए काले सम्पइ अ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वन्दामि ॥

अरिहन्त चेइयाणम् करेमि काउस्सग्गं ॥

वन्दणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जम्भाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहन्ताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥

फिर एक नवकार को काउस्सग्ग करे पीछे पार करके

एक जणा नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कह कर पहली स्तुति को बोलेः—

वीरं देवं नित्यं वन्दे ॥ १ ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहन्ते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वन्दे सम्भवमभिणंदणंच सुमइंच। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चन्दप्पहं वन्दे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदन्तं, सीअल सिज्जन्स वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वन्दामि ॥ ३ ॥ कुन्थुं अरं चमल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वन्दामि रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहूयरयमला पहीणजरमरणा। चउव्वीसं पि जिणवरा, तित्थयरामे पसीयन्तु ॥ ५ ॥ कित्तिय वन्दिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गवोहिलाभं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चन्देसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगम्भीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहन्त चेइआणम् करेमि काउस्सग्गं।

वन्दणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए निरुवस्सग्गवत्तिआए सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ २ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएण जम्भाएणं उड्डुएण वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंग संचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउ-स्सग्गो जाव अरिहन्ताणं भगवन्ताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

एक नवकार का काउस्सग्ग करे पीछे पार के एक आदमी दूसरी स्तुति को बोले ।

जैनाः पादा युष्मान् पान्तु ॥ २ ॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसन्डे अ जम्बूदीवे अ । भर-हेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपड-लविद्धं-सणस्स सुरगण नरिंदमहिअस्स । सीमाधरस्स वन्दे, पप्फोडियमोहजालस्स ॥ २ ॥ जाईजरामरणसोग-पणासणस्स, कल्लाणपुक्खलविसालसुहावहस्स । को देव दाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमा-यं ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नन्दी सया सञ्जमे, देवम्नागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअ भावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओजगमिणम् तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सा-सओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

वन्दणवत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए स-

म्माणवत्तिआए वोहिलाभवत्तिआए निरुवस्संग्गवत्तिआए संद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं निससिएणंखासिएणं छीएणम् जम्भाइएण म् उड्डुएणम् वायनिसग्गेणम् भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसञ्चालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठीसञ्चालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो जाव अरिहन्ताणम् भगवन्ताणम् नमुक्कारेणम् न पारेमि ताव कायम् ठाणेणम् मोणेणम् झाणेणम् अप्पाणं वोसिरामि ।

एक नवकार का काउस्सग्ग कर पारके एक आदमी तीसरी स्तुति कहे-

जैनं वाक्यं भूयाद् भूत्यै ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं ।

लोयग्ग मुवगयाणं नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥

जो देवाण विदेशो, जं देवा पञ्जली नमंसन्ति । तं देव दे व महिअं, सिरसा वन्दे महावीरं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो जिणवर वसहस्स वद्धमाणस्स । संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिंवा ॥ ३ ॥ उज्जन्तसेलीसिहरे, दिक्खानाणं निसीहिआ जस्स । तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमि नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दोय वंदिय जिणवरा चउव्वीसं

परमट्ठ निट्ठि अट्ठा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएण खासिएणं छीएण जम्भाएणं उड्डुएण वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए सुहुमेहिं अंग संचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउ-सग्गो जाव अरिहन्ताणं भगवन्ताण नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

एक नवकार का काउस्सग्ग कर पार कर एक आदमी चोथी स्तुति कहे:—

सिद्धा देवी दद्यात् सोख्यं ॥ ४ ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थ-यराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवर-पुंडरीआणं पुरिसवरगन्धहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणम् लोगहिआणम् लोगपईवाणम् लोगपज्जोअगराणम् अभयद-याणम् चक्खुदयाणम् मग्गदयाणम् सरणदयाणम् वोहिद-याणं धम्मदयाणम् धम्मदेसियाणम् धम्मनायगाणम् धम्म-सारहिणम् धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाण दंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाण बुद्धाणं वोहयाणं मुत्ताण मोअगाणम् सव्वन्नूणं सव्वदरिसिणम् सिवमयलमरुअमणन्त मक्खयमव्वावाह-मपुणरावित्ति सिद्धिगई नामधेयं ठाण संपत्ताणं नमोजिणं

जियभयाणं । जे अ अइआ सिद्धा जे अ भविस्संतिणागए काले संपइ अ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

पीछे "अरिहन्त चेइयाणं करेमि काउस्सग्गः वंदण-वतिया का पाठ" अन्नत्थ का पाठ कह कर उपर चार स्तुति लिखी है वैसे फिर चार स्तुति करे वह पहले जैसे पाठ आया। वैसा बरोबर कहे। पीछे चार स्तुति क्रमवार पूरा होजावे पीछे नमोत्थुणं का पाठ पूरा कहे।

नमोत्थुणं अरिहन्ताणं भगवन्ताणं आइगराणं तित्थ-यराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवर-पुंडरिआणं पुरिसवरगन्धहत्थीणं लोगुत्माणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं वोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत चक्कवटीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मु-त्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअम-णंतमक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावत्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं जे अ अइआ सिद्धा जे अ भविस्संति णागए काले संपइ अ वट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १ ॥

जावंति चेइआइं उड्ढेअ अहेअति रियलोए अ।

सव्वाइं ताइं वन्दे इअ सन्तो तत्थ सन्ताइं ॥१॥
जावन्त केवि साहू भरहेरवय महाविदेहे अ ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ तिविहेण तिदण्ड विरयाणं ॥२॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

यहां जैसा व्रत किया हो वैसा स्तवन कहे, तप नहीं किया होतो हरकोई स्तवन कहे परंतु ग्यारह गाथा से कम नहीं कहे । पीछेः—

जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयवं।
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिया इट्ठफलसिद्धी ॥१॥
लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च ।
सुहगुरु जोगो तव्वयण सेवणा आभवमखण्डा ॥२॥

कह कर 'नमोत्थुणं' संपूर्ण बोलकर पीछे खडे होना

ऊपर मूजब देववन्दन करने बाद सज्झाय ध्यान करे । जल आदि पीने की इच्छा हो तो नीचे लिखी विधिके अनुसार पच्चक्खाण पारकर जल आदिक लेवे ।

॥ पच्चक्खाण पारने की विधि ॥

खमासमण पूर्वक इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ कहकर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे । बाद प्रगट लोगस्स कहकर 'इच्छामि० इच्छा०, पच्चक्खाण पारनेको मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं' । कहकर खमासमण देकर

मुहपत्ति पडिलेहे । पीछे 'इच्छामि० इच्छा० पच्चक्खाण पारु ? यथाशक्ती' कहकर, फिर 'इच्छामि० इच्छा० पच्चक्खाण पारेमि ? तहत्ति' कहकर मुट्ठी वन्दकर एक नवकार गिने । पीछे जो पच्चक्खाण किया हो उस पच्चक्खाण का नाम लेकर "पच्चक्खाण फासियं, पालियं, सोहियं, तीरयं, किट्टियं, आराहियं जं च न आराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं" बोलकर एक नवकार गिने । बाद खमासमण देकर इच्छा चैत्यवन्दन करू ? इच्छं कहकर जयउ सामिय० जं किंचि० जावंति चेइआइं० जावंत के वि साहू० नमोऽर्हत्० उवसग्गहर० जयवीयराय० तक कहे। पीछे क्षणमात्र सज्झाय ध्यान करके पानी पीवे । तथा उपधानवाही होवे तो पोरसी मम्मुख पच्चक्खाण पारकर आहार करे। पीछे आसन बैठा हुआ ही 'दिवसचरिमं' पच्चक्खे पीछे इरियावहियं कहकर चैत्यवंदन करे । (यह चैत्यवन्दन आहार संवरण निमित्त का है) ॥ इति ॥

यदि वाहिर्भूमि (स्थंडिल) जाना होतो आवस्सही कहकर उपयोग पूर्वक निर्जीव भूमि में या स्थंडिलके पात्र में जावे । 'अणुजाणह जस्सग्गो' कहकर मलमूत्र परठे। प्राशुक जलसे शुद्ध होकर तीन वार 'वोसरामि' कहकर मलमूत्र वोसरावे । पीछे पोसहशाला में 'निसीहि' बोलते हुए आवे और खमासमण पूर्व 'इरियावहियं' पडिक्कमे ।

बाद 'इच्छामि० इच्छा० गमणागमणं आलोऊं ? इच्छं' कहकर गमणागमण इस प्रकार आलोवे—"आवस्सही करी प्राशुक देशे जइ, डंडाशा पुंजी, थन्डिलो पडिलेही, उच्चार प्रश्रवण वोसरावी, निस्सीह करी, पोसहशाला में आया, । आवन्ति जन्तेहिं जं खन्डियं, जं विराहियं, तस्स मिच्छामि दुक्कडम् ।" ऐसा कहकर बैठ जाय । और सज्झाय ध्यान करे । अब चौथे प्रहर में सन्ध्याकाल की पडिलेहन नीचेलिखी विधि से करे ।

❀ संध्याकालिन–पडिलेहन विधि ❀

खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वहुपडी पुन्ना पोरसी ? इच्छम्' कहकर, खमासमण पूर्वक इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर, एक लोगस्स का काउस्सग्ग करके प्रकट लोगस्स कहे । पीछे 'इच्छामि० इच्छा० पडिलेहन करु ? इच्छं' 'इच्छामि० इच्छा० पोसहशाला प्रमाजु ? इच्छम् कहकर मुहपत्ति पडिलेहे । पीछे 'इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन सन्दिसाहुं ? इच्छम्' 'इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन करुं । इच्छम्' कहकर आसन, धोती, कटीसूत्र आदि पडिलेहे और पौषशाला में से कचरा निकालकर जीवादि देखकर जयणा

पूर्वक परठे । पीछे खमासमण पूर्वक 'इरियावहियं' पडि-
क्कमे । बाद खमासमण पूर्वक इच्छाकारेण संदिसह भग-
वन् ! पसाय करी पडिलेहन पडिलेहावोजी ! इच्छं कहकर
स्थापनाचार्यजी शुद्धस्वरूपपधारें के पाठ पूर्वक पडिलेहन
करके ऊंच स्थानपर रक्खें । पीछे 'इच्छामि० इच्छा०
उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छम्०' कहकर खमासमण
देकर मुहपत्ति पडिलेहे । पीछे 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय
संदिसाहुं ? इच्छं । 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय करू ? इच्छम्
कहकर एक नवकार गिनकर उपदेशमाला की सज्झाय कहे
बाद एक नवकार गिने । पीछे पच्चक्खाण करे । यदि उप
धानवाहीने आहार किया हो तो दो वांदण देकर पीछे
पच्चक्खाण करे । पीछे 'इच्छामि० इच्छा० उपधि थंडिला
पडिलेहन संदिसाहुं ? इच्छम्० इच्छामि० इच्छा० उपधि
थंडिला पडिलेहन करू ? इच्छ । इच्छामि० इच्छा०
वेसणो सन्दिसाहुं ? इच्छम् । इच्छामि० इच्छा० वेसणो
ठाउं ? इच्छं कहकर बैठ जाय और वस्त्र, कंबल, चरवला
आदि पडिलेहे और उपवासी यहां पर वस्त्रादि की पडिले-
हना कर कटीसूत्र और धोती फिर पडिलेहे । पीछे उच्चार
प्रश्रवण के २४ थंडिला पडिलेहे ।

चोवीस थंडिला पडिलेहण-पाठ ।

१ आगाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे । २

आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे । ३ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे । ४ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे । ५ आगाढे मज्झे पासवणे अणहियासे । ६ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे । ७ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे । ८ आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे । ९ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे । १० आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे । ११ आगाढे मज्झे पासवणे अहियासे । १२ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे । १३ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे । १४ अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे १५ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे । १६ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे । १७ अणागाढे मज्झे पासवणे अणहियासे । १८ अणागाढे, दूरे पासवणे अणहियासे । १९ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे । २० अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे । २१ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे । २२ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे । २३ अणागाढे मज्झे पासवणे अहियासे । २४ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ।

इन चोवीस थंडिला में से ६ थंडिला शय्या के दो तरफ दक्षिण और ३ और बायीं ओर ३ पडिलेहे । ६ थंडिला दरवाजेके भीतर दक्षिण ३ और वायीं ३ पडिलेहे

६ थंडिला दरवाजे के बाहर दोनों तरफ पडिलेहे और ६ थंडिला उच्चार प्रस्रवण की जगह हो वहां दोनों तरफ पडिलेहे ॥ इति ॥

अब प्रतिक्रमण का समय हो गया. होतो प्रतिक्रमण करें। प्रतिक्रमणमें 'आजुणा चार प्रहर, पाठ की जगह नीचे लिखा हुआ ठाणेकमणे का पाठ बोले।

पोसह संध्या अतिचार।

ठाणेकमणे चक्कमणे, आउत्त, अणाउत्ते, हरियकाय संघट्टे। बीयकाय सङ्घट्टे, थावकाय संघट्टे, छप्पइया संघट्टे सव्वस्सवि देवसिय, दुच्चितिय, दुब्भासिय, दुच्चिट्ठिय इच्छा कारेण सन्दिसह भगवन् ! इच्छम् तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

और खुद्दोवद्दव का काउस्सग्ग किये बाद 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय संदिसाहुं? इच्छम्०' 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय करुं? इच्छम्' ऐसाकहकर बैठकर तीन नवकार आदि सज्झाय करे। प्रतिक्रमण किये बाद गुरु आदि की वेयावच्च करे। प्रहर रात तक सज्झाय ध्यान करे। यदि लघु नीति आदिकरना हो तो जयणा पूर्वक थंडिल के स्थान जाकर लघुशङ्का निवारे। वापिस आकर 'भगवन् ! बहुपडिपुन्ना पोरसी ?' ऐसा बोलकर खमासमण

पूर्वक इरियावहियं पडिक्कमे । पीछे रात्रि संथारा का समय हो तब नीचे लिखी विधिके अनुसार रात्रि संथारा करे ।

॥ रात्रि संथारा विधि ॥

खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बहुपडिपुण्णा पोरिसी ? इच्छं कहकर इच्छामि० इच्छा० इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करना बाद प्रकट लोगस्स कहना । पीछे इच्छामि० इच्छा० राइसंथारा मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं कहकर मुहपत्ति पडिलेहे । बाद 'इच्छामि० इच्छा० राइ-संथारा संदिसाहुं ? इच्छं, इच्छामि० इच्छा० राइसंथारा ठाउँ ? इच्छं कहे । फिर इच्छामि० इच्छा० चैत्यवन्दन करूं ! इच्छं ऐसा कहकर चउक्कसाय० नमोऽत्थुणं जावंति चेइआइम्० जावंत के वि साहू० नमोऽर्हत्० उवसग्गहर० जय वीयराय० तक चैत्यवन्दन करे । बाद भूमि प्रमार्जन करके संथारा बीछावे । पीछे शरीर प्रमार्जन करके संथारे पर बैठकर राइसंथारे का पाठ पढे ।

❋ राइसंथारा पोसह का पाठ ❋

निसीहि निसीहि निसीहि णमो खमासमणाणं गोयमा इणं महामुणिणं ।

(इतना पाठ कहकर तीन नवकार और तीन करेमि भन्ते ! कहे बाद नीचे का पाठ बोले)

अणुजाणह जिट्ठीज्जा ! अणुजाणह परमगुरु ! गुणगण रयणेहिं मण्डिअसरीरा । बहुपडिपुन्ना पोरिसि, राइसंथारए ठामि ॥१॥ अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेण । कुक्कडपायपसारणं, अंतरं तु पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥ संकोइय सण्डासं, उवट्टंते अ कालपडिलेहा । दव्वाई उवओगं, ऊसास निरुंभणालोए ॥३॥ जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए । आहार-मुवहिदेहं, सव्वं तिविहेण वोसरियं ॥ ४ ॥ आसव-कषाय-बन्धण, कलहा भक्खाण परपरिवाओ । अरइरई पेसुन्नं, मायामोसं च मिच्छत्तं ॥५॥ वोसिरिसु इमाइम् मुक्खमग्ग-संसग्ग-विग्घ-भूआइम् । दुग्गइ निबन्धणाइं, अट्ठारसपाव -ठाणाइं ॥६॥ एगोऽहं नत्थी मे कोइ, नाहमन्नस्स कस्सवि । एवं अदीणमणसो, अप्पाणमणुसासए ॥७॥ एगो मे सासओ अप्पा नाणदन्सण संजुओ । सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोग लक्खणा ॥ ८ ॥ संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा तम्हा संयोगसम्बन्ध सव्वं तिविहेण वोसिरे ॥९॥ अरिहन्तो महदेवो जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो । जिणपन्नत्तं तत्तं इअ सम्मत्तं मए गहियं ॥ १९ ॥ चत्तारि मङ्गलं—अरिहन्ता मङ्गलं, सिद्धा मङ्गलं, साहू मङ्गलं, केवलीपण्णत्तो धम्मो मङ्गलं । चत्तारि लोगुत्तमा

अरिहन्तो लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलोपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो चत्तारि शरणं पवज्जामि- अरिहन्ते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवली पण्णतं धम्मं सरणं पवज्जामि । अरिहंता मङ्गलं मज्झ, अरिहन्ता मज्झ देवया । अरिहंता कित्तिअ- त्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धाय मङ्गलं मज्झ, सिद्धा य मज्झ देवया । सिद्धाय कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मज्झ, आयरिया मज्झ देवया। आयरिया कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥३॥ उवज्झा मंगलम् मज्झ, उवज्झाया मज्झ देवया। उवज्झाया कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ४ ॥ साहूणो मंगलं मज्झ, साहूणो मज्झ देवया। साहूणो कित्तिअत्ताणं, वोसि- रामि त्ति पावगं ॥५॥ पुढवि-दग-अगणि-मारुय इक्किके सत्त जोणिलक्खाओ। वणपत्तेय-अणंते, दस चउद्दस जोणि-लक्खा ओ ॥१॥ विगलिंदिएसु दो दो, चउगे २ य नारय-सुरेसु । तिरिएसु हुंति चउरो, चउदस लक्खा य मणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमन्तुमे । मित्तीमे सव्व- भूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥३॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वन्दामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमाविअ, मइ खमिअ सव्वह जीवनिकाय । सिद्धहसाख आलोयणह, मज्झह वैर न भाय

॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु, चउदहराज भमन्तु । ते मइं सव्व खमाविया, मज्झवि तेह खमंतु ॥ ६ ॥ इति ॥

यह पाठ वोलकर सात नवकारका चिंतवन करता हुआ शयन करे, निद्रा न आवे वहां तक शुभ ध्यान करे। पीछली रात्रिको उठकर नवकार मंत्र गिने। वाद खमासमण पूर्वक इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करके प्रकट लोगस्स कहे। वाद खमासमण देकर कुसुमिणदुसुमिण का काउस्सग्ग करे। (पोसहवाला कुसुमिणदुसुमिण का काउस्सग्ग पहले करके वाद चैत्यवन्दन करे)। वाद राईप्रतिक्रमण करे। इसमें सातलाख की जगह नीचे का पाठ वोले।

पोसह रात्रि अतिचार।

संथारा उवट्टणकी, आउट्टणकी, परिअट्टणकी, पसारणकी छप्पइआ सङ्घट्टणकी, अचक्खु विसकायकी, सव्वस्स वि राइय दुच्चिंतिय दुब्भासिय दुच्चिट्ठिय इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

प्रतिक्रमण पूरा होने वाद प्रभातकी पडिलेहन विधिके अनुसार पडिलेहन करे। पोसहशालामें से कचरा निकाल कर इरियावहियं पडिकमे। वाद दो खमासमण पूर्वक सज्झाय संदिसाहुं? सज्झाय करू? आदेश मांगकर उपदेशमाला

की सज्झाय करे। पीछे पोसह करे।

॥ पोसह-पारणे की विधि ॥

खमासमण पूर्वक इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर, एक लोगस्स का काउस्सग्ग करके प्रकट लोगस्स कहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० पोसह पारू ? यथाशक्ती। 'इच्छामि० इच्छा० पोसह पारेमि ? तहत्ति' कहकर दाहिना हाथ नीचे रखकर तीन नवकार गिने। पीछे खमासमण देकर मुहपत्ति पडिलेवे। पीछे 'इच्छामि इच्छा०' सामायिक पारू ? यथाशक्ती फिर 'इच्छामि० इच्छा० सामायिक पारेमि ? तहत्ति कहकर खमासमण पूर्वक आधा अंग नमाकर तीन नवकार गिने पीछे घूटने टेक कर शिर नमाकर दाहिना हाथ नीचे रखकर भयवन्द सण्ण भद्दो' का पाठ बोले। इस प्रकार पोसह पारकर पोसह के उपगरण लेकर देवदर्शन करके घर आकर अतिथिसम्विभाग व्रत आचारण करता हुआ आहार करे। इति आठ प्रहर पोषध विधि।

दिन संबंधि चउपुहरी पौषध विधि।

आगे जो आठ प्रहर पोषध लेने की विधि लिखी है उसीही प्रकार चार प्रहर पोषध लेनेकी विधि है, किन्तु

पोसह दण्डक उच्चरते समय 'जाव अहोरत्तिं पज्जुवासामि' पाठ है उसी जगह 'जावदिवसं पज्जुवासामि ऐसा पाठ बोलना चाहिये। बाद पूर्ववत् सामायिक ले। यदि प्रतिक्रमण गुरु के साथ न किया हो तो गुरु के पास आकरके पोषध और सामायिक की पूर्ववत् सब विधि करे पीछे आलोयण खामणादि निमित्त मुहपत्ति पडिलेहे और दो वांदना दे। बादमें इच्छा० सं० भ० राइअं आलोउं ? इच्छं, आलोएमि जो मे राइओअइआरो० इत्यादि पाठ से राइं आलोवे फिर एक खमासमण देकर इच्छा का० सं० भ० अब्भुट्ठिओमि अब्भितर राइअं खामेउं ? इच्छं खामेमि राइअं जं किंचि० इत्यादि पाठ ले राई खामे अर्थात् विधि पूर्वक गुरुवन्दन करे। पीछे गुरु समक्ष उपवास आदि का पच्चकखान करे। बाद दो खमासमण से बहुवेल संदिसरावे। पडिलेहन पहले किया हो तो भी आदेश लेना- 'इच्छामि० इच्छा० पडिलेहन संदिसाहुं ? इच्छम्' इच्छामि० इच्छा पडिलेहन करुं ? इच्छं कहकर मुहपति पडिलेहना। पीछे फिर इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन संदिसाहुं ? इच्छम्' 'इच्छामि० इच्छा० अङ्गपडिलेहन करू ? इच्छं कहकर मुहपत्ति पडिलेहे पीछे। 'इच्छामि० 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसाय करी पडिलेहण पडिलेहावोजी ? इच्छं। बाद इच्छामि० इच्छा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं

कहकर कोई वस्त्र विना पडिलेहण रखा हो तो पडिलेहे, नहीं तो फिर एक आसन पडिलेहे । बाद दो खमासमण पूर्वक सज्झाय सन्दिसाहुं और सज्झाय करू कहकर उपदेश माला की सज्झाय कहे । और पिछले प्रहर पच्चक्खाण करने बाद दो खमासमण पूर्वक उपधि पडिलेहन सांदिसाहुं ? और उपधिपडिलेहन करू ? ऐसा कहकर पडिलेहन करे, परंतु थंडिला पद न कहे और थंडिला पडिलेहे भी नहीं। बाकी सब विधि आठप्रहर पौषध की तरह समझना ॥इति॥

रात्रि-संबंधी चउपुहरी पोषह विधि ।

जिसने दिनका चउपुहरी पोसह लिया है, उसको यदि रात्रि पोसह का भाव हुआ तो वह संध्याका पडिलेहन और पच्चक्खाण करने बाद दो खमासमण पूर्वक पोसह मुहपत्ति पडिलेह कर दो खमासमण पूर्वक पोसह का आदेश मांगकर, तीन नवकार गिनकर तीनवार पोसह-दण्डक उच्चरें, इसमें 'जावअहोरत्तं पज्जुवासामि' पाठके ठिकाने जावरत्ति पज्जुवासामि' ऐसा पाठ उच्चरें । बाद सामायिक मुहपत्ति पडिलेह कर जो पहले विधि लिखा है उसी तरह सब विधि करें ।

यदि कारण विशेष दिनका पोषध न कर सके और रात्रिका पोषध लेनेकी इच्छा हुई हो तो-पहले सब उपगरणका पडिलेहन कर इरियावहियं पडिक्कमे । पीछे चउवि-

आहार पच्चक्खाण करके दो खमासमण पूर्वक पोसहमुहपत्ति पडिलेहे । बाद दो खमासमण पूर्वक पोसह का आदेश मांगकर, तीन नवकार गिनकर तीनवार पोसह-दण्डक उच्चरें । इसमें संध्यासमय हो तो 'जावरत्तिं पज्जुवासामि' पाठ बोले और दिवस शेष रहा हो तो जाव दिवससेसं रत्तिं पज्जुवासामि ऐसा पाठ बोले । बाद सामायिक मुहपत्ति पडिलेह कर जो पहले विधि लिखा है उसी तरह सब विधि करे । अन्तमें पडिलेहन का आदेश मांगने बाद स्थानक शून्यता मिटाने के लिये फक्त एक आसन पडिलेहे, परंतु पहले पडिलेहन न किया हो तो सब उपधि पडिलेहे । और उच्चार पस्सवण के चोवीस थंडिला भी पडिलेहे । बाकी सब विधि पहले की तरह समझना ॥ इति ॥

देसावगासिक लेने और पारने की विधि ।

देसावगासिक लेनेकी विधि पोसह लेनेकी विधि के अनुसार है । परन्तु पोसह लेने के आदेशमें देसावगासिक का आदेस लेना चाहिये, जैसे—"देसावगासिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? देसावगासिक संदिस्साहुं ? देसावगासिक ठाउं ? देसावगासिक दण्डक उच्चरावोजी ?" इस प्रकार खमासमण पूर्वक आदेश मांगकर 'करेमि भन्ते ! पोसहं०' यह पोसह के पच्चक्खाण के बदले नीचे लिखा हुआ देसावगासिक का पच्चक्खाण तीन वार कहना चाहिये ।

❀ देसावगासिक का पच्चक्खाण ❀

अहं णं भन्ते ! तुम्हाणं समीवे देसावगसियं पच्चक्खामि दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। दव्वओणं देसावगासियं, खित्तओणं इत्थ वा अन्नत्थ वा कालओ णं जाव धारणा, भावओ णं जाव गहेणं न गहेज्जामि, छलेणं न छलेज्जामि, अन्नेण केणवि रोगायंकेण वा एस मे परिणामो न परिवज्जइ ताव अभिग्गहो, अणत्थणाभोगेण, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहि-वत्तियागारेणं वोसरइ।

इस प्रकार देसावगासिक का पच्चक्खान तीन बार उच्चरें। और इसमें बहुवेल का आदेश लेवे नहीं। देसावगासिक जघन्य से तीन सामायिक और उत्कृष्ट से १५ सामायिक का होता है।

देसावगासिक पारने की विधि पोसह पारने की विधि के अनुसार समझना। जैसे—'देसावगासिक पारू ? पारेमि ? इत्यादि दो खमासमण पूर्वक आदेश मांगकर पारने का सूत्र 'भयवं दसण्णभद्दो॰' के पाठ में 'सामाइय पोसह संठियस्स' की जगह 'सामाइय देसावगासियं संठियस्स' इत्यादि पाठ कहे ॥ इति ॥

अथ पच्चक्खाण सूत्राणि।

(१) नवकार सहिअ–पच्चक्खाण।

उग्गए सूरे, नमुक्कार-सहिअम् मुट्ठि-सहिअम् पच्चक्खाइ चउव्विहम्पि आहारं–असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तिआगारेणं, विगईओ पच्चक्खाइ, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेण, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्तविगेण पडुच्च-मक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं। देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खाइ, अण्णत्थणाभो–गेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहि–वत्तिया–गारेणं वोसिरइ।

---

१ यह पच्चक्खाण जो चोदह नियम प्रतिदिन सम्भारता है उसके लिये है सर्वत्र पच्चकखान में जहां जहां पच्चक्खाइ और 'वोसरइ' पाठ आते हैं। वहां वहां यदि पच्चक्खाण स्वयं बोलता हो तो 'पच्चक्खामि' और 'वोसरामि' बोले। और दूसरों को पच्चक्खाण कराना हो तो 'पच्चक्खाइ' और वोसरइ बोले। एवं 'लेवालेवेणं' से पांच आगार साधु के लिये है गृहस्थ के लिये नहीं है, जिससे गृहस्थ वे पांच आगार न बोले।

(२) नवकारसहिअं पच्चक्खाण ।

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअम् पच्चक्खाइ, चउव्विहम्पि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं वोसिरइ ।

(३) पोरिसी-साढपोरिसी-पच्चक्खाण ।

पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, मुट्ठिसहिअम्, पच्चक्खाइ उग्गए सूरे, चउव्विहम्पि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्ण-कालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ

(४) पुरिमड्ढ-अवड्ढ-पच्चक्खाण ।

सूरे उग्गए पुरिमड्ढम् अवड्ढम् मुट्ठिसहियं पच्चक्खाइ चउव्विहम्पि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छण्णकालेणं दिसामोहेणं, साहुवयणेणं महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

(५) एकासण-बिआसण-पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउ-

---

२ यह पच्चक्खान जो चोदह नियम न धारते हो उसके लिये है, अर्थात् जो श्रावक नियम नहीं सम्भारता हो, वह विगइ का और देषावगासिक का आगार नहीं पच्चक्खे ।

व्विहम्पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं साइमं, अण्णत्थणा-भोगेणं, सहसागारेणं पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं साहु-वयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एकासणम् विआसणम् वा पच्चक्खाइ, दुविहिं तिविहिंपि आहारं असणम् खाइमं साइमं अण्णत्थणा भोगेणम् सहसागारेणम् सागारिआगा-रेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं * वोसिरइ।

(६) एगलठाण-पच्चक्खाण।

पोरिसिं साढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ उग्गए सूरे चउ-व्विहम्पि आहारं—असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणा भोगेणं, सहसागारेणं, पच्छणकालेणं, दिसामोहेणं साहु-वयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एकासणं एगट्ठाणं पच्च क्खाइ, दुविहं तिविहं चउव्विहम्पि आहारं—असणं खाइमं साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं महत्तारागारेणं सव्व समाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

---

* यहां पर साधु के लिये एकासण, विआसण, आयंबिल नीवी और तिविहाहार उपवास के पच्चक्खाण में छह आगार और होते हैं-पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अच्छेण वा बहुलेण वा ससित्थेण वा असित्थेण वा।

(७) आयंबिल–पच्चक्खाण।

पोरिसिं साढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउ-व्विहंपि आहारं—असणं पाणम् खाइमं, साइमं; अणत्थ-णाभोगेणं, सहसागारेणम् पच्छणकालेणं, दिसामोहेणं, साहु वयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, आयंबिल पच्चक्खाइ, अण्णत्थणाभोगेणम्, सह सागारेणम्, लेवालेवेणम् गिहत्थ-संसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणं पारिट्ठावणियागारेणम्, महत्तरा-गारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एकासणं, पच्चक्खाइ, तिविहंपि आहारं—असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा-भोगेणं, सहसागारेणं, सागारि आगारेणं आउंटणपसारेणं गुरुअब्भुट्ठाणेणम्, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणम्, सव्वसमाहिवत्तियागारेणम्, वोसिरइ।

(८) निव्विगइय–पच्चक्खाण।

पोरिसिं साढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ उग्गए सूरे चउ-व्विहम्पि आहारं—असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणा-भोगेणं, सहसागारेणं पच्छणकालेणं, दिसामोहेणं साहु-वयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं निव्विगइयं पच्चक्खाइ, अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं उक्खित्तविवेगेणम् पडुच्चमक्खियणं, पारिट्ठावणियागारेणं

महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एकासणं पच्चक्खोइ तिविहम्पि आहारं-असणं, खाइमं, साइमं, अणत्थणाभोगेणं, सहसागारेणम्, सागारिआगारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ।

(९) चउव्विहाहार-उपवास-पच्चक्खाण ।

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठ पच्चक्खाइ, चउव्विहम्पि आहारं-असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

(१०) तिविहाह र उपवास पच्चक्खाण ।

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चखाइ तिविहिंपि आहारं-असणम् खाइमं, साइमं: अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पाणहार पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, पुरिमड्ढम्, अवड्ढम् वा पच्चक्खाइ, अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं साहुवयणेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

(११) विगई-पच्चक्खाण ।

विगईओ पच्चक्खाइ अंणत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्ताविवेगेणं पडुच्चमक्खि-

एणं पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्ति-
यागारेणं वोसिरइ ।

(१२) देसावगासिक पच्चक्खाण ।

देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खाइ, अण्णत्थणा-
भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिया-
गारेणं, वोसिरइ ।

(१३) दत्ति-पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साढपोरिसिं पुरिमड्ढं वा पच्चक्खाइ, उग्गए
सूरे चउव्विहं पि आहारं- असणं, पाणम्, खाइमं, साइमं;
अणत्थणाभोगेणं, सहसागारेणम्, पच्छणकालेणं, दिसामो-
हेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एकासणं एग-
ट्ठाणम् दत्तियं पच्चक्खाइ, तिविहंपि चउव्विहंपि आहारं-
असणम्, पाणम्, खाइमं, साइमं; अण्णत्थणाभोगेणम्, सह-
सागारेणम्, सागारिआगारेणम्, गुरुअब्भुट्ठाणेणम्, महत्तरा-
गारेणम्, सव्वसमाहिवत्तियागारेणम्, वोसिरइ ।

११-१२ ये दोनों पच्चक्खाण प्रत्येक पच्चक्खाण के
अन्तिम पद 'वोसिरइ' के पहले, जो चौदह नियम धारता हो
वह उच्चरें । जो चौदह नियम नहीं धारता होतो ये दोनों
पच्चक्खाण न उच्चरें ।

(१४) दिवसचरिम-चउव्विहाहार-पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, चउव्विहम्पि आहारं-असणं पाणं खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं सहसागारेणम् महत्तरागारेणम् सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

(१५) दिवसचरिम—दुविहाहार—पच्चखाण ॥

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, दुविहंपि आहारं—असणं, खाइमं, अंणत्थणाभोगेणं, सहसागारेणँ, महत्तरागारेणँ, सव्वसमाहिवत्तियागारेणँ वोसिरइ ।

(१६) पाणहार—पच्चक्खाण ।

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणँ, सहसागारेणँ महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तियागारेणँवोसिरइ

(१७) भवचरिम—पच्चक्खाण ।

भवचरिमं पच्चक्खाइ तिविहम्पि चउव्विहँपि आहारं-असणं, पाणँ खाइमं साइमं अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणँ वोसिरइ ।

(१८) गंठिसहिअ- मुट्ठिसहिअ और अंगुट्ठसहिअ आदि अभिग्रह का पच्चक्खाण ।

---

१८ इस पच्चक्खान में पांचवां चोलपट्टागारेणं चोलपट्टाका आगार साधु के लिये होता है ।

गन्ठिसहिअं मुट्ठिसहिअं वा पच्चखाइ अण्णत्थणाभोगेणँ सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणँ वोसिरइ।

पच्चक्खाण की आगार संख्या।

दो चेव नमुक्कारे, आगारा छच्च हुन्ति पोरिसिए।
सत्तेव य पुरिमड्ढे, एगासणयंमि अट्ठेव ॥ १ ॥
सत्तेगट्ठाणस्स, अट्ठेव य अंबिलामि आगारा।
पञ्चवे अब्भत्तट्ठे छप्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २ ॥
पञ्च चउरो अभिग्गहे, निव्वीए अट्ठ नव य आगारा।
अप्पावरणे पञ्च चउ हवन्ति सेसेसु चत्तारि ॥३॥इति

॥ चौदह नियमों की गाथा ॥

१ सचित्त २ दव्व ३ विगइ ४ वाणह ५ तंबोल ६ वत्थ ७ कुसुमेसु। ८ वाहण ९ सयण १० विलेवण ११ बंभ १२ दिसि १३ न्हाण १४ भत्तेसु ॥ १ ॥

॥ गाथा का संक्षिप्त अर्थ ॥

१ 'सचित्त' (जिसमें जीव सत्ता हो, बोनेसे उगे बीजादि) कच्चापानी, हरीशाक फल, पान, हरादातन, निमक आदि।

२ 'द्रव्य' जितनी चीज मुंह में जावे उतने द्रव्य-जल, मञ्जन, दांतन, रोटी, दाल चांवल, कढी, साग,

मिठाई, पूरी, घी, पापड, पान, सुपारी' चूरन, मसाला, आदि ।

३ 'विगय'–९ जिनमें से मधु, मांस, मक्खन, और मदिरा ये ४ महाविगय अभक्ष्य होने से श्रावक को अवश्य त्याग करना चाहिये और शेष ५ घी, तेल, दूध दही, गुड खांड अथवा मीठा पकान ।

४ 'उपानह'—जूता, बुन्ट, सिलीपर, मोजा आदि जो पांव में पहना जाय ।

५ 'तम्बोल'—पान, सुपारि, इलायची, लौंग, पान, का मसाला आदि ।

६ 'वस्थ'—वस्त्र (आभूषण 'जेवर' की संख्या भी इसी नियम में धार लेनी चाहिये) पगडी, टोपी, साफा अङ्गरखा, चोगा, कुडता, धोती, पायजामा, दुपट्टा, चद्दर, अङ्गोछा, रुमाल आदि मरदाना और जनाना कपडा जो ओढने पेहरने में आवे ।

७ 'कुसुमेसु'—फूल, फूल की चीजें जैसे—शय्या, पंखा, सेहरा, तुर्रा, हार, गजरा, अत्तर जो चीज सूंघने में आवे ।

८ 'वाहन'—सवारी-गाडी, फिटीन, सिगराम, हाथी घोडा, रथ, पालखी, डोली, मोटर, साइकल, रेल, नाव, जहाज, स्टीमर आदि याने 'तरता-फिरता, चरता, और

उडता' ।

९ 'शयन'—कुरसी, टेबुल, पट्टा, पलंग, गद्दी, तकिया, बिछौना, तखत, मेज, सुखासन, आदि सोने व बैठने की चीजें ।

१० 'विलेपन'—तेल, केशर, चन्दन, तिलक, सुरमा, काजल, उबटन, हजामत, बुरश, कंगा, काच देखना, दवाई आदि जो चीज शरीर, में लगाई जावे ।

११ 'बम्भ'—[ब्रह्मचर्य] स्त्री, पुरुष सुद्द दोरे के न्याय से श्रावक परदारा त्याग और स्वदारा से ही संतोष रखे, उसका भी प्रमाण करें, इसी प्रकार स्त्रीयों का भी माल या आदमी समझ लेना चाहिये ।

१२ 'दिसि'—[१० दिशा] शरीर से इतने कोश (लम्बा, चोडा, ऊञ्चा, नीचा) जाना आना, चिट्ठी तार, इतने कोश भेजना तथा मंगाना ।

१३ 'न्हाण'—(स्नान) शरीर से मोटा स्नान इतनी वेर करना (छोटास्नान)हाथ पैर इतनी वेर धोना ।

१४ 'भत्तेसु'—अशनं, (अन्न) पान (पाणी) खादिम (मेवा-दूध), खादिम (पान--सोपारी आदि) ये चारों आहारों में से, खाने में जितनी चीजें आवें सब का कुल वजन करना ।

इन चौदह नियमों के अलावा छकाय और तीन कर्म

ये भी बडे उपयोगी होने यहां लिखे जाते हैं अतः पूर्वोक्त नियमों के साथ इनकी मर्यादा करली जावे ताकि इनसे भी बहुत से पाप रुक जाते हैं।

६ काय.

१ पृथ्वीकाय—मिट्टी निमक आदि (खाने में वा उपभोग में आवे) उसका वजन।

२ अप्काय—जो पानी पीने में या दूसरे उपयोग में आवे उसका वजन, पानी की जात कूवा, बावडी, तलाव, नदी, नल, और मेघ आदि का प्रमाण संख्या भी करना अच्छा है, पानी छानकर कोई भी काम में लाना तथा जीवानी का यत्न करना अत्यावश्यकीय है।

३ तेउकाय—चूल्हा, अंगीठी, भट्टी, चिराक, आदि का प्रमाण।

४ वायुकाय—हिंडोले पंखे (अपने हाथ से वा हुक्मसे) जितने चलते होवें उनकी संख्या का प्रमाण. 'रुमाल से या कागज से हवा लेनी यह भी पंखे में गिनीजाती है उसकी जयणा'।

५ वनस्पतिकाय—हराशाक तथा फलादि इतनी जातके खाने घर सम्बन्धी मंगाने जिसकी गिनती तथा वजन।

६ त्रसकाय—त्रसजीव अपराधी, बिनापराधीका

विचार करना। यह ६ कायका परिणाम कर लेना।

६ कर्म.

१ असी (शस्त्र और ओजार) तलवार, बन्दूक, तमञ्चा, बरछी, भाला, आदि छुरी, कैंची, चक्कू और, चिसटी आदि ओजार।

२ मसी (लिखने पढने का) कागज, कलम, दावात पेन्सील, बही, पुस्तक, छापा, टाइप आदि।

३ कृषी (कसी) खेती बगीचे आदि का परिमाण यह रोज के नियम धारने की विधि संक्षेप से लिखी है विस्तार जितना अधिक करिये याने नाम खोल खोलकर रखिये उतनाही ज्यादा फायदा है.

उपरोक्त चोदह १४ नियम प्रतिदिन चितारणे वालों के मेरु जितना पाप कटकर सरसव जितना रहजाता है।

उक्त चोदह नियमों में से अपने चाहिये उतनी वस्तु रखकर श्रीसुगुरु के मुखारबिन्द से पचक्खाण करले। यदि कभी गुरुमहाराजका योग नहीं हो तो निम्नलिखिता नुसार पचक्खाण करलें।

अथ मांगालिक सप्त स्मरणानि ॥

(१)

खरतर गच्छ वाला के सात स्मरण तपगच्छ वालाके नव स्मरण स्मरण छः सो दोनु अणा के नीचे प्रमाणे पाठ करना अजीत शांत बड़ी शांत दोनु पाक्षिक प्रतिक्रमणा में देख लेना ।

(२) द्वितीयं लघु-अजितशान्तिस्मरणम् ।

उल्लासि-क्कम-णक्ख-णिग्गाय-पहा-दण्ड-च्छलेणंगिणं, वंदारूण दिसंतइव्व पयडं निव्वाण मगावलि । कुन्दिदुज्जलदंतकन्ति-मिसओ नीहन्त-नाणंकुरु-केरे दोवि दुइज्जसोलस-जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरम-जलहि-नीरंबो मिणिज्जंजलीहिं, खय-समय-समीरं जो जिणिज्जा गईए। सयल-नहयलं वा लंघए जो पएहिं, अजियमहव सन्ति सो समत्थो थुणेउं ।।२।। तहवि हु बहु-माणुल्लासि भत्ति-ब्भरेण, गुणकणमिव किंत्तिहामि चिन्तामणिव्व । अलमहव अचिन्ताणंत-सामत्थओसिं फलिहइ लहु सव्व वंछिअं णिच्छअंमे।।३।।सयलजय हिआणं नाम-मित्तेण जाणं, विहडइ लहु दुट्ठानिट्ठदोघट्ट-थट्ठं नमिर-सुर-किरीडुग्घिट्ठ-पायारविंदे, सययमजिअ-संति ते जिणंदेमिवंदे।।४।.पसरइ वर-कित्तीवड्ढए देह-दित्ती, विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती । फुरइ परम-तित्ती होइ संसार छित्ती, जिण जुअ पय भत्ती ही अचिंतोरु सत्ती।।५।।ललिअ पय पयारं भूरि दिव्वंग हारं फुड-घण रस भावोदार सिंगारसारं । अणिमिस रमणीजइ सण-

च्छेअ भीया, इव पुणमणिवन्धा कासनट्टोवयारं ॥ ६ ॥ थुणह अजिअसन्ती ते कया सेससन्ती, कणयरयपसांगा छज्जए जाणि मुत्ती । सरभस परिरंभारंभि निव्वाण लच्छी घण थण घुसिणिक्कुप्पंक पिंगीकयव्व ॥७॥ बहुविह नय-भंगं वत्थु णिच्चं अणिच्चं सदसदणमिलप्पासेगं अणेगं । इय कुनय विरुद्धं सुप्पासिद्धं च जेसिम् वयणमवणिज्जं तेजिणे संभरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिय लोय ताव मोहंधियारं, ममइ जयमसण्णं ताव मिच्छत्त छएणं । फुरइ फुड फलंता-णंतणाणंसु पूरो पयड मजिअ संतिज्झाण सूरो न जाव ॥९॥ अरि करि हरि तिण्हुण्हं वुचोराहि वाही समर डमर मारीरुद्द खुद्दोवसग्गा । पल यमजिअ संती कित्तणे झत्ति जंती निवि डरत तमोहा भक्खरालुंखि अव्व ॥१०॥ निचिअ दुरिअ-दारु दित्त झाणाग्गि जाला परिगयमिव गोरं चितिअं जाण रूवं । कणय-निहसरेहा कंति-चोरं करिज्जा, चिर-थिरमिह लच्छिं गाढ-संथंभिअव्व ॥ ११ ॥ अडवि-निवडियाणं पत्थि वुत्तासिआणं, जलहि-लहरि-हीरंताण गुत्ति-दियाणं । जलिअ-जलण-जाला-लिगिआणं च झाणं, जणयइ लहु संति संति नाहाजिआणं ॥ १२ ॥ हरि-करि-परिकिणं पक्क-पाइकपुन्नं सयल-पुहवि रज्जं छड्डिउं आणसग्गं । तणमिव पडिलग्गं जे जिणा मुत्ति-मग्गं चरणमणुपवन्ना हुंतु ते मे पसन्ना ॥ १३ ॥ छण-ससि-वयणाहिं फुल्ल-निसुप्पलाहिं, थणभर-

नमिरीहिं सुट्टि-गिज्झोदरीहिं । ललीअसुअलयाद्दिपीणसोणि स्थणाहिं, सरसुररमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिसकि डिमसुट्ठगंठिका साइसाराखयजर वण न्नआ सास सोसोदराणि । नह मुह दसणच्छीकुच्छि कन्नाइ रोगे मह जिणजुअपाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इहगुरुदुहतासे पक्खिए चाउमासेजिणवरदुगथुत्तं वच्छरे वा पवित्तं । पढह सुणह सिज्झाएह झाएह चित्ते कुणह सुणह विगघ जेण घाएह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाऽजिअसत्तुपुत्त ? सिरिअजिअ जेणेसर ? तह अइरा विस सेण तणय ? पंचम चक्कीसर । तित्थंकर ? सोलसम ? संति ? जिण वल्लह संथुअ ? कुरु मंगल मम हरसु दुरियमखिलपि थुणतहं ॥ १७ ॥ इति श्री लघु अजितशान्तिस्तवन द्वितीय स्मरणम ॥ २० ॥

(३) नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ।

नमिऊण पणय सुर-गण-चूडामणि-किरण रंजिअं मुणि-णो । चलण-जुअलं महाभय, पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥ संडिय-कर-चरण-नह-मुह-निबुड्ड-नासा विवन्नलायन्नणा । कुट्ठ-महा-रोगानल-फुलिङ्ग-निद्दड्ढ-सव्वंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा-राहण-सलिलञ्जलि-सेअ-वुड्ढिअ-च्छाया । वण-दव दड्ढा गिरि-पायवव्व पत्ता पुणो लच्छिम् ॥ ३ ॥ दुव्वाय खुभिय-जलनिहि उब्भड-कल्लोल-भीसणारावे । सम्भन्त-

भयविसंठुल, निज्ञामय मुक्क वावारे । ४ ॥ अविदलियजा त्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं । पासजिणचलण जुअलं, निच्चं च्चिअ जे नमंति नरा ॥ ५ ॥ खरपवणुद्धुयवणदवजालावलि मिलिय सयल दुम गहणे । डज्झत मुद्ध मिय वहु, भीषण रव भीसणम्मि वणे ॥ ६ ॥ जग गुरुणो कम जुअलं, निव्वाविअसयलतिहुअणाभोअं । जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ।।७।। विलसन्त भोग भीसण—फुरिआरुण नयण तरल जीहालं । उग्ग भुअङ्गं नव जलय, सच्छहं भीसणायारं ।।८।। मन्नंति कीडसरीसं, दूर परिच्छूढ विसम विस वेगा । तुह नामक्खर फुड सिद्ध मन्त गुरुआ नरा लोए ।।९।। अडवीसु भिल्ल तक्कर पुलिन्द सद्दूलसद्दभीमासु । भयविहलवुन्नकायरउल्लूरिअपहिअ सत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविहवसारा तुह नाह ! पणाम-मत्त वावारा । ववगय विग्घा सिग्घं पत्ता हियं इच्छियं ठाणं॥११॥पज्जलिआनल नयणं दूर विआरिय मुहं महाकायं नह कुलीस घायविअलिअ गइन्द कुम्भ त्थलाभोअं॥१२॥ पणय ससंभम पत्थिव नह मणि माणिक पडिअ पडिमस्स तुह वयण पहरणधरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससि धवल दन्त मुसलं दीह करुल्लाल वड्ढिउच्छाहं । महु पिङ्ग नयण जुअलं ससलिल नव जलहरारावं ॥१४॥भीमं महा गइन्दं अच्चासन्नंपि ते नवि गणंति । जे तुम्ह चलण-

कुअलो मुणिवइ ! तुंगं समल्लीणा ॥१५॥ मरम्मि तिक्ख-खग्गा-भिग्घाय-पविद्ध-उद्धुय कबन्धे । कुन्त-विणिभिन्न-करि-कलह-मुक्क-सिक्कार-पउरम्मि ॥१६। निज्जिय-दप्पुद्धर-रिउ-नरिन्द-निवहा भडा जसं धवलं । पावंति पावपसमिण पास जिण !.तुह प्पभावेण ॥१७॥ रोग-जल-जलण-विसहर-चोरारि-मइन्द-गय-रण-भयाइं। पास-जिणनाम-संकित्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥१८॥ एवं महाभयहरं, पास-जिणिंदस्स संथवमुआरं । भविय-जणाणंदयरं कल्लाण-परंपर-निहाणं ॥ १९ ॥ रायभयजक्ख रक्खस, कुसुमिणदुस्सउण रिक्ख पीडासु । संझासु दोसु पंथे उवसग्गे तह य रयणीसु॥२०॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुङ्गस्स। पासो पावं पसमेउ, सयल भुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं तृतीयं स्मरणम् ।

(४) गणधरदेव स्तुतिरूपं चतुर्थं स्मरणम्

तं जयउ जए तित्थं, जमित्थ तित्थाहिवेण वीरेण । सम्मं पवत्तियं भव्व सत्त संताण सुह जणयं॥१॥ नासिय सयल किलेसा, निहय कुलेसा पसत्थ सुह लेस्सा । सिरिवद्ध माण तित्थस्स मंगलं दितु ते अरिहा ॥२॥ निद्दड्ढकम्म बीआ, बीआ परमेट्ठिणो गुण समिद्धा । सिद्धा ति जय पसिद्धा हणंतु दुत्थाणि तित्थस्स ॥ ३ ॥ आयारमायरंता,

पञ्च पयारं सया पयासंता । आयरिआ तह तित्थं, निहय-कुतित्थं पयासंतु ॥४॥ मम्म सुअ वायगा वायगा य सिअवाय वायगा वाए । पवयण पडणीय कयऽग्गणिंतु सव्वस्स संघस्स ॥ ५ ॥ निव्वाण साहणुज्जाय साहूणं जणिय सव्व साहज्जा । तित्थप्पभावगा ते हवन्तु परमेट्ठिणो जइणो ॥६॥ जेणाणुगयं णाणं निव्वाण फलं च चरणमवि हवइ । तित्थस्स दंसणं तं मंगुलमवणेउ सिद्धियरं॥७॥ निच्छउमो सुअधम्मो समग्ग भव्वांगि वग्ग कय सम्मो । गुण सुट्ठिअस्स संघस्स मंगलं सम्ममिह दिसउ ॥८॥ रम्मो चरित्तधम्मो, संपाविअ-भव सत्त-सिवसम्मो । नीसेस किलेसजहरो हवउ सया सयल संघस्स ॥ ९ ॥ गुण गण गुरुणो गुरुणो, सिव सुह मइणो कुणंतु तित्थस्स । सिरि वद्धमाण पहु पयडिअस्स कुसलं समग्गस्स ॥१०॥ जिय पडिवक्खा जक्खा गोमुह मायङ्ग गयमुह पमुक्खा । सिरिबम्भसंति सहिआकय नय रक्खा सिवं दिंतु ॥११॥ अंबा पडिहयडिम्बा सिद्धा सिद्धाइया पवयणस्स । चक्केसरिवइरुट्टा सन्ति सुरा दिसउ सुक्खाणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा देवीउ दिंतु संघस्स मंगलं विउलं । अच्छुत्ता सहिआओ विस्सुअ सुयदेवयाइ समं ॥ १३ ॥ जिण-सासणं-कय-रक्खा, जक्खा चउवीस-सासण सुरावि । सुहभावा सतावं तित्थस्स सया पणासंतु ॥१४॥ जिण-पवयणम्मि निरया विरया कुपहाउ सव्वहा सव्वे ।

वेयावच्चकराविअ, तित्थस हवंतु संतिकरा ।। १५ ॥ जिण-समय-सिद्ध-सुमग्ग-वहिय-भव्वाण जणिय साहज्जो । गीयरई गीअजसो सपरिवारो सिवं दिसउ ॥ १६ ॥ गिह-गुत्त-खित्त-जल-थल-वण-पव्वयवासी, देव-देवीओ । जिण-सासण ट्ठिआणं, दुहाणि सव्वाणि निहणंतु॥१७॥दस-दिसि पाला स-क्खित्तपालया नव ग्गहा सनक्खत्ता । जोइणिराहु गह काल पास कुलिअद्ध पहरेहिं ॥१८॥ सह कालकटएहिं सविट्ठिवच्छेहिं कालवेलाहिं । सव्वे सव्वत्थ सुहं, दिसंतु सव्वस्स संघस्स ॥१९॥ भवणवइ वाणमंतर, जोइस वेमाणिआ य जे देवा । धरणिंद सक्क सहिआ दलंतु दुरियाइं तित्थस्स ॥ २० ॥ चक्कं जस्स जलंतं गच्छइ पुरओ पणासियतमोहं तं तित्थस्स भगवओ, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सो जयउ जिणो वीरो जस्सज्जवि सासणं जए जयइ । सिद्धिपह सासणं कुपहनासण सव्वभयमहणं॥२२॥ सिग्घिसभसेणपमुहा हयभयनिवहा दिसन्तु तित्थस्स । सव्वजिणाणं गणहारिणोऽणहं वंछिअं सव्वं ॥२३॥ सिरि वद्धमाणतित्थाहिवेण तित्थं समप्पियं जस्स सम्मं सुहम्म सामी, दिसउ सुहं सयल संघस्स ॥२४॥पयईए भद्दिया जे भद्दाणि दिसंतु सयल सँघस्स । इयरसुरा वि हु सम्मं, जिण गणहरकहियकारिस्स ॥२५॥ इय जो पढइ तिसझं दुस्सज्झं तस्स नत्थि किंपि जए । जिणदत्ताणाए ठिओ, सुनिट्ठ

अहो सुही होई ॥ २६ ॥ इति श्रीगणधरदेवस्तुति नामकं चतुर्थं स्मरणम् ॥ ४ ॥

(५) गुरुपारतन्त्रयनामकं पञ्चम स्मरणम् ॥

मयरहियं गुण-गण-रयण-सायरं सायरं पणमिऊणं । सुगुरु-जण-पारतंतं, उवहिव्व थुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्महिय-मोह-जोहा, निहय-विरो पणट्ठ-संदेहा । पणयंगि-वग्ग-दाविअ सुह-संदोहा सुगुण-गेहा ॥ २ ॥ पत्त सुजइत्त-सोहा, समत्त-पर-तित्थ-जणिय-संखोहा । पडिभग्ग-लोह-जोहा, दंसिअ-सुमहत्थ-सत्थोहा ॥ ३ परिहरिअ-सत्थ-चाहा, हय दुहदाहा सिवंब-तरुसाहा । संपाविअसुहलाहा, खीरोदहिणुव्व अग्गाहा ॥ ४ ॥ सुगुण- जण-जणियपुज्ज, सज्जोनिरवज्जगहियपव्वज्जा । सिवसुहसाहणसज्जा, भवगुरुगिरि चूरणे वज्जा ॥ ५ ॥ अज्जसुहम्म प्पमुहा, गुणगणनिवहा सुरिंदविहिअमहा । ताण तिसंझं नामं, नामं न पणासइ जियाणं ॥ ६ ॥ पडिवज्जिअजिणदेवो, देवायरिओ दुरंतभवहारी । सिरि नेमिचंद सूरी उज्जोअणसूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥ सिरि वद्धमानसूरी, पयडीकयसूरीमंतमाहप्पो । पडिहयकसायपसरो, सरयससंकुव्व सुहजणओ ॥ ८ ॥ सुहसीलचोरचप्परणपच्चलो निच्चलो जिणमयम्मि । जुगपवरसुद्धसिद्धंतजाणओ पणयसुगुण जणो ॥ ९ ॥ पुरओ दुल्लहमहिव,-ल्लहस्य अणहिल्लवाडए

पयडं। छुक्का विआरिऊणं, सीहेण व दव्वलिंगिगया॥ १० ॥
दसमच्छेरयनिसिविप्फुरंतसच्छन्दसूरिमयतिमिरं। सूरेण व
सूरिजिणे,-सरेण हय-महि-दोसेण ॥ ११ ॥ सुकइत्तपत्तपत्त
कित्ती पयडिय-गुत्ती पसंत-सुह-मुत्ती। पहय-परवाइ-दित्ती,
जिणचंद जइसरो मंती ॥ १२ ॥ पयडिअ-नवंग-सुत्तत्थ,
रयणुकोसो पणासिअ-पओसो । भवभीअ-भविअजणमण,
कय संतोसो विगयदोसो ॥ १३ ॥ जुगपवरागमसार—
सार—प्परुवणाकरणबन्धुरो धणिअं। सिरिअभयदेवसूरी
मुणिपवरो परमपसमधरो ॥ १४ ॥ कयसावयसत्तासो,हरिव
सारंगभग्गसंदेहो। गयलमय दप्प दलणो, आसाइयपवरकव्व
रसो॥ १५॥ भीमभव काणणम्मि अ, दंसिअगुरुवयणरयण
संदेहो। नीसेस सत्त गुरुओ, सूरी जिणवल्लहो जयइ
॥ १६ ॥ उवरिट्ठिअसचरणो, चउरणुओग पहाण सच्चरणो
असममयरायमहणो उड्ढमुहो सहइ जस्स करो ॥ १७ ॥
दंसिअ निम्मल निच्चल, दंत गणोगणिअमावओत्थभओ
गुरुगिरिगरुओ सरहुव्व सूरी जिणवल्लहो होत्था ॥ १८ ॥
जुगपवरागमपीऊसपाणिपीणयमणा कया भव्वा। जेण
जिणवल्लहेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिय
पवरपवयण,-सिरोमणी बूढदुव्वह खमोया। जो सेसाणं
व्वसइ सत्ताण ताणकरो ॥२०॥ सच्चरिआण महीणं सुगुरूणं
पारतंतमुव्वहइ जयइजियइ जिणदत्त सूरी सिरिनिलउ पणय

मुणितिलओ ॥ २१ ॥ इति श्रीगुरुपारतन्त्रनामकं पञ्चम स्मरणम ॥ ५ ॥

(६) षष्ठं 'सिग्घमवहरउ' स्मरणम् ।

सिग्घमवहरउ विग्घं, जिणवीराणाणुगामीसङ्घस्स । सिरि पास जिणो थंभण-पुर ट्ठिओ निट्ठिआनिट्ठो ॥ १ ॥ गोयम-सुहम्म-पमुहा, गणवइणो विहिअ भव्व-सत्त सुहा । सिरीवद्धमाणजिण तित्थ सुत्थयं ते कुणंतु सया ॥ २ ॥ सक्काइणो सुरा जे, जिण वेयावच्चकारिणो संति । अवहरिय विग्घ संघा, हवन्तु ते संघसंतिकरा ॥ ३ ॥ सिरिथंभणय-ट्ठियपास, सामिपयपउम पणय पाणीणं । निद्दलियदुरिय विन्दो धरिणिन्दो हरउ दुरियाइम् ॥४॥ गोमुहपमुक्ख जक्खा पडिहय पडिवक्खपक्ख लक्खा ते । कय सगुणसंघरक्खा हवन्तु संपत सिवसुक्खा ॥५॥ अपप्पडिचक्कापमुहा जिण-सासण देवया य जण पणया । सिद्धाइयासमेया, हवन्तु सङ्घस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काएसा सच्चउरपुरट्ठिओ वद्ध-माण जिण भत्तो । सिरिबंभसंति जक्खो रक्खउ सङ्घम् पय त्तेण ॥७॥ खित्तगुहगुत्त सन्ताण देस देवाहिदेवया ताओ । निव्वुइ पुरपहिआणं, भव्वाणं कुणंतु सुक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्केसरी चक्कधरा, विहि पहरिउच्छिण्णाकँधरा धणियं । सिवि सरणि लग्ग सँघस्स सव्वहा हरउ विग्घाणि ॥९॥ तित्थवइ

वद्धमाणो जिणेसरो सँगओ सुसँघेण । जिणचन्दोऽभट्टदेवो रकल्लउ जिणवल्लहो पहू मँ ॥ १० ॥ सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो दिणेसरो व्व हयतिमिरो । जिणचन्दाऽभयदेवा पहुणो जिणवल्लाहा जे अ॥११॥ गुरुजिणवल्लहपाएऽभयदेव पहुत्तदायगे वन्दे । जिणचन्दजिणेसरवद्धमाण तित्थस्स वुद्द कय ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणँ सम्मं मन्नति कुणँति जे य कारिंति । मणसा वयसा वउसा, जयंतु साहम्मिओ ते वि ॥१३॥ जिणदत्तगुणे नाणइणो सया जे धारंति । दंसिअसिअवायपए, नमामि साहम्मिआ ते वि ॥ १४ ॥ इति षष्ठम् स्मरणम् ॥ ६ ॥

(७) उवसग्गहरनामकं सप्तमं स्मरणं ।

उवसग्गहरं पासं, पासँ वँदामि कम्मघणमुक्कँ । विस-हरविस निन्नासँ मँगल कल्लाणआवासँ ॥ १ ॥ विसहर फुलिंगमँतँ कँठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गहरोग मारी दुट्ठ जरा जँति उवसामँ ॥२॥ चिट्ठउ दूरे मन्तो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नर तिरिएसु वि जीवा, पावँति न दुक्ख दोगच्चँ ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्ता मणि कप्पपायवब्भहिए । पावँति अविग्घेणं जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ सँथुओ महायस भत्तिब्भर निब्भरेण हिअएण । ता देव दिज्ज बोहिं भवे भवे पास जिणचन्द ॥५॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनँ सप्तमँ स्मरणम् ॥ ७ ॥

अथ अन्य प्रभाविक स्तोत्राणि ।

॥ श्रीभक्तामर स्तोत्रम् ॥

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा, मुद्द्योतकं दलित पाप-तमो-वितानम् । सम्यक् प्रणम्य जिनपाद युगं युगादा,—वालम्बनं भव जले पततां जनानां ॥ १ ॥ यः संतुस्तः सकल वांमय तत्व बोधा दुद्भूत-बुद्धि पटुभि सुरलोक नाथै- । स्तोत्रर्जगत्त्रितय-चित्तहरैरुदारैः स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥ युग्मं ॥ बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित-पाद पीठ ! स्तोतुं समुद्यत मतिर्विगत त्रपोऽहं । बालं विहाय जल-संस्थितमिन्दु-बिम्ब— मन्यः क इच्छिति जनः सहसा ग्रहीतुं ? ॥ ३ ॥ वक्तु गुणां गुणसमुद्र ? शशाङ्क कांतां काल कस्ते क्षमः सुरगुरु प्रतिमोऽपि बुद्ध्या ? कल्पान्त कालपवनोद्धत नक्रचक्रं, को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भक्ती वशांमुनीश कर्तुं स्तवं विगत शक्तिरपि प्रवृत्तः । प्रीत्यात्म वीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं, नाभ्येति किं निज शिशोः परिपालनार्थं ? ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहास धाम त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्मां । यत् कोकिलः किल मधो मधुरं विरोति तच्चारुचूतकलिका

निकरैक हेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भवसंतति सन्निवद्धं, पापं क्षणात् क्षयमुपैति शरीरभाजां । आक्रान्त— लोकमलि नीलमशेषमाशु, सूर्यांशु भिन्नमिव शार्वरमन्ध- कारं ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद,-मारभ्यते तनु-धियापि तव प्रभावात् । चेतो हरिष्यति सतां नलनि दलेषु, मुक्ताफल द्युतिमुपैति ननूद विन्दुः ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्त दोषं, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति । दूरे सहस्र किरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभांजि ॥९॥ नात्यद्भुतं भुवन- भूषण भूतनाथ भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः । तुल्या भवन्ति भवतो तनु तेन किं वा भूत्यांश्रिन्त य इह नात्म सम करोति ? ॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवन्तमनिमेष विलोकनियं नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः । पीत्वा पयः शशि कर द्युति दुग्ध सिन्धोः, क्षारं जलं जलनिधे- रशिन्तु क इच्छेत् ? ॥ ११ ॥ यैः शान्तराग—रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रीभुवनैक ललाम भूत । तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूप- मस्ति ॥१२॥ वक्त्रं क ते सुर नरोरग नेत्र हारि निःशेष निर्ज्जित जगत् त्रितयोपमानं । त्रिम्ब कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य, यद् वासरे भवति पाण्डु पलाश कल्पम् ॥१३ ॥ स्मपूर्ण मण्डल शशांक कला कलाप शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं

तव लङ्घयन्ति । संश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकं, कस्तान् निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम् ? ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि र्नीतं मनागपि मनो न विकार-मार्गं । कल्पान्त काल मरुता चलिताचलेन, किं मन्दराद्रि शिखरं चलितं कदाचित् ? ॥ १५ ॥ निर्धूम वर्त्तिरपवर्जित तैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि । गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ? जगत्प्रकाशः, ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति । नाम्भो-धरोदर निरुद्ध महा प्रभावः, सूर्यातिशायि महिमा—ऽसि मुनीन्द्र ? लोके, ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलित, मोह महान्धकारं, गम्यं न राहु वदनस्य न वारिदानां । विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्प कांति, विद्योतयज्जगदपूर्व्व शशांक विम्बम् ॥१८॥ किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेन्दु दलितेषु तमस्सु नाथ निष्पन्न शालिवन शालिनि जीव लोके कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रै ॥१९॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरि—हरादिषु नायकेषु । तेजः स्फुरंमणिषु याति यथा महत्वं, नैवं तु काच शकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥ मन्ये वरं हरि-हरादय एव दृष्टा दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति । किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यं कश्चिन्मनो हरति नाथ

भवांतरेऽपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता । सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र रश्मिं प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशु-जालम् ॥२२॥ त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस मादित्य वर्णममलं तमसः परस्तात् । त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं नान्यः शिवः शिव पदस्य मुनीन्द्र ? पंथाः ॥ २३॥ त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्य ब्रह्माणमीश्वरमनन्तम-नङ्गकेतुं । योगीश्वरं विदित योगमनेकमेकं ज्ञान स्वरूपममलं भवदंति संतः ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधात् त्वं; शंकरोऽसि भुवनत्रय शंकरत्वात् ? धातासि धीर शिव मार्ग विधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ तुभ्यं नमः क्षिति तलामलभूषणाय । तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय तुभ्यं नमो जिन भवोदधि शोषणाय ।२६ ॥ को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषे स्त्वं संश्रितो निरवकाश-तया मुनीश दोषै रुपात्त विविधाश्रय जात गर्वैः, स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥२७॥ उच्चैरशोक तरु संश्रितमुन्म यूख माभाति रूपममलं भवतो नितांतम् । स्पष्टोल्लसत्किरण मस्त तमो वितानं बिम्ब रवेरिव पयोधर पार्श्व वर्त्ति॥२८॥ सिंहासने मणि मयूख शिखा विचित्रे विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् । बिम्ब वियद्विलसदंशु लता वितानं तुंगो-

दयाद्रि शिरसीव सहस्त्ररश्मेः] । २९ ॥ कुंदावदात, चल चामर चारु शोभं विभ्राजते तव वपुः कलधोत कांतं । उद्यच्छशांकसुचिनिर्झरवारिधार मुच्चैंतट सुरगिरेरिव शात कोम्भं ॥ ३० ॥ छत्र त्रयं तव विभाति शशांककांत— मुच्चै स्थितं स्थगित भानुकर मतापं । मुक्ताफल प्रकर— जाल विवृद्ध शोभं, मख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वं ॥ ३१ ॥ उन्निद्र हेम नव पङ्कज पुञ्ज कांति पर्युल्लसन्नख- मयूख शिखाभिरामो । पादो पदानि तव यत्र जिनेन्द्र । धत्त पद्मानि तत्र विबुधा परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरज्जिनेन्द्र धर्मोपदेशन विधो न तथ परस्य । यादृक मभा दिनकृत महतांधकारा तादृक् कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्च्योतन्मदाविलविलो लकपोलमूल, मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्ध कोपं ॥ ऐरावता भमिभमुद्धतमापतन्तं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम ॥ ३४ ॥ भिन्नेभ कुम्भगल दुज्वल शोणिताक्त, मुक्ताफल मकर भूषितभूमिभागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥ कल्पांतकाल- पवनोद्धतवन्हि कल्पं, दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमु खमापतंतं, त्वन्नाम कीर्तनजलं शमयत्वशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समदकोकिलकण्ठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतम ॥ आक्राम ति क्रमयुगेन

निरस्तशंक, स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद, माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् ॥ उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुंताग्रभिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावतारतरणातुरयोध भीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पाद पङ्कजवनाश्रयिणो लभंते ॥ ३९ ॥ अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र, पाठीनपीठभयदोल्वण वाडवाग्नौ ॥ रंगत्तरंगशिखर स्थितया नपात्रा, स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजन्ति ॥ ४० ॥ उद्भुत भीषण जलोदर भारभुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताच्च्युतजीविताशाः ॥ त्वत्पाद पंकजरजोमृतदिग्धदेहा, मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४१ ॥ आपाद कण्ठ मुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगड कोटिनिघृष्टजङ्घाः ॥ त्वन्नामंमन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः, सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवंति ॥ ४२ ॥ मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि, संग्रामवारिधिमहोदरबंधनोत्थम् ॥ तस्याशु नाशमुपयाति भयम् भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजम् तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्रं, तं मानतुङ्गमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ॥ ४४ ॥ इति भक्तामरस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री कल्याणमन्दिर स्तोत्रम् ॥

कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदमनिंदितमंघ्रिपद्मम् । संसारसागरनिमज्जदेशजन्तु—पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुं । तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो स्तस्याहमेष किल संस्तवनँ करिष्ये ॥२॥ युग्मँ । सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुँ स्वरूप-मस्मादृशाः कथमधीश भवँत्यधीशाः । धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवांधो, रूपँ प्ररूपयति किं किल धर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो नूनँ गुणान् गणयितुँ न तव क्षमेत कल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः । ४ ॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि कुर्तुं स्तवं लसदसङ्ख्यगुणाकरस्य । बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य विस्तीर्णतां कथयति स्वधिया म्बुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश, वक्तुं कथँ भवति तेषु ममावकाशः । जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं जल्पंति वा निजगिरा ननुपक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिंत्यमहिमा जिनसंस्तवस्ते नामापि पाति भवतो भवतो जगंति । तीव्रातपोपहतपांथजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥७॥ हृद्वर्तिनि त्वयि विभो शिथिलीभवंति जँतोः क्षणेन निबिडा अपि कर्मबंधाः ।

सद्यो भुजङ्गमया इव मध्यभागमभ्यागते वनशिखण्डिनि चँद नस्य ॥८॥ मुच्यंत एव मनुजा सहसा जिनेंद्र रोद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि । गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे चोरैरिवाशु पवशः मपलायमाने ॥ ९ ॥ त्वं तारको जिन कथं भविनां त एव त्वामुद्वहँति हृदयेन मदुत्तरंतः । यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नूनमँतर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥ यस्मिन हरमभृतयोऽपि हतमभावाः सोऽपि त्वया रतिपति क्षपित क्षणेन । विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन पीतँ न किं तदपि दुर्द्धरवाडवेन ? ॥ ११ ॥ स्वामिन्नतुलयगरिमाणमपि मपन्ना, स्त्वां जंतवः कथकहो हृदये दधानाः ॥ जन्मोदधिलघु तरंत्यतिलाघवेन, चिंत्यो न हँत महतां यदिवा प्रभावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमँ निरस्तो, ध्वस्तास्तदा बत कथँ किल कर्म चौराः ॥ प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापिलोके, नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप, मन्वेषयँतिहृदयांबुजकोशदेशे ॥ पूतस्य निर्मलरुचेर्यदिवाकिमन्य, दक्षस्य संभवि पदम् ननु कर्णिकायाः ॥ १४ ॥ ध्यानाज्जिनेश भवतो भविनः क्षणेन, देहँ विहाय परमात्मदशां व्रजँति ॥ तीव्रानलादुपलभावमपास्य लोके चामीकरत्व मचिरादिव धातुभेदाः ॥ ॥ १५ ॥ अंतः सदैव जिनयस्य विभाव्यसे त्वँ, भव्यैः कथँ

तदपि नाशयसे शरीरम् ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यवि वर्तिनोहि,
यद्विग्रहम् प्रशमयन्ति महानुभावाः ॥ १६ ॥ आत्मा म
नीषिभिरयं त्वमेदबुद्ध्या, ध्यातो जिनेंद्र भवतीह भवत्प्रभावः
पानीयमप्यमित्यनुचित्यमानं किं नाम नो विषविकारमप ।क-
रोति॥१७॥त्वामेव वीततमसं परवादिनोऽपि, नूनं विभो हरि
हरादिधिया प्रपन्नाः । किं काचकामलिभिरीश सितोऽपि
शंखो, नोगृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण॥१८॥धर्मोपदेशसमये
सविधानुभावा-दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः। अभ्यु
द्गते दिनपतो समहीरुहोऽपि किं वा विवोधमुपयाति न जीव-
लोकः ॥१९॥ चित्रं विभो कथमवाङ्मुखवृन्तमेव विष्वक्
पतत्य विरला सुरपुष्पवृष्टिः । त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा
मुनीश गच्छन्ति नूनमध एव हि बन्धनानि ॥२०॥ स्थाने गभी
रहृदयोदधिसम्भवायाः पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति। पी
त्वा यतः परमसम्मद सङ्गभाजो भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजराम
रत्वं ॥२१॥ स्वामिन् सुदूरमवनम्य समुत्पतन्तो मन्ये वदंति
शुचयः सुरचामरोघाः येस्मै नतिं विदधते मुनिपुंगवाय ते नू-
नमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धभावाः॥२२॥श्यामं गभीरगिरिमुज्जव
लहेमरत्न सिंहासनस्थमिह भव्यशिखण्डिनस्त्वां । आलोकय-
न्ति रभसेन नदन्तमुच्चै-श्चामिकराद्रिशिरसीव नमाम्बुवाहं
॥२३॥ उद्गच्छता तवशितिद्युतिमण्डलेन, लुप्तच्छदच्छविरशो
कतरुर्बभूव। सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग नीरागतां व्र-

जति को न सचेतोऽपि ॥२४॥ भो भोः प्रमादमवधूय भजध्व मेनमागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम्। एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते ॥ २५॥ उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ तारान्वितो विधुरयं विहिताधिकारः। मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातपत्र व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः॥२६॥ स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि॥२७॥ दिव्यस्रजो जिन नमत् त्रिदशाधिपानामुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान् पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव॥२८॥ त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव; चित्रं विभो यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥२९॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं किं वाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश। अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चिदेव ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकासहेतुः ॥३०॥ प्राग्भारसम्भृतनभांसि रजांसि रोषादुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि छायापि तैस्तव न नाथ हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा॥३१॥ यद्गर्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीमं भ्रश्यत्तडिन्मुसलमांसलघोरधारम् दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे तेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥३२॥ ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुण्ड—प्रालम्बभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः ।

मेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः, सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसन्ध्य,—माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः, पादद्वयं तव विभो भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि । आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमंत्रे किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥ जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव ! मन्ये मया महितमीहित दानदक्षं । तेनेह जन्मनि मुनीश पराभवानां जातो निकेतनमहं मथिताशयानां ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विभो सकृदपि प्रविलोकितोऽसि ।, मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ॥३७॥ आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या । जातोऽस्मि तेन जनबांधव दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ३८॥ त्वं नाथ ! दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य भक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारणं शरणं शरण्य-मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातं । त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधानवन्ध्यो, वध्योऽस्मि चेद्भुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेन्द्रवन्द्य विदिताखिलवस्तुसार संसारतारक

विभो भुवनाधिनाथ त्रायस्व । देव करुणाहृद मां पुनीहि, सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥४१॥ यद्यस्ति नाथ भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां, भक्तेः फलं किमपि सन्ततिसञ्चितायाः । तन्मे त्वदेकशरणस्य भूयाः, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवांतरेऽपि ॥ ४२ ॥ इत्थं समाहितधयो विधिवज्जिनेंद्र सांद्रोलसत्फुलकञ्चुकितांगभागाः । त्वद्विम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्ष्या, ये संस्तवं तव विभो रचयंति भव्याः ॥४३॥ जननयनकुमुदचंद्रप्रभास्वराः स्वर्गसम्पदो भुक्त्वा । ते विगलितमलनिचया, अचिरांमोक्षं प्रपद्यंते ॥ युग्मं ॥४४॥ इति श्रीकल्याणमंदिर स्तोत्रं ॥

श्रीभद्रबाहुस्वामिविरचिता ग्रहशांतिः ।

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितं ग्रहशांतिं प्रवक्ष्यामि लोकानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेंद्रैः खेचरा ज्ञेयाः पूजनीया विधिक्रमात् पुष्पैर्विलेपनैर्धूपै-र्नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥ पद्मप्रभस्य मार्त्तण्ड—श्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च । वासुपुज्ये भूमीपुत्रो बुधोऽप्यष्टजिनेषु च ॥३॥ विमलानन्तधर्माराः शांतिः कुंथुर्नमिस्तथा । वर्धमानस्तथैतेषां, पादपद्मे बुधं न्यसेत् ॥ ४ ॥ ऋषभाजितसुपार्श्वा-श्चाभिनंदनशीतलो । सुमतिसम्भवस्वामी श्रेयांसश्चैषु गीष्पतिः ॥५॥ सुविधेः कथितः शुक्रः सुव्रतस्य शनैश्चरः । नेमिनाथे भवेद्राहुः, केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥ ६ ॥ जनांल्लग्ने च

राशौ च, यदा पीडति खेचराः । तदा सम्पूजयेद्धीमान्, खेचरैः सहितान् जिनान् ॥ ७ ॥

अथ नवग्रहपूजा ।

पद्मप्रभजिनेंद्रस्य नामोच्चारेण भास्कर । शांति तुष्टिं च पुष्टिं च, रक्षां कुरु कुरु श्रियं ॥८॥ इति श्रीसूर्यपूजा ॥ चन्द्रप्रभजिनेन्द्रस्य, नाम्ना तारागणाधिप । प्रसन्नो भव शांतिं च, रक्षां कुरु जयं ध्रुवं ॥ ९ ॥ इति श्रीचंद्रपूजा ॥ सर्वदा वासुपूज्यस्य, नाम्ना शांति जयश्रियं । रक्षां कुरु धरासूनो, अशुभोऽपि शुभो भव॥ १०॥ इति श्रीभोमपूजा॥ विमलानन्तधर्माराः शांतिः कुंथुर्नमिस्तथा । महावीरश्च तन्नाम्ना, शुभो भूयाः सदा बुधः ॥११॥ इति श्रीबुधपूजा॥ ऋषभाजितसुपार्श्वा,श्चमिनंदनशीतलौ । सुमतिःसम्भवस्वामी श्रेयांसश्च जिनोत्तमः १२॥ एतत्तीर्थंकृतां नाम्ना पूज्योऽशुभ शुभो भव ॥ शांतिं तुष्टिं च पुष्टिं च, कुरु देवगणार्चित ॥ १३ ॥ इति श्रीगुरुपूजा ॥ पुष्पदंतिजिनेन्द्रस्य, नाम्ना दैत्यगणार्चित । प्रसन्नो भव शांतिं च, रक्षां कुरु कुरु श्रियं ॥ १४ ॥ इति श्रीशुक्रपूजा ॥ श्रीसुव्रतजिनेंद्रस्य, नाम्ना सूर्याङ्गसंभव । प्रसन्नो भव शांतिं च, रक्षां कुरु कुरु श्रियं ॥ १५ ॥ इति श्री शनैश्चरपूजा ॥ श्रीनेमीनाथ—तीर्थेश—नामतः सिंहिकासुत । प्रसन्नो भव शांतिं च, रक्षां कुरु कुरु श्रियं ॥ १६ ॥ इति श्रीराहुपूजा ॥ राहो सप्तम

राशिस्थ, कारेण दश्यसंवरे । श्रीमल्लिपार्श्वयोर्नाम्ना केतो शांतिं जयश्रियं ॥१७॥ इति श्रीकेतुपूजा ॥ इति भणित्वा स्वस्त्रवर्णकुसुमांजलिक्षेपजिनग्रह पूजा कार्या तेन सर्वपीडायां शांतिर्भवति अथ सर्वेषांवा ग्रहाणामेकदा पीडायामयं विधि नवकोष्टकमालेख्यं मण्डलं चतुरस्त्रकम् । ग्रहारतत्र प्रतिष्ठाप्या वक्ष्यमाणाः क्रमेण तु ॥ १८॥ मध्ये हि भास्कर स्थाप्य, पूर्व-दक्षिणतः शशी दक्षिणस्यां धरासूनु-र्बुधः पूर्वोत्तरेण च ॥ १९ ॥ उत्तरस्यां सुराचार्यः पूर्वस्यां भृगुनंदनः । पश्चिमायां शनिः स्थाप्यो, राहुर्दक्षिणपश्चिमे ॥ २० ॥ पश्चिमोत्तरतः केतु,-रिति स्थाप्या क्रमाद् ग्रहाः । पट्टे स्थालेऽथ वाग्नेय्यां, ईशान्यां तु सदा बुधैः ॥२१॥ आर्या- आदित्यसोममङ्गल-बुधगुरुशुक्राः शनैश्चरो राहुः । केतुप्र- मुखाः खेटा, जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु ॥ २२ ॥ इति भणि- त्वा पञ्चवर्णकुसुमाञ्जक्षेपश्च जिनपूजा च कार्या । पुष्पगंधा- दिभिर्धूपैः—नैवेद्यैः फलसंयुतैः । वर्णसदृशदानैश्च, वस्त्रैश्च, दक्षिणान्वितैः ॥ २३ ॥ जिननामकृतोच्चारा, देशनक्षत्रवर्ण कैः । पूजिताः संस्तुता भक्त्या, ग्रहाः संतु सुखावहा ॥ २४ ॥ जिननामग्रतः स्थित्वा, ग्रहाणां शांतिहेतवे । नम- स्कारशतं भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ २५ ॥ एवं यथा- नामकृताभिषेकै -रालेपनैर्धूपनपूजनैश्च । फलैश्च नैवेद्यवरैर्जि नानां, नाम्ना ग्रहेन्द्रा वरदा भवंतु ॥ २६ ॥ साधुभ्यो

दीयते दानं, महोत्साहे जिनालये। चतुर्विधस्य सङ्घस्य बहुमानेन पूजनम् ॥ २७ ॥ भद्रबाहुरुवाचेदं, पञ्चमः श्रुत-केवली। विद्याप्रभावतः पूर्वात्, ग्रहशांतिरुदीरिता ॥ २८ ॥ इति भद्रबाहुस्वामिविरचिता बृहद्ग्रहशांतिः समाप्ता।

कस्मिन् रिष्टग्रहे कस्य जिनस्य कया रीत्या पूजा कार्या तदाख्यातिः। रविपीडायाम्—रक्तपुष्पैः श्रीपद्मप्रभपूजा कार्या ॐ ह्रीं नमो सिद्धाण तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः। चंद्रपीडायाम्-चंदनसेवंत्रपुष्पैः श्रीचंद्रप्रभपूजा कार्या ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः। भौम-पीडायाम्—कुंकुमेन च रक्तपुष्पैः श्रीवासुपूज्यपूजा विधेया ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं तस्यः अष्टोत्तरशतजपः कार्यः। बुध-पीडायाम्—दुग्धस्नाननैवेद्यफलादितः श्रीशांतिनाथपूजा कर्त्तव्या, ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः। गुरुपीडायम्—दधिभोजनजम्बीरादिफलेन च चंद-नादि विलेपनेन श्री आदिनाथपूजा करणीया, ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं तस्य अष्टोत्तरशतजपः कर्तव्यः। शुक्रपीडायाम् श्वेतपुष्पैश्चंदनादिना श्रीसुविधिनाथ पूजा कार्या, चैत्ये घृत-दानं कार्यं, ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः। शनैश्चरपीडायाम्- नीलपुष्पैः श्रीमुनिसुव्रतपूजाकार्या तैलस्नानदाने कर्त्तव्ये, ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः। राहुपीडायां—नील पुष्पैः श्रीनेमि-

नाथ पूजा करणीया, ॐ ह्रीं नमो लोएसव्वसाहूणं तस्य-अष्टोत्तरशतजपः कार्यः। केतुपीडायां-दाडिमादिपुष्पैः श्री पार्श्वनाथपूजा कार्या, ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः। इति नवग्रहपूजाविधिः। सर्वग्रह-पीडायाम्--श्रीसूर्यसोमाङ्गारबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुके-तवः सर्वेग्रहा मम सानुग्रहा भवंतु स्वाहा। ॐ ह्रीं अ सि आ उ साय नमः स्वाहा। अस्य मंत्रस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यं तेन नवग्रहपीडोपशांतिः स्यात्। इति नवग्रहपूजाप्रकारः।

श्री मन्त्राधिराजस्तोत्रम्।

श्रीपार्श्वः पातु वो नित्यं जिनः परमशंकरः। नाथः परमशक्तिश्च, शरण्यः सर्वकामदः॥ १ ॥ सर्वविघ्नहरः स्वामी सर्वसिद्धिप्रदायकः। सर्वसत्वहितो योगी, श्रीकरः परमार्थदः॥२॥ देवदेवः स्वयंसिद्धि-श्चिदानन्दमयः शिव परमात्मा परब्रह्म परमः परमेश्वरः॥ ३ ॥ जगन्नाथः सुर-ज्येष्ठो, भूतेशः पुरुषोत्तमः। सुरेंद्रो नित्यधर्मश्च, श्रीनिवास शुभार्णवः। ४ ॥ सर्वज्ञः सर्वदेवेषः, सर्वदः सर्वगोत्तमः। सर्वात्मा सर्वदर्शी च सर्वव्यापी जगद्गुरुः॥ ५ ॥ तत्व-मूर्तिः परादित्यः, परब्रह्म प्रकाशकः। परमेन्दुः परप्राणः, परमामृतसिद्धिदः॥ ६ ॥ अजः सनातनः शंभु-रीश्वरश्च सदाशिवः। विश्वेश्वरः प्रमोदात्मा, क्षेत्राधीशः शुभप्रदः॥ ७ ॥ साकारश्च निराकारः, सकलो निष्कलोऽव्ययः

निर्ममो निर्विकारश्च निर्विकल्पो निरामयः ॥८॥ अमरश्चा-
जरोऽनन्त एकोऽनन्तः शिवात्मकः । अलक्ष्यश्चैव वामेयो,
ध्यानलक्ष्यो निरंजनः ॥ ९ ॥ ॐ काराकृतिरव्यक्तो, व्यक्त-
रूपस्त्रयीमयः । ब्रह्मद्वयप्रकाशात्मा, निर्भयः परमाक्षरः
॥ १० ॥ दिव्यतेजोमयः शांतः, परामृतमयोऽच्युतः ।
आद्योऽनाद्यः परेशान, परमेष्ठी परः पुमान् । ११ ॥ शुद्ध-
स्फटिकसंकाशः, स्वयंभूः परमाच्युतः व्योमाकारस्वरूपश्च,
लोकालोकावभासकः ॥१२॥ ज्ञानात्मा परमानन्दः, प्राण-
रूढो मनःस्थिति मनःसाध्यो मनोध्येयो, मनोदृश्यः परा-
परः ॥ १३ ॥ सर्वतीर्थमयो नित्य, सर्वदेवमयः प्रभुः ।
भगवान सर्वतत्त्वेशः, शिवश्रीसौख्यदायकः ॥ १४ ॥ इति
श्रीपार्श्वनाथस्य, सर्वज्ञस्यय जगद्गुरोः दिव्यमष्टोत्तरं नाम-
शतमात्र प्रकीर्तितं ॥१५॥ पवित्र परमं ध्येयां, परमानन्द-
दायकँ । भुक्तिमुक्तिप्रदं नित्य पठते मंगलप्रदं ॥ १६ ॥
श्रीमत्परमकल्याण-सिद्धिदः श्रेयसेऽस्तुवः । पार्श्वनाथजिनः
श्रीमान भगवान् परमः शिवः ॥ १७ ॥ धरणेंद्रफणच्छत्रा-
लंकृतो वः श्रियं प्रभुः । दधात् पद्मावतीदेव्या, समधिष्ठित-
शासनः ॥१८॥ ध्यायेत् कमलमध्यस्थं, श्रीपार्श्वजगदीश्वरं
ॐ ह्रीं श्लीं श्रीं समायुक्तं केवलज्ञानभास्करं ॥ १९ ॥
पद्मावत्यान्वितं वामे धरणेंद्रग दक्षिणे । परितोऽष्टदलस्थेन,
मंत्रराजेन संयुतं ॥ २० ॥ अष्टपत्रस्थतेर्यस्य, नमस्कारे-

स्तथा त्रिभिः । ज्ञानाद्यैर्वेष्टितं नाथं धर्मार्थकाममोक्षदं ॥ २१ ॥ सतषोडशदलारूढं, विद्यादेवीभिरंचितम् । चतुर्विंशतिपत्रस्थं, जिनं मातृभमावृतं । २२ ॥ मायावेष्टयत्रयाग्रस्थं क्रोंकारसहितं प्रभुं । नवग्रहावृतं देवं, दिकपालैर्दशभिर्वृतम् ॥२३॥ चतुष्कोणेषु मंत्राद्य-चतुर्बीजांवितैर्जिनैः । चतुरष्टदशद्वीति-द्विधांकसञ्ज्ञकैर्युतं ॥ २४ ॥ दिक्षु क्षकारयुक्तेन, विदिक्षु लांकितेन च चतुरस्रेण वज्रांक-क्षितितत्त्वे प्रतिष्ठितं ॥ २५ ॥ श्रीपार्श्वनाथमित्येवं, यः समाराधयेज्जिनम् । तं सर्वपापनिर्मुक्तं, भजते श्रीः शुभप्रदा ॥ २६ ॥ जिनेशः पूजितो भक्त्या, संस्तुतः प्रस्तुतोऽथवा । ध्यातस्त्वं यैः क्षणं वापि, सिद्धिस्तेषां महोदयः ॥ २७ ॥ श्रीपार्श्वमंत्रराजांते, चिन्तामणिगुणास्पदं । शांतिपुष्टिकरं नित्यं, क्षुद्रोपद्रवनाशनं ॥ २८ ॥ ऋद्धिसिद्धिमहाबुद्धि-धृतिश्रीकान्तिकीर्तिदं । मृत्युञ्जयं शिवात्मानं, जपनानन्दितो जनः ॥ २९ ॥ सर्वकल्याणपूर्णः स्याद्, जरामृत्युविवर्जितः । अणिमादिमहासिद्धिं, लक्षजापेन चाप्नुयात् ॥ ३० ॥ प्राणयाममनोमन्त्र योगादमृतमात्मनि । त्वामात्मानं शिवं ध्यात्वा, स्वामिन् सिध्यन्ति जन्तवः ॥ ३१ ॥ हर्षदः कामदश्चेति-रिपुघ्नः सर्वसौख्यदः । पातु वः परमानन्द-लक्षणः संस्मृतो जिनः ॥ ३२ ॥ तत्त्वरूपमिदं स्तोत्रं, सर्वमंगलसिद्धिदं ॥ त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं प्राप्नोति स श्रियं ॥ ३३ ॥ इति ॥

❀ श्री जिनपञ्जरस्तोत्रम् ❀

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमोनमः ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पञ्च-नमस्कारः, सर्वपाप क्षयंकरः । मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मङ्गलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जये विजये, अर्हं पर-मात्माने नमः । कमलप्रभसूरीन्द्रो, भाषते जिनपञ्जरं ॥३॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदं । मनोऽभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवम् ॥४॥ भूशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोध-लोभविवर्जितः । देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम् ॥५ अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके । आचार्यं श्रोत्र-योर्मध्ये, उपाध्यायं तु नासिके ॥६॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे मनःशुद्धिं विधाय च । सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसि-द्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितो जिनः । अङ्गसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवशङ्करः ॥ ८ ॥ पूर्वाशां च जिनो रक्षेद् आग्नेयीं विजितेन्द्रियः । दक्षिणाशां परंब्रह्म, नैऋतीं च त्रिकालवित । ९ ॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायव्यां परमेश्वरः । उत्तरां तीर्थकृत्सर्वा—मीशानीं च निरंजनः ॥ १० ॥ पातालं भगवानर्ह-माकाशं पुरुषोत्तमः । रोहिणी प्रमुख्या देव्यो, रक्षन्तु सकलं कुलम् ॥ ११ ॥

ऋषभो मस्तकं रक्षेद्-अजितोऽपि विलोचने। संभवः कर्ण-युगलं नासिकांचाभिनन्दन ॥ १२ ॥ ओष्ठौ श्रीसुमती रक्षेत् दन्तान् पद्मप्रभो विभुः। जिह्वा सुपार्श्वदेवोऽयं, तालु चंद्र-प्रभाभिधः ॥१३॥ कण्ठं सुविधी रक्षेत्, हृदयं श्रीसुशीतलः। श्रेयांसो बाहुयुगलं, वासुपुज्यः करद्वयं॥१४॥अंगुलीर्विमलो रक्षेत्, दनन्तोऽसो स्तनापि। श्रीधर्मोप्युपरास्थीनि,, श्रीशां-तिर्नाभिमण्डल ॥ १५ ॥ श्री कुंथुर्गुह्यकं रक्षे, दरो रोमकटीतं । मल्लिरूरुपृष्ठवंशं, जङ्घ च मुनिसुव्रतः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्नमी रक्षेद् श्रीनेमिश्चरणद्वयं । श्रीपार्श्वनाथः सर्वाङ्गं, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेजस्क-वाय्वाकाशमयं जगत् । रक्षेदशेषपापेभ्यो, वीतरागो निर-ञ्जनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे स्मशाने च, संग्रामे शत्रुसङ्कटे। व्याघ्रचोराग्निसर्पादि—भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकाल मरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते । अपुत्रत्वे महादोसे, मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥२०॥ डाकिनी शाकिनी ग्रस्ते, महाग्रह गणार्दिते । नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत्॥२१॥ प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपञ्जरं । तस्य किञ्चिद्भयं नास्ति, लभते सुखसम्पदः ॥ २२ ॥ जिनपञ्जरनामेदं, यः स्मरेदनुवासरं । कमलप्रभराजेंद्रः श्रियं स लभते नरः ॥ २३ ॥ प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिन-पञ्जराख्यं । असादयेत् श्रीकमलप्रभाख्यं, लक्ष्मी मनो-

वांछितपूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे, देव-
प्रभाचार्यपदाब्जहंस: । वादींद्रचूडामणिरेष जैनो, जीयाद्
गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ २५ ॥ इति ॥

❀ अथ ऋषिमण्डलस्तोत्रम् ❀

आद्यंताक्षरसंलक्ष । मक्षरंव्याप्ययत्स्थितं । अग्निज्वाला
समंनाद, बिंदुरेखा समन्वितं ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रांतं,
मनोमलविशोधकं देदीप्यमानं हृत्पद्मे । तत्पदं नौमि निर्मलं
॥ २ ॥ अर्ह मित्यक्षरंब्रह्म, वाच कंपरमेष्ठि : । सिद्धचक्र-
स्यसद्बीजं, सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोर्हद्भ्य
ईशेभ्यः । ॐ सिद्धेभ्योनमोनमः । ॐ नमः सर्वसूरिभ्यः ।
उपाध्यायेभ्यः ॐ नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः ।
ॐ ज्ञानेभ्योनमोनमः । ॐ नमः स्तत्त्वदृष्टिभ्य । श्चारित्रेभ्य-
स्तु ॐ नमः ॥ ५ ॥ श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वेत । दर्हदाद्यष्टकं-
शुभं । स्थानेष्वष्टसुविन्यस्तं पृथग्बीजसमन्वितं ॥६॥ आद्य
पदंशिखांरक्षेत्परंरक्षेतुमस्तकं तृतीयरक्षेमेत्रेद्वे तुर्यरक्षेच्च ना-
सिकां॥७॥ पञ्चमन्तु मुखंरक्षेत् । षष्ठंरक्षेच्चघटिकां । नाभ्यं-
तंसप्तमंरक्षे, द्रक्षेत्पादांतमष्टमो॥८॥पूर्वंप्रणवतः सांतः । सरे-
फोद्व्यब्धिपञ्चषान् । सप्ताष्टदशसूर्यांकान् । श्रितोबिंदु-
स्वरान्पृथक् ॥ ९ ॥ पूज्यनामाक्षराआद्याः, पञ्चातोज्ञान-
दर्शन । चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, ह्रीं सांतह समलङ्कृतः ॥
॥ १० ॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रः असिआउसा
ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो नमः ॥ जम्बूवृक्षधरोद्वीपः, क्षारोदधि

समावृत्त। अर्हदाद्यष्टकैरष्ट। काष्ठाधिष्टैरलंकृत ॥ ११ ॥
तन्मध्य सङ्गतोमेरुः कूटलक्षैरलंकृतः ऊर्ध्वै रूर्ध्वैस्तरस्तार।
स्तारा मण्डलमण्डितः ॥ १२ ॥ तस्योपरिसकारांतम् वीजम
ध्यास्यसर्वगम्। नमामि विंवमार्हत्यम्। ललाटस्थम् निरं-
जन ॥१३॥ अक्षयं निर्मलंशांतं, बहुलं जाड्यतोज्झितम्।
निरीहं निरहंकारं सारं सारतरंघनं ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभ
स्फीतं सात्विकम् राजसँमतँ। तामसं चिरसंबुद्धम्। तैज-
संशर्वरीसमं ॥ १५ ॥ साकरंच निराकारं, सरसं विरसं-
परं परापरं परातीतं। परंपर परापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं
द्विवर्णंच। त्रिवर्णं तुर्यवर्णकं, पञ्चवर्णं महावर्णं सपरंच
परापरं ॥ १७ ॥ सकलं निष्कलं तुष्टं, निर्वृतं भ्रांतिवर्जितं
निरञ्जनं निराकारं निर्लेपं वीतसंश्रयं ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्र-
ह्मसंबुद्धं बुद्धं सिद्धं मतंगुरु। ज्योतीरूपं महादेवं लोका
लोक प्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णान्तः सरेफो
विंदुमण्डितः। तुर्यस्वरस मायुक्तो बहुधानादमालितः ॥२०॥
अस्मिन् वीजे स्थिताः सर्वे ऋषभाद्या जिनोत्तमाः। वर्णै-
र्निजैर्निजैर्युक्ता ध्यातव्यास्तत्र संगताः ॥ २१ ॥ नादश्चन्द्र-
समाकारो विन्दुर्नीलसमप्रभः। कलारुणसमासान्तः स्व-
र्णाभः सर्वतोमुखः ॥ २२ ॥ शिरः संलीन ईकारो विनीलो
वर्णतः स्मृतः। वर्णानुसारसम्लीनं तीर्थकृन्मण्डलं स्तुमः
॥२३॥ चन्द्रप्रभपुष्पदन्तौ नादस्थितिसमाश्रितौ। विंदुमध्य-

गतौ नेमिसुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥ पद्मप्रभवासुपुज्यौ कलापदमधिष्ठितौ। शिर ई स्थितिसंलीनौ पार्श्वमल्ली जिनोश्वरौ॥ २५ ॥ शेषा स्तीर्थंकराः सर्वे हरस्थाने नियोजिताः मायाबीजाक्षरं प्राप्ता-श्चतुर्विंशतिरर्हताम्॥ २६॥ गतरागद्वेषमोहाः सर्वपापविवर्जिताः । सर्वदा सर्वलोकेषु ते भवन्तु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देव देवस्य यच्चक्र तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादितसर्वांग मा मां हिनस्तु डाकिनी ॥२८॥ देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादितसर्वाङ्ग मा मां हिंसस्तु राकिनी ॥ २९ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादितसर्वाङ्गँ मा मां हिंसन्तु लाकिनी ॥ ३० ॥ देवदेवस्य यच्चक्रँ तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादितसर्वाङ्गम् मा मां हिंसन्तु काकिनी॥३१॥ देवदेवस्य यच्चक्रँ तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादितसर्वांगं मा मां हिंसंतु शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रँ तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादित सर्वांगं मा मां हिंसन्तु हाकिनी ॥ ३३ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रँ तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादितसर्वाङ्गँ मा मां हिंसन्तु याकिनी ॥३४॥ देवदेवस्य यच्चक्रँ तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादितसर्वांगं मा मां हिंसन्तु पन्नगाः ॥ ३५ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रँ हस्तिनः ॥३६॥ देवदेवस्य यच्चक्रँ तस्य चक्रस्य या विभा । तयाच्छादितसर्वाङ्गँ मा मां हिंसन्तु राक्षसाः ॥ ३७ ॥

देव० मा मां हिंन्तु वण्हयः ॥ ३८॥ देव० मा मां हिंसन्तु सिंहकाः ॥ ३९ ॥ देव० मा मां हिंसन्तु दुर्जनाः ॥४०॥ देव० मा मां हिंसन्तु भूमिपा ॥४१॥ श्रीगोमस्य या मुद्रा तस्या या भुविलब्धयः ॥ तामिरम्युन्नतज्योति, रहँ सर्व निधीश्वरः ॥४२॥ पातालवासिनो देवा, देवाभूपीठवासिनः स्वर्वासिनोपि ये देवाः, सर्वे रक्षंतु मामितः ॥४३॥ येऽवधिलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धयः ॥ ते सर्वे मुनयो देवाः मां संरक्षंतु सर्वदा ॥ ४४ ॥ दुर्जनाभूतवेत्तालाः, पिशाचामुद्गलास्तथा ॥ ते सर्वेप्युपसाम्यंतु देवदेवप्रभावतः ॥४५॥ ॐ ह्रीं श्रीश्च धृतिलक्ष्मी, गोरी चंडी सरस्वती, जयांवाविजया नित्या, क्लिन्नाजितामदद्रवा ॥४६॥ कामांग कामवाणा च, सानंदानंदमालिनी ॥ माया मायाविनी रोद्री, कला काली कलिप्रिया ॥ ४७॥ एताः सर्वा महादेव्यो, वर्त्तंते या जगत्त्रये ॥ मह्यं सर्वाः प्रयच्छंतु, कांति कीर्ति धृति मति ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्यः सुदुः प्राप्यः श्रीऋषिमण्डलस्तव ॥ भाषितस्तीर्थ, जगत्त्राणकृतेनघः ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले-वंहौ, जले दुर्गे गजे हरो ॥ श्मशाने विपिने घोरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यभ्रष्टा निजं राज्यँ, पदभ्रष्टानिजं पदं ॥ लक्ष्मीभ्रष्टा निजां लक्ष्मी, प्राप्नुवन्ति न संशयः ॥ ५१ ॥ भार्यार्थी लभते भार्यप्रमु, पुत्रार्थी लभते सुतँ ॥ वित्तार्थी लभते, वित्तं नरःस्मरण-

मात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णे रूप्ये पटे कांस्ये लिखित्वा यस्तु पूजयेत् । तस्यैवाष्टमहासिद्धि—र्गृहे वसति शाश्वती॥५३॥ भूर्जपत्रे लिखित्वेदं गलके मूर्ध्नि वा भुजे । धारितं सर्वदा दिव्यं सर्वभीतिविनाशकं ॥ ५४ ॥ भूतैः प्रेतैर्ग्रहैर्यक्षैः पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः । वातपित्तकफोद्रेकै-र्मुच्यते नात्र संशयः ॥ ५५ ॥ भूर्भुवः स्वस्त्रयीपीठ—वर्तिनः शाश्वता: जिनाः तैः स्तुतैर्वन्दितैर्दृष्टै—र्यत्फलं तत्फलं स्मृतेः ॥ ५६ ॥ एतद्गोप्यं महास्तोत्रं न देयं यस्य कस्यचित् । मिथ्यात्ववासिने दत्ते बालहत्या पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादि तपः कृत्वा पूजयित्वा जिनावलीं । अष्टसाहस्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं प्रातर्ये पठन्ति दिने दिने, तेषां न व्याधयो देहे प्रभवन्ति न चापदः ॥ ५९ ॥ अष्टमासावधिं यावत् प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् । स्तोत्रमेतद् महातेजो जिनबिम्बम् स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यर्हतो बिम्बे भवे सप्तमके ध्रुवं । पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा परमानन्दनन्दितः ॥ ६१ ॥ विश्ववन्द्यो भवेद् ध्याता, कल्याणानि च सोऽश्नुते । गत्वा स्थानं परं सोऽपि, भूयस्तु न निवर्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परं । पठनात् स्मरणाज्जापाल्लभ्यते पदमुत्तमं ॥ ६३ ॥ इति श्रीऋषिमण्डलस्तोत्रं समाप्तं ॥

अथ तिजयपहुत्तस्तोत्रं ।

तिजय-पहुत्त-पयासय, अट्ठ-महापाडिहेरजुत्ताणं, समय क्खित्त-ठिआणं । सरेमि चक्कं जिणंदाणं ॥१॥ पणवीसा य असीआ पनरस पन्नास जिणवरसमूहो । नासेउ सयल दुरिअं भविआणं भत्ति जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणयाला वि य तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा । गह भूअ रक्ख साइणि, घोरुव सग्गं पणासन्तु ॥ ३ ॥ सित्तरि पणतीसा वि य, सट्ठी पञ्चेव जिणगणो एसो, वाहिजलजलणहरिकरि चोरारिमहा-भयं हरउ ॥ ४ ॥ पणपन्ना य दसेव य, पन्नट्ठी तहय चेव चालीसा । रक्खंतु मे सरीरं देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥५॥ ॐ हरहुंहः सरसुंस्सः हरहुंहः तह चेव सरसुंस्सः । आलिहिय नाम गब्भं चक्कं किर सव्वओभद्दं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणी पन्नत्ती, वज्जसिंखला तहय वज्जअंकुसिआ । चक्केसरि नरदत्ता, कालि महाकालि तह गोरी ॥ ७ ॥ गन्धारी महजाला, माणवी वइरुट्ट तहय अच्छुत्ता । माणसि महामा-णसिआ, विज्जादेवीओ रक्खंतु ॥८॥ पञ्चदस कम्मभूमिसु, उप्पन्नं सत्तरिं जिणाण सयं । विविहरयणाइवन्नो, वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥ ९ ॥ चउतीसअइसय-जुआ अट्ठ-महापा-डिहेरकयसोहा । तित्थयरा गयमोहा, झाएअव्वा पयत्तेणं ॥१०॥ ॐ वरकणयसंखविद्दुम, मरगयघणसन्निहं विगयमोहं सत्तरिसयं जिणाणं सव्वामरपूइअं वन्दे, स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ

भवणवइ वाणवन्तर, जोइसवासी विमाणवासी अ जे केवि दुट्ठ देवा ते सव्वे उवसमंतु ममं स्वाहा ॥ १२ ॥ चन्दण-कप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पीअं । एगंतराइ गहभूअ साइणि मुग्गं पणासेई ॥ १३ ॥ इअ सत्तरिसयं जतं सम्मं मन्तं दुवारि पडिलिहिअँ । दुरिआरि विजयवंतं, निब्भंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीनवकारनो छंद ॥

॥ दोहा ॥ वंछित पूरे विविध परे, श्री जिनशासन सार । निश्चे श्री नवकार नित्य, जपतां जय जयकार ॥१॥ अडशठ अक्षर अधिक फल, नवपद नवे निधान । वीतराग स्वयं मुख वदे, पञ्च परमेष्ठि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समर्या सम्पत्ति थाय । संचित सागर सातना पातक दूर पलाय ॥ ३ ॥ सकल मन्त्र मुकुटमणि, सद्गुरु भाषित सार । सो भवियां मन शुद्धशुं, नित्य जपिए नवकार ॥ ४ ॥ छन्द ॥ त्राटकी ॥ नवकार थकी श्रीपाल नरेश्वर, पाम्यो राज्य प्रसिद्ध । समशान विषे शिवनाम कुमरने, सोवन पुरिसो सिद्ध । नव लाख जपंता नरक निवारे, पामे भवनो पार ॥ सो भवियां भत्ते चोखे चित्ते, नित्य जपिए नवकार ॥ ५ ॥ बांधी वडशाखा शिंके बेसी, हेठल कुंड हुताश । तस्करने मन्त्र समर्प्यो श्रावके, उड्यो ते आकाश । विधि रीत जप्यो विषधर विष टाले, ढाळे अमृत-

धार ॥ सो० ॥६॥ बिजोरा कारण राय महाबल, व्यन्तर दुष्ट विरोध । जेणे नवकारे हत्या टाली, पाम्यो यक्ष प्रतिबोध । नवलाख जपतां थाये जिनवर, इस्यो छे अधिकार ॥ सो० ॥ ७ । पल्लिपति शिख्यो मुनिवर पासे, महामन्त्र मन शुद्ध । परभव ते राजसिंह पृथवीपति, पाम्यो परिगल रिद्ध । ए मन्त्र थकी अमरापुर पहोतो, चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥८॥ सँन्यासी काशी तप साधंतो, पञ्चाग्नि परजाले । दीठो श्रीपासकुमारे पन्नग, अधबलतो ते टाले । सम्भलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख इन्द्रभुवन अवतार ॥सो० ॥ ९ ॥ मनशुद्ध जपतां मयणासुन्दरी, पामी प्रिय संयोग । इण ध्याने कुष्ठ टल्यो उम्बरनो, रक्तपित्तनो रोग । निश्चेशुं जपतां नवनिधि थाये, धर्म तणो आधार ॥ सो० ॥ घट मांहि कृष्ण भुजङ्गम घाल्यो, घरणी करवा घात । परमेष्ठी प्रभावे हार फूलनो, वसुधा मांहि विख्यात । कमलावतीए पिंगल कीधो, पाप तणो परिहार ॥ सो० ॥ ११ ॥ गयणांगण जाति राखी गिहिणी, पाडी बाण प्रहार । पद पञ्च सुणंता पांडुपति घर, ते थइ कुन्ता नार । ए मन्त्र अमूलक महिमा मन्दिर, भवदुःख भञ्जणहार ॥ सो० ॥ १२॥ कंबल संबले कादव काढ्यां शकट पांचसें मान । दीधे नवकारे गया देवलोके, विलसे अमर विमान । ए मंत्र थकी संपत्ति वसुधा तले, विलसे जैन विहार ॥ सो० ॥ १३ ॥

आगे चोवीशी हुइ अनंती, होशे वार अनंत। नवकार तणी कोइ आदि न जाणे, एम भाखे अरिहन्त। पूरब दिशि चारे आदि प्रपञ्चे, समर्यो संपत्ति सार ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्ठी सुरपद ते पण पामे, जे कृत कर्म कठोर। पुण्डरि-गिरि उपर प्रत्यक्ष पेख्यो, मणिधर ने एक मोर। सद्‌गुरु सन्मुख विधिए समरंता सफल जनम संसार ॥ सो० ॥ १५ ॥ शूलिकारोपण तस्कर कीधो, लोहखरो परसिद्ध। तिहां शेठे नवकार सुणाव्यो पाम्यो अमरनी रुद्ध। शेठने घर आवी विघ्न निवार्यो, सुरे करी मनोहार ॥ सो० ॥ १६ ॥ पञ्च परमेष्ठी ज्ञानज पञ्चह, पञ्च समिति समकित। पञ्च प्रमाद विषय तजो पञ्चह पालो पञ्चाचार ॥ सो० ॥ १७ ॥ कलश ॥ छप्पय ॥ नित्य जपीए नवकार, सार संपत्ति सुखदायक। सिद्धमंत्र ए शाश्वतो, एम जंपे श्रीजगनायक। श्रीअरिहन्त सुसिद्ध, शुद्ध आचार्य भणीजे श्रीउवज्झाय सुसाधु, पञ्च परमेष्ठी थुणीजे। नवकार सार संसार छे, कुशललाभ वाचक कहे। एक चित्ते आराधतां, विविध रुद्धि वांछित लहे ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ पुनः नवकार छंद ॥

सुख कारण भवियण समरुं श्रीनवकार। जिन शासन आगम चउदे पूरवसार। इण मंत्रनी महिमा कहितां नलहुं पार। सुरतरु जिम चिंतित वंछित फल दातार ॥१॥ सुर

दानव मानव शेव करे करजोड । भुइ मण्डल विचरे तारे भवियण कोड । सुरछन्दे विलसै अतिसय जास अनंत । पहिले पद नमिये अरि गञ्जन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरे भेदे सिद्ध थया भगवंत । पञ्चमी गति पुहता अष्ट करम करिहन्त । कल अकल सरूपी पञ्चा नंतक जेह । जिनवर पाय प्रणमुं बीजैपद पलि एह ॥ ३ ॥ गच्छ भार धुरंधर सुंदर ससिहर सोम । करि सारण वारण गुणछत्तीसे थोम श्रुत जाण शिरोमणि सागर जेम गम्भीर । तीजे पद नमियै आचारज गुणधीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र भणावैसार । तप विध संयोगे भाषै अरथ विचार । मुनिवर गुण युक्ता ते कहिये उवझाय । चोथे पद नमियै अहनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पञ्चाश्रव टालै पालै पञ्चाचार । तपसी गुण धोरी वारी विषय विकार । तस थावर पीहर लोक मांहे जे साध । त्रिविधे ते प्रणमुं परमारथ गुण लाध । ६ ॥ अरि करि, हरि सायण डायण भूत वेताल । सवि पापपणासै थास्ये मङ्गल माल । इण समरयां सङ्कट दूरटलै तत्काल । जम्पै जिण गुण इम सुरवर सीस रसाल ॥ ७ ॥ इति नवकार स्त० ।

अथ श्रीनवकार मंत्र आत्म रक्षाः ।

ॐ परमेष्टी नमस्कारं । सारं नवपदात्मकं । आत्मरक्षाकरं वज्र । पञ्जरभं स्मराम्यहं ॥१॥ ॐ नमो अरिहन्ताणं ।

शिरस्कं शिर सिस्थतं ॐ नमो सव्व सिद्धाणं । मुखे मुख पटम्बरं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरियाणं अङ्गरख्या तिशायिनी ॐ नमो उवझायाणं । आयुधं हस्तयो दढं । ॐ नमोलोए सव्वसाहुणं । मोचके पादयो सुभे । एसो पञ्च नमुकारो । शिलावज्रमईतले । सव्व पाप पणासणो । वप्रोवज्र मयो- वही । मंगलाणञ्च सव्वेसिं । खादि रंगार घातका । स्वाहां तञ्च पदं ग्येयं । पढमं हवइ मंगलं । वमो परि वज्रमयं । पिधानं देहरक्षणे । महाप्रभावा रक्षेयं । क्षुद्रोपद्रवनाशनी परमेष्टि पदोद्भूतु । कथिता पूर्व सूरिभिः । यश्चैवं कुरुते रक्षां परमेष्टि पदे सदा । तस्यनस्या द्भयं व्याधी । राधिं श्चापि कदाचनः ॥ इति आत्मरक्षाः ॥

अथ शांतिकर स्तोत्र लिख्यते ।

संतिकरं सन्ति जिणं, जगसरणं जय सिरीइदायारं । समराभिभत्तपालग, निव्वाणीगरुडकय सेवं ॥ १ ॥ ऊस नमो विप्पोसहिपत्ताणं, सन्तिसामि पायाणं । ज्रौं स्वाहा मन्तेणं, सव्वासिवदुरिअहरणाणं ॥ २ ॥ ॐसंतिनमुक्कारो, खेलोसहि माइलद्धिपत्ताणम् । सौंह्रीं नमोसव्वोसहि, पत्ता- णम् चन्देःसिरिं ॥ ३ ॥ वाणीतिहुअणसामिणी, सिरिदे- वीजस्करायगणिपिडगा । गहदिसिपालसुरिंदा, सयाविरं- स्कंतुजिणभते ॥ ४ ॥ रस्कंतुममरोहिणी, पन्नत्तीवज्जसिख- लासया वज्जङ्कुसि चक्केसरी, नरदत्ता काली महाकाली ॥५॥

गोरीतहगंधारी, महजाला माणवीअ वइरुट्टा । अच्छुत्तामाण सिआ, माहा माणसीआऊ देवीऊ ॥ ६ ॥ जस्कागोमुह महाजस्का, तिमुहजस्केसुतंबरूकुसुमो । मायंगविजय अजिऊ, वम्भोमाणुऊसुर कुमारो ॥ ७ ॥ छम्मुहपायालकिन्नर, गरुलोगन्धव्वतहयजस्किदो । कुवेर वरुणोभिऊडी गोमेहो-पासमायंगो ॥ ८ ॥ देवीउचक्केसरी, अजिआदुरिआरि काली महाकाली । अच्चु अणन्ताजाला, सुतारयासोअसि-रिवच्छा॥ ९ ॥ चण्डा विजयंकुसिपन्नइत्ति, निव्वाणीअच्चु आधरणी। वइरुट्टछुत्तगन्धारी, अम्वपउमावईसिद्धा ॥१०॥ इयतित्थरस्कणरया, अन्नेविसुरासुरीचऊहावि । व्यन्तरजो-इसिपमुहा, कुणम् तुरस्कंसयाअम्हं ॥ ११ ॥ एवंसुदिट्ठी सुरगण, सहिओसङ्घस्ससन्तिजिणचन्दो । मझविकरेउरस्कं, मुणिसुंदरसूरिथुअमहिमा ॥ १२ ॥ इअसन्तिनाह सम्मदिट्ठी रस्कंसरइतिकालंजो । सव्वोवद्दवरहिओ, सलहइसुहसंपयं-परमं ॥ १३ ॥ तवगच्छगयणदिणयर, जुगवरसिरिसोमसुंदर गुरूणं सुपसायलद्धगणहर, विज्जासिद्धिभणइसीसो ॥१४॥ ॥ इति ॥

नमो अरिहन्ताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पञ्च नमुक्कारो । सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ।

॥ अथ श्रीशंखेश्वर पार्श्वजिन छन्द ॥

सेवो पास संखेसरो मन शुद्धे । नमो नाथ निश्चे करी एक बुद्धे । देवी देवल्यां अन्यनें शुं नमो छो । अहो भव्य लोको भुला कां भमो छो ॥ १ ॥ त्रैलोकना नाथने शुं तजो छो । पड्या पाशमां भूतने कां भजो छो । सुरधेनु छंडी अजा शुं अजो छो महापन्थ मुंकी कुपन्थे व्रजो छो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणि काच माटे । ग्रहे कोण रासमने हस्ति साटें । सुरद्रुम उपाड कोण आक वावे । महा मूढ ते आकुला अन्त पावे ॥ ३ ॥ किहां कांकरोने किहां मेरु शृंग । किहां केसरीने किहां ते कुरंगम् । किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा । करो एकचित्तें प्रभु पास सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रभावती प्राणनाथं । सहू जीवनें जे करे छे सनाथं । महा तत्व जाणी सदा जेह ध्यावे । तेनां दुःख दारिद्र दूरें गमावे ॥ ५ ॥ पामी मानुषोने वृथा कां गमो छो । कुशीलें करी देहनें कां दमो छो । नहीं मुक्तिवासं विना वीतरागं । भजो भगवंतं तजो दृष्टिरागं ॥ ६ ॥ उदयरत्नभाखे सदा हेत आणी । दयाभाव कीजें मोहे दास जाणी । मोरे आज मोतीयडे मेह वूठा । प्रभू पास संखेश्वरो आप तूठा ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीगौतमाष्टक छन्द ॥

वीर जिणेसर केरो शीश। गोतम नाम जपो निशदीश। जो कीजैं गोतमनुं ध्यान। तो घर विलशै नवे निधान॥१॥ गोतम नामें गिरवर चढे। मनवन्छित लीला संपजे। गोतम नामें नावे रोग। गोतम नामें सर्व संजोग॥ २॥ जे वैरी विरुआ वंकडा। तस नामें नावे ढूकडा। भूत प्रेत नवि रण्डे प्राण। ते गोतमनां करुं वखाण॥ ३॥ गोतम नामें निर्मल काय। गोतम नामे वाधे आय। गोतम जिनशासन शणगार। गोतम नामें जय जयकार॥४॥ शाल दाल दुरहा घ्रत घोल। मनवन्छित कापड तम्बोल। घरे सुघरणी निर्मल चित्त। गोतम नामें पुत्र विनीत॥५॥ गोतम उदयो अविचल भाण। गोतम नाम जपो जग जाण। मोहोटा मन्दिर मेरुसमान। गोतम नामें सफल विहाण॥६॥ घर मयगल घोडानी जोड वारु विलशै वन्छित कोड। महीयल मानें मोहोटा राय। जो तूठे गोतमना पाय॥ ७॥ गोतम प्रणम्यां पातिक टले। उत्तम नरनी सङ्गत मले। गोतम नामें निर्मल ज्ञान। गोतम नामें वाधे वान॥८॥ पुण्यवन्त अवधारो सहु। गुरु गोतमना गुण छे बहु। कहे लावण्य समय कर जोड। गोतम तूठे सम्पत्ति कोड॥९॥ इति॥ १०९॥

अथ छोटा छन्द।

राग प्रभाती जे करे पेह उगमने सुर, भूखा भोजन

सम्भजे कुरला करे कपूर अंगूठे अमृत वसे लब्धि तणा भण्डार जे गुरु गोतम समरिये मन वन्छित फल दातार पुण्डरिक गोयम पमुहा गणधर गुण सम्पन्न प्रहर उठीने प्रमणतां चउदेसे सावज्ज खन्ति खमं गुग कलियम सुत्तिणिय मन्त्र लब्धि सम्पन्नं वीरस्स पढम श्रीं गोयम साभी नमः मामि सर्वारिष्ट प्रणाशाय सर्व भी ष्टार्थ दायिने सर्व लब्धि निधानाय गोतमस्वामीने नमः ॥ इति ॥

सर्व मङ्गल मांगल्यं सर्व कल्याण कारणं प्रधानं सर्व धर्माणं जैनं जयति शासनं ॥ इति ॥

अथः नमष्कारस्तोत्र ।

दर्शन देवदेवस्य । दर्शनं पापनासनं । दर्शनं स्वर्ग सोपानं । दर्शनं मोक्षसाधनं । १ ॥ दर्शनेन; जिनेंद्राणां । साधूनां वंदनेनच । नतिष्ठति चिरं पापं । च्छिद्रहस्ते यथो-दकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनसूर्यस्स । संसारध्वांतनाशनं । बो-धनंचित्तपद्मास्य । समस्तार्थप्रकाशकं ॥ ३ ॥ दर्शनं जिन-चन्द्रस्य । सद्धर्मामृतवर्षणं । जन्मदाघविनासाय । वृंदणं सुखवारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेभक्ती जिनेभक्ती । जिनेभक्ती दिनेदिने । सदामेस्तु सदामेस्तु । सदामेस्तु भवे भवे ॥ ५ ॥ नहित्राता, नहित्राता । नहित्राता जगत्रये । वीतरागसमो-देवो न भूता न भविस्यति ॥ ६ ॥ अन्यथाशरणं; नास्ति । त्वमेवशरणं मम तस्मात् सर्वप्रयत्नेन । रक्षरक्ष जिनेश्वर

॥ ७ ॥ वीतरागं मुखंदृष्ट्वा । पद्मरागसमप्रभं नैकजन्म कृतं-
पापं । दर्शनेन विनश्यति ॥८॥ अर्हंतो मङ्गलं नित्य सिद्धा
जगतिमङ्गलं । मङ्गलंमाधवोगुरुय्य । धर्म्मःसर्व्वमङ्गलं ॥९॥
लोकोत्तमाऽहार्हंतां । सिद्धःलोकोत्तमाः सदा लोकोत्तमोयती-
शानां । धर्मोलोकोत्तमोर्हतां ॥ १० ॥ शरणं सर्व्वदार्हतः ।
सिद्धाशरणमङ्गलां ! साधवः शरणंलोके । धर्म्मशरणमर्हतां
॥ ११ ॥ इति श्रीं नमस्कारस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

श्रीगुरुगुणस्तवन ।

श्रीजिनदत्त के चरणों में आया चरणों में आया गुरु
शीश नमाया ॥ टेक ॥ वाछग मंत्री पिता कहाया वाहड
देवी उयरे जाया ॥ श्री ॥ १ ॥ हुम्बड वंश में आप सु·
हाया सकल जीव हरषाया ॥ श्री० ॥ २ ॥ गच्छ चोरासी
में शृंगार हारा युगप्रधान पद छाया ॥ श्री० ॥ ३ ॥ देश
देश में परचा पाया सकल सङ्घ सुखदाया ॥ श्री० ॥ ४॥
चरण शरण ग्रही आज उमाया तारो मुझ को अनेक तराया
॥ श्री० ॥ ५ ॥ हर्ष धरी दिल काय झुकाया नमि नमि
अर्ज मैं लाया ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ध्यावोर संघ दिल हर्षाया
पावो वांछित माया ॥ श्री० ॥ ७ ॥ उद्रामसर में दर्शन
पाया आनन्द हर्ष वधाया ॥ श्री० ॥ ८ ॥ वीर चोवीसे
वर्ष बायाला चैत्र चोथ सुदि आया ॥ श्री ॥ ९ ॥ कृपा-
मिलापी सद्गुण दाया सुखसागर मन भाया ॥ श्री० ॥

॥ १० ॥ पूर्ण गुरु के चरण पसाया क्षेमसागर गुण गाथा ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥

जन्म महोत्सवस्तवनं ।

आनन्द छाया अंग न माया हर्ष वधाया रे (टेक) वीर प्रभु का जन्म हुआ जब इन्द्र से आदेश पाया रे। हरिणगमेषी देव ने जाकर घननन घण्टा बजाया रे ॥आ० ॥ १ ॥ सब देवों ने जान लिया सही मेरु शिखर पर आया रे। पञ्च रूप धरि वीर प्रभु को इन्द्र विनय से लाया रें ॥ आ० ॥ २ ॥ जल से आपूरित कलश को देखे सन्देह दिल में आया रे। नीर प्रवाहे वह जावेंगे लघु है इन की काया रे ॥ आ० ॥३॥ अवधिज्ञान से जान लिया प्रभु अनन्त बली महाराया रे। वामांगुठे मेरु दबाया थर हर कर कम्पाया रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ अवधि लगाकर देख लिया बल प्रभुजी को नहवाया रे। अपराध क्षमावे काय झुकावे नमि नमि लागे पाया रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ गाया गाया मङ्गल गाया प्रभु निरखी हरषाया रे। विधिसूं भक्ति करके इन्दर जननी पासे लाया रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ त्रैलोक्यनाथ हरि सुखकारी पूरण प्रेम वधाया रे। सकल संघ मिलि जय २ बोलो क्षेमानन्द को पाया रे ॥आ. ॥ ७ ॥

श्री पार्श्वप्रभुस्तवन ।

लोद्रवपास प्यारो है चेतन मारा निरखत हर्ष अपार

हे लौद्रव० (टेक) चौतीस अतिशय शोभता हे प्रभु चे० पांत्रीस वाणी गुणखान हे ॥ लौद्रव० ॥ १ ॥ कोस पांच जैसलमेर थी हे प्रभु चे० लौद्रवनगर मंझार हे ॥ लौद्रव० ॥ २ ॥ देवविमान जिसो बन्यो है प्रभु चे० मन्दिर अति सुखकार हे ॥ लौद्रव० ॥ ३ ॥ अनन्त गुणे करी दीपता हे प्रभु चे० सहस फणा श्रीपास हे ॥ लौद्रव० ॥ ४ ॥ महिमा सुनि के आवियो हे प्रभु चे० सकल संघ सफल बहु ठाठ हे ॥ लौद्रव० ॥ ५ ॥ भव नाटक करता थका हे प्रभु चे० आयो श्रीदरबार हे ॥ लौद्रव० ॥ ६ ॥ दीन की विनती धारजो हे प्रभु चे० भवसागर थी तार हे ॥ लौद्रव ॥ ७ ॥ संघ में मङ्गल कीजिये हे प्रभु चे० विधि चन्दन करुं नाथ हे ॥ लौद्रव० ॥८॥ वीर चोबीस चालीस माघ हे प्रभु चे० मार्गशर सुदि सुवार हे ॥ लौद्रव० ॥९॥ पञ्चमी दिवसे भेंटिया हो हे प्रभु चे० आनन्द अंग न माया हे ॥ लौद्रव० ॥ १० ॥ क्षेमसागर प्रभु प्रेमसु हे प्रभु चे० मांगे अविचल राज हे ॥ लौद्रव० ॥ ११ ॥

श्री नेमिनाथस्वामि-स्तवन ।

नेमी जिणंद स्वामिन् चरणों में अब तो लेलो ॥टेक॥
कृपानिधे कर मेलो अर्जी दया कर लेलो ।
संसार पार मेलो चरणो में अब तो लेलो ॥ १ ॥
रस्ता सही बतादो सुखी सदा बना दो ।

आयो विरुद सुनलो चरणों में अब तो लेलो ॥ २ ॥
गिरनार तीर्थ आया मन है सदा सुहाया ।
आनन्द हर्ष भरेलो चरणों में अब तो लेलो ॥ ३ ॥
मुख चन्द्र को मैं देखा निर्मल शांत पेखा ।
नासाग्र ध्यान स्थिरेलो चरणों में अब तो लेलो ॥ ४ ॥
ऐसी हृदय में रेखा कर्मों की होगी लेखा ।
भव पार हुआ वेलो चरणों में अब तो लेलो ॥ ५ ॥
मुक्ति से कर के मेला राजुल को मेली पेला ।
पशु पर दया करेलो चरणों में अब तो लेलो ॥ ६ ॥
अब तो मुझे तारो केवल के अंश डारो ।
कुछ ध्यान इधर भी देलो चरणोंमें अब तो लेलो ॥ ७ ॥
अन्तः समय सुधारो यह विनती स्वीकारो ॥
दुःखी सदा बनेलो चरणों में अब तो लेलो ॥ ८ ॥
अंतिम प्रार्थना करता आशातना से डरता ।
दयालु दीन चेलो चरणों में अब तो लेलो ॥ ९ ॥
संवत् गुणीसे चोत्तर माघ शुक्ला है सुखोत्तर ।
एकम को आयो पेलो चरणों में अब तो लेलो ॥ १० ॥
गुरुवर्य पूर्णसागर ; तच्छिष्य हेमसागर ।
शरणी सरण में लेलो चरणों में अब तो लेलो ॥ ११ ॥

श्रीअजितजिन–स्तवन ।

(आधा आप पधारो पूज्य ए देशी)

अजित जिनेश्वर चरण नी सेवा एवा ए हूं हलियो रे, कदिये अणचाख्या रस अनुभव रस नो टाणो मिलियो ॥ प्रभुजी मेर करी महाराज काज अमारा सारो, अहो म्हारा प्रभुजी अहो म्हारा जिनजी, गिरवा छो गरीब निवाज भवजल पार उतारो ॥ १ ॥

मुकायो पण हुं नवि मूकुं चूकूं ए नवि टाणो रे । भक्ती भाव उठ्यो जे अन्तर ते कैम रहे सरमणो ॥ प्र० ॥ २ ॥ लोचन शांत सुधारस सुभगां मुख मटकालूं प्रसन्न रे । योगमुद्रा नो लटको चटको अतिषय नो अतिधन्न ॥ प्र० ॥ ३ ॥ बालकालिमा वार अनन्ती सामन्ती नवि जाग्यो रे । योवन काले ने रस चाखण तूं सामरथ प्रभु मांग्यो ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पिण्ड पदस्थ रूप सब लीनो चरण कमल तुम ग्रहीयो रे । भमर परे रसस्वाद चखानो बरसो कों करो महियो ॥ प्र० ॥ ५ ॥ तूं अनुभव रस देवा समरथ हूं पण अर्थी तेनो रे । चित्त वित्त ने पात्र सम्बन्धे अरज ज्यो हवे कहनो । प्र० ॥ ६ ॥ प्रभुजी ने मेहर ते रस चाख्यो अन्तरंग सुख पाम्यो रे । मान विजय वाचक इमि जम्पे हुओ मुझ मन काम्यो ॥ प्र० ॥ ७ ॥

श्रीपार्श्वजिन स्तवन ।

शिवपुर वासी परमविलासी तोरो पारसनाथ, अब मोहे तारो (टेक)

सर्प नागणी जलते प्रभु दिया नवकार सुनाय । धरणिन्द पद्मावई बनाए ऐसे श्रीजिनराय ॥ १ ॥ हो शिव नीलवर्ण तनु शोभतोरे परमानंद प्रकाश । वीतराग विकाशी ऐसे नहींदेखा प्रभूपास ॥ २ ॥ हो शिव० ॥ भव नाटक मैं बहुला करतो आयो प्रभू दरबार । परम कृपा के सागर निरखे सुखकर श्रीहितकार ॥ ३ ॥ होशिव० ॥ भवसागर में भमर कर्म से डूब रही मेरी नाव । दीन दयालु दया करी तारो तारक तुम जिनराज ॥ ४ ॥ हो शिव० ॥ कर्मों ने मुजे ऐसा फँसाया धर्म कर्म दिया रोक श्री दरबार मे आन खडा हूँ दूर करो सबही शोक ॥ ५ ॥ हो शिव० संवत् गुनीसे तियोत्तर कृष्ण फाल्गुन दशमी सार । फलोदी नगर मेदर्शन पाया बिम्ब है अति मनोहार ॥ ६ ॥ हो शीव० पासनाथ सुपारस तुम ही जोड़ा है यह क्षेम । चरण शरण ग्रही आज उमायो पूर्णानन्द सु प्रेम ७.

॥ अथ श्री आराधनाका स्तवन प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

सकल सिद्धि दायक सदा, चोवीशे जिनराय । सह गुरु स्वामिनि सरस्वती, प्रेमे प्रणमूं पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवन पति त्रिशला तणों, नंदन गुण गंभीर । शासन नायक जग जयो वर्द्धमान वड वीर ॥ २ ॥ इक दिन वीरजिणंदने, चरणे करिपरणाम । भविक जीवना हित भणी, पूछे गौतम स्वाम

॥ ३ ॥ मुक्तिमार्ग आराधिये, कहो किण परे अरिहंत ।
सुधा सरस तव वचन, भाखे श्री भगवन्त ॥ ४ ॥ अति
चार आलोइये, व्रत धरिये गुरु सात। जीव खमावो सयल
जे योनि चोराशी लाख ॥ ५ ॥ विधिसुं वली वोसिराविये
पापस्थान अढार । चार शरण नित्य अनुसरो, निंदी दुरित
आचार ॥ ६ ॥ शुभ करणी अनुमोदिये, भाव भलो मन
आण । अणसण अवसर आदरी, नवपद जपो सुजाण ॥७॥
शुभ गति आराधन तणा, ए छे दस अधिकार । चित
आणिने आदरो, जिम पामो भवपार ॥ ८ ॥

॥ ढाल-पहली ॥

॥ ए छिंडि किहां राखी ॥ ए देशी ॥

ज्ञान दरिसण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार ।
एह तणा इह भव परभवना, आलोइये अतिचार रे ॥ १॥
प्राणी, ज्ञान भणो गुणखाणी । वदे एम वाणी रे ॥ प्राणी
॥ ज्ञा० ॥ ए आंकणी ॥ गुरु ओलविये नहीं गुरु विनये
काले धरी बहुमान । सूत्र अर्थ तदुभय करी सूधां, भणिये
वही उपधान रे ॥ २ ॥ प्राणी ॥ ज्ञा० ज्ञानोपकरण पाटी
पोथी ठवणी नोकरवाली, तेह तणी कीधी आशातना, ज्ञान
भक्ती न संभाली रे॥३॥ प्राणी ॥ज्ञा०॥ इत्यादिक विपरीत
पणाथी ज्ञान विराध्युं जेह । आ भव परभव वलिय भवो
भव, मिच्छादुक्कडं तेहरे ॥ ४ ॥ प्राणी समकितल्यो शुद्ध

प्राणी ॥ ए आंकणी ॥ जिन वचने शंका नवि कीजे, नवि परमत अभिलाख । साधु तणी निन्दा परिहरजो फलसंदेह म राख रे ॥ ५ ॥ प्राणी ॥ स० ॥ मूढपणुं छण्डो परशंसा गुणवन्तने आदरिये । साहामीने धर्मे करी थिरता, भक्ति प्रभावना करीये रे ॥ ६ ॥ प्राणी स० ॥ सङ्घचैत्य प्रासाद तणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो । द्रव्य देवको जे विणसाड्यो, विणसन्ता उवेख्यो रे ॥ ७ ॥ प्राणी ॥ स० ॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी, समकित खण्ड्युं जेह । आ भव० ॥ मिच्छा० ॥ ८ ॥ प्राणी, चारित्र ल्यो चित्त आणी, ए आंकणी ॥ पांच समिति त्रण गुप्ति विराधि, आठे प्रवचन माय । साधुतणे धर्मे परमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥ ९ ॥ प्राणी ॥ चा० ॥ श्रावक ने धर्मे सामायिक, पोसहमां मन वाली । जे जयणापूर्वक जे आठे, प्रवचन माय न पाली रे ॥ १० ॥ प्राणी ॥ चा० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र डोल्युं जेह ॥ आ भव० ॥ मिच्छा

११ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ बारे भेदे तप नवि कीधुं, छते योगे निज शक्ते । धर्मे मन वच काया वीरज, नवि फोरविए भगते रे ॥ १२ ॥ प्राणी ॥ चा० ॥ तपवीरज आचारे एणि परे, विविध विराध्या जेह ॥ आ भव० ॥ मिच्छा० ॥ १३ ॥ प्राणी ॥ चा० वलीय विशेषे चारित्र केरा, अतिचार आलोइये । वीर जिणेसर वयण सुणीने, पाप मयल सवि

चोइये रे ॥ १४ ॥ प्राणी ॥ चा० ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ पामी सुगुरु पसाय ॥ ए देशी ॥

पृथिवी पाणी तेउ वाउ वनसपति ॥ ए पांचे थावर कह्यां ए करि करसण आरंभ खेत्र जे खेडियां । कूवा तलाव खणवीयां ए । १ ॥ घर आरंभे अनेक, टांका भोयरां । मेडी माल चणावीयां ए । लींपण घुंपण काज, इणी परे परपरे । पृथिवी काय विराधिया ए ॥ २ ॥ धोयण नायण पाणी, झीलण अपकाय । छोती धोती करी दुहव्या ए । भाठीगर कुम्भार, लोह सोवन गरा । भाडभुञ्जा लिहालागरा ए ॥ ३ ॥ तापण शेकण काज, वस्त्र निखारण रंगण रांधण रसवती ए । इणी परे कर्मादान, परे परे केवली । तेउ वाउ विराधिया ए ॥४॥ वाडी वन आराम वावि वनस्पति । पान फूल फल चून्टीयां ए । पोहोक पापडी शाक, शेकयां सुकव्यां । छेद्यांछेद्यां आथीयां ए॥५॥ अलसीने एरंड, घाणी घालीने । घणा तिलादिक पीलीया ए । घाली कोलु मांहि, पीली शेलडी । कन्द मूल फल वेचीयां ए ॥ ६ ॥ एम एकेंद्रिय जीव, हण्या हणवीया । हणतां जे अनुमोदीया ए ॥ आभव परभव जेह, वलिय भवो भवे । ते मुझ मिच्छामि दुक्कडम् ए ॥७॥ कृमी सरमीयां कीडा, गाडर गंडोला । इयल पूरा अलसीयां ए ।

वाला जलो चूडेल, बिचलित रसत्तणा ॥ वली अथाणां मम्रुखनां ए ॥ ८ ॥ एम बेइन्द्रिय जीव, जे मे दूहव्या ॥ ते मुझ० ॥ उद्देही जू लीख, मांकड मंकोडा ॥ चांचढ कीडी कुन्थुआ ए ॥९॥ गद्दहीयां घीमेल, कान खजूरडा गींगोडा धनेडियां ए । एम तेइन्द्रिय जीव, जे मे दूहव्या । ते मुझ० ॥ १० ॥ माखी मत्सर डांस, मसा पतंगिया । कंसारी कोलियावडा ए । ढिकुण विछु तीड, भमरा भमंरीया । कोता बग खडमांकडी ए ॥११॥ एम चोरिंद्रिय जीव, जे मैं दूहव्या ॥ ते मुझ० । जलमां नाखी जाल जलचर दूहव्या । बनमां मृग सन्तापिया ए ॥१२॥ पीड्या पञ्जी जीव, पाडी पासमां । चोपट घाल्यां पांजरे ए । एम पञ्चेंद्रिय जीव जे मैं दूहव्या ॥ ते मुझ० ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥प्रथम गोवाला तणे भवे जी ॥ ए देशी ॥

क्रोध लोभ भय हास्यथी जी, बोल्यां बचन असत्य॥ कूड करी धन पारकां जी लीधां जेह अदत्त रे ॥ जिनजी ॥ १ ॥ मिच्छामि दुक्कडं आज ॥ तुम साखे महाराज रे ॥ जिनजी ॥ देइ सारू काज रे ॥ जिनजी ॥ मि० ॥ ए आंकणी ॥ देव मनुज तिर्यचनां जी, मैथुन सेव्यां जेह । विषयारस लंपटपणे जी, घणुं विडंब्यो देह ॥ जि० ॥ २ ॥ मि० ॥ परिग्रहनी ममता करी जी, भव भव मेली

आथ । जे जिहांनी ते तिहां रही जी, कोइ न आवी साथ रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ मि० ॥ रयणी भोजन जे कर्यां जी, कीधां भक्ष्य अभक्ष्य । रसना रसनी लालचे जी, पाप कर्या प्रत्यक्ष रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ मि० ॥ व्रत लेइ विसारियां जी, वली भांग्यां पच्चक्खाण । कपट हेतु किरिया करी जी, कीधां आप वखाण रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ मि० ॥ त्रण ढाल आठे दुहे जी, आलोया अतिचार । शिवगति आराधन तणो जी, ए पहेलो अधीकार रे ॥ जि० ॥ ६ ॥

॥ ढाल चौथी ॥

पञ्च महाव्रत आदरो । साहेलडी रे, अथवा ल्यो व्रत बार तो ॥ यथाशक्ती व्रत आदरी, सा० । पालो निरतिचार तो ॥ १ ॥ व्रत लीधां सम्भारीये, सा० । हियडे धरिय विचार तो । शिवगति आराधना तणो, सा० । ए बीजो अधिकार तो ॥ २ ॥ जीव सव खमावियें, सा० । योनि चोरासी लाख तो । मन शुद्धे करो खामणां, सा० । कोइशुं रोष न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिन्तवो, सा० । कोई न जाणो शत्रु तो । राग द्वेष एम परिहारो, सा० ॥ कीजे जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ सामी संघ खमाविये, सा० । जे उपनी अप्रीति तो । सज्जन कुटुम्ब करी खामणां, सा० । ए जिनशासन रीति तो ॥ ५ ॥ खमिये अने खमावियें, सहज धर्मनो सार तो । शिवगति आराधना तणो सा० ।

ए त्रीजो अधिकार तो ॥६॥ मृषावाद हिंसा चोरी, सा० । धन मूर्छा मेहुन तो । क्रोध मान माया तृष्णा, सा० । प्रेम द्वेष पैशुन्य तो ॥ ७ ॥ निन्दा कलह न किजिये, कूडां न दीजे आल तो । रति अरति मिथ्या तजो, सा०॥ माया मोस जञ्जाल तो ॥८॥ त्रिविध त्रिविध वोसिराविये सा० । पापस्थान अढार तो ॥ शिवगति आराधन तणो, सा० । ए चोथो अधिकार तो ॥ ९ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

हवे निःसुणी इहां आवीयाए । ए देशी ।

जनम जरा मरणे करी ए, ए संसार असार तो । करयां कर्म सहु अनुभवे ए, कोई न राखण हार तो ॥१॥ शरण एक अरिहन्तनु ए शरण सिद्ध भगवन्त तो । शरणं धर्म श्री जैननो ए, साधु शरण गुणवन्त तो । २ । अवर मोह सवि परिहरी ए, चार शरण चित्त धार तो । शिव-गति आराधन तणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आभव परभव जे करयां ए, पाप कर्म केइ लाख तो । आत्मसाखे ते निंदीये ए, पडिक्कमिये गुरु साख तो ॥४॥ मिथ्यामति वर्त्ताविया ए, जे भाख्यां उत्सूत्र तो । कुमति कदाग्रहने वशे ए थाप्यां उत्सूत्र तो ॥ ५ ॥ घड्यां घडा-व्यां जे घणां ए, घण्टी हल हथियार तो भव भव मेली मूकियां ए, करता जीव संहार तो ॥ ६ ॥ पाप करीनें

पोषिया ए, जनम जनम परिवार तो । जनमांतर पोहोता पछी ए, कोई न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आभव परभव जे करयां ए, इम अधिकरण अनेक तो । त्रिविध २ वोसराविये ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुःकृत निन्दा एम करी ए, पाप करयां परिहार तो । शिवगति आराधन तणो ए, ए छठो अधिकार तो ॥ ९ ॥

॥ ढाल छठी ॥

। आदि तु जोइने आपणी । ए देशी ।

धन धन ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म । दान शीयल तप आदरी, टाल्यां दुष्कर्म ॥ ध० १ ॥ शेत्रुंजादिक तीर्थनी; जे कीधी यात्र । युगते जिनवर पूजीया, वली पोख्यां पात्र । ध० २ । पुस्तक ज्ञान लखावीयां, जिणहर जिणचैत्य । संघ चतुर्विध साचव्या, ए साते खेत्र । ध० ३ । पडिक्कमणां सुपरे करयां, अनुकम्पा दान । साधु सूरि उवज्झायने, दीधां वहुमान । ध० ४ । धर्मकारज अनुमोदीय, इम वारोवार । शिवगति आराधन तणो, ए सातमो अधिकार । ध० ५ । भाव भलो मन आणीये, चित्त आणी ठाम । समता भावे भावीये, ए आतमराम । ध० ६ । सुख दुःख कारण जीवने, कोई अवर न होय । कर्म आपजो आचर्यां, भोगवीये सोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुण्यनां काम । छार उपर

ते लीपुणुं, झांखर चित्राम ॥ ध० ॥ ८ ॥ भाव भली परे भावीये, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधन तणो, ए आठमो अधिकार । ध० ९ ।

॥ ढाल सातमी ॥

रेवतगिरि उपरे । ए देशी ।

हवे अवसर जाणी, करिये संलेषण सार । अणसण आदरिये, पच्चकखी चार आहार । ललुता सवि मूकी, छांडी ममता अंग । ए आतम खेले, समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति चारे कीधा, आहार अनन्त निःशंक । पण तृप्ति न पाम्यो, लालचीओ रंक । दुलहो ए वली, २अणसणनो परिणाम । एथी पामीजे, शिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥ धन्न धन्नो शालिभद्र, खन्धो मेघकुमार । अणसण आराधी, पाम्यो भवनो पार ॥ शिवमन्दिर जाशे करी एक अवतार । आराधन केरो ए नवमो अधिकार ॥३ ॥ दशमे अधिकारे, महामंत्र नवकार । मनथी नवि मूको, शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जाए, दुरगति दोष विकार । सुपरे ए समरो, चउदे पूरवनो सार ॥ ४ ॥ जन्मांतर जातां, जो पामे नवकार । तो पातक गाली, पामे सुर अवतार ॥ ए नव पद सरिखो मंत्र न को संसार । इह भव ने परभवे, सुख सम्पत्ति दातार ॥ ५ ॥ जुओ भीलने भीलडी राजा राणी थाय । नवपद महिमाथी, राजसिंह महाराय ॥ राणी रत्नवती

बेहु पाम्यां छे सुरभोग । एकभवथी लेशे, सिद्धवधू संयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने एवली, मंत्र फल्यो ततकाल । फणिधर फीटीने प्रगट थइ फुलमाल ॥ शिवकुमरे, योगी सोवन पुरुसो कीध । इम एणे मन्त्रे काज घणानां सिद्ध ॥ ७ ॥ ए दश अधिकारे, वीर जिणेसर भाख्यो । आराधन, केरो विधि जेणे चितमां राख्यो ॥ तेणे पाप पखाली, भव भव दुरे नाख्यो । जिन विनय करतां सुमति अमृत रस चाख्यो ॥ ८ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ नमो भवि भावशुं ए ॥ ए देशी ॥

सिद्धारथ राय कुलतिलो ए त्रिशला मात मल्हार तो । अवनीतले तुमे अवतर्या ए, करवा अम उपकार ॥ १ ॥ जयो जिन वीरजी ए, ॥ ए आंकणी ॥ मैं अपराध कर्या घणा ए, केहेतां न लहुं पार तो । तुम चरणे आव्या भणी ए, जो तारे तो तार ॥ २ ॥ ज० ॥ आश करीने आवीयो ए, तुम चरणे महाराज तो । आव्याने उवेखशो ए, तो किम रहेशे लाज ॥ ३ ॥ ज० ॥ कर्म अलूजण आकरां ए, जनम मरण जंजाल तो ॥ हुं छुं एहथी उभग्यो ए, छोडावो देवदयाल ॥ ४ ॥ ज०॥ आज मनोरथ मुज फल्या ए, नाठां दुःख दंदोल तो । तूठो जिन चोवीशमो ए, प्रगट्यो पुण्य कल्लोल ॥ ५ ॥ ज० ॥ भव भव

विनय तुमारडो ए, भाव भगति तुम पाय तो । देव दया करी दीजीये ए, बोध वीज सुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ इति

॥ कलश ॥

इय तरण तारण सुगति कारण, दुःख निवारण जग जयो । श्री वीर जिनवर चरण थुणतां, अधिक मन उलट थयो ॥ १ ॥ श्री विजयदेव सूरींद पटधर तीर्थ, जंगम इणी जगे । तप गच्छपति श्री विजयप्रभ सूरि, सूरितेजे झगमगे ॥ २ ॥ श्री हीरविजय सूरि शिष्य वाचक, कीर्त्तिविजय सुरु गुरु समो । तस शिष्य वाचक विनयविजये, थुण्यो जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ सय सत्तर संवत् उगण त्रीसे, रही रांदेर चोमास ए । विजय दशमी विजय कारण कियो गुण अभ्यास ए ॥ ४ ॥ नरभव आराधन सिद्धि साधन, सुकृत लील विलास ए । निर्जरा हेते तवन रचियुं, नामे पुण्य प्रकाश ए॥५॥ इति श्री आराधना पुण्यप्रकाशस्तवन

॥ पंचमी का छोटा स्तवन ॥

पञ्चमी तप तुमे करो रे प्राणी । निर्मल पामो ज्ञान रे ॥ पहिलुं ज्ञान ने पीछे किरिया । नहीं कोई ज्ञान समान रे ॥ पं० ॥ १॥ नन्दीसूत्र में ज्ञान वखाण्युं । ज्ञानना पञ्च प्रकार रे ॥ मति श्रुति अवधि ने मनःपर्यव । केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥ २॥ मति अठावीस श्रुत चउदे वीस अवधि छे असंख्य प्रकार रे ॥ दोय भेदे मनःपर्यव दाख्युं

केवल एक प्रकार रे ॥ पं० ॥ ३॥ चन्द्र सूरज ग्रह नक्षत्र तारा । तेहसु तेज आकाश रे ॥ केवल ज्ञान समो नहीं कोइ । लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद करीने । म्हारी पूरो उमेद रे ॥ समय सुन्दर कहे हु पण पामुं । ज्ञाननो पञ्चमो भेद रे ॥ पं० ॥ ५ ॥

ग्यारस का स्तवन ।

समवसरण बैठा भगवन्त । धर्म प्रकाशे श्रीअरिहन्त ॥ बारे परषद बैठी जुडी । मिगसिर सुदि इग्यारस रूडी ॥ १ ॥ मल्लिनाथना तीन कल्याण । जनम दीक्षा ने केवल ज्ञान ॥ अरदीक्षा लीधी रूवडी ॥ मि० ॥ २ ॥ नमिने उपनुं केवल ज्ञान । पांच कल्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवडी ॥ मि० ॥ ३ ॥ पांच भरत एवरत इमहीज । पांच कल्याणक हुवे तिमहीज ॥ पचासनी संख्या परगडी ॥ मि० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गिणतां एम । दोढ से कल्याणक थाये तेम ॥ कुण तिथि छे ए जेवडी ॥ मि० ॥ ५ ॥ अनन्त चोवीसी इण परे गिणो । लाभ अनन्त उपवास तणो ॥ ए तिथि सहु तिथि शिर राखडी ॥ मि० ॥ ६ ॥ मोनपणे रहा श्री मल्लिनाथ । एक दिवस संयम व्रत साथ ॥ मोन तणी परिव्रत इम पडी ॥ मि० ॥ ७ ॥ अठ पोहरी पोसो लीजिये । चोविहार विधिसुं कीजिये ॥ पर परमादन कीजे घडी ॥ मि० ॥

८ ॥ वरस इग्यारें कीजे उपवास । जाव जीव पण अधिक उल्हास ॥ ए विधि मोक्ष तणी पावडी । मि० ॥ ९ ॥ उजमणुं कीजे श्रीकार । ज्ञानना उपगरण इग्यार इग्यार ॥ करो काउस्सग्ग गुरु पाये पडी ॥ मि० ॥ १० ॥ देहरे स्नात्र कीजे वली । पोथी पूजीजे मन रली ॥ सुगतिपुरी कीजे ढूंकडी ॥ मि० ॥ ११ ॥ मोन इग्यारस महोटु प्रर्व आराध्यां सुख लहिये सर्व । व्रत पच्चकखाण करी आखडी ॥ मि० ॥ १२ ॥ जेसल सोल इक्यासी समे । कीधुं स्तवन सहु मनगमे ॥ समय सुन्दर कहे करो ध्यावडी मि.१३

॥ श्रीऋषभजिनेश्वर का स्तवन ॥

ऋषभ जिनेसर दिनकर साहिब । वीनतडी अवधारोरे (जगनातारो । मुझ तारो जो, कृपानिधी स्वामी) जग जसवाद प्रगट छे ताहरो । अविचल सुख दातारोरे ॥ज० मु० ॥ ११ ॥ निजगुण भोक्ता परगुण लोभा, आतम सक्ती जगायारे । ज० । अविनाशी अविचल अधिकारी, शिव-वाशी जिनराया रे ॥ ज० मु० ॥ २ ॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी, हुं तुम चरणे आयोरे । ज० । तुम रींझा-वण हेतु ततखिण, नाटक खेल मचायोरे ॥ ज० मु० ॥ ३ ॥ काल अनन्त रह्यो एकेंद्री, तरु साधारण पामी रे । ज० । वरस संख्याता वलि विकलेंद्री, वेष धर्या दुःख धामीरे ॥ ज० मु० ॥ ४ ॥ सुरनर तिरि वलि नरक तणी

गति पंचेन्द्रिपणो पायोरे । ज० । चोवीसे दण्डक मांहि भमतो, अवतो हुं पिण हार्योरे ॥ ज० मु० ॥ ५ ॥ भव-नाटक नितप्रति कर नवनव, हुं तुझ आगल नाच्योरे ।ज०। समरथ साहिब सुरतरु सरिखो, हुं अनिरखी तुझने जाच्यो रे ॥ ज० मु० ॥ ६ ॥ जो मुझ नाटक देखी रीझया, तो मुझ वंछित दीजेरे ॥ ज० ॥ जो नवि रींजा तो मुझ भासो चलि नाटक नवि कीजेरे ॥ ज० मु० ॥ ७ ॥ लालच धरि हुं सेवा सारुं, तुं दुखडा नवि कापेरे । ज० । दाता सेती सूंब भलेरो, वहिलो ऊत्तर आपेरे ॥ ज० मु० ॥ ८ ॥ तुझ सरिखा साहिब पिण म्हारे, जो नवि कारज सारेरे । ज० । तो मुझ करम तणी गति अवली, दोस न कोई तुमारो रे ॥ ज० मु० ॥ ९ ॥ दीनदयाल दयाकरी दीजे, शुद्ध समकित सहिनाणीरें । ज० । सुगुण सेवकना वांच्छित पूरो, तेहीज गुण मणिखाणी रे ॥ ज० मु० ॥ १० ॥ वर्ष अढारे गुणतालीसे, जेष्ठ सुदि सोमवारो रे ॥ ज० ॥ लालचन्द प्रतिपददिन भेट्या बीकानेर मझारो रे ॥ ज० मु० ॥ ११ ॥

॥ श्री सीमंधरस्वामिका स्तवन ॥

सकल संसार अवतार ए हुं गणुं, स्वामी सीमंधरा तुम्ह भगते भणुं । मेटवा पाप कमल भाव हियडे धणो, करिय सुपसाय जे वीनवुं ते सुणो ॥ १ ॥ तुम्ह शुं कूड

अरिहन्त थुं राखिये, जिस्यो अछे तिस्यो कर जोडि करि भाषिये । अति सबल हुम हिये मोह माय घणी, एक मन भगति किम करुं त्रिभुवन धणी ॥ २ ॥ जीव आरति करे नवनवी परिमडे, रीस चटको चढे लोभ वयरी नडे । नयण रस वयण रस कामरस रसीयो, तेम अरिहंत तुं हियडे नविवसीयो । ३ ॥ दिवस ने रात हियडे अनेरो धरुं मूढ मन रीसवा वलिय माया करुं । तुंहि अरिहन्त जाणे जिस्यो आचरुं, तेम कर जेम संसार सागर तरु ॥ ४ ॥ कम्मवसि सुख ने दुख जे हुं सहुं, मन तणी वात अरिहन्त किण कहुं । धरि दया करि मया देव करुणापरा दुःख हरि सुख करि स्वामी सीमन्धरा ॥ ५ ॥ जाण स-योग आगम वयण पण सुणुं धर्म न कराय प्रभु पाप पोते घणुं । एक अरिहन्त तुं देव बीजो नहीं एह आधार जग जाणजो अम्ह सही ॥ ६ ॥ घणा कणय माय पिय पुत्त परियण सहू, हस्यो बोल्यो रम्यो रंग राखे बहु । नमो २ जगगुरु, जीव जीवनधरा, तुम्ह समो कइ नहीं अवर वालहेसरा ॥ ७ ॥ अमियसम वाणि जाणुं सदा सांभलुं बार वर परषदा मांहि आवी मिलुं । चित्त जाणुं सदा सामि पायउ ल्युं, किम करुं ठाम पुण्डरगिरि वेगलुं ॥८॥ भोलोडा भगति तुं चित्त हारे किस्ये, पुन्य संयोग प्रभु दृष्टि गोचर हुस्ये । जेहन नामे मन वयण मन उल्हसे, दूर

सहु प, अच्छे, स्वामी सीमन्धर ते सहू तुम पछे। ध्यान करतां सुपनमांहि आवी मिले, देखिवेनखण तो चित्त आरति टले ॥ १० ॥ साम सोहामणा नाम मन गहगहे, तेहशुं नेह जेह वात तुम्ह जी करे। तुम्ह पाय भेटवा अति घणो टलवलुं, पंख जो होय तो सरिष आवो मिलुं ॥ ११ ॥ मेरुगिरि लेखणी आभ कागल करु क्षीरसागर तणां दूध खड़िया भरु। तुम्ह मिलवातणा स्वामी सन्देशडा इन्द्र पण लखिय न शके अछे एहवा ॥ १२ ॥ आपणे रंग भरि वात सुख जेटली ऊपजे स्वामी न कहाय सुख तेठली सुणो सीमन्धरा राज राजेसरा, लाडने कोड प्रभु पूरसवि माहरा ॥ १३ ॥ पुण्य भवि मोह वस नेह हुवे जेहने, स-सरिखे चित्ति संसार नित तेहने। जेहने भीर जिम कमल भमरो रमे, तेम अरिहन्त तु चित्त मोरे गमे ॥ ४१ ॥ खरे अरिहन्तनु ध्यान हियडे वस्युं बापडुं पाप हिव रहिय करसे किस्युं। याम जिम गरुड वर पंखी आवे वही तव-लिय सर्पनी वसति न शके रही ॥ १५ ॥ पाप में कज्ज सावज्ज सहु परिहरी, स्वामी सीमन्धर तुम्ह पय अणुसरी शुद्ध चारित्र कहिये प्रभु पालशुं, दुःख भण्डार संसार भय टालशुं ॥ १६ ॥ तुम्ह हुं दास हुं तुम्ह सेवक सही, एह में अरिहन्त आगल कही। एवडी माहरी भगति जाणी भी हूकडा जेम हियडे वसे ॥ १ ॥ वलमलो एणि संसार

करी, आपजो वापजी सार केवल सही ॥ १७ ॥ कलश ॥ एम ऋद्धि वृद्धि समृद्धि कारण, दुरित वारण सुख करा । उवज्झाय वर श्री भक्ति लाभे, थुण्यो श्री सीमन्धरो । जय जयो जगगुरु जीव जीवन करी स्वामी मया घणी । कर जोडी वलि वलि वीनवुं प्रभु पूर आशा मन तणी ॥ १८ ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

अमल कमल जिन धवल विराजे, गाजे गोडी पास ॥ सेवा सारे जेहनी, सुर नर मन धरिय उल्लास ॥ १ ॥ सोभागी साहिब मेरा वे, अरिहां, सुग्यानी पास जिणंदा वे ॥ आंकणी ॥ सुंदर सूरति मूरति सोहे, मोमन अधिक सुहाय ॥ पलक पलक में पेखतां मानुं, नव नवि छबिय देखाय ॥ २ ॥ सोभा ॥ अ० ॥ भव दुःख भञ्जन जन-मनरंजन, खञ्जन नयनसुं रंग ॥ श्रवण सुणी गुण ताहरा, माहरा विकस्या अंगो अंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥ दूर थकी हुं आयो वहिने, देव लह्यो दीदार ॥ मारथियां पहिडे नहिं, साहिबा एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सो० ॥ अ० ॥ प्रभु मुखचन्द विलोकित हरखित, नाचत नयन चकोर ॥ कमल हसे रवि देखिने, जिम जलधर आगम मोर ॥ ५ ॥ सो० ॥ अ० ॥ किसके हरिहर किसके ब्रह्मा, किसके दिल में राम ॥ मेरे मन में तुं वसे, साहिब शिवसुखनोही ठाम ॥ सो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ माता वामा धन्य पिता जसु श्री

अश्वसेन नरेश ॥ जनमपुरी वणारसी, धन धन काशीनो देश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ७ ॥ सम्वत् सतरेशे बावीशें, वदि वैसाख वखाण ॥ आठम दिन भले भावथुं, मारी जात्र चढी परिणाम ॥ सो० ॥ अ० ॥ ८ ॥ सान्निध्यकारी विघ्ननिवारी परउपगारी पास ॥ श्री जिनचन्द जूहारतां, मोरी सफल फली सहु आश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ९ ॥ इति ॥

अथ वीस स्थानक गुणना और काउसग्ग का प्रमाण लिखते हैं ।

(णमो अरिहन्ताणं) २००० गुणना लोगस्स १२ का काउसग्ग ॥ १ ॥ (णमो सिद्धाणं) २०००, गुणना लोगस्स, १५ का काउसग्ग ॥ २ ॥ (णमो पवयणस्स) २००० गुणना लोगस्स ३ का काउसग्ग ॥ ३ ॥ (णमो आयरिआणं) दो हजार गुणना लोगस्स ३६ का काउसग्ग (णमो थेराणं) दो हजार गुणना लोगस्स १५ का काउसग्ग ॥ ४ ॥ (णमो उवज्झायाणं) दो हजार गुणना लोगस्स २५ का काउसग्ग ॥ ५ ॥ (णमो लोए सव्व साहूणं) दो हजार गुणना लोगस्स २७ का काउसग्ग ॥ ६ ॥ (णमो नाणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग ॥ ८ ॥ (णमो दन्सणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १७ का काउसग्ग ॥ ८ ॥ (णमो विणयसम्पणाणं) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग

। ९ ॥ (णमो चारित्तस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ६ का काउसग्ग ॥ १० ॥ (णमो वम्भव्वय धारीणं) दो हजार गुणना लोगस्स ९ का काउसग्ग ॥११॥ (णमो किरिआणं) दो हजार गुणना लोगस्स २५ का काउसग्ग ॥ १२ ॥ [णमो तवस्सीणं] दो हजार गुणना लोगस्स १५ का काउसग्ग ॥१३॥ [णमो गोयमस्स] दो हजार गुणना लोगस्स १७ का काउसग्ग ॥ १४ ॥ (णमो जिणाणं) दो हजार गुणना लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १५ ॥ (णमो चणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स १२ का काउसग्ग ॥ १६ ॥ (णमो नाणस्स) दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग ॥ १७ ॥ [णमो सुअनाणस्स] दो हजार गुणनो लोगस्स १० का काउसग्ग ॥ १८ ॥ [णमो तित्थस्स] दो हजार गुणना लोगस्स ५ का काउसग्ग करे ॥ १९ ॥ इति बीस स्थानक गुणना सम्पूर्ण ॥

अथ रोहणीतप स्तवन लिख्यते ।

शासण देवत सामणी ए मुझ सानिध कीजे भुलो, अक्षर भगति भणी समझाई दीजे ॥ मोटो तप रोहण तणो जिणरा गुण गाउं जिम सुख सोहग सम्पदा ए वंछित फल पाउं ॥ १ ॥ दक्षिण भरते अंगदेश छे चम्पानगरी, मघवा राजा राज्य करे तिण जीता वयरी । पाटतणी राणी

रूवडी ए लखमी इण नामे, आठ पूत्र जाया जिणें ए मन में सुख पामे ॥ २ ॥ रोहिणी नामे कन्यका ए सबकुं सुख कारी आठां पूत्रां ऊपरां ए तिण लागे प्यारी ॥ वाधे चन्द्र तणी कला ए जिम पख ऊजवाले, तिम ते कुमरी धाय माय पांचे प्रतिपाले ॥ ३ ॥ कुमरी रूपे रूवडी ए घर अंगण बेटी दीठी राजा खेलती ए तिण चिन्ता पेठी तीन भुवन विच एहवी ए नहीं दूजी नारी, रंभा पउमा गवर गंग इण आगल हारी ॥ ४ ॥ पुरुष न दीपे कोई इसो जिणनें परणाउं, आंख्या आगल साल वधे तिण चयन न पाउं ॥ देश २ ना राजवी ए ततखिण तेडाया, सबल सजाई साथ करी नरपति पिण आया ॥५॥ वीतशोक राजातणो ए छे कुमर सोभागी, कन्याकेरी आंखडी ए तिणसेती लागी ॥ ऊभा देखे सकल लोक चढिया केइ पाला, चित्रसेनरे कण्ठ ठवी कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अने देवांगना ए जपे जेजेकार रलियांयत थयो देखने ए सारो संसार ॥ कर जोडी कहे लोक वखत कन्यारो जाडो वीतशोकनो कुमर थयो सिर ऊपर लाडो ॥ ७ ॥ इम विवाह थयो भलो ए दीया दान अपार ॥ घर आया परणी करी ए हरख्यो परिवार ॥ वीतशोक निज पूत्र भणी अपणो पाट दीधो, आपण सञ्जम आदरी ए जग में जस लीधो ॥ ८ ॥ [ढाल-प्रभु प्रणमुं रे पास जिणेसर थंभणो ॥ ए

देशी] ॥ तिण नगरी रे चित्रशेन राजा थयो, सुख मांही रे केतलो काल वही गयो । इण अवसर रे आठ पूत्र हुवा भला चढते पख रे चन्द्र जिसी चढती कला ॥ [उल्लालो] चढती कला हिव राय बैठो पास बैठी रोहणी, सातमो भूमी कंतसेती करे कीडा अतिघणी ॥ आठमो बालक गोद ऊपर रंगसुं राणी लियो, पूत्रने प्रीतम आंख आगल देखतां हरखे हियो ॥ ९ ॥ [चाल] इक कामण हे गोख चढी द्रष्टे पडी, शिर पीटे रे दीन स्वरे रोवे खडी ॥ बूढा पण रे मन गमतो बालक मूओ, हुं एकज रे तिण अधिकारो दुख हुउ ॥ [उल्लालो] दुख हुवो देखी रोहणी हिव कहे इम प्रीतम भणी ए, नार नाचे अने कुदे कहो किम मोटा धणी ॥ एहवो नाटक आज तांइम् में कदे देख्यो नही, मुझने तमासो अने हासो देखतां आवे सही ॥ १० ॥ [चाल] इण वचने रे रिसाणो राजा कहे, तूं पापण रे परतणी पीडा नवि लहे ॥ ए दुखणी रे पूत्र मुए तडपड करे, जव वीतेरे वेदना जाणीजे तरे ॥ (उल्लालो] जाणे तरे तुं वात दुखनी गरवगहली कामनी, इम कही राजा हाथ झाल्यो तेहना बालक भणी ॥ सातमा भूंयथी तलै नाख्यो तिसै हाहारव थयो, रोहणी हंसती कहे प्रीतम पूत्र नीचे किम गयो ॥ ११ ॥ (चाल) हिव राजा रे पूत्र तणे शोके करी, थयो मुरछित रे रोवे अति आं-

ल्यां भरी ॥ पडतो सुत रे सासण देवत झालियो, कंचण मयरे सिंहासण बेसारियो ॥ उल्लालो ॥ बेसारियो कर जोड आगे करे नाटक देवता, गोदे खिलावे केइ हसावे पायपंकज सेववा ॥ ऊपनो भूपतने अचम्भो देख ए कारण किसो जो कोइ ग्यानी गुरु पधारे पूछिये सांसो इसो ॥ १२ ॥ चाल ॥ चिन्तवतां रे चारभतिया आया जिसे, राजा पिण रे पुहतो चन्दणने विसे ॥ सुण देसना रे पूछे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वामी रे पूरवभव बाल कवणो ॥ उल्लालो ॥ बालककवणो भव भूप पूछे कहे इण पर केवली रोहणी राणीनो भवांतर अने राजाहो वली । श्रीगुरु पासे पाछले भव रोहणी तप आदर्यो, तपतणे समते साधुमगते तुम्ह भवसायर तर्यो ॥ १३ ॥ चाल ॥ कहे राजा रे रोहिणि तप किम कीजिये, विधि भाखो रे जिम तुम पासे लीजिये ॥ तव मुनिवर रे विधि रोहणीरा तपतणी, इम जम्पे रे चित्रसेन राजाभणी । उल्लालो राजाभणी विध एह जम्पे चन्द्र रोहणतप आविये उपवास कीजे लाभ लीजे भली भावना भाविये ॥ बारमा जिनवर तणी प्रतिमा पूजिये मनरंगसु, इम सात वरषा लगे कीजे तजी आलस अंगसु ॥ १४ ॥ ढाल- वीर सुणो मोरी वीनती ॥ ए देशी ॥ तप करियें रोहणीतणो वलि करिये हो ऊजमणो एम तप करतां पातिक टले, तिण कीजे हो तप सेती प्रेम ॥ त० १५ ॥ देव जुहारी देहरे, तिण आगे हो कीजे वृक्ष

अशोक ॥ गुणनो बारम जिनतणो, भलो नेवज हो धरिये सहु थोक ॥ त० १६ ॥ केसर चन्दन चरचिये, कीजे आगे हो आठे मङ्गलीक ॥ विधसु पुस्तक पूजिये, ते पामे हो शिवपुर तहतिक ॥ त० १७ ॥ सेवा कीजे साधूनी, वलि दीजे हो मुंह माग्या दान ॥ सन्तोषीजे साहमी मनरंगे हो कर कर पकवान ॥ त० १८ ॥ पाटी पोथी पून्छना, मिस लेखण हो झिलमिल सुजगीस, नवकरवाली वीटणा, गुरु आगे हो धरो सत्ताईस ॥ त० १९ ॥ चोथो व्रत पिण तिण दिने, इम पाले हो मन आण विवेक ॥ इण विध रोहणि आदरे, ते पामे हो आनन्द अनेक ॥ त० २० ॥ ढाल -- धरम करो जिनवर तणो ॥ ए देशी ॥ इम महिमा रोहण-तणी श्री ज्ञानी गुरु परकासे रे ॥ चित्रसेन ने रोहणी, वासुपुज्य तीर्थंकर पासे रे ॥ इ० २१ ॥ इण परि रोहण आदरो, ऊपर ऊजमणो कीधो रे ॥ चित्रसेन ने रोहणि मन सूधे सञ्जम लीधो रे ॥ इ० २२ ॥ आठे पुत्रे आदरी दिख्या बारम जिन आगे रे ॥ वलि नानाविध तप तपै धरमतणी मति जागे रे ॥ इ० २३ ॥ करि अणसण आराधन लहि केवल शिवपद पाया रे ॥ जिन वाणी आणी हिये, मझ चरणां चित्त लाया रे ॥ इ० २४ ॥ मनमोहन महिमा नीलो, में तविये शिवपुर गामी रे ॥ मन मान्या साहिब तणी हिव पुन्यें सेवा पामी रे ॥ इ० २५ ॥ कलश

॥ इम गगन दुग मुनि चन्द्र वरसे ॥ १७२० ॥ चोथ श्रावण सुदि भली ॥ ये कही रोहण तणी महिमा सुगुरु सुखजिम सांभली ॥ वासुपुज्य अमने थया सुप्रशन चित्तनी चिन्ता टली श्रीसार जिनगुण गावतां हिव सकल मन अस्या फली ॥ २६ ॥ इति रोहणी तप स्तवन संपूर्णम् ॥

मुक्ति जाणे की डिगरी ॥

दूहा ॥ तीर्थंकर महावीरने, कौशल गणधर साज । कानून प्ररूपा हे दया, सब जीवन हित काज ॥ १ ॥ दान शील तप भावना, असल खुलासा सार, जिण पुरषां धारण किया, पोहच्या मुगति मझार ॥ २ ॥ चवदे सहस साधु हुआ, आर्या छत्तीस हजार, लाखां श्रावक श्राविका पाया भव जल पार ॥ ३ ॥ (चाल--हीररांझेके ख्याल की) मेरी अदालत प्रभुजी कीजीये । जिन सासन नायक, मुगती जाण्वे की डिगरी दीजिये ॥ जिन० ॥ खुद चेतन मुदइ बनाहे, आठुं करम मुदाला ॥ दावा रसना मुगति मारग का धोखा दे जाय टाला जी ॥ जि० १ ॥ तप कागद इष्टांम लीया तलवाणा क्षमा विचारी ॥ सिझाय ध्यान मजबून बणाकर, अरज आन गुजारी जी ॥ जि० २ ॥ मैं जाता था मुक्तिमार्ग में करमों ने आघेरा ॥ धोखा देकर राह भुलाया, लूट लिया सब डेरा जी ॥ जि० ३ ॥ बहुत खराब किया करमों ने, चोरासी के मांहीं ॥ दुःख

अनन्ता पाया येने, अन्त पार कछु नांही जी ॥ जि० ४ ॥ सच्चे मिले वकील कानूनी, पञ्च महाव्रतधारी ॥ सूत्र देख मसोदा कीना तब में अरजी डारी जी ॥ जि० ५ ॥पांचे सुमती तीन गुप्ति ए, आठुं गवा बुलावो ॥ शील असेसर बडा चोधरी, उसकू पूछ मंगावो जी ॥ जि० ६ ॥ अरजी गुजरी चेतन तेरी, हूआ सफीना जारी ॥ हाजर आवो जुआब लिखावो, लावो साबूती सारी जी ॥ जि० ७ ॥ आठुं मुदा ले हाजर आये मोह मुगत्यार बुलाये ॥ च्यार कषायरु आठे मदकुं, साथ गवाहीमें लाये जी ॥ जि० ८॥ (टेर मुद्दायले की) ॥ जिन शासन नायक, झूठा दावा है चेतन जीवका, जि० ॥ हमने नहीं बहकाया इसकू, ए हमरे घर आया ॥ करजा लेकर हमसे खाया, ऐसा फरेब मचायाजी ॥ जि० ९ ॥ विषय भोग में रमिया चेतन, घाटा नफा न जाणा । करजदार जब लारे लागा, तब लागा पिस्तानाजी ॥ जि० १० ॥हाजर खडे गवाह हमारे पूछिये हाल जु सारा । बिनालियां करजा चेतन सें, कैसे करें किनारा जी ॥ जि० ११ ॥ (टेर मुद्दइ की) चेतन कहे सतावी मांही, सुण शासन सिरदार । इमानदार है गवाह हमारे, जाणे सब संसारजी ॥ जि० मे० १२ ॥ मैं चेतन अनाथ प्रभुजी, करम फरेबी भारी। जीव अनन्ते राह चलत कू, लूट चोरासी में डारी जी ॥ जि० मे० १३ ॥

बड़े २ पण्डित इन लूटे, एसादम बतलाया ॥ धरम कहा उर पाप कराया, एमा करज चढाया जी ॥ जि० मे० ॥ १४ ॥ असल एन सरकारी सूत्र में मन मत अर्थ घसाया ॥ धर्म एन में हिंसा कहकर, उलटा जीव फसाया जी ॥ जि० मे० १५ ॥ भेद अर्थ से वेद पढाया हिंसक यज्ञ बताया ॥ इसके फलसें स्वर्ग दिखाकर एमा मुझे संताया जी, ॥ जि० मे० १६ ॥ हिंसा मांहे धर्म बताया तपस्या सेती डिगाया, इन्द्रिय सुख में मगन करीने, झूठा जाल फेलाया जी ॥ जि० मे० १७ ॥ एसा करो इन्साफ प्रभु जी, अपील होण न पावे ॥ हकरसी चेतन की होवे जनम मरण मिट जावे जी ॥ जि० मे० १८ ॥ ग्यान दर्शन करी मुनसफी दोनों को समझाया ॥ चेतनकी डिगरी कर दीनी करमूं का करज बताया जी ॥ जि० मे० १९ ॥ असल करज जो था कर्मो का, चेतन सेती दिलाया, जि० ॥ सुध संजम जब करी जमानत, चेतन डिगरी पाई ॥ फागुण सुदि दशमी दिन मंगल, सन् उगणीस अठाई जी, ॥ जि० मे० २० ॥ इति ॥

अथ परमात्मास्तोत्र ।

शिवं शुद्ध बुद्धं परं विश्वनाथं नबन्धु नकर्म नकर्त्ता । नअंगं न संगं नइच्छा नकामं । चिदानन्दरूपं नमोवीतरागं ॥ १ ॥ नबन्धो नमोक्षो नरागादिलोकं । नजोगं नभोगं

नव्याधिर्नशोकं । क्रोधं नमानं नमाया नलोभं ॥ चि २ ॥ नहस्तो नपादो नघ्राणं नजिह्वा । नचक्षुर्नकर्णं नवक्त्रं न निद्रा । नस्वादं नखेदं नवर्णं नमुद्रा ॥ चि० ॥ ३ ॥ न जन्मं नमृत्यु नमोहं नचिन्ता । नक्षुल्लद् नभीतं नकुष्यं नतुंदा । नस्वामी नभृत्यं न देवो नमर्त्याँ । चि० ॥ त्रिदंडे त्रिखण्डे हरे विश्वव्यापं । हृषीकेश विध्वंशकर्म्मारिजाल । नपुण्यं नपापं न अक्ष्या नमाणं । चि० ॥ ५ ॥ नबाल्यं न वृद्धं नविद्धि भमुढा । नछेद्यं नभेद्यं नमूर्तिर्नमीहा । नकृष्णं नशुक्लं नमोहं नतन्द्रा । चि० ॥ ६ ॥ नआद्यं नमध्यं नमन्त्यं नमन्या । नद्रव्यं नक्षेत्रं नदृष्टो नमव्या । नगुर्वो नशिष्यो न आद्यो नदीनं ॥ चि० ॥ ७ ॥ इन्दज्ञानरूपं स्वयंतत्ववेदी । नपूर्णा नशून्यं सचैतन्यरूपं । अन्योभिभिणं नपरमार्थमेकं ॥ चि० ॥ ८ ॥ आत्मा शमगुणाकरं गुणनिधि श्चैतन्यरत्नाकरं । सर्वेभूतगतागते सुखदुख ज्ञातात्वया सर्वगं । त्रैलोक्याधिपति स्वयंस्वमनसाध्यायति योगेश्वराः वन्दे तंहरिवंश हर्षहृदयं श्रीमान भूहच्युतः ॥ ९ ॥ इति श्रीपरमात्मास्तोत्र ॥

अथ अठाईस लब्धी तप स्तवन लि० ।

दोहा

प्रणमुं प्रथम जिनेसरु । शुद्धमनें सुखकार । लबधि अठावीस जिन कही । आगमनें अधिकार ॥ १ ॥ प्रण्म

व्याकरणे प्रगट भगवती सुत्रमझार । पन्नावण आवश्य के चारू लब्धि विचार ॥ २ ॥ आंबिल तप कर ऊपजै । लवधां अट्ठावीस । एहवि परगट अरथशुं । सांभलज्यो सुजगीस ॥ ३ ॥ (ढाल) ॥ सफल संसारनी ॥ अनुक्रमे हेव अधिकार गाथा तणें । लवधिना नाम परिणांम सरिषा भणें रोग सहु जाइ जसु अंग फरस्यां सही । प्रथम ते लवधि छे नाम आमो सही ॥ ४ ॥ जासु मल मुत्र उषध समा जाणीये । बीय वप्पासेही लवधि वखाणिये । श्लेषम उषभ सारिखो जेहनो । तीजी खेलोसही नाम छे तेह नो ॥५॥ तेहनो मैलथी कोढ दुरे हुवे । चोथी जल्लोसही नाम तेह नो ठवे । केश नख रोम सहु अंग फरसे सही । रहे नहीं रोग सव्वोसही ते कही॥६॥ एक इन्द्रिय करीपांच इंद्रिय तणा भेद जाणें तिका नाम सम्भिन्नणा वरतु रूपी सहु जांणिये जिण करी । सातमी लवधि ते अवधि ग्यानें करी ॥ ७ ॥ (ढाल) आव्यो तिहां नरहर (ए चाल) ॥ हिव आंगुल अढीये ऊणो मांनुष क्षेत्र । संग्या पञ्चेंद्रीतिहां जेवसय विचित्र । तसु मननो चिंतित जांणें थूल प्रकार । तेरूजुमति नांमे अट्ठम लवधि विचार ॥ ८ ॥ सम्पूरण मानुष क्षेत्रें संज्ञावन्त । पञ्चेंद्रिय जे छे तसु मन वातां तन्त । सूखम परजायें जाणें सहु परिणाम । ए ननमी कहीये विपुलमती सुभ नाम ॥ ९ ॥ जिण लवधि प्रभावे उडी जाय आकाश

ते जङ्घा विझा चारण लबधि मकाशं ।; जसु वचन सरापे खिणमें खेरुंथाय । ए लब्ध इग्यारमी आसी विस कह-वाय ॥ १० ॥ सहु सुखम वादर देखे लोकालोक । ते केवल लवधी वारमिये सहु थोक । गणधर पद लहीये तेरम लवधि प्रमाण । चवदम लबधे करी चवदे पूरब जाण ॥ ११ ॥ तीर्थंकर पदवी पांमें पनरमी लबधि । सो-लम सुखदाई चक्रवर्त्ति पदरिद्धि । बलदेव तणो पद लहिये सतरमी सार । अट्ठारमी आखा वासुदेव विस्तार; ॥१२॥ मिसरी घृत खीरे मेल्या जेह सवाद । एहवी लहे वाणी उगणीसम परसाद । भणीयो नविभूले सूत्र अरथ सुविचार ते कुष्टिक बुद्धी वीसम लबधि विचार ॥ १३ ॥ एकै पद भणीये आवे पद लख कोड । इक बीसमी लवधि पायाणु सारणी जोड । एकै अरथै करी उपजे अरथ अनेक । बावी-सम कहीये बीज बुद्धि सुविवेक ॥ १४ ॥ ढाल ॥ कपूर हुवे अति उजलो रे ॥ ए चाल ॥ सोल्ह देश; तणी सही रे ! दाहक सगति वखाण । तेह लबधि तेवीसमीरे । तेजो-लेश्या जाण ।' १५ ॥ चतुरनर सुणज्यो ए सुविचार ॥ आगममें अधिकार । वारू लवधि विचार ॥ च० ॥ चव-दह पूरव धर मुनिवरूरे । उपजन्ता संदेह । रूप नवो रचि मोकले रे । लब्धि आहारक एह ॥ च० ॥ १६ ॥ तेजो लेश्या अगनिनें रे । उपशम वा जळधार । मोटी लबधि

पचवीश मीर । शीतो लेश्या जांण ॥ च० ॥ १७ ॥ जेण सगति सुं विकुरवैंरे । विविध प्रकारे रूप सदुगुरु कहे छाव्रीसमीरे । वेक्रिय लवधि अनूप ॥ च० ॥ १८ ॥ एकण पात्रे आदमीरे । जीमावे केइ लाख । तेह अक्षीण महाणसीरे । सत्तावीसमी साख ॥ च० ॥ १९ ॥ चूरे सेन चक्कोसनी रे । संघादिकनें काम । तेह पुलाक लवधि कही रे । अट्ठावीसमी नाम ॥ च० ॥ २० ॥ तेज शीत लेष्या विहुंरे तेम पुलाक विचार । भगति सूत्र में भाषियोरे । ए त्रिहुंनो अधिकार ॥ च० ॥ २१ ॥ पन्नवणा आहारनी रे । कलप सूत्र गणधार । तीन तीन इक इक मिली रे । वारू आठ विचार ॥ च० ॥ २२ ॥ प्रष्ण व्याकरणें कही रे वाकी लवधां वीश । सांभलतां सुख उपजे रे । दोलत हुवे निशि दीश ॥ च० ॥ २३ ॥ कलश ॥ संवत्त सतरेसे छवीसे मेरु तेरस दिन भले । श्रीनगर सुख कर लूणकरणसर आदि जिन सुपसावले । वाचनां चारज सुगुरु सांनिध विजय हरष विलासए । श्रीधर्म वर्द्धन स्तवन भणतां प्रगट ज्ञान प्रकाश ए ॥ २४ ॥ इति ॥ २८ लवधि स्तवनं ॥

अथ शीता सिझाय ॥ लि०

जल जलती मिलती घणी रे ॥ जालो जाल अपाररे सुजाण शीता । जाणें केसू फूलिया रे लाल राता खेर अङ्गाररे ॥ सु० ॥ १ ॥ धीज करे सीतासती रे लाल । सील

तणें परिमाणरे॥ सु० ॥लखमण राम खुशीथयारे लाल। निरखे राणो राणरे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलेंरे लाल। पावक पासें आयरे ॥ सु० ॥ ऊभी बाणें सुरंगनारे लाल। अनुपम रूप दिखायरे॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलिया घणारे लाल। ऊभा करे हाथ हाय रे ॥ सु० ॥ भस्म हुसी इण आगमेंरे लाल। राम करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव विन बांछयो हुवेरे लाल सुपनेंही हींज कोयरे ॥ तो मुझ अगनि मजालज्योरे लाल नहीं तो पाणि होयरे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कही पेठी आग-मेंरें लाल। तुरत अगनि थयो नीररे ॥ सु० ॥ जाणें द्रह जलसुं भऱ्योरे लाल झीले परम सुधीररें ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुशम वरपा करेरें लाल। एह सती सिरदाररे ॥सु० शीता धीजें उतगीरे लाल।साख भरे संसाररे ॥सु०७ ॥ रलियायत सहुको थयारे लाल। सगले थया उछरंगरे ॥ सु० । लखमण राम खुशी थयारे लाल शीता शील सुरंगरे। सु० ८। जगमांहे जस जेहनोरे लाल। अविचल शील कहायरे। सु। कहे जिन हरष सती तणारे लाल। नित प्रणमी जैं पोयरे॥ सु० ९ ॥ इति शीतासती सिज्झाय समाप्तम् ॥

॥ अथ बारह भावना ॥

॥ दोहा ॥

पहिली अनित्य भावनाः—

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार ।
मरना सबको एक दिन, अपनी अपनी बार ॥ १ ॥

दूसरी अशरण भावनाः—

दल बल देई देवता, मात पिता परिवार ।
मरती विरियां जीवको, कोई न राखनहार ॥ २ ॥

तीसरी संसार भावनाः—

दाम विना निर्धन दुखी, तृष्णावश धनवान ।
कहूँ न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान ॥ ३ ॥

चौथी एकत्त्व भावनाः—

आप अकेला अवतरे, मरे अकेला होय ।
यों कबहूं या जीवको, साथी सगा न कोय ॥ ४ ॥

पांचमी अन्यत्त्व भावनाः—

जहां देह अपनी नहीं, तहां न अपना कोय ।
घर संपत्ति पर प्रकट ये, पर है परिजन लोय ॥ ५ ॥

छट्ठी अशुचि भावनाः—

दिपै चाम चादर मढी, हाड पींजरा देह ।
भीतर या सम जगत में, और नहीं घिन गेह ॥ ६ ॥

॥ सोरठा ॥

सातमी आश्रव भावनाः—

मोह नींद के जोर, जगवासी घूमें सदा ।
कर्म चोर चहूं ओर, सरवस लूटे सुधि नहीं ॥ ७ ॥

आठमी संवर भावनाः—

सत गुरु देय जगाय, मोह नींद जब उपशमे ।
तब कुछ बनै उपाय, कर्म चोर आवत रुके । ८ ।

॥ दोहा ॥

नवमी निर्जरा भावनाः—

ज्ञान दीप तप तेल भर, घर शोधे भ्रम छोर ।
या विधि विन निकसे नहीं , पैठे पूरव चोर ॥
पञ्च महाव्रत संचरण, समिति पञ्च प्रकार ।
प्रवल पञ्च इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार ॥९॥

दशमी लोक संठाण भावनाः—

चोदह राजु उतङ्ग नभ, लोक पुरुष संठान ।
तामें जीव अनादिते, भरमत है बिन ज्ञान ॥१०॥

इग्यारमी वोधिवीज भावनाः—

धन तन कञ्चन राजसुख, सबहि सुलभ कर जान ।
दुर्लभ है संसार में, एक यथारत ज्ञान ॥११॥

वारमी धर्म भावनाः—

जाचें सुरतरु देय सुख, चिन्तत चिन्ता रेन ।
विन जाचे बिन चिन्तवे, धर्म सकल सुख दैन ॥१२॥

॥ अथ कर्म सिझाय लिख्यते ॥

देव दानव तीर्थंकर गणधर । हरिहर नरवर सवला कर्म प्रमाणें सुख दुख पाम्यां । सबल हुआ महा निवला रे प्राणी । कर्म्म समो नहीं कोई ॥१॥ आदीसरजीनें कर्म अटान्या । वरस दिवस रह्या भूखा । वीरनें वारे वरस दुख दीधा । उपना ब्राह्मणी कूखेरे ॥ प्रा० ॥ २ क० ॥ साठ साहस सुत मान्या एकणदिन । जोध जुवान नर जैसा । सागर हुवो महापुत्रनो दुखियो । कर्म्म तणा फल ऐसारे ॥ प्रा० ३ क० ॥ छत्रीस सहस देसांरो साहिव । चक्री सनत कुमार । सोले रोग शरीरमें उपना । कर्म कीयो तनु छाररे ॥ प्रा० ४ क० ॥ कर्म्म हवाल कीया हरीचन्दनें वेची सुतारा राणी । बार वरस लगमाथे आण्यो । नीच तणें घर पाणीरे ॥ प्रा० ५ क० ॥ दधिवाहन राजानी वेटी । चावी चन्दवाला । चोपदज्यं चोहटा में वेची । कर्म तणा ए चालारे ॥ प्रा० ६ क० ॥ संभूम नामें आठमो चक्री । कर्में सायर नाख्यो । सोले सहस जक्ष ऊभा देखे पिण किणही नविराख्योरे ॥ प्रा० ७ क० ॥ ब्रह्मदत्त नामें वारमो चक्री । कर्में कीधो आंधो । इमजाणी प्राणी बेकांइ । कर्म्म कोइ मति वांधोरे ॥ प्रा० ८ क० ॥ छप्पन कोड यादवनो साहिव । कृष्ण महाबल जाणी । अटवी मांहि मुंवो एक लडो । विल २ करतो पाणी रे ॥ प्रा०

९ क० ॥ पांडव पांच महा झूझारा । हारी द्रोपद नारी । बारे वरस लग वन रड वडिया । भमिया जेम भीखयारीरे ॥ प्रा १० क० ॥ वीस भुजा दश मस्तक हुंता । लखमण रावण मार्‍यो । एक लडे जग सहु नर जीत्यो ते पिण कर्म्मसुं हार्‍योरे ॥ प्रा० ११ क० ॥ लखमण महा वलवन्ता । अरु सतवन्ती शीता । कर्म प्रमाणे सुख दुख पाम्या वीतक वहु तमवीतारे ॥ प्रा० १२ क० ॥ समकितधारी श्रेणिक राजा । वेटे बांध्यो मुसकै । धरमी नरनें करम धकायो । करम सुं जोर न किसका रे ॥ प्रा० १३ क० ॥ सतिय सिरोमणी द्रोपदा कहीये जिन सम अवरन कोई । पांच पुरुपनी हुइ ते नारी । पूरव कर्म कमाईरे ॥ प्रा० १४ क० ॥ आभानगरी तो जे स्वामी । साचो राजा चंद सांई कीधो पंखी कूकडो । कर्म नाख्यो ते फन्दरे ॥ प्रा० १५ क० ॥ इशर देव पारवती नारी करता पुरुष कहावे अहिनिस महिल मसाणमें बासो । भिख्या भोजन खावेरे ॥ प्रा० १६ क० ॥ सहस किरण सूरज परितापी । रात दिवस रहे अटतो । सोल कला ससिधर जगचानो । दिन दिन जायें घटतोरे ॥ प्रा० १७ क० ॥ इम अनेक खंड्या नर करमें । भांज्या ते पिण साजा । ऋद्धि हरष करजोडी नें वीनवे नमो २ करम महाराजारे ॥ प्रा० १८ क० ॥

इति श्री कर्मसिझाय संपूर्णम् ॥

अथ वैराग्य सिझाय ।लि० ।

भूलो मन भमरा कांइ भमें । भमियो दिवसनें रात । माया रो बांध्यो प्राणीयो । भमियो परमल जात ॥ १ ॥ भू० ॥ कुम्भ काचो काया कारमी । जेहना करोरे जतन्न । विणसतां वार लागे नहीं । निरमल राखोरे मन्न ॥ २ भू० ॥ केहना छोरू केहनां वाछरू । केहनां मायनें वाप ।; प्राणी जास्ये एकलो । साथे पुण्यनें. पाप ॥ ३ भू० ॥ आस्या-डूङ्गर जेवडी मरवो पगलांरे हेठ । धन सञ्ची संच कांइ करो। करवो देवनी वेठ ॥ ४ भू० ॥ लखपति छत्रपति सबगए गएलाखों के लाख । गरभ करीरे गोखेवेसता । भए जल वल राख ॥ ५ भू० ॥ भवसायर जल दुख भर्‍यो । तिर वोछेरे जेंह । विचमें बीह सबलो अछे । करमें वायनें मेह ॥ ६ भू० ॥ उलट नहीं मारग चालवो । जायवो पहिलें रे पार । आगलि नहीं हटवाणियो । संवल लेज्योरे साथ ॥ ७ भू० ॥ मूरख कहे धन माहरो । धन केहनो न थाय वस्त्र विना जाय पोढवो । लखरति लाकडा मांय॥८ भू०॥ मह्मंद कहे वस्तु वोरिये । जे कुछ आवेरे साथ । अपणो लाभ उवारीये । लेखो साहिब हाथ ॥ ९ भू० ॥ इति ॥

वीरं । देवं । नित्यं । वन्दे ॥ १ ॥ जैनाः । पादा । युष्मान् । पांतु ॥ २ ॥ जैनं । वाक्यं । भूयां । भुद्रत्ये ॥ ३ ॥ सिद्धा । दद्यात् । सौख्यं ।४॥ इति लक्ष्मीसूरिच्छन्दसि

श्री वीर स्तुति ॥ ६ ॥

मूरति मनमोहन कञ्चन कोमलकाय । सिद्धारथ नंदन त्रिसला देवी सुमाय । मृगनायक लंछन सात हाथ तनु मान दिन दिन सुख दायक स्वामी श्रीव्रधमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वंदित पद अरविन्द । कामित भर पूरण अभिनव सुरतरुकन्द । भवियणनें तारे प्रवहण समनिशि दीश । चोवीसे जिनवर प्रणमुं विसवावीस ॥ २ ॥ अरथैं करि आगम भाख्या श्रीभगवन्त । गणधर तेगुंथ्या गुणनिधि ग्यान अनन्त । सुरगुरु पिण महिमा कहिनसके एकन्त । समरुं सुखदायक मनसुध सूत्रसिद्धन्त ॥ ३ ॥ सिद्धायिका देवी वारे विघनविशेष । सहु संकट चूरे पूरे आस असेष । अहनिसि कर जोडी सेवे सुर नर इन्द । जंपई गुणगण इम श्रीजिनलाभ सुरिंद ॥ ४ ॥

पंचमी की स्तुति ।

पञ्च अनंत महन्त गुणाकर पञ्चमि गति दातार । उत्तम पञ्चमि तप विधि दायक ज्ञायक भाव अपार ॥ श्री पञ्चानन लांछन लांछित दानसुदक्ष । श्रीवर्द्धमान जिणंदसु वंदो आणंदो भविपक्ष ॥ १ ॥ पूरण पंचमहाश्रव रोधक बोधक भव्य उदार ॥ पञ्च अणुव्रत पञ्च महाव्रत विधि विस्तारक सार ॥ जे पंचेंद्रिय दमि शिव पुहता ते सगला जिनराय । पञ्चमी तप वर भवियण ऊपर सुथिर करो

सुपसाय ॥ २ ॥ पञ्चाचार धुरंधर युगवर पञ्चम गणधर वाण । पञ्चज्ञान विचार विराजित भाजित मद पञ्च वाण पञ्चम काल तिमिरभरमांहे दीपक सम सोभन्त । पंचम तप फल मूल प्रकाशक ध्यावो जिनसिद्धांत ॥ ३ ॥ पंच परम पुरुषोत्तम सेवा कारक जे नर-नार । वलि निरमल पंचमी तप धारक तेहभणी सुविचार ॥ श्रीसिद्धायिका देवी अहनिश आपो सुख अमंद । श्रीजिनलाभ सुरिन्द पसाये कहे जिनचंद मुणिंद ॥ ४ ॥

॥ ग्यारस की स्तुति ॥

अरनाथ जिनेसर दीक्षा नमीजिन ज्ञान । श्रीमल्लि-जन्म व्रत केवलज्ञान प्रधान । इग्यारस मिगसर सुदि उत्तम अवधार । ए पंच कल्याणक समरीजे जयकार ॥१॥ इग्यारे अनुपम एक अधिक गुणधार । इग्यारे बारे प्रतिमा देशक धार । इग्यारे दुगुणा दोय अधिक जिनराय । मन सुध सेव्यां सब संकट मिटजाय ॥ २ ॥ जियांवरस इग्यारे कीजे व्रत उपवास । वलि गुणनो गुणिये विधिसेती सुवि-लास । जिन आगम वाणी जाणी जगत प्रधान । एक चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥ ३ ॥ सुर असुर भुवणवण सम्यगदरशन वन्त ॥ जिनचन्द्र सुसेवक वेयांवच्च करंत । श्रीसंघ सकलमें आराधक बहुजाण । जिन शासन देवी देव करो कल्याण ॥ ४ ॥

दूज की थुइ ।

महो मण्डण पुन्नसोवन्नदेहं जणाणंदणं केवलन्नाणगेहं ॥ महानन्द लच्छी बहु बुद्धिरायं, सुसेवामि सीमन्धरं तिच्छरायं । १ । पुरा तारगा जेह जीवाण जाया, भवस्संति ते सव्व भव्वाण ताया ॥ तहा सम्पयं जे जिणा वट्टमाण, सुहं दितु तेमे तिलोयप्पहाण । २ । दुरुचार संसार कुव्वार पोयं, कलंका वली पंकपरकाल तोयं । मणो वंछिय च्छे सुमंदारकप्पं, जिणंदागमं वान्दमो सु-महप्पं । ३ । विकोसे जिणंदाणणंभोजलीणा, कलारूव लावण सोहागग पीणा । वहं तस्स चित्तंमि णिच्चं पिझाणं सिरी भारई देहि मे सुद्धनाणं ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमन्धर-जीनी स्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ अष्टमी की स्तुति ॥

चउवीसे जिनवर मणसुं हुं नित सेव । आठम दिन करियें, चन्द्र प्रभुनी सेव । मूरति मन मोहे जाणे पूनिम-चन्द । दीठां दुःख जाये पामे परमानन्द ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इन्द्र पूजे प्रभु जीना पाय । इन्द्राणी अपच्छर, कर जोडी गुण गाय । नन्दीश्वर द्वीपें मिलि सुरवरनी कोड । अट्ठाइ महोच्छव, करती होडाहोड ॥ २ ॥ शेत्रुंजा शिखरें जाणी लाभ अपार । चउमासें रहिया गणधर मुनि परि-वार ॥ भवियणनें तारे, देई धरम उपदेश । दूध साकरथी

पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिक्कमणुं करियें व्रत पच्चखांण । आठम तप करतां आठ करमनी हांण ॥ आठ मंगल थाये, दिन दिन कोडि कल्याण ॥ जिनसुख-सूरि कहे, इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति

अथ नेमिनाथजी की स्तुति ।

सुर असुर वन्दिय पाय पंकज मयणमल्ल अक्षोभितं, घन सघनश्याम शरीर सुंदर शंख लन्छन शोभितं ॥ शिवा-देवि नन्दन त्रिजग वन्दन भविक कमल दिनेश्वरं, गिर-नार गिरिवर शिखर वंदू नेमिनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ अष्टा-पदें श्रीआदिजिनवर वीर जिन पावापुरें, वासुपूज्य चंपा-पुरिय सीधा नेम रेवय गिरिवरे ॥ समेत शिखरें वीस जिनवर मुगति पहुता मुनिवरू चउवीस जिनवर तेह वंदू सयल संघें सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार अंग उपांग बारे दश पयन्ना जाणियें, छ च्छेद ग्रंथ प्रसथ अथा चार मूल वखाणिये ॥ अनुयोग द्वार उदार नन्दीसूत्र जिन मते गाइयें वृह वृति चूर्णी भाष्य पैंतालीस आगम ध्याइयें ॥ ३ ॥ दुहुं दिसें बालक दोय जेहने सदा भवियण सुखकरू दुख हरें अंबा लुंब सुंदर दुरिय दोहग अपहरू ॥ गिरनार मण्डण नेमि जिनवर चरण पँकज सेवियें, श्रीसँघ सहुनें सदा मङ्गल करो अंबा देवियें ॥४॥ इति गिरनारमण्डण श्रीनेमि०

॥ दीपमाला की स्तुति ॥

सिद्धारथ त्राता, जगत विख्याता, त्रिशला देवी माय तिहां जगगुरु जनम्या, सब दुःख विरम्या, महावीर जिनराय ॥ प्रभु लेइ दीक्षा करहित शिक्षा, देइ संवतसरी दान वहु कर्म खपेवा शिवसुख लेवा, कीधो तप शुभ ध्यान ॥ १ ॥ वर केवल पामी, अन्तरजामी, वदि काती शुभदीश। अमावश जाते, पीछली राते मुगति गया जगदीश ॥ वलि गोतमगणधर, मोहटा मुनिवर, पाम्या पंचमज्ञान । थया तत्व प्रकाशी, शील विलाशी, पहूता मुगति निधान ॥ २ ॥ सुरपति संचरिया, रत्न उद्धरिया, रात; थई तिहां काली । जिन दिवा किधा, कारज सिधा निशा थइ उजवाली । सहु लोके हरखी, निजरे निरखी, परव कियो दीवाली । वली भोजन भक्ते निज निज सक्ते, जीमे सेव सुहारी ॥ ३ ॥ सिद्धायिका देवी विघन हरेवी, वांछित दे निरधारी । कर संघने शाता, जिम जगमाता, एहवी शक्ति अपारी ॥ जिनगुण इम गावे, शिवसुख पावे । सुणज्यो भविजन प्राणी । जिणचन्द जतीसुर, महामुनीसर, जम्पे एहवी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पर्युसण की स्तुति ॥

वलि वलि हुं ध्याउं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजूसण दाख्या धर्मनी सीर । आसाढ चोमासे हुंती दिन

पचाग पडिक्कमण संवच्छरी करिये त्रण उपवास ॥ १ ॥ चउवीशे जिनवर पूजा सतरे प्रकार, करिये भले भावे, भरिये पुण्य भण्डार । वलि चैत्य प्रवाड़े फिरतां लाभ अनंत, इम पर्व पजूसण सहुमें महिमावन्त ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वाचनाये वचाय, श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पलाय ॥ प्रतिदिन परभावना धूप अगर उखेव, इम भवियण प्राणी पर्व पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि साहमी वच्छल करिये वारंवार, कोई भावना भावे केई तपसी शिलधारं । अठदीह पजुसण इम सेवत आणन्द, सुयदेवी सानिध कहे जिन लाभ सूरिन्द ॥ ४ ॥

॥ अथ मंगलिक सरणां लिख्यते ॥

प्रह उठीने समरिजें हो । भवियण मँगलिक सरणा चार । आपदा टाले संपदा हो ॥ भ० ॥ दोलतनो दातार ॥ हियडे राखिजें हो ॥ भ० ॥ १ ॥ अरिहन्त सिद्ध साधा तणी हो ॥ भ० ॥ केवलि भांख्यो धर्म ॥ ए चारू जपतांथकां हो ॥ भ० ॥ टूटे आठुंकर्म ॥ हि० २ ॥ ए चारू सुखकारि हो ॥ भ. ॥ ए चारू मङ्गलिक ए चारू उत्तम कह्यां हो । भ० । ए चारू तह त्तिक हो । हि० ३ ॥ गेले घाटे चालतां हो ॥ भ० ॥ समरुं वारंवार ॥ गामें नगरें चालतांहो ॥ भ० । विघन निवारणहार ॥ हि० ४ ॥ डाकण साकण भूतडां हो ॥ भ० ॥ सिंह चित्ताने सूर । वेरी दुसन चोरटा हो ॥ भ० ॥ रहे सदाइ दूर ॥

हि० ५ ॥ सुख शाता वरते घणी हो ॥ भ० ॥ जे ध्यावे नरनार ॥ पर भव जातां जीवने हो ॥ भ० ॥ सरणा को आधार ॥ हि० ६ ॥ राखो सरणा की आसता हो ॥भ०॥ नेडो नहिं आवे रोग ॥ वरते आनंद सुख सही हो । भ० वाला तणो संयोग ॥ हि० ७ ॥ निशिदिन याकुं ध्यावतां हो ॥ भ० ॥ जीव तणो उद्धार ॥ कमी नहीं कोइ वस्तुनी हो ॥ भ० ॥ याहि जगमें सार ॥ हि० ८ ॥ मनचिन्ता मनोरथ फले हो ॥ भ० ॥ वरते कोड कल्याण ॥ शुद्ध मनें करी समरता हो ॥ भ० ॥ निश्चें पद निर्वाण ॥ हि० ९ ॥ ए सरणाने ध्यावतां हो ॥ भ० ॥ नाम तणो आधार ॥ ए सरणाकी कीरति कही हो । भ० ॥ ध्यावो मनह मझार ॥ हि० १० ॥ संवत् अढारे बावने हो ॥ भ० ॥ पालि सहेर सुखकार ॥ चोथमल इम वीनवे हो ॥ भ० ॥ सुनजो बाल गोपाल ॥ हि० ॥ ११ ॥ इति श्रीमांगलिक संरणां ॥

अथ चोपड खेलण विचार स्तवन ।

राग सोरठी ॥ अरे मारा प्राणिया, चतुरनर चोपड इण विध खेल रे ॥ अशुभ करम मल झरके च० ॥ जाजम वर वेराग रे वढीय विछायत वेस जो च० ॥ जहां नहीं कुमति को लाग रे ॥ अरे० १ ॥ दान शील तप भावना च० चोपड एह पसार रे । आठ दाव इक बोलमें च०,

आठुंइ करम निवार रे ॥ अरे० २ ॥ देव गुरु धर्म तीनूं भला च०, पाशा एही जाण रे ॥ अवसर कर हाथे लिया च०, उज्वल लेष्या आण रे ॥ अ० ३ ॥ दरशण ज्ञान चारित्र भला च० तीनूंइ गुपति विचार रे । नव तत्व सात हिरदे धरो च०, ए सब सोलासार रे ॥ अ० ४ ॥ पञ्या अठारे रहण दे च०, पोसागा व्रत धार रे ॥ दश लक्षण दश धरम हे च०, हित कर हिये विचार रे ॥ अ० ५ ॥ षट् काया छकडी पडी च०, हिरदे दया विचार रे । पुन्य उदय पञ्चडी पडी च०, पञ्च महाव्रत धार रे ॥ अ० ६॥ च्यार तीन काणा पञ्या च०, सातुंइ विसन निवार रे ॥ जे दुरगति दायक सही च०, वाधे अनंत संसार रे ॥ अ० ७ ॥ चिहुं गति बाजी लग रही च०, दुख सह्या भरपूर रे ॥ करम कटे सुख ऊपजे च०, रतनसागर कहे सूर रे ॥ अ० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ आध्यात्म थुई ॥

उठ सवारे सामायिक लीधो, पर बारणे नवि दीधो जी । कालो कुत्तो घर मांहे पेठो घी सगलो तेणे पीधो जी ॥ उठोनानिद्रअर आलस मुकी ए घर आप संभालो जी । निजपति ने कह्यो विरजीने पूजो समकित ने उज-वालो जी ॥ १ ॥ बीजी बीलाडे झड पज मारी उत्रड सगली फोडी जी । चंचल छे ए वास्यो नर हे त्राके भां

गिने माला तोडी जी ॥ तेविना अरेटियो नवि चाले मन भागो किम कहिये जो । रीषवादिक चोवीस तीर्थंकर जपिये तो सुख लहिये जीं ॥ २ ॥ घरवा सीदो करोनी वउअड टालोनी ओजी सारो जी । चोर एक करेछे डेरो ओरडी दथोनी तारो जो ॥ लपक्या पाहुणा चार आवेछे ते उभामति राखो जी । शिवपुर सुख अनंता लहिये जो जैन वाणी चाखो जी ॥ ३ ॥ घरनो खुणो कोल खुणेछे वउ अड तुम चितमें लावो जी । पोढ्यो पिलंगे प्रीतम पोढ्या प्रेम धरिने जगाडो जी ॥ प्रभव सूरि कहे नहिवि कथलो ए अध्यातम उपयोगी जी । सिद्धायका देवी सहा निध कारी साधे ते सीध पद भोगी जी ॥४ ॥

॥ गुरु चेला का प्रश्नोत्तर ॥

१ देखो रे चेला विना पाख सूवो । गुरुजी मनं
२ देखो रे चेला विना मोत मूवो । गुरुजी निद्रा
३ देखो रे चेला विना पान तरवर । गुरुजी त्रसना
४ देखो रे चेला विना पार सरवर । गुरु जी ममता
५ देखो रे चेला विना आग जलियो । गुरुजी क्रोधी
६ देखो रे चेला विना रोग गलियो । गुरुजी चिन्ता
७ देखोरे चेला विना खार खारो । गुरुजी पापी
८ देखो रे चेला विना प्यार प्यारो । गुरुजी धर्मी
९ देखो रे चेला विना रूख छाया । गुरुजी वादरा

१० देखो रे चेला विना द्रव्य माया । गुरुजी विद्या
११ देखो रे चेला विना फन्द फांसी । गुरुजी लोभ
१२ देखो रे चेला विना खून डण्ड । गुरुजी चुगली

॥ दोहा ॥

सरवर तरवर सन्तजन, चोथा वरसे मेह ।
पर उपकार के कारणे, चारु धारी देह ॥

॥ सुपने का तवन ॥

राणीजी तो रजनी, सेज सुता सजनी, सुपननीहाली जागी जाय २ ॥ टेक ॥ हस्थी ऋषभ सिंह लक्ष्मी फूलनी माला, रवी शशि देखी सुखदाय दाय ॥१॥ धजा कलश सर पद्मसागर, अमर विमान चित्त चाय चाय ॥२॥ रत्ननीराशी ने निरधुम अगनि, सुपन नीहाली जागी जाय ॥३॥ फरमावो फलमुज शुभ सुपननो । प्रणमीने पूछे राणी राय राय ॥ ४ ॥ वारक त्रिभुवन तन तुज थासे धन मुनि नमे नित पाय पाय ॥ ५ ॥ सम्पूर्ण

तैसट शिला के पुरुषों का हाल

चोवीस तीर्थंकर

चक्रवृती १२

१ भरतजी २ सागर सुरंद ३ मघवा ४ उदाइ ५ सनत कुमार ६ शांति चक्रीस ७ कुंथु ८ हरिनरनाथ ९

संमूभपदम नरेश १० हरिषेण ११ जयनाम १२ ब्रह्मदत्त

दोय देवलोक दोय नरक आठ हवे शिवगामी बारे चक्कीस हुवे ।

वासुदेव ९

१ तृपृष्ट २ दूपृष्ट ३ स्वयं प्रभु ४ पुरुषोत्तम ५ परगडो ६ पुण्डरीक ७ दत्त ८ लक्ष्मण ९ कृष्ण

वलदेव ९

१ अचल २ भद्र ३ सुप्रभु ४ सुप्रसन्न ५ आनंद ६ नन्दन ७ सुभमति ८ रामचन्द्र ९ वलभद्र देवगति आठ शिवगति गामी वलदेव

॥ प्रत्येक वासुदेव ॥

१ अस्वग्रत्र २ तारक ३ मेरुक ४ मघवा तिमाए ५ निशंभ ६ वलय ७ महलाद ८ रावण ९ जरासिन्धु ए नव प्रति वासुदेव नरक गामिये पण भावी तीर्थंकर होसी

शांति नें कुंथु ने अरि एह तीनो ने दोय, दोय पद वीलही तीर्थंकर चक्कोस रे भव जूवा जूवा सव की देह ६० पण जीव गुण साठ वासुदेव वली वलदेव केरा पीता एकहीज तात ५१ माता ६० हुये ।

॥ माहावीर स्वामी के गणधर ॥

१ इन्द्र भुती २ अगनि भुती ३ वायुभुति ४ व्यक्त

भुति ५ सुधर्मा स्वामी ६ मण्डत स्वामी ७ मोर्य पुत्रजी ८ अकंपीतजी ९ अचलजी १० मेवार्यजी ११ प्रभजी

दश मोटे श्रावकों के नाम ।

१ आणन्दजी २ कामदेवजी ३ चुलणिपिता ४ सुरादेव ५ चुल्लसकतक ६ कुण्डकोलिक ७ सदालपुत्र ८ माहा शतक ९ नंदेनी पिय १० तेतली पिता

रोगी की आयुष्य देखने का यंत्र ।

यह यंत्र कुंकुं गोराचन्दन या अष्टगन्ध से लिख धूप दीजे मासे मासे उजवाली चउदसे जोइजे ।

ॐ	न	मो	भ
ग	व	ते	प
हा	स	त्था	य

ये यंत्र रोगी ने देखाइये, प्रथम ॐ कार न दीखे तो फाग मास पूनम ने संध्या समे मः मघा नक्षत्रे बुधवारे मध्द कष्ट मरे ॥ १ ॥ न कार न देखे तो प्रोस मासे स्वत

पञ्चमी रात्रे पोर एक थकते, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रे सोमवारे कफ रोग से मरे ॥ २ ॥ मो न देखे तो माह मासे, पूनम ने दिवसे मघा नक्षत्र माथाना रोग सुं मरे ॥ ३ ॥ भ कार न देखे तो फागण सुदी ९ विफोहारे मिरग सर नक्षत्र सोमवारे दाघ ज्वर से मरे ॥ ४ ॥ ग कार न देखे, तो चेत वदी १२ प्रात समय घनित्रा नक्षत्र मंगलवारे मरे ॥ ५ ॥ व कार नदेखे तो, वेसाख सुदी १३ चीत्रा नक्षत्र बुधवारे विफोर मांहे दाघे मरे ॥ ६ ॥ ते न देखे तो जेठ ११ शनिवारे माथाना शेग मरे ॥ ७ ॥ म नदेखे तो आसाढ सुदी १२ जेष्टा नक्षत्र बुधवारे संस्लम्र से मरे ॥ ८ ॥ हा कार न देखे तो सावण सुदी ९ पाछले पोहर, जेष्टा नक्षत्र सोमवारे आडे भावे मरे ॥ ९ ॥ स न देखे तो, भादवा सुदी १० पुरवा साढी नक्षत्र मंगलवारे, सर्पविष शे मरे ॥ १० ॥ त्वा न दीखे तो आसोज सुदी १ मध्यान समय रोहणी नक्षत्र रवीवारे जलिने मरे ॥ ११ ॥ य नदीखे तो काति सुदी ६ श्रवण नक्षत्र गुरुवारे क्षय रोग से मरे ॥ १२ ॥ इति रोग यंत्र ॥

॥ अथ ज्वर छन्द ॥

ॐ नमो आनंदपुर नगर अजयपाल राजा न माता जनमियो ज्वर तुं कृपानिधान ॥ १ ॥ सात रूप हुओ करवा खेल जगत नाम धरावे जु जूवा परून्यो तुं इत्त उत्त ॥ २ ॥

एकांतरो वेयांतरो त्रियो चोथो तोम शीत, उष्ण, विषम, ज्वरो एसाते तुझ नाम॥३॥एसानेनाम तुज सुरंगा जपता- पूरे कोडी उमंगा तेनाम्या जे जालिम जुंगा जगमा व्यापी तुज जस गंगा ॥४॥ तुज आगे भूपति सब रंका त्रिभुवनमा वाजे तुझ डंका माने नहीं तू कहे नीशंका तुठो आपे सोवन टंका ।.५॥ साधक सिद्ध तणा मद मोडे, असुर सुरा तुझ आगल दोडे दुठ धीठना कंधर तोडे, नमी चाले तेहने तू छोडे ॥ ६ ॥ आवन्तो थरहर कंपावे, डायां ने जिम तिम वहकावे । पहिलो तुं केड मांथी आवे, सात शिरख पण शीत न जावे ॥ ७ ॥ हीं हीं हुं हुंकार करावे, पांसलियां हाडां कडडावे । ऊना लेपण अमल जगावे, तापे पहिर- णमा सुतरावे ॥ ८ ॥ आसोज कार्तिकमां तुझ जोरो, ह- ठ्यो न मांगे धागो दोरो । देश विदेश पडावे शोरो करे सबल तुतातो तोरो ॥ ९ ॥ तुं हाथीनां हाडां भंजे पापीने ताडे कर पंजे भक्ति वत्सल भावे-जो रंजे तो सेवक ने कोयन गंजे ॥ १० ॥ फोडक तोटक डमरू डाकं सुरपति सरिखा माने हाकं धमके धुंसड धांसड धाकं चढ़तो चोले चंचल चाकं ॥११॥ पिशुन पछाडण नहीं को तो थी तुज जस बोल्या जाय न को थी शीअण सील करो ए थोथी महर करी अलगा रहो मोथी ॥ १२ ॥ भगत थकी एवडी स्या खेडो अमल अमिनां छांटा रेडो लाखां भक्तनो

ए निवेडो महाराज मूको मुझ केडो ॥१३॥ लाज वसोमां अजया राणी गुरु आणा मानो गुण खाणी घरे निधावो करुणा आणी कहुंछुं ना के लीटी ताणी ॥ १४ ॥ मंत्र सहित ए छन्द जे पढशे तेहने ताव कदी नवि चढशे कांति कला देहीनी रोगं लेसे लखमी लीला भोगं ॥१५॥ कलश छपय ॐ नमो धरि आदि बीज गुरु नाम वदीजे आनंद पुर अवनीश अजयापाल आखीजे अजया जात अढार वांचिये साते बेटा जपतां ए द्विज जाय भक्त सुन करे भेटा उतरे अंग चढियो पल में तारा वयणे मुदा कहे कांति रोगना वेकदि सार मंत्र गणिये सदा । इति ज्वर छन्द॥

ए छन्द सात वार अथवा चोदहवार अथवा इक्कीसवार सांभले गणे तो ताप जाता रहे ।

॥ अथ सामायिक दोष ॥

अशुद्ध दोष सामयकरो स्वरूप जाणवो बीना सामायक १ अविवेक दीख स्थापनाजी को अवीना करे २ धनवांछा करे ३ जसवांछा दोष ४ भयदोष ५ नियाणों दोष ६ पुत्र प्रमुख की इच्छा ७ मानराखे ८ क्रोधकरे ९ फलको संदेह करे १० मन को डोलावे

॥ काया के १२ दोप ॥

१ कुवचन दोष २ ससातकाल दोष ३ कलंक देवे आप छन्दे बोले ४ संखेप शुभकरे ५ कलेह करे ६

नीटीन वचन बोले ७ उपहांस करे ८ विकथा करे ९ आवो बेठो कहे उठो कहे सावद्द वचन दोष १० काया का दोष चल्ल आशन दोष १ चल्ल दृष्टिदोष २ काम सावज्ज करे ३ आलस्य मोडे ४ करड को मोडे ५ खाज खणो ६ निद्रा लेवे ७ मीत को टेको लेवे ८ हाथ पग लम्बा करे ९ शरीर अति ढांके १० शरीर सारो उघाडो करे ११ मेल उतारे।

॥ अथ पोषे में १८ दोष ॥

१ विण पोसा तालावेते आहर लेवेतो २ पोसा नीमन्त सरस आहार लेवेतो ३ उत्तर पारणें भोजन नो जोगमें लेवेतो, ४ शरीरनी विभूशा करेतें ५ पोसा में अर्थे वस्त्र धोवाडेते ६ पोसा नें अर्थे ग्रेणा घडावेते ७ पोसाने अर्थें वस्त्र रंगावेते ९ शरीर नो मेल उतारेते ९ पोसा में अकाले उंघेते १० पोसा में स्त्री निरखेवते ११ पोसाशं आहार भलो बुरो कहेते १२ भली भुंडी राज कथा करेते १३ भली भुंडी विकथा करेते १४ मात्रा पठावण भूमी रूडी सोधे नहिंते १५ कोईनी निन्धा करेते १६ विना पूंज्या शरीर से आलस: मोडेते १७ चोरनि विकथा करेते १८ स्त्री साथे वात विकथा करेते ॥ इति इतना दोष वरजी पोषा करना।

॥ अठार भार वनस्पति ॥

तीन क्रोड इग्यारे लाख बारह हजार नवसे सीतर इतना मण को एक भार हुवे एवा अठारे भार वनस्पति ना छे ते मध्ये पान ४ फल ४ बीज ४ वेल ६ ॥ इति

॥ दस प्रकारे जती धर्म ॥

क्रोध नहीं करना। अहंकार का त्याग करना। कपट न करना। लोभ न करना। इच्छा को रोकना। बारे भेद तप कहा है। हिंसा न करना। सच बोलना। चोरी न करना। परिग्रहं का त्याग करना। मैथुन का त्याग करना ॥ इति ॥

सतरे भेदे संयम।

पांच महाव्रत सुधा पारे। ६ काय की रक्षा करना। पांच इन्द्रिय को रोकना। रात्री भोजन न करना ॥इति॥

॥ नववाड ब्रह्मचर्य ॥

१ पशु पिंड	१ उंदर बिल्लीका दृष्टान्त
२ पुरुष बैठे वहां दो कलाक न बैठे	२ हाढ नींबू का दृष्टांत
३ एकांत स्थान पर नहीं बैठे	३ घृत अगनि का दृष्टांत
४ रुप न देखे	४ सूरज आंख को दृष्टांत
५ कुडांतर मीत का सहारा नले	५ गाज मोर का दृष्टांत
६ पुव्व किल्ली पुर्व कामना चितारे	६ छाछ परदेशीका दृष्टांत
७ सरस आहार न करे	७ ताव ज्वर का दृष्टांत
८ अति आहार न करे	८ पिछडी हांडी का दृष्टांत

९ विभूषा न करे　　　　　　　　९ रत्न कादर का दृष्टांत

॥ लोचन करने की विधि ॥

गुरु के आगे स्थापना सनमुख खमासमण देकर प्रथम इरियावही पडिकमे यावत एक लोगस्स का काउस्सग करे उपर लोगस्स करे खमासमण इच्छाकारेण संदिसह मुहपत्ति पडिलेह वांदणा दोय देवे देवे खमासमण इच्छा कारेण कहकर लोचंस संदिसाहु दुजीवार लोचन करावेमी पाठ पाटला बसेण होवेतो खमासमण इच्छाकारेण कहकर उच्चासणं संदिसाहु दूजे खमासमण उच्चासणं ठावेमी करे खमासमण देकर इच्छाकारेण लोचन करेहा लोच करने वाले को कहके पूर्व दिसिमे पडवे नवमी तीज एकादशी दक्षिण दिसामें पंचमी तेरस बारस चोथ पच्छिम दिशा में छह चवदश को सातम पूनम को वायु कोण दशमी उत्तर में आठम अमावस्य ईशान में लोच घर में प्रवेश करे क्रिया,स्थापना पास करी होयतो फिर गुरु पास खमासमण मुंहपत्ति वांदणा देकर गुरु को अब्भुट्ठियो खमासमण पूर्वक खामे पहले लोचकरण काउसग्ग करे सो कहते हैं ऊम्मं जन्न अहियासियं कुइये ककाराइयं छीयं जम्भाइयं तस्स उडावणथ्थं करेमि काउसग्गं एक लोगस्स का काउसग्ग उपर लोगस्स ॥ इति विधि प्राणायांम ॥

॥ असज्झाय की विधि ॥

(काती वदी २ वेसाख वदी २)

इरयावही यावत अन्नत्थ कहकर एक लोगस्स का काउसग्गं करे काउसग्ग पारके प्रकट लोगस्स कहे फिर मुहपंति पडिलेवे [दोय वांदणा देवे फिर सझाय उखेड़ वणार्थ एक लोगस्स का काउसग्ग करे [अन्नत्थ कहकर प्रगट लोगस्स कहे असझाय उडावणार्थ करेमि काउसग्गं अन्नत्थ कहकर ४ लोगस्स का काउसग्ग करे प्रगट लोगस्स कहे खुद्रोपद्रव उडावणार्थ करेमि काउसग्गं अन्नत्थ कहकर ४ लोगस्स का काउसग्ग करे अन्नत्थ कहकर प्रगट लोगस्स कहे शक्रादि देवविया वृत आरधनार्थ करेमिकाउसग्गं अन्नत्थ कहकर ४ लोगस्स का काउसग्ग करे प्रगट लोगस्स कहे फिर सझाय का आदेश लेकर दशमें कालीका का ४; अधेन कहना उत्राध्येनजी का सूत्र का ४ अध्ययन कहना दोनुं का मूल पाठ पढ़ के फिर दूसरी क्रिया करना ।

॥ साधु के काल समय की विधि ॥

काल करने वाले का फिर सूखड केशर, बरास विलेपन करे जेसे ही मृत्यु स्थान कराके बेठाने किजागाये उपर लोहा का कीला ठोके नवा वस्त्र पहरावे जिमणी तरफ ओगा मुहपत्ति अथवा चवलो मुंह के डावी तरफ झोली जिसमें फूटा पात्रा एक मोदक रखे रोहिणी विसाखा पुन-

चैस तीनो उतराध्यन छे नक्षत्रों में दो डांस का पुतला करके रखे जेष्टा आद्रा श्वाती संतविसा भरणी अश्लेखा इन सब नक्षत्रों में न रखे बाकी के पन्द्रह नक्षत्रों में एक पुतला को हात जिमणा में ओगा दे देना दूजा डावा में भी देदेनाजी दोय पुतला होय तो दोनुं के हाव में जिसमें चरवलादि डावे में जोली आदि देना।

काल करा होय उसके पास एक साधु आयके ऐसा कहे कोटिगण वज्र साखा, चंद्रकूल, आचार्य श्रीजीनमूख सूरी उपाध्याय श्रीसमयसुन्दरजी सतवीर महत्तरा साधु साधवी वर्द्धमान काल में जो वडे होय सो कहके अमुख मुनीका शीष्य (मुनि) पारिठावण्या करेमि काउसग्गं एक नवकार का० उपर प्रगट नवकार फिर वोसिरे २ तीन वक्त कहे फिर श्रावक संसकार निमित्त लेजाय। फिर महोत्सव पूर्वक योग स्थान में चन्दनआदि काष्ट से अग्नि संस्कार करना प्रातः सर्व अग्नि शांत करके रक्षा योग स्थान में परठवणी फिर गुरु पास आयके लघुवा वृहद शांति सुन के संसार अनित्य इत्यादि उपदेश सुनके स्वस्थान को जाना। फिर साधु जीरण वस्त्र तथा पात्रा प्रमुख के परठवे आचोह अचित जलसे भूमी शुद्धी हस्त पादा आदि शुद्धी करे फिर श्रावक पास से गोमुत्रादि छटावे उपाश्रय में ॥ इति ॥

फिर उलटा देववन्दन करने की विधि ।

काल करा उसका चेला होय अथवा लघु प्रयायि वाला कोई साधु उल्टा काजा निकाले द्वार से आसन तरफ वस्त्र अवरा पहरे काजा सम्बन्धी इरयावहि यावत प्रगट लोगस्स फिर उल्टा देव वांधे प्रथम महावीर स्वामी की स्थुई फिर नवकार का काउसग्ग करना फिर चैत्यवन्दन के पहिले नमुत्थुण उवसग्ग के पहले जयवियराय फिर इरयावहि यावत अविधि आशातना मिच्छामि दुक्कडं ।

(फिर सीधा काजा लेके इरयावहि पडिक्कमे)

फिर चतुर्विध संघ सहित आठ थुइ से सुल्टा देव वांधे प्रभु पधराय के देव वन्दन में स्तवन अजित शांति कहे पूर्ण होने तर क्षुद्रो पद्रव उड्डावणार्थं यावत चार लोगस्स का काउसग्ग वडीश।त उपर प्रगट लोगस्स कहे काउसग्गमी सागरवर गम्भीरा तक कहे बहार गांव से पत्र काल किया सम्बन्धी आया होवेतो पण पांच शक्रस्तवे सुल्टा देव वांधे स्तवन ठिकाणे अजित शांति फिर शांति देवता आराधनार्थं काउसग्ग करे एक लोगस्स फिर थुइ के ठिकाणे शांतिः शांतिःकर श्रीमान् शांति दिस्तु मे गुरु । शांतिरेव सदा तेषां येषां शांति गृहे गृहे पिछे श्रुत क्षेत्र भुवन देवी एक २ नवकार कह के थुइ कहना ।

माकडनो चटको दोहिलो, केहने नवि लागे सोहिलोरे। माकड मूछालो ॥ ए तो निर्लज ने नहीं कान, ए हने हियडे नहीं शानरे ॥ मा० १ ॥ ए तो पाट पलंगमां आवे। चटको देइ छानो जावेरे ॥ मा. ॥ राते राणो थइ ने फरतो। राजा राणी थी नवि डरतोरे ॥ मा. २ ॥ एतो चरणा चीर छोडावे। नर नारी नी निंद उडावे रे ॥मा.॥ गिरुया गुण सागर, साथ तेहनी तुम राखजो लाजरे ॥मा. ३ ॥ वरसा ले थावे मद मातो, सीयाले सुहालो सातोरे ॥ मा० ॥ खाट मांहे खल खोजन खोटा। सवि सरीखा नाना मोटारे ॥ ४ ॥ ए तो न जूए ठाम कुठाम, एहने पेट भर्या शुकाम रे ॥ मा. ॥ एतो हरामी हठीली जात। एहने रुडी लागे छे रात रे ॥ ५ ॥ लोही पी थाये रातो लाल। एतो सोड मांहे लो सालरे ॥ मा. ॥ ए उपकार तणी मति आणी। चटको देइ सज करे प्राणीरे ॥ ६ ॥ गुणी हुयो तो गुणकरी लेजो। माकड ने दोष मत देजोरे मांकड भरूअच नगर थी आयो, ए तो राधनपुरमां गवरायोरे ॥ मा. ॥ माणक मुनि कहे सुणो सयणा। तुमे जीवन नी करजो जयणा रे ॥ मा. ७ ॥ इति ॥

इक्कीस जातनो धोवण पाणी।

हांडिनो १ कटोत्रीनो २ चांवलनो ३ तिलनो ४ तुस्रनो ५ जवनो ६ उसामणनो ७ कांजीनो ८ उन्होपाणी ९

अंबाडनो १० आंबानो ११ कबीठनो १२ दाखनो १३ दाडिमनो १४ बीजोरानो १५ बोरनो १६ आंबलानो १७ केरनो १८ बीलानो १९ नारियलनो २० आंबलीनो २१ इनका काल अलग २ सूत्र परमाणें जानना।

(२२ अभक्ष ३२ अनन्तथ काय अतिचार में देख लेना)

अथ सूतक विचार लिख्यते।

पुत्र जन्म होनेसें दिन १० सूतक ॥ पुत्री जन्म होने से दिन ११ सूतक मृत्यु होने से दिन १२ सूतक ॥ उर जो स्त्री के पुत्र होय, उस स्त्री के एक मास को सूतक॥ पुत्र होते मरण पामें, तो दिन १ सूतक ॥ परदेशें मृत्यु होय तो दिन १ सूतक। गाय, भेंस, घोडी, सांढ, घरमांहे वियावे तो, दिन १ सूतक। मरण हूवां कलेवर घर बाहिर लइजाय, जहांतक सूतक। दास दासी अपनी नेश्रायें रहते पुत्र पोत्रादिक का जन्म मरण हो तो दिन ३ सूतक। उर जितना महिना को गर्भ गिरे, तितने दिन सूतक। अब जिनके जन्म मरण का सूतक होवे वे १२ दिन देवपूजा न करे उर मृतकके सूतकमें घरका जो मूल कांधिया होवेसो १० दिन देवपूजा न करे. उर अन्य घर का ३ दिन देवपूजा न करे। उर जो मृतक को छूवा होवे, सो २४ पहर पडिक्कमण न करे। जो सदा का अखंड नियम होवे, तो समता भाव रखकें संवरपणा में रहे परंतु मुखसें नवकार मंत्रकाभी उच्चारण करे नहीं स्थापनाजी के

हाथ लगावे नहिं उरजो मृतककों छुत्रा न हो तो मात्र आठ महर पडिकमण न करे। किसी कुं नछी वे तो दोय स्नान सें शुद्ध भेंस के जब बच्चा होय, तब १५ दिन पीछे दूध पीणो कल्पे, गाय के बच्चा होय तो १७ दिन पीछे दूध पीणो कल्पे. बकरी को दूध ८ दिन पीछे पीणो कल्पे ॥

१ऋतुवती स्त्री, चार दिन मांडादिक को न छुवे. २ चार दिन प्रतिक्रमण न करे ३ पांच दिन देवपूजा न करे ४ रोगादिक कारणें तीन दिवस उपरांत कोइ स्त्रीकों रक्त चलता दीसे, जिसका विशेष दोष नहीं। शुद्ध विवेकसें पवित्र होकर, दिन ५ पीछे स्थापना पुस्तक छुवे, जिन दर्शन करे, अग्रपूजा करे, परंतु अंगपूजा न करे, साधुको पडिलाभे. ऋतुवन्ती तपस्या करे, सो तो सफल होय. परंतु ऋतुदिन में जिन पूजा प्रतिक्रमणादिक क्रिया सफल न होवे, ऐसा चर्चरी ग्रंथ में कहा है, जिसके घरमें जन्म मरण का सूतक होवे, उहां १२ दिन तक साधु आहार पाणी न वहोरे, सूतक वाले के घर का जलसें तथा अग्नि सें १२ दिन तक देवपूजा न करे, निशीथ सूत्र के सोलमा उद्देशा में जन्म मरण के सूतक वाले का घर, दुर्गंच्छनिक कहा है.

गाय के मूत्र में चोवीस प्रहर पीछे भेंस के मूत्र में १६ प्रहर पीछे गाडर, गधेड़ी घोडी के मूत्र में ८ प्रहर

पीछे, नर नारीके मूत्रमें अंतर मुहुर्त्त पीछे, संमूर्च्छिम जीव उपजे इत्यादि सूतक का संक्षेप विचार यहां लिखा है विशेष विचार शास्त्रांतर से जानना ॥ इति सूतक विचार ॥

॥ अथ असज्झाय की विगत ॥

१ धूआरी पडे, तासीम असज्झाय जाणवी. २ सर्व दिशामां राती छाया तथा अरण्य सम्बन्धी रज उडे तो दिन ३ उपरांत असज्झाय. ३ मेह वरसते बुदबुदाकारी होय, तो दिन ३ उपरांत असज्झाय. ४ नाना छांटा निरंतर, दिन ७ उपरांत वरसे अने न रहे तो असज्झाय होय. ५ मांस वृष्टि, शिलावृष्टि, केशवृष्टि धूलिवृष्टि जांलगें होयतां सीम असज्झाय. अने जो रुधिरवृष्टि होय तो अहोरात्र असज्झाय. ६ बुदबुदा रहित निरंतर वरसे, तो ५ दिन उपरांत असज्झाय होय. ७ चैत्र शुदि पांचमहुंती पडिवा लगें असज्झाय तेरस चोदश पूनम सीम समी सांजे. अचित्त रज उड्डावणच्छं काउस्सग्ग करुं ? इच्छम्. अचित्त रज्ज उड्डावणच्छम् करेमि काउस्सग्गं. पछी लोगस्स ४ नो काउसग्ग करना. ८ आशोशुदि पांचमने दिने द्विप्रहर थी आरंभीने पडिवा लगें असज्झाय. ९ दश दिग्दाहें प्रहर १ असज्झाय. १० अकालें गाजतां प्रहर २ बे सीम असज्झाय. ११ अकालें वीज उल्कापात होय तो प्रहर १ अ० १२ अजवालिये पक्षे समी सांझ पडवो, बीज, त्रीज, इयारी असज्झाय,

परंतु दश वैकालिक गुणिजे. १३ अकाले मेघ वरसे, ती प्रहर १ अस० १४ भूमिकंपे प्रहर ८ अस० १५ चंद्रग्रहणे प्रहर १२ वार, उत्कृष्टे. अवे जघन्ये प्रहर ८ अस० १६ सूर्यग्रहणें उत्कृष्ट प्रहर १६ अने जघन्य प्रहर १२ वार अस० १७ आसाढ चउमासा पडिकमण वायाहुती प्रहर १२ वार अस० १८ कार्तिक चउमासे पण प्रतिक्रम्या पीछे पडिवा लगे प्रहर वार अस० १९ मांहोमांहे मल्ला दिक युद्ध हुवे, तावत्काल अ० २० कलह युद्ध जां लगे हुवे, तां लगे अस० २१ उपाश्रय नजीक स्त्री पुरुषने कलह हुवे त्यां पर्यंत अस० २२ फागण चउमासे रज-पर्वी जां लगे रज उडे, अने उपशमे नहिं, तां लगे अस० २३ दंडको मार पडते जांलगी अनेरो न हुवे, तां लगी अस० २४ परचक्रादि भय उपजे, अने जां लगे उपशमे नहिं, तां लगे सूत्र भणवुं न सुजे ॥ अयं परमार्थ ॥ २५ नगरमांहे प्रधान पुरुष विहडे, तो अहोरात्र अस० २६ उपाश्रयथी सात घरमांहे जो कोइ पुरुष विहडे, तो अहो-रात्र अस० २७ सो हाथमांहे अनाथ पुरुष मृतक पड्यो होय, तो तां अणउद्धुरे एटले ज्यां पर्यंत मृतककू न उठावे त्यां सीम अस० २८ तिर्यंचना रुधिर पडवाथी हाथ १०० मांहे अहोरात्र अस० २९ मनुष्यना रुधिर पडवाथी हाथ १०० सो मांहे अहोरात्र अस० ३० मनुष्यनां अस्थि, दांत

दाढ पडे हाथ १०० सो मांहे सुत्र पढवुं सुझेनहीं ३१ स्त्री ने ऋतु आवे थके दिन ३ त्रण अस० ३२ आर्द्रा नक्षत्र आव्या पीछे स्वाति नक्षत्र पर्यंत जो गाजे, वीजे, मेह वरसे तो असझाय न होय ३३ पुत्रने प्रसवे दिन सात असझाय अने दी करीने प्रसवे दिन ८ असझाय ३४ कालग्रहण विगकी भणवो गुणवो नहीं पहर १२ वार अस० ३५ वैसाख वदि १ श्रावण वदि १ कार्तिक वदि १ मागसिर वदि १ ए चार दिवसे सदैव असझाय अने सुत्रनी अस० तो पहर १२ वार सुधी जाणवी.

॥ अथ ॥

साधु और श्रावकोंको कोनसी वस्तु कितने पहर और दिन पिछे न खावणी सो लिखते हैं.

चांवल पहर ८, राव पहर १२, घेसपहर २०, वाटी पहर २४, दहि पहर १६, दूध पहर ४, कांजीवडां पहर २४, घोडवडां पहर ४, तल्यां वडां पहर ४ पूडी पहर ८, रोटी पहर ४, तथा ६, वाजरा ऊष्ण पहर १२, जवार ऊष्ण पहर १२, वाजरी की खीचडी पहर ८, जवार की खीचडी पहर ८ चांवल की खीचडी पहर ४, सीयाले आटो दिन १०, उन्हाळे आटो दिन ८, वरसाले आटो दिन ५, पकवान सियाले दिन ३०, उन्हाले पकवान दिन ५, वरसाले पकवान दिन ७, उन्हाले लुण फासु दिन

८, वरसाले लूण फासु दिन ३, सीयाले लूण फासु दिन ५, सीयाले फासु घी दिन ८, उन्हाले फासु घी दिन ५, वरसालेफासू घी दिन ३, तथा हमेसका सियाले फासूपाणीपहर५ वरसाले फासू पाणी पहर ३ सर्व अनाज की घूघरी पाणी ती जोड पहर ८ पाणी की उसेड़ घुघरी पहर १८, तेल की तली घुघरी पहर २०, तथा २४, बडी पहर ८, कढी पहर ४ सर्व दाल पहर ४, तथा ६, रायता पहर ८, घी की तली पहर १६, एवं सर्व वस्तु ए किये परिमाण उपरांत चलितरस होवे, सो साधु तथा श्रावकको खावे योग्य रहे नहीं ॥

अथ श्री मंदिरजीका स्तवन लिख्यते ।

श्री सूत्र मन्दिर साहिबा, साहिब तुमे प्रभु देवादिदेव सनमुख जोवो म्हारा साहिबा ॥ साहिब मन सुधकरुं थारी सेव, एकवार मिलोनी म्हारा साहिबा ॥ १ ॥ साहिब सुखदुःखरी वातां म्हारे अति घणी, साहिब किण आगल कहुं दिलरी बात। केवल ज्ञानी प्रभु जो मिले, साहिब हुंरे थावुं सनाथ ॥ २ एक० ॥ साहिब भरत क्षेत्र में हुं अवतऱ्यो, साहिब ओछो छे एतलो पुण्य। ज्ञानिनो विरह पडियो आकरो, साहिब ज्ञानिरह्या अति दूर ॥ ३ ॥ साहिब दश दृष्टांते अति दोहिलो, साहिब उत्तम कुलनो औरे आचार । पाम्यो पिण हारी गयो, साहिब रतन उडा-

यो मैं काग !! ४ ए० ।। साहिब षटरस भोजन अनन्ता किया, साहिब तृप्ति न पाम्यो लिगार । हुंरे अज्ञानि अभूलरे, साहिब भूलारि भूल गमाय ।। ५ ए० ।। साहिब मोह थी मुझने घेरियो, साहिब राग थी कियो मुझने अन्ध । क्रोध थी कांई जाण्यो नहीं, साहिब एलो गमायो जन्म ।। ६ ए० ।। साहिब धन मिलावण धसमस्यो, साहिब तृष्णारां नहीं आव्यो पार । लोभ थी लटपट बहु करे, साहिब नहीं जाण्यो पुण्य ने पाप ।। ७ ए० ।। साहिब सजन कुटुंब धन मेलव्यो । तिण दुख दुखियो थाय, जीव एकलो कर्म जू जुआ, साहिब दुखडोओ सह्योरे न जाय ।। ८ ए० ।। साहिब जमीन ऊपर शुभ अशुभ छे, साहिब तुमे करो रवि रे प्रकाश । हुंरे अज्ञानी अनादनो, साहिब आपोनी समकितवास ।।९।। साहिब मेघ वर्षे जिम वाडमे, साहिब वर्षेला ठामोजी ठाम । शुभ अशुभ नहीं लेखवे, साहिब ओरे मोटांरो स्वभाव ।।१०।। साहिब हुं रेहुं भरतने छेहडे, साहिब तुमे वशो महा विदेह मझार । दूर रहीने करुं वन्दना, साहिब मानजो जगगुरु तात ।।११।। साहिब तुम पासे देव घण। वसे, साहिब एकने मोकलो आप । मुखरा संदेसा मोरा सांभलो, साहिब सहज सरे मोरा काज ।।१२ साहिब हुं थारे पगरी मोचडी, साहिब हुं थारे दसांरो दास । ज्ञान विमल सूरी इम कहे साहिब राखो हमारे पाम ।।१३।। समाप्त

स्नात्र पूजा ।

(कर्ताः-जैन श्वेतांबर तालग्या दीपचंदजी प्रतापगढ)

पुष्प या लौंग लेकर खडा रहे ॥

❀ सवैया ❀

वृषभ अजित सम्भव अभिनन्दन सुमति पद्म सुपार्श्व सोहाय ।
चन्द सुवधि शीतल श्रेयांस जिय वास पूज पूजित सुरपाय ॥
विमल अनंत धर्म भव तारण शांति कुंथु अरे मल्लिमनाय ।
मुनि सुव्रत नमिनीम पार्श्वजिन वर्द्धमान त्रिभुवन सुखदाय॥१

भगवान के सामने चोकी पर दोनों हाथ से दो दो लौंग तीन वार चढाना ।

॥ मंत्र ॥

ॐ ह्रीं परम परमात्मानं वृषभादि वर्द्धमान जिनेंद्राय कुसुमांजलि ठ ठ स्थापनं (तीन वार कहना)

❀ अथ स्वस्ति ढाल ❀

नमो नमो सयल जिणंद के त्रिभुवन तारणो ।
मङ्गल पञ्च प्रमाण के अति सुख कारणे ॥
तीजे भववर थानिक शुभ मन तप करी ।
बांध श्री जिन नाम के आतम संवरी ॥१॥

॥ त्रुटक छन्द ॥

संवरी आतम चवन करके सूर विमाने आवियो ।
सुख भोग लाभ अनंत महिमा अखय संपत पामियो ॥
सुरलोक तज के मात कुंखे नाथ त्रिभुवन रूपनो ।
त्रिऊज्ञान मंढित भर्त क्षेत्रे अतिहि आनंद नीपनो ॥२॥

॥ ढाल ॥

रयणी पश्चिम मात सुपन तव देखिया ।
सूति सयम चर्तुदश उज्वल पेखिया ॥
गयवर वृषभ ने सिद्ध के लक्ष्मी सोहिये ।
माला पुष्प शशि सुरधज जग मोहिये ॥३॥

॥ त्रुटक छन्द ॥

मोहिये पूरण कलश कुंभे पद्म सायर जल भर्‌यो ।
देखियो रयण घर सुभंगे भवन देव अलंकर्‌यो ॥
अति रत्नखान निधान देखि अग्नि धूम्र विना सहि ।
तत्काल जागी हर्ष वहूले मात ममर्मे गह गई ॥४॥

॥ ढाल ॥

सिज्यासन थकि उठि प्रभाते पति ने कह्यो ।
बुद्धि वल करी नरपति सुपनानो फल लह्यो ॥
त्रिभुवन तिलक समो सूत निज घर जनमसे ।
सेवे सुरपति पाय के अरियाण वमनसे ॥५॥

❁ त्रुटव छन्द ❁

वमन से आठो कर्म जिनके भविक जन जग तारसी ।
चउ संग मंगल होत जिनके पड़त कूप उधारसी ॥
सोधर्म्म सुरपति चलत आसन इन्द्र चित विमासियो ॥
परकास ज्ञान विचार अवधि नमन जिन पद त्रासियो ॥६॥

॥ ढाल ॥

ज्याके चवन सो हम पति प्रभुजी को जानियो ।
जै जै करत हरख भर उछव ठानियो ॥
हुक्म करे सूरसाय; कुवेर आवे सही ।
वृष्टि करे पञ्च भोत के भक्ति भावे सही ॥७॥

❀ त्रुटक ❀

भावियो भक्ति रत्नधारा वृष्टि कर सूर गे गयो ॥
नव सवा मास सूं अधिक बीते जन्म प्रभुजी को भये ।
तब आई छपन देव कुवरी के लगे हनि पाइयो ।
जिन जन्म उच्छव करण कारण हर्ख मन उम गाइयो॥८॥

॥ दुहा ॥

जन्म भयो प्रभुजी तणो । हरख्यो इन्द्र अपार ॥
माता पिता उछव घणो । करत वधाई सार ॥

॥ अथ कलश पूजा ॥

(पञ्चामृत) दूध, दही, शक्कर, घृत जल, सुगंधी के

वास्ते केशर मिलाकर कलश भर कर खडा रहे ।

॥ दुहा ॥

जन्म महोछव कारणे, अब आवे सूर राय ॥
कलश भरी करये धरो, नवन बहु विध थाय ॥१॥

॥ ढाल ॥

भोमी सोदन दीपने लावी आरिसो ।
विमण वाय करे अति शीतल सारिसो ॥
वांधे जिन कर राखडी अशि शहम दिये ।
होवे जन्म पवित्र के जिन पद फरसिये ॥२॥

॥ त्रुटक ॥

फरसिये सुरपति जन्म मंगल चलत आसन जानियो ।
जिन जन्म उछव करण कारण अतिहि आनंद मानियो ॥
सुरलोक घण्टा नाद घोसण करत देव बुलाइया ।
सब चडिय पालक सुर विमाने वेग जिनवर आइया ॥

॥ अथ कलश पूजा ॥

तव सुरपति जी निद्रा देई जिन मातने ।
पद वन्दीजी आप लिया जिन हाथने ॥
पञ्च रूपजी नाटिक विध करी जस्तवे ।
जिन दर्शण जी सुरवर चाहत भवे भवे ॥ १ ॥
गिरमेरु जी पांडुक वन सवि आविया ।

सिला पांडुक जी सिंहासन डेरावियां ॥
सुर नायक जी खोले लिया जिनराय ने ।
सक्र चउसठ जिदेव असंखित आयने ॥ २ ॥
क्षीर सागर जी मागध नीर मागइया ।
सूर कोडी जी कलश भरी तब लाइया ॥
आठ उपर जी एक सहेस कलशा करी ।
गंगा मागध जी खिरवर जल निर्मल भरी ॥ ३ ॥
तिहा सक्रे जी खोले लिया जिनराय ने ।
सवि चउसठ जी नवण करावे आयने ॥
कोडी कोडी जी देव कलश भरि लावियां ।
अंबि उन्तजी रुप देखि हर खावियां ॥ ४ ॥
जग तारण जी उद्धरवा भवि जीवने ।
त्रिभुवन पतिजी सुख भोगवा वध शिवने ॥
मगव्यो इहा जी क्रोड रवि संका करे ।
अति उत्तम जी निर्मल जल कलशा भरे ॥ ५ ।

॥ ढाल कलश ढारन की ॥

अच्युता दिक सुरपति सव मिल करि जिन तनु नवन करावे । सामा निकलो कांतिक देवा इद्राणि मिल अ वे ॥ सोहम इंदो रूप वृषनो श्रगथि कलश ढरावे । देव असांख्यते उदक नवण नो भरि भरि नेत्र लगावे ॥ १ ॥

कुंकुम चन्दन कर्त विलेपन आभुण सुमण चंग । माल कु-सुम जिन कंठ ठवी ने करे अति भक्ति अभंग ॥ क्रोड वतीस सोनैया वारी बलिहारी हरखाय । जै जै शब्द करे सभी सुरवर बहु बाजित्र तजाय ॥ २ ॥ इण विध स्नात्र करि गिरवर पर लाव्या जननी पास । दे आशिस जतन करि राखो अम तुम पुत्र ना दास ॥ त्रिभुवन तारक एह जिन प्रगट्यो इम कहि सुरपति जाय । नंदीश्वर दीपे जि-नवर महिमा बहु विध भक्ति कराय ॥ ३ ॥ जन्म महो-छव इण पर गायो भव भव पाप वुलाय । दिक्षा केवल मोक्ष कल्याणक भाव भक्ति उरलाय ॥ सुध सम्यक्त सूध भावथि सेवो सुर तरु फल सुखदाय । चउ विध संग सदा शुभ मंगल शाशन देव कराय ॥ ४ ॥ गावत गीत वाजीं-त्र बजावो उल्लट अति मन लावो । श्री जिनवर जीनी पूजा करीने भावी भावना भावो ॥ विरतषा शाशन में तपगच्छ शोभा सागर चंद । सूजस दीप जिन भक्ति भावे संग शकल आनन्द ॥ ५ ॥ इति स्नात्र पूजा संपूर्ण

॥ अष्ठ प्रकारी पूजा विधि ॥

। जल पूजा दोहा ।

उज्वल अमल सुगंध सू, मासुक जल भरवाय ॥
भृंग नाल जिन चरण पे । स्नात्रकरो मन लाय॥१॥

॥ काव्य ॥

कनक कुम्भ भरी हर खाइये वावन चन्दन कुंकुम लाईये
नवन पूजन भक्ति सु भाइये कुरीत कर्म सर्व विनसाइये ॥१॥

। दोहा ।

मलीन विदारण उदक हे, कर्म विदारण आप।
तांते पूजा नवन की, हरो शकल संताप ॥१॥

॥ मंत्र ॥

ॐ ह्रीं परम परमात्मानं, वृपभादि वरधमान जिनेन्द्राय।
त्रपा निवारणाय 'जलं' यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

॥ केसर आदि सुगंधीत मिश्रीत चन्दन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मलियागिर घसी लाइये, मृग मद अति अभंग।
जिन तनु लेपो हर्ष सु, कुंकुम केरो रंग ॥ १ ॥

॥ काव्य ॥

सकल ताप निवारण जानिये। जिन तनु चर चोगुन मानिये।
पावत वोध वरे गुण क्षायकं। परम शीतल संपत्ति दायकं ॥२

॥ दूहा ॥

शीतल सुण चन्दन करे। हरे न भव भव ताप ॥

तांते पूजा मीतस । ताप हरो प्रभु आप ॥ ३ ॥

॥ मंत्र ॥

ॐ ह्री परम परमात्मानं वृषभादि वर्धमान जिनेन्द्राय ।
भवा ताप निवारणाय 'चन्दन' यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

॥ दूहा ॥

॥ पुष्प पूजा ॥

मालति चम्पक दावदी । गुंथी दास बनाय ।
कंठ ठवो जिनराय के । मदन मोह मिट जाय॥१॥

॥ काव्य ॥

विविध जात के पुष्प मंगाइये । मालति चंपक दंपक लाइये ।
कुसुम पूजर चोजिन की सदा । हरत काम मिले सुख संपद ॥

॥ दोहा ॥

कुसुम हरे दुगंध कुं । काम हरयो नहीं जाय ॥
काम वाण प्रभु तुम हरो । पहु तुमारे पाय ॥

॥ मंत्र ॥

ॐ ह्रीं परम परमात्मानं वृषभादि वर्द्धमान जिनेन्द्राय
काम वाण निवारणाय 'पुष्पं' यजामहे स्वाहा ॥

। दोहा ।

* धूप पूजा *

अगर तगर अति चंग है। धूप जरे जिन पास ॥
कर्म काट मेरो हरो। रखु तुमारी आस ॥

॥ काव्य ॥

सकल कर्म समुह जराइये। धूप घटि जिन अग्र धराइये।
अशुभ गन्ध अनित्य नसाइये, विमल केवल सम्यक ध्याइये॥

॥ दुहा ॥

धूप जरे संग अगन के। कर्म दहन नहिं थाय।
कर्म दहन प्रभु तुम करो। ओर न एक उपाय ॥

॥ मंत्र ॥

ॐ ह्रीं परम परमात्मानं वृषभादि वरधमान जिनेन्द्राय।
कर्म दहनाय 'धूपं' यजामहे स्वाहा ॥

। दीपक पूजा दोहा।

दीपक जोवो जिन पुरे। मिटे तिमर अज्ञान।
पात्र करि घत पूरगो। निर्मल ध्यावो ध्यान ॥१॥

॥ काव्य ॥

जोत कपूर उद्योत कराइये, विमल ज्ञान सू बोध उपाइये।
वपु विकार विनास कराइये। भासक लोका लोक देखाइये

॥ दोहा ॥

दीप हरे जग तिगर कुं। उर को तिमर न जाय।

मेरो तिमर प्रभु तुम हरो । करू दीप दरसाय ॥

॥ मंत्र ॥

ॐ ह्रीं परम परमात्मानं वृषभादि वरधमान जिनेंद्राय । मोहांधकार निवारणाय । 'दीपं' यजामेह स्वाहा ॥

॥ अक्षत पूजा दोहा ॥

उज्वल तंदुल लायके । जिन पुर मेट कराय ।
अखय अचल पद दोसही । पूजस्युं गुन गाय ॥ १ ॥

॥ काव्य ॥

सकल उज्वल मोक्तिक लायके । परम भाव सू स्वति बनायके ।
अखय संपति कारण अइयो । अखय अक्षत चग चढाइयो ॥ २ ॥

। दोहा ।

तंदुल अक्षत अखय कुं मे पूज तुम पाय ।
जन्म जरा दुख कु हरो । अजर अमर करवाय ॥ ३ ॥

॥ मंत्र ॥

ॐ ह्रीं परम परमात्मानं वृषभादि वर्द्धमान जिनेन्द्राय अक्षे गुण प्राप्ताय 'अक्षतं' यजामहे स्वाहा ॥

॥ दोहा ॥

॥ नैवेद्य पूजा ॥

मोदिक मधुर मनोहरो । खाजे अति शुभचंग ।

पूज करो घृत पूर स्रू । जिन पुर मेठ अभंग ॥१॥

॥ काव्य ॥

साकर दारवर माल बनाइये । भेटत भक्ति वहू विध भाइये ॥
जिन ग्रहे नइवेद चढाइये । सकल व्याधि क्षुधा क्षय जाइवे ॥

॥ दूहा ॥

क्षुदा मिटे नैवेदसे, जन्म मरण नहीं जाय ।
जन्म मरण प्रभु तुम हरो, भेट करु हर स्वाय ॥

॥ मंत्र ॥

ॐ ह्रीं परम परमात्मानं वृषभादि वर्धमान जिनेन्द्राय क्षुदा रोग निवारणाय 'नैवेद्यं' यजामहे स्वाहा ॥

॥ दुहा ॥

॥ फल पूजा ॥

दाडम करणा पक है, श्रीफल कदली चङ्ग ।
फल पूजा जिनराज की, शिवफल होत अभंग ॥

❀ काव्य ❀

सरस अम्ब वदाम ने को फलं, मधुर उत्तम दोकत श्रीफलं।
फल अखण्ड हमे शिव दीजिये, अरज सेवक की सुन लीजिये ॥

❀ दोहा ❀

फल शिव फल के कारणे, मैं पूजू चित लाय ।

महा मोक्ष फल दीजिये, जै जै श्रीजिनराय ॥

॥ मंत्र ॥

ॐ ह्रीं परम परमात्मानन्नं वृषभादि वर्धमान जिनेंद्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं यजामहे स्वाहा ॥

॥ अष्ट द्रव्य पूजा ॥ दोहा ॥

अर्घ करो अड विध सही, भरो कनक की थार।
भेट करो जिन आगले, पामी भव जल पार ॥ १ ॥

॥ काव्य ॥

उदक चन्दन पुष्पक धूप कई । सरस दीपक अक्षत सज कई ।
सुभ निवेद्र फलस प्रभो पूरे । परम वल मयं हिय जाम्यहं ॥ २

॥ दोहा ॥

एह जिन पूजा अष्ट विध, करो भविक मन भाय ।
कनक कटोरी कर धरी, पूरण अर्घ चढाय ॥ ३ ॥

॥ मंत्र ॥

ॐ ह्रीं परम परमात्मानं वृषभादि वर्धमान जिनेंद्राय महापुण्यार्थ यजामहे स्वाहा ॥

॥ अष्ट द्रव्य पूजा ॥

॥ स्तुति जय माल छन्द पद्धडी ॥

जय रिखय रिखय त्रिभुवन आधार, जय अजिय अजिय अरिजित सार ॥ जंय सम्भव शिव सुखदाय जान। जय अभिनन्दन गुन रत्न खान ॥ १ ॥ जय सुमति सुमति दायक दयाल। जय पद्म चरण नित नमु भाल ॥ जय श्री सुपार्श्व सुख धाम जान। जय चन्द शशि उज्वल निधान ॥ २ ॥ जय सुवधि नमो कर जोड पाय। जय शीतल शीतल कर्त छाप ॥ जय श्रेय श्रेय श्रेयांस देव। जय वास पूज पूजो सदैव ॥ ३ ॥ जय विमल अमल गुण गेह जाण। जय अनन्त नमो जुग जोड पाण ॥ जय धर्म धर्म दायक अनन्त। जय शांति शांति जुग में करंत॥४॥ जय कुंथु कुंथु करुणा निधान। जय अरह अरि जगजीत भान ॥ जय मल्लि मदन कर चूर चूर ॥ जय मुनि सुव्रत गुन पूर पूर ॥ ५ ॥ जय नमिय नमो नव निद्ध पाय। जय नीम अभय दायक कहाय ॥ जय पार्श्व फरस अय कनक होत। जय वीर धीर जग करे उद्योत ॥ ६ ॥ जय पंच परम गुरु नमत पाय। जय सम्यक रत्न त्रये उपाय ॥ जय भक्ति कर करियो उधार। निज सेवक जाण उतार पार ॥ ७ ॥

॥ घनाक्षरी छन्द ॥

एह जिनवर वाणि, अमिय समाणि। त्रिउजग जाणी

चित धरो ॥ जो पूजे ध्यावे चरणे आवे । बहू सुख पावे पायपरो ॥

॥ मंत्र ॥

ॐ ह्रीं परम परमात्मानं वृषभादि वर्धमान जिनेंद्राय महस्तुति अर्घ यजामहे स्वाहा ॥

॥ दोहा ॥

केश के नीले चांवल ।

यह जिन पूजा हर्ष से, पढे पढावे सोय ।
मन वच तन थिर लायके, अखय अचल पद होय ॥

इत्याशीर्वाद ॥ इति श्री अष्ट प्रकारी पूजा सम्पूर्ण ॥ सम्वत् १९८९ फाल्गुन सुदी १२ गुरुवार ।

॥ निर्वाण कल्याणक पूजा ॥

॥ काव्य ॥

कपूर वासित जलै, भृत हेम पात्रे ।
धारात्रयं ददतु जन्म जरा पहानै ॥

तिर्थंकराय जिनवीर जिनेश्वराय ।
संपूजयामि पद पंकज शांति हेतु ॥
ॐ ह्रीं परमात्ने अनंतानंत ज्ञान शक्तये निर्वाण ।
कल्याण केभ्य इदं जलम् यजामहे स्वाहा ॥१॥

॥ काव्य ॥

काश्मीर चन्दन विलेपन अग्र भूमि ।
संसार ताप भरथ दूर करोमि नित्यम् ॥
तीर्थंकराय जिनवीर जिनेश्वराय ।
संपूजयामि पद पंकज शांति हेतु ॥
ॐ ह्रीं परमात्ने अनंतानंत ज्ञान शक्तये निर्वाण ।
कल्याण केभ्य इदं चंदनम् यजामहे स्वाहा॥२॥

॥ काव्य ॥

अंभोज चंपक सुगंध सुपात्र जाति
कामः विध्वंसन करोति श्रीमद् जिनम् ॥
तीर्थंकराय जिन वीर जिनेश्वरा ।
संपूजयामि पद पंकज शांति हेतुः ॥

ॐ ह्रीं परमात्माने अनन्तानन्त ज्ञान शक्तये निर्वाण कल्याण केभ्यः इदं पुष्पम् यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

❀ काव्य ❀

दीप प्रदीपित जगत्रय रस्मितेज ।
दूर करोति तिमिर मोह विनाशनाय ॥
तीर्थंकराय, जिनवीर जिनेश्वराय ।
संपूजयामि पद पंकज शांति हेतु ॥

ॐ ह्रीं परमात्ने अनंतानंत ज्ञान शक्तये कल्याण केभ्य इदं दीपकम् यजामहे स्वाहा॥५॥

॥ काव्य ॥

अखंड अक्षत सुगंध करोमि पूजाम ।
अक्षय यदस्य सुख संपाति तृप्ति हेतु ॥
तिर्थंकराय जिनवीर जिनेश्वराय ।
संपूजयामि पद पंकज शांति हेतु ॥

ॐ ह्रीं परंमात्ने अनंतानंत ज्ञान शक्तये निर्वाण ।

कल्याण केभ्य इदं जलम् यजामहे स्वाहा ॥६॥

॥ काव्य ॥

नैवेद्य कै शुचितरे घृत पक्क खंडे ।
क्षुदादि दोष हत दुःख विनाशनाय ॥
तीर्थंकराय जिनवीर जिनेश्वराय ।
संपूजयामि पद पंकज शांति हेतु ॥

ॐ ह्रीं परमात्मे अनंतानंत ज्ञान शक्तये निर्वाण। कल्याण केभ्यः इदम् नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

नारिंग दाडिम मनोहर श्रीफलाद्यै ।
पूजा माभिष्ट सुखदायक श्रीजिनानां ॥
तिर्थंकराय जिनवीर जिनेश्वराय ।
संपूजयामि पद पंकज शांति हेतु ॥

ॐ ह्रीं परमात्मे अनंतानंत ज्ञान शक्तये निर्वाण। कल्याण केभ्यः इदं फलं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥

॥ काव्य ॥

जलस्य गंधाक्षत पुष्प चारु भि ।
दीप धूप फल मिश्रित हेम पात्रं ॥
अर्धं करोति जिन पूजनं शांति हेतु ।
संसार पूर्ण कुरु सेव कानाम् ॥

ॐ ह्रीं परमात्मे अनंतानंत ज्ञान शक्तये निर्वाण कल्याण केभ्यः इदं अर्धं यजामहे स्वाहा ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीनिर्वाण पूजा ॥

❀ अथ स्तोत्र ❀

दुरिय रय समीरं मोह पंकाह नीरं ।
पणमिय जिण वीरं निजि आनंग ॥
भव भड पंडि कुल तस्स मुक्काणं कुलं ।
चरिय मिहस मलं किंचि त्तेमि थूलं ॥१॥

किरणाम चिंगभवे समत्तं लहिय राहिय सोहम्मे, चविउं भवि ठमरीई लहि उंच्चइ उंच चरण भरं ॥ २ ॥ उस्सत्त लेस देसण

कय सागर कोडि कोडि भव भमणे तद्पढम वासुदेवो भावि अति विट्ठो झिणु दिट्ठो ॥ ३ ॥ संसरि अभावे अजाउं अवर विदेहं मिभूअ नयरीए धारिणि धणं जय सुओ पियमित्तो नाम चक्कहरो ॥ ४ ॥ तुडि अगाउं पालिअ अब इस वास कोडि मुव वन्नो मह सुके परमाउ सव्वट्ठेवरावि माणामि ॥५॥ तो जम्बू दीवे भरहे महाजि असक्क राय अंग रुहो बात गांइ पुरीए अहोसितुं नन्दणो राया ॥६॥ चउवीस वास लक्के वासि आगे हे ! सुगुरु पोट्ठिल समीवे निक्कामि अवास लक्कं खवि-यसमा मास खमणेहिं ॥ ७ ॥ असइंसे विअ-विसं ठाणे अज्जाणि अति छयर नामं वीसव-राउं झाउं पाणय पुप्फुत्तरे देवो ॥८॥ छम्मास विसेसाउ पुणखय मोहमिति इयसुरा आसन्न पुन्न पुंजा तिच्छयर सुराऊ दीप्पंति ॥ ९ ॥ माहणं कुणडगामे अवयरि ओसिअ आसाढ

छट्टीए विप्पोसह दिन्न गिहे देवाणं दीए उ-
यरंमि ॥ १० ॥ अह व्यासी इदीणंते चउदस
सुमणे हियंत झंतेहि हछुत्तरय कयल्लाण पणग
अछरि अचरि अन्वो ॥ ११ ॥ जणनाय नाय
खित्तये पासिद्ध सिद्धच्छ पाछे वपि आए चे-
डय निव भगणिय तिसला देवीए उछिए
॥ १२ ॥ सक भणिएण हरिणे गामि सिणा
गप्भ विणि मयं काउं आसो अकसिण तेरसि
निसाएतुं नाह साहरिओ ॥ १३ ॥ खत्तिअ
कुण्ड गामे जाउ चित्त सिअतरे सिनि सद्धे
कासव गुत्ते कणा गात्रः कन्न रासी हंको ॥
१४ ॥ जण चिंतामणि तुमए अवइन्ने रयणि
जण धणा कणेहिं उद्धि छानाए कुलंते वद्ध-
माणु त्तितो सकुड ॥ १५ ॥ तंजम्म मज्जण
खणंमि सक खवि अप्पसंक मुखणिअं जेण
महन्न मवि गिरि मीरिछतवो महावीरो॥१६॥
पियर मरणे वित्तं जिट्ठ भाउ वयणेण ठासि

चासं दुगं मिह वासुच्चि अनि खज्ज विंत्तिणा निधि अमुरााध ॥ १७॥ सत्त कर देह गेहंमि अछि अन्ति सव छरे कुमरो लोगांति अतोर रविओ संवछर मिछि अंदाऊं ॥ १८ ॥ सुरनर वइकय वहुविह जलन्हवणो सुर विलेवण विलित्तो रुइ रालंकार धरो चउदेव निकायं समणुगओ ॥ १९ ॥ चन्दप्पह सिविआए मगासिरे कासिण दसमी अवरन्हे पढम वए पव्वइवो छटेणं नाय सण्ड वणे ॥ २० ॥ कुम्मार गाम वाहिं बय पढम निशाए अइ किर सक्को बारइ गोवं वागरइ निरुवसग्गं करे भन्ते ॥२१॥ वमणिछि अतुह निछिअ मइणो विहरंति कुलएगामे वल भवणे वीयदिणे पार णयं पायसेणासि ॥ २२ ॥ सुरकय विलेवणा इवि साहिअ चउमासी सीते दुहयं भमए इक्कयछण तरुण पच्छाणि छीजणत्तणाओ ॥२३ पडि कुल सुलयाणिं चपडाकि अचरण्ड कोसि

अमहिंच अगणि अविअ तणुपीडं पडिवोहि
यवं तुसं भयवं ॥ २४ ॥ एगरथणीए वीसं
छहिं मासेहिं चिविह उवसगो तह करिश्र हरि
असुर समा संगमो २ जाओ ॥ २५ ॥ कन्न
सुकड सिलाग्गा पवेसगे आंन्न निवेसगे गोरवे
खरगे अत दुद्धर गेतह उन्नाचेव मण वित्ती
॥ २६ ॥ छत्वरु गाति गेगभासी एक नव
होछक बारासि अकामि अद्धादिवद्ध छाइअ मा-
सीबवत्तरी दो दो ॥ २७ ॥ दो चउदसात्ति
दिणा पडिया भद्द महाभद्द सव्वओ भद्दा
कासि अछिन्नात हबार सेग राइात्ति देवासिआ
॥ २८ ॥ पञ्च दिणूण छमाअ खमणं कोसं
बीए तुम मकासि दुन्निसय गुणतीसे अकासी
तुंछट्ठ खमणाणं ॥ २९ ॥ दीवसूणठुठ सया
फरणया पढ्ढम वयादिणं चेगं इअ तेरासि
पवखाहिअ बारस वरसा वसाणन्ते ॥ ३० ॥
जाभिअ बहिरि जुवालिअ तीरंवइ साहसि

अट्टसामि पहरातिगे छट्टेणु कुडाड्ठि अस्स केवल आसि साल तले ॥ ३१ ॥ सुरकयऊ सरणे ठाउमीस कप्पात्तिका धम्मकं धोम छरिंअं जाणिअ वर चरण अभाविया पारिसा ॥ ३२॥ बहुति अस कोडि साहिउ निसिवारस जोयणेहिं पावापुरिंगं तुमह सेण वणे चउविंहाति छंपइाट्टित्ता ॥ २३ ॥ साहु सहस्सा चउदस छत्तीसं साहुणी सहस्साणि, सेगूणद्व सहस्सा लकं सड्ढा दुगुण सड्ढी ॥ ३४ ॥ चउदस पुव्वी वाई मणपत्र विणोय चउ पञ्चसया सत्तसया केव लिणो विउव्विस्से तित्ति आउप्भ ॥ ३५॥ पंच जम धम्मः देसगः इक्कारस गणहरा नवगणाते तेरस ओही जिणसया अट्ट संघाणु त्तारगएणं ॥ ३६ ॥ पंचन्तर इहासा इछक मिच्छत्तमाविरइमनाणं अट्ठारस दोसाएग दोसा निद्दायमणोष ॥ ३७ ॥ नाच्छिभाविय नासे जंगे साले तुमं पीति जय पहुं अकोसे

अहाहा तुह पुरो महेसो दहे सीय ॥ ३८ ॥ जच्छ निव संति संतो खनं पितं किर कुणं तिसुकयछ इय णुण मुसह दनं देणं दव्व नोसि सिवं ॥ ३९ ॥ सेणिया निवासिद्धाइअ दवामायंग जक्खय सेव नवतत्त सत्तभंगिं पयडि अदे सूणता ससमा ॥ ४० ॥ माप्भिम पावा पह चिळवाल भूवाल सूक सालाए पज्जं काहि उपासाओ वास दुलए गए सहे ॥ ४१ ॥ कत्तिअ अमावसाए गोस छहेण साइनक्खत्ते एगुच्चिअ बावत्तरिं, वरिसा उत्तासिवे पत्तो ॥ ४२ ॥ एवं वीर जिणे सर तूं मं मोहन्ध विध्वं सणं भव्वं भोउहं वोक भोह जिणयं दोसा-यर छेअणं थोवंजं कुसलाण वन्ध कुसलं प-त्तोमिकिंचित्तओ, जइज्जाजिण वल्लहोमह सया पायप्पणा मोतुहे ॥ ४३ ॥ इति श्री महावीर चरित्र स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥ यह स्तोत्र पढके लड्डू चढाकर पीछें आरती करणी ॥

॥ अथ आरती ॥

जय २ जगदीश जिनेश्वर जग तारण राजा, धन २ कीरति तेरी इन्द्र करत बाजा ॥ जय० ॥ १ ॥ अविकारा तुम जग आधारा आरति अमर उतारा भव आरति टारा ॥ जय० ॥ २ ॥ षट कायक प्रतिपालक अनुकम्पा धारी निश्चय नय व्यवहारी भविजन विस्तारी ॥जय० ॥ ३ ॥ मति श्रुति अवधि सहित तुम अम्बोदर आये देवन मंगल गावे पुष्प वरसाये ॥ जय० ॥४॥ जन्म महोत्सव जाना चौसठ इन्द्रोंने, प्रभु प्रतिमा कर लीनी मेरु परवीने ॥ जय० ॥ ५ ॥ क्षीरोदक हिय कलसे जोजन शत २ के जिन तनु लघु चित्त के, कर धर सब तके ॥ जय० ॥ ६ ॥ घट घट घुमरि पुरन्धर कें, सुरगण सब कम्पे, प्रभु कत जाय खमाए, जय मुख जम्पे ॥ जय० ॥ ७ ॥ अन्तरजामी जाना सबपुर मन तनकी, पद नख

मेरु कम्पाये भूसर जल थल की ॥८॥ अगम शक्ति जिन जाना प्रक्षालित जल ढारे, सुरभि वस्त्र सब भूषण चामर झपटारे ॥ जय० ॥६॥ धुं गिनि २ धममय मांदल धोंके भरन भल कारें, गुरु २ झां झां झटतारे नोबत सुर भारे ॥ जय० ॥१०॥ ताथेई २ सब नाचे रुम झुम नुपंका पुकारे ध्रुपद ताल सुरगावे आनन्द की वर्षा ॥ जय० ॥११॥ या विधि साहब इंद्रान सेवे जगनायक जाना, अमृत उदे धन धन नर भव जिन घट परवाना ॥ जय० ॥१२॥ इति ॥

❀ अथ महावीर स्वामी का स्तवन ❀

मारग देशक मोक्ष नोरे, केवल ज्ञान प्रधानोरे । भावदया सागर प्रभु रे पर उपगारी प्रधानोरे ॥ वीर प्रभु सिद्धि थयारे ॥ सब सकल आधारोरे हिव इण भरत मे कुण करसी उपगारोरे ॥ वीर० ॥ १ ॥ नाथ विहूणो सैन्य जूरे, वीर विहूणो संघरे । साधे कुण आधार थीरे,

परमानन्दो अभंगोरे ॥ वीर० ॥ २ ॥ मात विहूणो बालज्यूंरे, अरहो परो अथडायरे । वीर विहूणा जीवडारे, आकुल व्याकुल थायोरे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ शंशय छेदक वीरनोरे, वीरहते केम समायरे । जे दीठां सुख उपजेरे, जेविण केम रहवायो रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ नियिमक भव भव समुद्र नोरे, भव अटवी सथवाहरे । तो परमेश्वर विन मल्यांरे, किम वांधे उच्छाहोरे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ वीर थकां पिण श्रुत तणोरे, हुंतो परम आधाररे । हिव इक श्रुत आधार छेरे, इह जिन आगम भारोरे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ तिण काले सवि जीवनोने, आगमथी आनन्दरे । ध्यावो सेवो भवि जनाने, जिन पडिया सुख कन्हीरे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ गणधर आचाराज्ञ मुनि रे, सहुनो इण पर सिद्ध रे । भव २ आगम संघर्थारे, देवचन्द पदवी धरोरे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ इति निर्वाण पद सम्पूर्ण ॥

रयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भव सयसहस्समहणाए। चउव्वीसजिणविणिग्गय कहाइ बोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्म द्दिट्ठीदेवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरूवणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्वजिवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभुवेसु, वेरम मज्झ न केणइ ॥ ४९ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

इच्छामि, खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। देवसिय आ-लोइअं पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन् 'पक्खिय मुहपत्ति पडिलेहुं ? 'इच्छं'।

'चउमासिक प्रतिक्रमण में 'चउमासिय' और सांवत्सरिक

प्रतिक्रमण में 'संवच्छरिय' बोलना चाहिये ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

(यहां पाक्षिक मुहपत्ति पडिलेहना। बाद वांदणा दो देना

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि अहोकायं कायसंफास । खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो ? जत्ता भे जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं पक्खिए आसायणाए तित्तीस अयराए, जं किंची मिच्छाए मणदुक्कडाए वय दुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इसी प्रमाणे फिर वांदणा देवे ।

(अब गुरु कहे कि—"पुण्णवंतो देवसिय की जगह पक्खिय चउमासिय या संवच्छरिय पढना, छींक की जयणा करना, मधुर स्वर से प्रतिक्रमण करना खांसना हो तो त्रिवर शुद्ध खांसना और मंडल में सावधान रहना" इस प्रकार गुरु के कहने बाद सब 'तहत्ति' कहे और खडे होकर 'अब्भुट्ठिओमि' खामे)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! संबुद्धा खामणेणं अब्भुट्ठिओहं, अब्भिंतर *पक्खिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि पक्खिअं, एगपक्खस्स पन्नरसण्हं दिवसाणं पन्नरसण्हं राइणं जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते, पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतर भासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणय परिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

* चउमासी प्रतिक्रमण में "चउमासिअं खामेउं ? इच्छं खामेमि चउमासिअं चउण्हं मासाणं, अट्ठण्हं पक्खाणं वीसोत्तरसयं राइदिवसाणं" इस प्रकार बोलना और संवच्छ

री प्रतिक्रमण में "संवच्छरिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि संवच्छरिअं, दुवालसण्हं मासाणं, चउवीसण्हं पक्खाणं तिन्निसयसट्ठि राइदिवसाणं" इसी तरह बोलना चाहिये ।

(अब खडे होकर बोले)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन पाक्खिअं आलोउं 'इच्छं' आलोएमि । जो में पक्खिओ अइयारो कओ, काइया, वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्वि चिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामा इए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं पंचण्हम णुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खा-वयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिय अतिचार आलोउं ? 'इच्छं' ।

(ऐसे कहकर पक्खिय अतिचार कहे)

अथ पाक्षिक अतिचार ।

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तह य विरियंमि। आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ॥ १ ॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, इन पांचों आचारों में जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

तत्र ज्ञानचार के आठ अतिचार—"काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तह य निण्हवणे। वंजण अत्थतदुभय, अट्ठविहो नाणमायारो,, ॥ २ ॥ ज्ञान नियामित वक्त में पढा नहीं। अकाल वक्तमें पढा। विनय रहित, बहुमान रहित, योगोपधान रहित पढा। ज्ञान जिससे पढा उससे अतिरिक्त को गुरु माना या कहा देववंदन, गुरुवंदन करते हुए तथा प्रतिक्रमण सज्झाय पढते या गुणते अशुद्ध अक्षर कहा। कानामात्रा न्युनाधिक कही, सूत्र असत्य कहा

अर्थ अशुद्ध किया, अथवा सूत्र और अर्थ दोनों असत्य (झूंठे) कहे। पढ़कर भूला, असज्झाय के समय में थविरावली प्रतिक्रमण उपदेशमाला आदिसिद्धांत पढ़ा! अपवित्र स्थानमें पढा, या विना साफ किये घृणित (खराब) भूमि पर रखा ज्ञान के उपकरण पाटी, तखती, पोथी, ठवणी कवली माला, पुस्तक रखने की रील, कागज कलम दवात, आदि के पैर लगा, थूकलगा, अथवा थूकसे अक्षर मिटाया, ज्ञानके उपकरण को मस्तक के नीचे रखा, या पासमें लिए हुए आहार निहार किया, ज्ञानद्रव्य भक्षण करने वाले की अपेक्षा की, ज्ञानद्रव्य की सारसंभाल न की, उलटा नुकसान किया, ज्ञानवंत के ऊपर द्वेष किया, ईर्षा की, तथा अवज्ञा आशातना की, किसी को पढने गुणने में विघ्न डाला अपने जानने का मान किया। मतिज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान और केवल

ज्ञान, इन पांचो ज्ञानों में श्रद्धा न की । गूंगे तोतले की हँसी की, ज्ञान में कुतर्क की ज्ञान की विपरीत प्ररूपणा की । इत्यादि ज्ञानाचार संबंधी जो कोइ अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन बचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं ।

दर्शनाचार के आठ अतिचार—"निस्सं किय निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ । उववूह थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥ ३ ॥ देवगुरुधर्म में निःशंक न हुआ, एकांत निश्चय न किया । धर्मसंबंधी फलमें संदेह किया चारित्रवान् साधु साध्वी की जुगुप्सा निंदा की मिथ्यात्वियोंकी पूजा प्रभावना देखकर मूढ़ दृष्टिपना किया । कुचारित्रीको देखकर चारित्रवाले पर भी अभाव हुआ । संघमें गुणवान की प्रशंसा न की । धर्म से पतित होते हुए जीव को स्थिर न किया । साधर्मी का हित न चाहा

भक्ती न की, अपमान किया देवद्रव्य, ज्ञान द्रव्य, साधारणद्रव्य की हानि होते हुए अपेक्षा की। शक्ति होने पर भले प्रकार सारसंभाल न की। साधर्मी से कलह क्लेश करके कर्मबंधन किया मुखकोश बांधे बिना वीतरागदेव की पूजा की धूपदानी, खसकूर्ची, कलश आदिक से प्रति-माजी को ठपका लगाया, जिनबिंब हाथ से गिरा। श्वासोच्छ्‌वास लेते आशातना हुइ। जिनमंदिर तथा पोषधशाला में थूका, तथा मल श्लेश्म किया, हांसी मश्करी की, कुतुहल किया। जिनमंदिर सम्बन्धी चौरासी आशातनाओं में से और गुरु महाराज संम्बन्धी तेतीस आशातनाओं में से कोई आशातना हुई हो स्थापनाचार्य हाथसे गिरे हों या उनकी पडिलेहन न की हो। गुरुके वचन को मान न दिया हो, इत्यादि दर्शनाचार सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते

लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं ।

चारित्राचार के आठ अतिचार—"पणिहाण जोगजुत्तो पंचहिं समइहिं तीहिं गुत्तीहिं एसचारित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो ॥४॥ ईर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति, आयाण,-भण्डमत्त-निक्षेपण समिति और पारिष्ठापनिकासमिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, और कायगुप्ति ये आठ प्रवचन माता रूप पांच समिति और तीन गुप्ति सामायिक पोषधादिक में अच्छी तरह पाली नहीं । चारित्राचार संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या वादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन, वचन, काया, कर मिच्छा मि दुक्कडं ।

विशेषतः श्रावक धर्मसम्बन्धी श्रीसम्यक्तव मूल वारह व्रत, सम्यक्तव के पांच अ-

तिचार—'संका कख विगिच्छा०' शंका श्री अरिहंत प्रभुके बल अतिशय ज्ञानलक्ष्मी, गांभीर्यादिगुण शाश्वती प्रतिमा, चारित्रवान के चारित्र में तथा जिनेश्वरदेव के वचन में संदेह किया। आकांक्षा—ब्रह्मा, विष्णु, महेश, क्षेत्रपाल, गरुड, गूगा, दिकपाल, गोत्रदेवता, नवग्रहपूजा, गणेश, हनुमान, सुग्रीव, बाली, मातामसानी आदिक; तथा देश, नगर, ग्राम, गोत्र के जुदे जुदे देवादिकों का प्रभाव देखकर, शरीरमें रोगांतक कष्ट आने पर इह लोक परलोक के लिये पूजा मानता की। बौद्ध, सांख्यादिक, सन्यासी, भगत, लिंगये जोगी, फकीर, पीर इत्यादि अन्य दर्शनियों के मंत्र यंत्र के चमत्कार देखकर परमार्थ जाने बिना मोहित हुआ। कुशास्त्र पढ़ा, सुना, श्राद्ध संवत्सरी, होली, राखडीपूनम (राखी), अजा एकम, प्रेत दूज, गौरी तीज, गणेश चौथ, नाग

पंचमी, स्कंदषष्ठी, झीलणा छठ, शीलसप्तमी, दुर्गाष्टमी, रामनोमी, विजया दशमी, व्रत एकादशी, वामनद्वादशी, वत्सद्वादशी, धनतेरस, अनन्त चोदस, शिवरात्री, कालीचउदस, अम्मावस्या, आदित्यवार, उत्तरायण, योग भोगादि किये कराये करते को भला माना। पीपल में पानी डाला डलवाया, कुवा, तालाव, नदी, द्रह, बावडी समुद्र कुंड ऊपर पुण्य निमित्त स्नान तथा दान किया, कराया अनुमोदन किया। ग्रहण शनिश्चर, माघमास, नवरात्री का स्नान किया नवरात्री व्रत किया। अज्ञानियों के माने हुए व्रतादि किये कराये। वितिगिच्छा—धर्म सम्बन्धी फल में संदेह किया। जिनावितराग अरिहंत भगवान धर्म के आगर, विश्वोपकार सागर, मोक्षमार्गदातार इत्यादि गुणयुक्त जान कर पूजा न की। इहलोक परलोक सम्बन्धी भोगवांछा के लिये पूजा की। रोग आतंक कष्ट

के आने पर क्षीण वचन बोला। मानता मानी महात्मा महासती के आहार पानी आदि की निन्दा की। मिथ्याद्रष्टिकी पूजा प्रभावना देखकर प्रशंसा की। प्रीति की। दाक्षिण्यता से उसका धर्म माना। मिथ्यात्व को धर्म कहा इत्यादि श्रीसम्यक्त्व व्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

पहले स्थूल प्राणातिपात—विरमणव्रत के पांच अतिचार—'वह बंध छविच्छए०' द्विपद चतुष्पद आदि जीवको क्रोधवश ताड़न किया, घाव लगाया, जकड़ कर बांधा, अधिक बोझ लादा। निर्लांछन कर्म—नासिका छिद-वाई कर्ण छेदन करवाया, खस्सी किया। दाना घास, पानी की समय पर सार संभाल न कि, लेन देन में किसी के बदले किसी को भूखा

रखा, पास खडा होकर मरवाया, कैद करवाया। सड़े हुवे धान को बिना सोधे काम में लिया पिसवाया, धूप में सुकाया। पानी जयणासे न छाना। ईंधन, लकडी, उपले गोहे आदिबिना देखे वाले। उसमें सर्प विच्छू, कानखजूरा, कीडी, मकोड़ी, सरोला, मांकड, जुआ, गिंगाडा आदि जीवों का नाश हुवा। किसी जीव को दबाया। दुःखी जीव को अच्छी जगह पर न रखा। चूंटी (कीडी) मकोडी के अंडे नाश किये, लीख फोडा दीमक, कीडी, मकोडी घी-मेल, कातरा, चूडेल, पतंगिया, देडका, अल-सीया, ईअल, कूंदा, डांस, मसा मगतरां, माखी टीड्डी प्रमुख जीव का नाश किया। चील, काग, कबूतर, आदि के रहने की जगह का नाश किया। घौंसले तोडे। चलते फिरते या अन्य कुछ काम काज करते निर्दयपना किया। भली प्रकार जीवरक्षा न की। बिना छाने पानी से

स्नानादि काम काज किया। चारपाई, खटोला पीढा, पीढी आदि धूप में रखे। डंडे आदि से झड़काये। जीवाकुल—जीवयुक्त जमीन को लीपी। दलते, कूडते, लीपते या अन्य कुछ काम काज करते जयणा न की। अष्टमी, चौदस आदितिथि का नियमतोडा धूनी करवाई इत्यादि पहले स्थूल प्राणातिपात विरमणव्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

दूसरे स्थूल मृषावाद विरमणव्रत के पांच अतिचार—'सहसा-रहस्सदारे०'सहसात्कार—बिना विचारे एकदम किसी को अयोग्य आलकलंक दिया। स्वस्त्री सम्बन्धी गुप्त बात प्रकट की, अथवा अन्य किसी का मंत्र भेद मर्म प्रकट किया। किसी को दुःखी करने के लिये झूंठी सलाह दी। झूठा लेख लिखा, झूंठी

गवाही दी । अमानत में खयानत की । किसी की धरोहर रखी हुई वस्तु वापिस न दी । कन्या गौ भूमी सम्बन्धी लेन देन में लडते झगडते वादविवाद में मोठा झूठ बोला । हाथ पैर आदि की गाली दी मर्म वचन बोला, इत्यादि दूसरे स्थूल मृषावाद विरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छामि दुक्कडं ।

तृतीय स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत के पांच अतिचार–'तेनाहडप्पओगे०' घर बाहिर खेत खला में विना मालिक के भेजे वस्तु ग्रहण की अथवा आज्ञा बिना अपने काम में ली चोरी की वस्तु ली, चोर को सहायता दी राज्य विरुद्ध कर्म किया । अच्छी बुरी, सजीव निर्जीव, नई पुरानी वस्तु का भेल सम्भेल किया । जकात की चोरी की । लेते देते तराजू

की डण्डी चढाई। अथवा देते हुए कमती दिया लेते हुए अधिक लिया रिश्वत खाई विश्वासघात किया ठगाईकी हिसाब किताबमें किसीको धोखा दिया माता पिता पुत्र मित्र स्त्री आदिकों के साथ ठगाई कर किसी को दिया, अथवा पूंजी अलाहदा रखी, अमानत रखी हुई वस्तु से इन्कार किया। पडी हुई चीज उठाई। इत्यादि तीजे स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या वादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

चौथे स्वदारा संतोष परस्त्री गमन-विरमण व्रत के पांच अतिचार—'अप्परिगहिया इत्तर०' परस्त्रीगमन किया (अविवाहिता कुमारी विधवा वेश्यादिक से गमन किया। अनंगक्रीडा की। काम आदिकी विशेष जाग्रति की अभिलाषा से सराग वचन कहा। अष्टमी चौदस आदि पर्वाति-

थिका नियम तोड़ा । स्त्रीके अंगोपांग देखि तीव्र अभिलाषा की कुविकल्प चिंतवन किया पराये नाते जोड़ अति-क्रम व्यातिक्रम अतिचार अनाचार स्वप्नस्वप्नांतर हुआ । कुस्वप्न आया । स्त्री, नट विट भांड वैश्यादिक से हास्य किया स्व स्त्रीमें संतोशन किया इत्यादि चौथ स्व-दारा संतोष परस्त्री गमन विरमणव्रत सम्बन्धी जो काई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अंजानते लगा हो वह सब मन वचन कायाकर मिच्छा मि दुक्कडं ।

पांचवें स्थूल परिग्रहपरिमाणव्रत के पांच अतिचार—"धण धन्न खित्त वत्थू०' धन धान्य क्षेत्र वास्तु सोना चांदी वर्तन आदि । द्विपद दास दासी चतुष्पद—गौ बैल घोडादि नव प्रकार के परिग्रहका नियम न लिया । लेकर बढ़ाया । अथवा अधिक देखकर मूर्च्छावश माता पिता पुत्र स्त्रीके नाम किया । परिग्रह का प्रमा-

ण नहीं किया, करके भूलाया याद न किया। इत्यादि पांचवे स्थूल परिग्रह परिमाणव्रत सम्बन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या वादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

छट्ठे दिकपारिमाणव्रत के पांच अतिचार 'गमणस्सउ परिमाणे०' ऊर्ध्वादिशि अधोदिशि तिर्यगादिशि जाने आने के नियमित प्रमाण उपरांत भूल से गया। नियम तोडा प्रमाण उपरांत सांसारिक कार्य के लिये अन्य देश से वस्तु मंगवाई अपने पास से वहां भेजा। नौका जहाज आदि द्वारा व्यापार किया। वर्षाकाल में एक ग्राम से दूसरे ग्राम में गया। एक दिशा के प्रमाण को कम करके दूसरी दिशामें अधिक गया। इत्यादि छट्टे दिकपरिमाण व्रतसंवंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो

वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं)

सातवें भोगोपभोगव्रतके भोजन आश्रित पांच अतिचार और कर्म आश्रित पन्द्रह अतिचार—'सच्चिते पडिबद्धे०' सचित्त—खान पान की वस्तु नियम से अधिक स्वीकार की सचित्त से मिली हुई वस्तु खाई। तुच्छ औषधि का भक्षण किया। अपक्क आहार, दुपक्क आहार किया। कोमल इमली, बूट, भुट्टे फलियां आदि वस्तु खाई। सचित्त दव्व विगई वाणव तंबोल वत्थ कुसुमेसु। वाहस सयण विलेवण बंभदिसि राहाण भत्तेसु ॥१॥ ये चौदह नियम लिये नहीं। लेकर भुलाये। बड, पीपल, पिलंखण, कठुंबर गूलर, ये पांच फल। मदिरा, मांस, शहद, मक्खन ये चार महा विगई। बरफ, ओले, कच्ची मिट्टी, रात्रीभोजन, बहुवीजाफल, अचार, घोलबडे,

द्विदल, वैंगण, तुच्छफल, अजानाफल, चालितरस, अनन्तकाय ये बाईस अभक्ष्य। सूरनजिमीकंद, कच्ची हल्दी, सतावरी, कच्चानरकचूर, अदरख, कुवांरपाठा, थोर, गिलोय, लसून, गाजर, गंठा-प्याज, गोंगलु कोमलफलफूल, पत्र थेगी, हरामोथा, अमृतबेल, मूली, पद्म हेडा, आलू कचालु रतालू पिंडालु; आदि अनंतकाय, का भक्षण कीया। दिवस अस्त होने पर भोजन किया। सूर्योदय से पहले भोजन किया। तथा कर्मतः पन्द्रह कर्मादान—इंगालकम्मे वणकम्मे साडीकम्मे भाडीकम्मे फोडीकम्मे ये पांच कर्म। दंतवाणिज्ज लक्खवाणिज्ज रसवाणिज्ज केसवाणिज्ज विसवाणिज्ज ये पांच वाणिज्ज। जंतपिल्लणकम्मे निल्लंछनकम्मे दवग्गिदावणिया सरदहतलावसोसणया असइपोसणया ये पांच सामान्य एवं कुल पन्द्रह कर्मादान महा आरम्भ किये कराये करते को अच्छा